कलामुल इमाम इमामुल कलाम इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी

हिन्दी कर्दा

मुहम्मद महताब अली उर्फ़ मुहम्मद अहमद

नाशिर

आलाहज़रत दारुल कुतुब

28, इस्लामिया मार्केट बरेली

नाम किताब हदाइक़े बख़्शिश मअ मअना

हिन्दी कर्दा मुहम्मद महताब अली उर्फ़ मुहम्मद अहमद
(M.Sc. CAIIB)

तसहीह : मौलाना सग़ीर अख़तर साहब मिस्बाही
मौलाना मुहम्मद अफ़ज़ाल रज़वी साहब

हदिया : रु 80

मिलने का पता : जीलानी बुक डिपो
523 मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6

फ़ारूक़िया बुक डिपो
422 C, मटिया महल, देहली

कुतुबख़ाना अमजदिया
425, मटिया महल, देहली

बरेली शरीफ़ और देहली के सभी मशहूर
कुतुबख़ानों पर

फ़ेहरिस्त

पेश लफ़्ज़

अलह़म्दुलिल्लाह हर मुसलमान को अल्लाह व रसूल की तारीफ़ करने का जज़्बा होता है, किसी को ज़्यादा किसी को कम। आशिक़ शायर इस जज़्बे का इज़्हार अपने अशआर में करते हैं और आम मुसलमान इसका इज़्हार अच्छे अच्छे तरन्नुम में ह़म्द नात व मनक़बत पढ़ कर करते हैं। आज देखा यह गया है कि लोगों को नात व सलाम पढ़ने का शौक़ और जज़्बा तो बहुत है मगर क्या पढ़ रहे हैं इस पर ग़ौर कम करते हैं बल्कि कहीं कहीं तो कुछ लोग सिर्फ़ गलेबाज़ी करते हैं। रियाकारी से बचते हुए नात को अच्छी आवाज़ ही से पढ़ना चाहिए ताकि सुनने वाला मुतवज्जेह हो और कलाम को सुनकर उसका असर ले। कलाम को सुनकर उसका असर लेने के लिए ज़रूरी है कि उस कलाम के मतलब को समझे। इसलिए हमने एक इस कोशिश को ज़रूरी समझा कि उर्दू ज़बान का सबसे ज़्यादा मशहूर और ग़लतियों से पाक आलाहज़रत मुजद्दिद दीन ओ मिल्लत इमाम मुह़म्मद अह़मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी का कलाम हिन्दी में मअ मअना के लाया जाए। और आज अल्लाह व रसूल के फ़ज़्ल व करम और अपने शैख़ सरकार मुफ़्तीए आज़म मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और बुज़ुर्गों कि फ़ैज़ व तुफ़ैल से अब इस कोशिश में हम कहाँ तक कामयाब हुए यह तो आप ही पढ़ कर बता सकते हैं।

अब जो हदाइक़े बख़्शिश का यह उर्दू कलाम मअ मअना के आपके हाथ में हैं इसमें हमने उर्दू की सब नातें मनक़बतें दीं हैं और आख़िर में हर नात व मनक़बत के लफ़्ज़ी मअना भी दिए हैं हालांकि सिर्फ़ लफ़्ज़ी मअना से हर नात के मतलब को हल नहीं किया जा सकता। अशआर को समझने के लिए इल्म होना भी ज़रूरी है। आलाहज़रत के अशआर किसी न किसी आयत या हदीस की तर्जमानी हैं और कलाम तभी समझ में आएगा जब उन आयात या अहादीस का इल्म हो और सिर्फ़ इल्म ही नहीं बल्कि उसका मफ़हूम अच्छी तरह समझता हो।

हमने तो लफ़्ज़ी मअना देकर आपकी थोड़ी सी मदद की है

क्यूँकि हिन्दी में शरहे को समझाना तक़रीबन नामुमकिन काम है। फिर भी अगर आप शरहे समझने का शौक़ रखते हैं तो उर्दू सीख कर हदाइके बख़्शिश की शरहा जो 'सुख़ने रज़ा' हज़रत मौलाना मुहम्मद अव्वल क़ादिरी रज़वी सम्भली साहब ने की है तो इसे पढ़ें।

सबसे पहले हमने सारी नातों को पेश कर दिया है ताकि जो हज़रात मीलादे पाक की महफ़िल में नात पढ़ रहे हों तो उनका तसल्सुल न टूटे और मअना सब बाद में हर नात का हैडिंग देकर लिखे गए हैं और हर शेर के तक़रीबन हर थोड़े से भी मुश्किल लफ़्ज़ के मअना लिख दिए हैं और तीन तीन सितारे लगा कर हर शेर को अलग अलग दिखाने की कोशिश की है और जहाँ कहीं भी कोई शेर बहुत मुश्किल है वहाँ हमने यह लिख दिया है कि इसे किसी आलिम से समझें। सही मअना में तो नात को समझने के लिए तो किसी आलिम ही के पास जाना चाहिए तभी पूरा लुत्फ़ उठाया जा सकता है।

हमने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की कि उन्हीं मअना को दिया जाए जो वहाँ मुराद है फिर भी अगर हमसे कोई ग़लती हो गई हो तो हमें आगाह ज़रूर करें और दुआ करें अल्लाह व रसूल हमें माफ़ फ़रमायें।

मुहम्मद अहमद

हदाइके बख़्शिश पढ़ने से पहले इसे एक बार ज़रूर पढ़ें

अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नात क़ुर्आन में अपने ही महबूब की ज़बानी फ़रमाई, तमाम नबियों ने आपकी तारीफ़ और नात पढ़ी, तमाम फ़िरिश्ते आप पर दुरूद व सलाम पढ़ते हैं आपकी नात पढ़ते हैं, तमाम सहाबा, अल्लाह के तमाम वली आपकी नात पढ़ते हैं हत्ताकि तमाम मख़्लूक़ कहीं न कहीं यहाँ तक कि काफ़िर व मुरतद भी आपकी नात पढ़ते हैं। हालांकि काफ़िर व मुरतद का पढ़ना सिर्फ़ दिखावे का है जिसका उन्हें कोई अज्र नहीं मिलता है क्यूँकि नात में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वो फ़ज़ाइल भी ज़िक्र किए जाते हैं जिनका काफ़िर व मुरतद इन्कार करके काफ़िर व मुरतद हो गए इस लिए सवाब से महरूम हैं और वैसे भी हर नेक अमल के अज्र के लिए ईमान शर्त है। काफ़िर व मुरतद का नात पढ़ना दुनिया को दिखाना है कि हम भी उन्हें चाहते हैं जबकि हक़ीक़त में वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से बुग़्ज व कीना रखते हैं। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि मुतअल्लिक़ अगर सही अक़ाइद नहीं रखेंगे तो न तो नात कह सकते हैं न पढ़ने का लुत्फ़ उठा सकते हैं न ईमान कामिल होगा और अलहम्दुलिल्लाह यह सिर्फ़ सुन्नी सहीहुल अक़ीदा को ही हासिल है।

आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआला अन्हु के नातिया कलाम को समझना कभी तो आसान और कभी बहुत ही मुश्किल होता है क्यूँकि आलाहज़रत ख़ुद फ़रमाते हैं कि मैंने नात कहना क़ुर्आन व हदीस से सीखी तो कभी कभी आलाहज़रत के नातिया अशआर को समझने के लिए उन आयात व हदीस का समझना ज़रूरी हो जाता है।

हमने यहाँ आलाहज़रत के दीवान हदाइके बख़्शिश के उर्दू कलाम को हिन्दी में पेश किया और साथ साथ तक़रीबन हर मुश्किल लफ़्ज़ के मअना आख़िर में लगा दिए लेकिन हर शेर को सिर्फ़ लफ़्ज़ी मअना जान लेने से भी समझा नहीं जा सकता क्यूँकि किसी शेर में क़ुर्आन की किसी आयत की तरफ़ इशारा है तो कहीं हदीस की तरफ़ इशारा है तो कहीं किसी मोजिज़े की तरफ़ इशारा है तो कहीं आपके किसी वस्फ़ की तारीफ़ है तो कहीं आपके किसी मुबारक उज़्व की तारीफ़ है।

अगर हम इस किताब में शुरू या आख़िर में उन सारी आयात, अहादीस या मोजिज़ात को जमा करके कुछ लिखना चाहें और इसी किताब में लगा दें तो किताब बहुत ज़ख़ीम हो जाएगी। इसलिए गुज़ारिश यह है कि मुश्किल अशआर को किसी आलिम से समझें क्यूँकि क़ुर्आन की किस आयत या हदीस के किस मफ़हूम की तरफ़ इशारा है यह सबसे बेहतर आलिम ही समझा सकता है आम आदमी शायद नही समझा सकता।

अगर हम वाक़ई नात को पढ़ने और समझने का लुत्फ़ उठाना चाहते हैं तो हमें हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सीरत पर कोई अच्छी किताब ज़रूर पढ़ना चाहिए। हिन्दी वालों के लिए सबसे बेहतर किताब मौलाना आज़मी साहब रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की लिखी किताब "सीरते मुस्त़फ़ा" है। सीरत पर लिखी किताब पढ़ने के बाद हमें सरकार की पैदाइश से लेकर वफ़ात तक के हालात, तारीख़, इसलाम का धीरे धीरे फैलना, जंगों का होना, सहाबा का तकलीफ़ उठाते हुए ईमान लाना पता चलता है और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के औसाफ़े करीमा के बारे में भी मालूमात होती है तभी नात ज़्यादा आसानी से समझ में आती है कि हम हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की जो भी तारीफ़ कर रहे हैं वाक़ई वह उसके हक़दार हैं।

किसी नात में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की आँखों की ख़ूबसूरती की तारीफ़ होगी तो कहीं यह भी बताया जाएगा कि यह आँख अर्श से फ़र्श तक सब देखती है और इस मुबारक आँख ने न सिर्फ़ तमाम मख़लूक़ को देख रखा है बल्कि अल्लाह तआ़ला को भी देखा है। कहीं आपके मुबारक कान की तारीफ़ हो रही होगी तो हो सकता है यह भी बताया जा रहा हो कि ये कान वह धीमी से धीमी आवाज़ सुनते हैं जो दूसरी मख़लूक़ नहीं सुन पाती बल्कि बादे वफ़ात भी हम गुनहगारों का दुरूद व सलाम आप सुनते हैं चाहे हम कितना ही हल्के पढ़ें या दिल ही दिल में पढ़ें। कहीं आपके दहने मुबारक की तारीफ़ हो रही होगी तो यह बताया जा रहा होगा कि इस दहन में जो ज़बान है उससे एक हुकूमत जारी है और अल्लाह तआ़ला ने इसे कुन की कुंजी का इख़्तेयार दे रखा है और जो भी आप अपनी ज़बान से फ़रमा दें हो जाता है। कहीं आपके मुबारक हाथ की तारीफ़ हो रही होगी तो बताया जा रहा होगा कि यह वह हाथ हैं कि जिधर उठ जायें मालामाल कर दें और यह वह उगंलियाँ हैं कि इनसे वह पानी जारी

हो जाता है जो ज़मज़म शरीफ़ और जन्नत के पानी से भी बेहतर है। कहीं आपके मुबारक बालों की तारीफ़ होगी तो कहीं मोहरे नुबुव्वत की। कहीं आपके मुबारक पाँव की तारीफ़ इस अन्दाज़ से होती है कि उनके मुबारक पाँव को बोसा दे सकूँ या आपकी नालैन मुबारक को सर पर ताज की तरह सजा लूँ। कहीं आपकी पल्कों की तारीफ़ होगी तो कहीं अबरू की तो कहीं होटों की तो कहीं दन्दाने मुबारक की तो कहीं दिल व दिमाग़ के बारे में कहा जा रहा होगा कि यह समझ से बाहर है क्यूँकि इन्हें क़ियामत तक के सब हालात मालूम हैं और वह मालूम है जो किसी को नहीं मालूम और क़ुर्आन का सही इल्म इन्हें ही है क्यूँकि क़ुर्आन इन पर उतरा है।

नातिया कलाम को समझने के लिए नीचे लिखें अक़ाइद को जानना और मानना बेहद ज़रूरी है :-

1. अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ही के लिए सब कुछ पैदा फ़रमाया :-

हदीसे क़ुदसी है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ महबूब! अगर आपको पैदा न करना होता तो आसमान को पैदा न करता, आपको पैदा न करता तो अपना रब व इलाह (माबूद, पूजा के क़ाबिल) होना ज़ाहिर न करता।

आप तमाम मख़्लूक़ के पैदा होने की वजह हैं यानी 18 हज़ार क़िस्म की तमाम मख़्लूक़ आप ही के लिए पैदा की गई जब तक आप पैदा न हुए कुछ पैदा न हुआ था अगर आप न हों यह जहान भी न रहेगा इस जहान का वुजूद आपके वुजूद से है।

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने सबसे पहले मेरा नूर पैदा फ़रमाया और मेरे नूर से तमाम मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया।

2. आप जैसा कोई नहीं :- बाज़ बदमज़हब फ़िरक़े हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को अपने जैसा बशर कहते है लेकिन आप इन्सान हैं बशर हैं मगर हम जैसे बशर हरगिज़ नहीं। इस बात को समझाने के लिए हवालों की ज़रूरत भी नहीं हर समझदार मुसलमान जानता है कि आपके मिस्ल कोई नहीं। हज़रते जिब्रील फ़रमाते हैं मैं दुनिया के हर हर कोने में गया मगर आप जैसा कोई नहीं पाया।

3. आप सय्यदुल अम्बिया हैं :-

तमाम मख़्लूक़ में अम्बिया सबसे अफ़ज़ल हैं और आप सब नबियों के सरदार हैं।

4. सबका वसीला हुज़ूर हैं :-

हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह देने वाला है मैं क़ासिम यानी बांटने वाला हूँ। जिसको भी जो मिलता है उनके वसीले से मिलता है और मिलेगा। वसीला और बुज़ुर्गों से मदद मांगने के सुबूत में "इस्लाहे फ़िक्रो इतिक़ाद" अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही साहब की देखें। "अलइस्तिमदाद" आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की। "निदाए या रसूलल्लाह" आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की।

5. हुज़ूर मालिक व मुख़्तार हैं :-

अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक है और हुज़ूर अल्लाह की अता से हर चीज़ के मालिक व मुख़्तार हैं बल्कि मुख़्तारे कुल हैं। अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर को इख़्तेयार दिया है जिसे जो चाहें अता करें। हर वली व नबी आप ही से फ़ैज़ पाकर किसी मरतबे पर पहुँचता है। हुज़ूर के मालिक व मुख़्तार होने के सुबूत में आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की किताब "अलअम्नो वल उला" देखें। मौलाना जलालुद्दीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की किताब "बुज़ुर्गों के अक़ीदे" ज़रूर पढ़ें। इस किताब में तक़रीबन यह सारे अक़ाइद को हवाले के साथ बताया गया है कि हमारे बुज़ुर्गों के भी यही अक़ीदे थे।

6. आप ज़िन्दा हैं और मदद फ़रमाने वाले हैं :-

आप बादे विसाल भी ज़िन्दा हैं, नबियों को वादए इलाही के मुताबिक़ एक आन को मौत आती है। आप मदद फ़रमाते हैं, बलाओं व वबाओं को दूर फ़रमाते हैं। हुज़ूर से डाइरेक्ट मांगना भी जाइज़ है। आप जिसे जो चाहें अल्लाह के हुक्म से अता फ़रमाते हैं। आप मुर्दों तक को ज़िन्दा फ़रमाते हैं।

7. आपको इल्मे ग़ैब अता हुआ :-

तमाम नबियों को ग़ैब का इल्म दिया जाता है जैसा कि अल्लाह का फ़रमान है कि अल्लाह किसी को ग़ैब का इल्म नहीं अता करता मगर चुन लेता है जिसे चाहे और उन्हें ग़ैब दिया जाता है। और बेशक चुनने में सबसे ज़्यादा हक़दार अम्बिया ही होते हैं और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तो तमाम नबियों के इमाम हैं। आपको तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इल्म और इल्मे ग़ैब अता हुआ यहाँ तक कि ख़ुद अल्लाह पाक ने अपने आपको भी आपसे नहीं छुपाया जबकि हर चीज़ से अपने आपको अल्लाह

तआ़ला ने छुपाया। आप क़ियामत तक की हर छुपी हुई बात जानते हैं बल्कि आपने क़ियामत, जन्नत व दोज़ख़ तक की बातें आने से पहले ही हमें बता दीं। नबियों और औलियाए किराम को भी जो इल्म या इल्मे ग़ैब अता होता है वह आप ही के वसीले और तुफ़ैल से अता होता है। इसके सुबूत में क़ुर्आन की बहुत सी आयतें और हदीसें आई हैं किसी आलिम से मालूम करें। इस मसअले को पूरी तरह समझने के लिए किताबे "अद्दौलतुल मक्किया" "इम्बाउल मुस्तफ़ा" और "इल्मे ग़ैबे रसूल पढ़े"

7. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हाज़िर व नाज़िर हैं :-

हमारे हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हाज़िर हैं व नाज़िर है। इसका मतलब यह है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम जब चाहें अपने जिस्म के साथा हर जगह हाज़िर हो सकते हैं और आप अपनी आंखों से सब कुछ देख रहे हैं यानी नाज़िर है। अर्श से फ़र्श तक आप हर जगह हाज़िर व नाज़िर है। हाज़िर व नाज़िर के सुबूत में मौलाना मुह़म्मद फ़ैज़ अह़मद उवैसी की किताब "हाज़िर व नाज़िर" देखें

8. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की महब्बत और शफ़ाअत :-

बिला शक व शुबह हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपने हर उम्मती से यानी हमसे इतनी महब्बत फ़रमाते हैं जितनी हम अपने आप से नहीं करते। वक़्ते पैदाइश आप हमें याद कर रहे हैं, ग़ारे हिरा में रातों को उम्मत की याद में आंसू बहा रहें, शबे मेराज उम्मत की आसानी के लिए अल्लाह से अर्ज़ कर रहे हैं। वक़्ते वफ़ात भी हमारी ही याद है। क़ब्र में हमें याद कर रहे हैं हमारी मदद फ़रमा रहे हैं। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअत क़ुर्आन व हदीस से पूरी तरह साबित है यह हर गुनहगार उम्मती जानता है क्यूँकि अपने मतलब की बातें सब ढूंढ लेते हैं। शफ़ाअत सिर्फ़ उनके लिए नहीं जो शफ़ाअत का इन्कार करें। यहाँ तवालत की वजह से हदीसें नक़ल नहीं कर रहे जिसे शफ़ाअत की हदीसें देखना हो वह आलाहज़रत का रिसाला "चालीस अहादीसे शफ़ाअत" पढ़े जो हिन्दी में भी छप चुका है। हमें भी चाहिए कि हम हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से ख़ूब महब्बत करें यह उनका हक़ और अल्लाह का फ़रमान है।

9. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मोजिज़ात :-

वह काम जो अक़्ल की सोंच से बाहर हो और किसी नबी

से ज़ाहिर हो उसे मोजिज़ा कहते हैं। औलिया अल्लाह से ज़ाहिर होने वाली ख़िलाफ़े आदत बात को करामत कहते हैं। शैतान या काफ़िर की तरफ़ से ज़ाहिर ऐसी बात को इस्तिदराज कहते हैं। बाज़ नातों में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मोजिज़ात का ज़िक्र होता है अगर हम उन मोजिज़ात से वाक़िफ़ न हों तो वह शेर हमारी समझ में नहीं आएगा जिसमें मोजिज़ा का ज़िक्र होगा। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सारे मोजिज़ात का लिखना नामुमकिन है और अगर ढूंढ कर मोजिज़ात लिखे भी जायें तो एक ज़ख़ीम किताब तैयार हो जाएगी। यहाँ पर हम मोजिज़ात के सिर्फ़ उनवान (हैडिंग) दे रहे हैं सीरत की किताबों से मोजिज़ात की तफ़सील पढ़ें।

1. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मेराज को जाना।
2. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का चाँद को दो टुकड़े करना और बचपन में चाँद से खिलौने की तरह खेलना।
3. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का डूबे हुए सूरज को फेरना।
4. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का पेड़ों से अपनी रिसालत की गवाही दिलाना।
5. पत्थरों का आपको सलाम करना।
6. पेड़ों का आपको सजदा करना।
7. जानवरों का आपको सजदा करना।
8. कंकरियों से काफ़िर की बन्द मुट्ठी में कलिमा पढ़वाना।
9. सत्तर सहाबा को एक ही प्याले से दूध पिलाना।
10. लाठी को रौशन कर देना।
11. पेड़ की टहनी को तलवार बना देना।
12. बादल का आप पर साया करना।
13. इल्मे ग़ैब का होना।
14. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जो पेशीनगोइयाँ की उनका क़ियामत तक सच होते रहना।
15. पहाड़ों का आपको सलाम करना।
16. हिलते पहाड़ का आपकी ठोकर से रूक जाना।
17. काफ़िरों की तरफ़ मुट्ठी भर ख़ाक फेंक कर साफ़ बच कर निकल जाना।
18. बे दूध की बकरी का दूध देना।
19. दूध पीते बच्चे का आपकी रिसालत की गवाही देना।
20. हड्डियों से बकरी ज़िन्दा करना।

21. गोह (एक जानवर का नाम) का आपके हुक्म से आपकी नुबुव्वत की गवाही देना।
22. हज़रते उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की रोटियों में बरकत।
23. हज़रते जाबिर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की खजूरों में बरकत से उनका क़र्ज़ का अदा होना।
24. हज़रते अबू हुरैरह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की थैली में बरकत होना।
25. हज़रते अबू हुरैरह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की क़ुव्वते हाफ़िज़ा का ऐसा बढ़ जाना कि आपको सबसे ज़्यादा हदीसें याद होना।
26. थोड़े खाने को सैकड़ों लोगों को खिलाना।
27. आंखों की बीमारी और ज़हर का लुआबे दहन से सही करना।
28. टूटी हड्डी हाथ फेर कर दुरुस्त कर देना।
29. दम कर के तलवार का ज़ख़्म ठीक करना।
30. अंधे को ठीक करना।
31. गूंगे को ठीक करना।
32. जुनून ठीक करना।
33. हज़रते क़तादह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की जंग में बाहर निकल आई आँख को फिर से ठीक कर देना।
34. जला हुआ ठीक करना।
35. भूल की बीमारी दुरुस्त करना।
36. आपका साया न होना।
37. आपका अर्श से लेकर ज़मीन की तहों तक देखना।
38. आपके कानों का बारीक आवाज़ को सुनना बल्कि बादे विसाल भी सुनना।
39. उंगलियों से पानी जारी हो जाना।
40. अंधेरे में मुस्कुरा कर अपने मुबारक दांतों से रोशनी पैदा कर देना।
41. आपके पसीने में मुश्क से भी बेहतर ख़ुशबू होना।
42. आपका कुर्ता कभी मैला न होना।
43. आपकी फ़साहत व बलाग़त से लोगों का हैरान हो जाना।
44. मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाना और मुर्दा दिल ज़िन्दा फ़रमाना।
45. जिन्न का इसलाम क़बूल करना।
46. जिन्नों का सलाम व पैग़ाम।

47. जिन्न का आपके पास सांप की शक्ल में आना।
48. जिन्न का आपके लिए दूसरे जिन्न का क़त्ल करना।
49. जंगे ख़न्दक़ में आंधी के ज़रिये मदद आ जाना।
50. आग का आपके हुक्म से न जलाना।
51. दुआओं का क़बूल होना भी आपके मोजिज़ात से है मसलन क़ुरैश पर क़हत का अज़ाब, क़ुरैश के सरदारों की हलाकत, आपकी दुआ से पानी बरसना, मदीने की आब व हवा अच्छी हो जाना, बूढ़े का जवान हो जाना, औलाद में बरकत, लड़की का क़ब्र से निकलना, पकी हुई बकरी ज़िन्दा होना वग़ैरह वग़ैरह --- और आज भी आप जिसके लिए दुआ फ़रमा दें वह ज़रूर क़बूल होती है।
52. यूँ तो हज़ारों मोजिज़ात है जिनकी तादाद अल्लाह ही जाने आख़िर में यह बताना भी ज़रूरी है कि क़ुर्आन भी एक मोजिज़ा है हमारे आक़ा का जो हमेशा महफ़ूज़ व तहरीफ़ से पाक है और हमेशा रहेगा।

आक़ाए दो आलम स़ल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के चन्द ख़साइसे कुबरा

चन्द ख़ुसूसियात आपकी और पेश की जाती हैं हांलाकि इनमें से कुछ ऊपर गुज़र भी चुकीं लेकिन एक बार फिर ज़हननशीन कर लें।

1. आपका पैदाइश के एतबार से 'अव्वलुल अम्बिया' यानी सबसे पहले नबी होना जैसा कि हदीस शरीफ़ म हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम को उस वक़्त नुबुव्वत मिल चुकी थी जबकि हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम जिस्म व रूह की मन्ज़िलों से गुज़र रहे थे।
2. आपका आख़िरी नबी होना।
3. तमाम मख़्लूक़ आपके लिए पैदा हुई।
4. आपका मुक़द्दस नाम अर्श और जन्नत की पेशानियों पर तहरीर किया गया।
5. तमाम आसमानी किताबों में आपकी बशारत दी गई।
6. आपकी विलादत के वक़्त तमाम बुत औंधे होकर गिर पड़े।
7. आपका शक़्क़े सदर हुआ यानी जीब्रीले अमीन ने आपका सीनए मुबारक चीर दिया और दिल निकाल कर उसको ज़मज़म शरीफ़ से धोकर फिर दुरुस्त कर दिया।
8. आपको मेराज का शरफ़ अता किया गया और आपकी सवारी के लिए बुराक़ पैदा किया गया।

9. आप पर नाज़िल होने वाली किताब तब्दील व तहरीफ़ से महफ़ूज़ कर दी गई यानी क़ुर्आने पाक में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। क़ियामत तक क़ुर्आन की बक़ा व हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे करम पर ली।

10. अपको आयतुल कुर्सी अता की गई।

11. आपको तमाम ज़मीनी ख़ज़ानों की कुंजियाँ अता कर दी गई यानी आपको अल्लाह तआ़ला ने मालिक बना दिया।

12. आपको जामेउल कलिम के मोजिज़े से सरफ़राज़ किया गया यानी आप छोटे जुमलों में वह बात कह देते जो कोई दूसरा नहीं कह सकता और अक़्ल की समझ से यह बात बाहर होती कि ऐसी बात कैसे कह दी।

13. आपको रिसालते आम्मा के शरफ़ से मुमताज़ किया गया यानी आप नबियों, फ़िरिश्तों, इन्सानों और जिन्नों सभी के रसूल हैं।

14. आपकी सच्चाई को साबित करने के लिए आपको चाँद के दो टुकड़े करने का मोजिज़ा अल्लाह तआ़ला ने अता फ़रमाया।

15. आपके लिए माले ग़नीमत को अल्लाह तआ़ला ने हलाल कर दिया।

16. आपके लिए अल्लाह तआ़ला ने तमाम ज़मीन को मस्जिद बना दिया यानी हर पाक जगह पर आदमी नमाज़ पढ़ सकता है और उससे पाकी हासिल कर सकता है यानी तयम्मुम करना मिट्टी से जाइज़ किया गया।

17. आपके बाज़ मोजिज़ात मसलन क़ुर्आन मजीद क़ियामत तक बाक़ी रहेंगे।

18. अल्लाह तआ़ला ने तमाम अम्बिया को उनका नाम लेकर पुकारा मगर आपको अच्छे अच्छे अल्क़ाब से पुकारा।

19. अल्लाह तआ़ला ने आपका सर 'हबीबुल्लाह' के लक़ब से बलन्द फ़रमाया।

20. अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने पाक में आपकी रिसालत, आपकी हयात, आपके शहर आपके ज़माने की क़सम याद फ़रमाई।

21. आप तमाम औलादे आदम के सरदार हैं।

22. आप अल्लाह तआ़ला के दरबार में अकरमुल ख़ल्क़ हैं यानी तमाम मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाले हैं।

23. क़ब्र में आपकी ज़ात के बारे में मुन्कर नकीर सवाल करेंगे।

24. आपके बाद आपकी बीवियों के साथ निकाह करना हराम ठहराया गया।

25. हर नमाज़ी पर वाजिब कर दिया गया कि नमाज़ की हालत में "अस्सलामुअ़लैका या अय्युहन्नबिय्यु" कह कर आपको सलाम करे।

26. अगर किसी नमाज़ी को नमाज़ की हालत में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पुकारें तो वह नमाज़ छोड़ कर आपकी पुकार पर दौड़ पड़े। यह उस पर वाजिब है और ऐसा करने से उसकी नमाज़ टूटेगी भी नहीं यानी जब हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से बात कर ले तो फिर वहीं से नमाज़ पढ़े जहाँ से छोड़ी थी।

27. अल्लाह तआ़ला ने अपनी शरीअत का आपको मुख़्तार बना दिया है। आप जिसके लिए जो चाहें हलाल फ़रमा दें और जिसके लिए जो चाहें हराम फ़रमा दें। मसलन हज़रते सुराक़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिए आपने सोने के कंगन पहनना हलाल कर दिए, एक आराबी के लिए तीन ही वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ फ़रमा दी, मौला अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिए हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के होते दूसरा निकाह हराम फ़रमा दिया। ऐसे और भी वाक़ियात हैं।

28. आपके मिम्बर और क़ब्रे अनवर के दरमियान की ज़मीन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

29. सूर फूंकने पर सबसे पहले आप अपनी क़ब्रे मुनव्वर से बाहर तशरीफ़ लायेंगे।

30. आपको मक़ामे महमूद अता किया गया।

31. आपको शफ़ाअते कुबरा जैसी इज़्ज़त से नवाज़ा गया।

32. आपको क़ियामत के दिन लिवाउल ह़म्द अता किया गया। लिवाउल ह़म्द एक झंडा है जो रोज़े क़ियामत आपको अता होगा।

33. आप सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।

34. आपको हौज़े कौसर अता किया गया।

35. क़ियामत के दिन हर शख़्स का नसब व तअल्लुक़ मुन्क़ता हो जाएगा मगर आपका नसब व तअल्लुक़ मुन्क़ता न होगा।

36. आपके सिवा किसी नबी के पास हज़रते इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम नहीं उतरे।

37. आपके दरबार में बलन्द आवाज़ से बोलने वाले के नेक आमाल बरबाद कर दिए जाते हैं।

38. आपको हुजरों के बाहर से पुकराना हराम कर दिया गया।

39. आपकी अदना सी गुस्ताख़ी करने वाले की सज़ा क़त्ल है।

40. आपको तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से ज़्यादा मोजिज़ात अता किए गए।

आख़िर में वही कहना है कि नातों को समझने के लिए सरकार की सीरत को समझना होगा जितना ज़्यादा आप उनके बारे

में पढ़ेंगे उतना ही ज़्यादा नातिया कलाम समझ में आता जाएगा। और मनक़बत को समझने के लिए उन बुज़ुर्ग जिनकी शान में मनक़बत लिखी गई हो उनके बारे में मालूमात होने ही से मनक़बत पढ़ने और समझने में मदद मिलती है मसलन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मनक़बत समझने से पहले उनकी सीरत पर कोई किताब ज़रूर पढ़ें, हिन्दी वाले हमारी किताब 'हमारे ग़ौसे आज़म' पढ़ सकते हैं जो कि 300 पेज की है। अल्लाह व रसूल आपकी मदद फ़रमायें, मेरे लिए भी दुआ करें के मुझे भी उनकी नातें समझने की अक़्ल अता हो और नेक अमल की तौफ़ीक़ मिले और ईमान पर ख़ात्मा हो।

मुहम्मद अहमद
सफ़र 1427

गुज़ारिश

इस किताब से नाते रसूल पढ़ने व सुनने वालों से एक गुज़ारिश यह है कि जब भी इस किताब से नाते सुनें तो हो सके तो हर शेर पर दुरूदे पाक पढ़ें चाहे वह छोटा ही दुरूद क्यूँ न हो। यह न हो सके तो थोड़ी थोड़ी देर के बाद दुरूद पढ़ें और जब कोई शेर बहुत ही ज़्यादा पसन्द आये तो 11 मरतबा दुरूद पढ़ें और इसका सवाब दिल ही दिल में तमाम मुसलमानों को बख़्श दें और मुझ नाचीज़ को भी ज़रूर याद रखें।

بسم الله الرحمن الرحيم

صَلَّ اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اٰلِهٖ صَلَّ اللّٰهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ صَلَاةً وَّ سَلَامًا عَلَيْکَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه ٥

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ज़रियए क़ादिरीया (हि. 1305)

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल आलमीना व आलिही वबनिही वहिज़बिही अजमईन

वाह क्या जूद ो करम है शहे बतहा तेरा

वाह क्या जूद ो करम है शहे बतहा तेरा
'नहीं' सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा
धारे चलते हैं अता के वो है क़तरा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वो है ज़र्रा तेरा
फ़ैज़ है या शहे तसनीम निराला तेरा
आप प्यासों के तजस्सुस में है दरिया तेरा
अग़निया पलते हैं दर से वो है बाड़ा तेरा
अस्फ़िया चलते हैं सर से वो है रस्ता तेरा
फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरैरा तेरा
आसमाँ ख़्वान ज़मीं ख़्वान ज़माना मेहमान
साहिबेख़ाना लक़ब किसका है तेरा तेरा
मैं तो मालिक ही कहूँगा के हो मालिक के हबीब
यानी महबूब ो मुहिब में नहीं मेरा तेरा
तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुँह क्या देखें
कौन नज़रों में चढ़े देख के तलवा तेरा
बहरे साइल का हूँ साइल न कुएं का प्यासा
ख़ुद बुझा जाए कलेजा मेरा छींटा तेरा
चोर हाकिम से छुपा करते हैं याँ इसके ख़िलाफ़
तेरे दामन में छुपे चोर अनोखा तेरा

आंखें ठंडी हों जिगर ताज़े हों जानें सैराब
सच्चे सूरज वह दिल आरा है उजाला तेरा
दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका सही भारी है भरोसा तेरा
एक मैं क्या मेरे इस्याँ की हक़ीक़त कितनी
मुझसे सौ लाख को काफ़ी है इशारा तेरा
मुफ़्त पाला था कभी काम की आदत न पड़ी
अब अमल पूछते हैं हाए निकम्मा तेरा
तेरे टुकड़ों से पले ग़ैर की ठोकर पे न डाल
झिड़कियाँ खायें कहाँ छोड़ के सदक़ा तेरा
ख़्वार ो बीमार ो ख़ताकार ो सियाहकार हूँ मैं
राफ़ेओ नाफ़ेओ शाफ़ेअ लक़ब आक़ा तेरा
मेरी तक़दीर बुरी हो तो भली कर दे के है
महवो इसबात के दफ़्तर पे कड़ोड़ा तेरा
तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें
के ख़ुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा
किसका मुँह तकिए कहाँ जाइये किससे कहिए
तेरे ही क़दमों पे मिट जाए ये पाला तेरा
तूने इसलाम दिया तूने जमाअत में लिया
तो करीम अब कोई फिरता है अतिय्या तेरा
मौत सुनता हूँ सितम तल्ख़ है ज़हर-आबए नाब
कौन ला दे मुझे तलवों का .ग़ुसाला तेरा
दूर क्या जानिये बदकार पे कैसी गुज़रे
तेरे ही दर पे मरे बेकस ो तन्हा तेरा
तेरे सदक़े मुझे इक बूंद बहुत है तेरी
जिस दिन अच्छों को मिले जाम छलकता तेरा
ह-रमो तैबा अ ो बग़दाद जिधर कीजिए निगाह
जोत पड़ती है तेरी नूर है छनता तेरा
तेरी सरकार में लाता है **"रज़ा"** उसको शफ़ीअ़
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

वस्ले दोम दर मनक़बते आक़ाए अकरम हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

वाह क्या मरतब ऐ ग़ौस है बाला तेरा

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊँचे ऊँचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने के है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वह है तलवा तेरा
क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा
शेर को ख़तरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
तू हुसैनी हसनी क्यूँ न मुहियुद्दीं हो
ऐ ख़िज़्र मजमए बहरैन है चश्मा तेरा
क़समें दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा
मुस्तफ़ा के तने बे साए का साया देखा
जिसने देखा मेरी जाँ जलवए ज़ेबा तेरा
इब्ने ज़हरा को मुबारक हो अ़रूसे क़ुदरत
क़ादिरी पायें तसद्दुक़ मेरे दूल्हा तेरा
क्यूँ न क़ासिम हो के तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूँ न क़ादिर हो के मुख़्तार है बाबा तेरा
न-बवी मेंह अ-लवी फ़स्ल बतूली गुलशन
हसनी फूल हुसैनी है महकना तेरा
न-बवी ज़िल्ल अ-लवी बुर्ज बतूली मंज़िल
हसनी चाँद हुसैनी है उजाला तेरा
न-बवी ख़ुर अ-लवी कोह बतूली मादन
हसनी लाल हुसैनी है तजल्ला तेरा
बहर-ो बर शहर-ो क़ुरा सहल-ो हज़न दश्त-ो चमन
कौन से चक पे पहुँचता नहीं दावा तेरा
हुस्ने निय्यत हो ख़ता फिर कभी करता ही नहीं
आज़माया है यगाना है दोगाना तेरा
अर्ज़े अहवाल की प्यासों में कहाँ ताब मगर
आंखें ऐ अब्रे करम तकती हैं रस्ता तेरा
मौत नज़दीक, गुनाहों की तहें, मैल के ख़ोल
आ बरस जा के नहा धो ले ये प्यासा तेरा

आब आमद वो कहे और मैं तयम्मुम बरख़ास्त
मुश्ते ख़ाक अपनी हो और नूर का अहला तेरा
जान तो जाते ही जाएगी क़यामत ये है
के यहाँ मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा
तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझको निसबत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
मेरी क़िस्मत की क़सम खायें सगाने बग़दाद
हिन्द में भी हूँ तो देता रहूँ पहरा तेरा
तेरी इज़्ज़त के निसार ऐ मेरे ग़ैरत वाले
आह सद आह के यूँ ख़्वार हो बर्दा तेरा
बद सही चोर सही मुजरिम ो नाकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा
मुझको रुसवा भी अगर कोई कहेगा तो यूंही
के वही न वो **"रज़ा"** बन्दए रुसवा तेरा
हैं **"रज़ा"** यूँ न बिलक तू नहीं जय्यिद तो न हो
सय्यिदे जय्यिदे हर दहर है मौला तेरा
फ़ख्रे आक़ा में **"रज़ा"** और भी एक नज़्मे रफ़ीअ
चल लिखा लायें सनाख़्वानों में चेहरा तेरा

वस्ले सोम दर हुस्ने मुफ़ाख़रत अज़ सरकारे क़ादिरिय्यत रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

तू है वो ग़ौस के हर ग़ौस है शैदा तेरा
तू है वो ग़ैस के हर ग़ैस है प्यासा तेरा
सूरज अगलों के चमकते थे चमक कर डूबे
उफ़ुक़े नूर पे है मेहर हमेशा तेरा
मुर्ग़ सब बोलते हैं बोल के चुप रहते हैं
हाँ असील एक नवा-संज रहेगा तेरा
जो वली क़ब्ल थे या बाद हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा
ब-क़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ैन ो ह़रीम
कि हुआ है न वली हो कोई हमता तेरा

तुझसे और दहर के अक़्ताब से निसबत कैसी
क़ुतुब ख़ुद कौन है ख़ादिम तिरा चेला तेरा
सारे अक़्ताबे जहाँ करते हैं काबे का तवाफ़
काबा करता है तवाफ़े दरे वाला तेरा
और परवाने हैं जो होते हैं काबे पे निसार
शमअ् इक तू है कि परवाना है काबा तेरा
श–जरे सर्व सही किसके उगाए तेरे
मारिफ़त फूल सही किसका खिलाया तेरा
तू है नौशाह बराती है ये सारा गुलज़ार
लाई है फ़स्ले समन गूंध के सेहरा तेरा
डालियाँ झूमती हैं रक़्से ख़ुशी जोश पे है
बुलबुलें झूलतीं हैं गाती हैं सेहरा तेरा
गीत कलियों की चटक ग़ज़लें हज़ारों की चहक
बाग़ के साज़ों में बजता है तराना तेरा
सफ़े हर शजरा में होती है सालामी तेरी
शाख़ें झुक झुक के बजा लाती हैं मुजरा तेरा
किस गुलिस्ताँ को नहीं फ़स्ले बहारी से नियाज़
कौन से सिलसिले में फ़ैज़ न आया तेरा
नहीं किस चाँद की मन्ज़िल में तिरा जल्वए नूर
नहीं किस आइने के घर में उजाला तेरा
राज किस शहर में करते नहीं तेरे ख़ुद्दाम
बाज किस नहर से लेता नहीं दरिया तेरा
मज़रअे चिश्त ो बुख़ारा ओ इराक़ ो अजमेर
कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा
और महबूब हैं हाँ पर सभी यकसाँ तो नहीं
यूँ तो महबूब है हर चाहने वाला तेरा
उस को सौ फ़र्द सरापा ब–फ़राग़त ओढ़ें
तंग हो कर जो उतरने को हो नीमा तेरा
गर्दनें झुक गईं सर बिछ गए दिल लोट गए
कश्फ़े साक़ आज कहाँ ये तो क़दम था तेरा
ताजे फ़र्क़ उरफ़ा किस के क़दम को कहिए
सर जिसे बाज दें वो पाँव है किसका तेरा
सुक्र के जोश में जो हैं वो तुझे क्या जानें
ख़िज़्र के होश से पूछे कोई रुतबा तेरा

आदमी अपने ही अहवाल पे करता है क़यास
नशे वालों ने भला सुक्र निकाला तेरा
वो तो छोटा ही कहा चाहें कि हैं ज़ेरे ह़ज़ीज़
और हर औज से ऊँचा है सितारा तेरा
दिले अअदा को **'रज़ा'** तेज़ नमक की धुन है
इक ज़रा और छिड़कता रहे ख़ामा तेरा

वस्ले चहारुम दर मुनाफ़हते अअदा ओ इस्तिआनत अज़ आक़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

अल अमाँ क़हर है ऐ ग़ौस वो तीखा तेरा
मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा
बादलों से कहीं रुकती है कड़कती बिजली
ढालें छट जाती हैं उठता है जो तेग़ा तेरा
अक्स का देख के मुँह और बिफर जाता है
चार आईने के बल का नहीं नेज़ा तेरा
कोहे सर मुख हो तो इक बार में दो पर काले
हाथ पड़ता ही नहीं भूल के ओछा तेरा
उस पे ये क़हर कि अब चन्द मुख़ालिफ़ तेरे
चाहते हैं कि घटा दें कहीं पाया तेरा
अक़्ल होती तो ख़ुदा से न लड़ाई लेते
ये घटायें उसे मन्ज़ूर बढ़ाना तेरा
व-र-फ़अ-ना ल-का ज़िकरक का है साया तुझ पर
बोल बाला है तेरा ज़िक्र है ऊँचा तेरा
मिट गए मिटते हैं मिट जायेंगे अअदा तेरे
न मिटा है न मिटेगा कभी चर्चा तेरा
तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआ़ला तेरा
सम्मे क़ातिल है ख़ुदा की क़सम इन का इन्कार
मुन्किरे फ़ज़्ले हुज़ूर आह ये लिक्खा तेरा
मेरे सय्याफ़ के ख़न्जर से तुझे बाक नहीं
चीर कर देखे कोई आह कलेजा तेरा
इब्ने ज़हरा से तेरे दिल में हैं ये ज़हर भरे
बल बे ओ मुन्किरे बेबाक ये ज़हरा तेरा

बाज़े अशहब की ग़ुलामी से ये आँखें फिरनी
देख उड़ जाएगा ईमान का तोता तेरा
शाख़ पे बैठ के जड़ काटने की फ़िक्र में है
कहीं नीचा न दिखाए तुझे शजरा तेरा
हक़ से बद हो के ज़माने का भला बनता है
अरे मैं ख़ूब समझता हूँ मुअम्मा तेरा
सगे दर क़हर से देखे तो बिखरता है अभी
बन्द बन्दे बदन ऐ रू-बहे दुनिया तेरा
ग़रज़ आक़ा से करूँ अर्ज़ कि तेरी है पनाह
बन्दा मजबूर है ख़ातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा
हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी
दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा
जिसको ललकार दे आता हो तो उल्टा फिर जाए
जिसको चुमकार ले हिर फिर के वो तेरा तेरा
कुंजियाँ दिल की ख़ुदा ने तुझे दीं ऐसी कर
कि ये सीना हो महब्बत का ख़ज़ीना तेरा
दिल पे कन्दा हो तेरा नाम कि वो दुज़्दे रजीम
उल्टे ही पाँव फिरे देख के तुग़रा तेरा
नज़अ में, गोर में, मीज़ाँ पे सरे पुल पे कहीं
न छुटे हाथ से दामाने मुअल्ला तेरा
धूप महशर की तो जाँ सोज़ क़ियामत है मगर
मुतमइन हूँ कि मेरे सर पे है पल्ला तेरा
बहजत उन सिर की है जो 'बहजतुल असरार' में है
कि फ़लक वार मुरीदों पे है साया तेरा
ऐ **'रज़ा'** चीस्त ग़म अर जुमला जहाँ दुश्मने तुस्त
कर्दा अम मा मने ख़ुद क़िबलए हाजा तेरा

हम ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा

हम ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा
ख़ाकी तो वह आदम जदे आला है हमारा
अल्लाह हमें ख़ाक करे अपनी तलब में
ये ख़ाक तो सरकार से तमग़ा है हमारा
जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यदे आलम
उस ख़ाक पे क़ुरबाँ दिले शैदा है हमारा

ख़म हो गई पुश्ते फ़लक इस ताने ज़मीं से
सुन हम पे मदीना है वह रुतबा है हमारा
उसने लक़बे ख़ाक शहंशाह से पाया
जो हैदरे कर्रार कि मौला है हमारा
ऐ मुद्दईयो ख़ाक को तुम ख़ाक न समझे
इस ख़ाक में मदफूँ शहे बतहा है हमारा
है ख़ाक से तामीर मज़ारे शहे कौनैन
मअमूर इसी ख़ाक से क़िबला है हमारा
हम ख़ाक उड़ाएंगे जो वह ख़ाक न पाई
आबाद **"रज़ा"** जिस पे मदीना है हमारा

ग़म हो गए बेशुमार आक़ा

ग़म हो गए बेशुमार आक़ा
बन्दा तेरे निसार आक़ा
बिगड़ा जाता है खेल मेरा
आक़ा आक़ा संवार आक़ा
मंजधार पे आ के नाव डूबी
दे हाथ कि हूँ मैं पार आक़ा
टूटी जाती है पीठ मेरी
लिल्लाह ये बोझ उतार आक़ा
हल्का है अगर हमारा पल्ला
भारी है तेरा वक़ार आक़ा
मजबूर हैं हम तो फ़िक्र क्या है
तुम को तो है इख़्तियार आक़ा
मैं दूर हूँ तुम तो हो मेरे पास
सुन लो मेरी पुकार आक़ा
मुझ सा कोई ग़मज़दा न होगा
तुम सा नहीं ग़मगुसार आक़ा
गिर्दाब में पड़ गई है कश्ती
डूबा, डूबा उतार आक़ा
तुम वो कि करम को नाज़ तुम से
मैं वो कि बदी को आर आक़ा
फिर मुँह न पड़े कभी ख़िज़ाँ का
दे दे ऐसी बहार आक़ा

जिसकी मर्ज़ी ख़ुदा न टाले
मेरा है वो नामदार आक़ा
है मिल्के ख़ुदा पे जिसका क़ब्ज़ा
मेरा है वो कामगार आक़ा
सोया किए नाबकार बन्दे
रोया किए ज़ार ज़ार आक़ा
क्या भूल है उनके होते कहलायें
दुनिया के ये ताजदार आक़ा
उनके अदना गदा पे मिट जायें
ऐसे ऐसे हज़ार आक़ा
बे अब्रे करम के मेरे धब्बे
ला तग़सिलुहल बिहार आक़ा
इतनी रहमत **'रज़ा'** पे कर लो
ला यक़रबुहुल बवार आक़ा

मुहम्मद मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का

मुहम्मद मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का
नज़र आता है इस कसरत में कुछ अन्दाज़ वहदत का
यही है अस्ले आलम माद्दा ईजादे ख़लक़त का
यहाँ वहदत में बरपा है अजब हंगामा कसरत का
गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दावत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का
गुनह मग़फ़ूर, दिल रौशन, ख़ुनक आँखे, जिगर ठंडा
तआलल्लाह माहे तैबा आलम तेरी तलअत का
न रक्खी गुल के जोशे हुस्न ने गुलशन में जा बाक़ी
चटकता फिर कहाँ ग़ुंचा कोई बाग़े रिसालत का
बढ़ा ये सिलसिला रहमत का दौरे ज़ुल्फ़ वाला में
तसलसुल काले कोसों रह गया इस्याँ की ज़ुलमत का
सफ़े मातम उठे ख़ाली हो ज़िन्दाँ टूटें ज़ंजीरें
गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का
सिखाया है ये किस गुस्ताख़ ने आईना को या रब
नज़ारा रूए जानाँ का बहाना कर के हैरत का
इधर उम्मत की हसरत पर उधर ख़ालिक़ की रहमत पर

निराला तौर होगा गर्दिशे चश्मे शफ़ाअत का
बढ़ीं इस दर्जा मौजें कसरते अफ़ज़ाले वाला की
किनारा मिल गया इस नहर से दरियाए वह्दत का
ख़मे ज़ुल्फ़े नबी साजिद है मेहराबे दो अबरू में
कि या रब तू ही वाली है सियहकाराने उम्मत का
मदद ऐ जोशिशे गिरया बहा दे कोह और सहरा
नज़र आ जाए जलवा बे हिजाब उस पाक तुरबत का
हुए कमख़्वाबीए हिजराँ में सातों पर्दे कमख़्वाबी
तसव्वुर ख़ूब बांधा आँखों ने असतारे तुरबत का
यक़ीं है वक़्ते जलवा लग़ज़िशें पाए निगह पाए
मिले जोशे सफ़ाए जिस्म से पा बोस हज़रत का
यहाँ छिड़का नमक वाँ मरहमे काफ़ूर हाथ आया
दिले ज़ख़्मी नमक परवर्दा है किस की मलाहत का
इलाही मुन्तज़िर हूँ वो ख़िरामे नाज़ फ़रमायें
बिछा रखा है फ़र्श आँखों ने कमख़्वाबे बसारत का
न हो आक़ा को सजदा आदम ो यूसुफ़ को सजदा हो
मगर सद्दे ज़राएअ दाब है अपनी शरीअत का
ज़बाने ख़ार किस किस दर्द से उनको सुनाती है
तड़पना दश्ते तैबा में जिगर अफ़गारे फ़ुरक़त का
सरहाने उनके बिस्मिल के ये बेताबी का मातम है
शहे कौसर तरहहुम तिश्ना जाता है ज़ियारत का
जिन्हें मरक़द में ता हश्र उम्मती कह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उनमें सदक़ा अपनी रहमत का
वो चमकीं बिजलियाँ या रब तजल्ली–हाए जानाँ से
कि चश्मे तूर का सुर्मा हो दिल मुश्ताक़ रूयत का
'रज़ा'–ए ख़स्ता जोशे बहरे इस्याँ से न घबराना
कभी तो हाथ आ जाएगा दामन उनकी रहमत का

लुत्फ़ उनका आम हो ही जाएगा

लुत्फ़ उनका आम हो ही जाएगा
शाद हर नाकाम हो ही जाएगा

जान दे दो वादए दीदार पर
नक़्द अपना दाम हो ही जाएगा

शाद है फ़िरदौस यानी एक दिन
क़िस्मते ख़ुद्दाम हो ही जाएगा

याद रह जायेंगी ये बेबाकियाँ
नफ़्स तू तो राम हो ही जाएगा

बे निशानों का निशाँ मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

यादे गेसू ज़िक्रे हक़ है आह कर
दिल में पैदा लाम हो ही जाएगा

एक दिन आवाज़ बदलेंगे ये साज़
चहचहा कोहराम हो ही जाएगा

साइलो दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

याद अबरू करके तड़पो बुलबुलो
टुकड़े टुकड़े दाम हो ही जाएगा

मुफ़लिसो उनकी गली में जा पड़ो
बाग़े ख़ुल्द इकराम हो ही जाएगा

गर यूँही रहमत की तावीलें रहीं
मद्ह हर इल्ज़ाम हो ही जाएगा

बादाख़्वारी का समाँ बंधने तो दो
शैख़ दुर्द आशाम हो ही जाएगा

ग़म तो उनको भूल कर लिपटा है यूँ
जैसे अपना काम हो ही जाएगा

मिट कि गर यूँ ही रहा क़र्ज़े हयात
जान का नीलाम हो ही जाएगा

आक़िलो उनकी नज़र सीधी रहे
बौरों का भी काम हो ही जाएगा

अब तो लाई है शफ़ाअत अफ़्व पर
बढ़ते बढ़ते आम हो ही जाएगा

ऐ **"रज़ा"** हर काम का इक वक़्त है
दिल को भी आराम हो ही जाएगा

लमयाति नज़ीरु कफ़ी न-ज़-रिन

लम याति नज़ीरु-क फ़ी न-ज़-रिन मिस्ले तो न शुद पैदा जाना
जग राज को ताज तुरे सर सोहे तुझको शहे दोसरा जाना
अल बहरु अला वल मौजु तग़ा मन बेकस ो तूफ़ाँ होश रुबा
मंजधार में हूँ बिगड़ी है हवा मोरी नय्या पार लगा जाना

या शुम्सो नज़रति इला लैली चूँ-ब-तैबा रसी अर्ज़े बु-कुनी
तोरी जोत की झलझल जग में रची मेरी शब ने न दिन होना जाना
लका बदरुन फिल वजहिल अजमल ख़त हालए मह जुल्फ़ अब्रे अजल
तोरे चन्दन चन्द्र परो कुन्डल रहमत की भरन बरसा जाना
अना फ़ी अ-त-शियूँ व सख़ा-क अतम ऐ गेसूए पाक ऐ अब्रे करम
बरसन हारे रिमझिम रिमझिम दो बूंद इधर भी गिरा जाना
या काफ़ि-लती ज़ीदी अ-ज-लक रहमे बर हसरते तिशना लबक
मोरा जि-य-रा लरजे दरक दरक तैबा से अभी न सुना जाना
वा हन लिसुवैआतिन ज़-हबत आँ अहदे हुज़ूरे बार गहत
जब याद आवत मोहे करना परत दर्दा वह मदीने का जाना
अलक़ल्बु शजूँ वल हम्मु शजूँ दिल ज़ार चुनाँ जाँ ज़ेरे चुनूँ
पत अपनी बिपत में का से कहूँ मेरा कौन है तेरे सिवा जाना
अर्रूहु फ़िदा-क फ़ज़िद हरक़ा यक शोला दिगर बर ज़न इशक़ा
मोरा तन मन धन सब फूंक दिया यह जान भी प्यारे जला जाना
बस ख़ामए ख़ाम नवाए **"रज़ा"** न ये तर्ज़ मेरी न ये रंग मेरा
इरशादे अहिब्बा नातिक़ था नाचार इस राह पड़ा जाना

न आसमान को यूँ सर कशीदा होना था

न आसमान को यूँ सर कशीदा होना था
हुज़ूरे ख़ाके मदीना ख़मीदा होना था
अगर गुलों को ख़िज़ाँ ना-रसीदा होना था
किनारे ख़ारे मदीना दमीदा होना था
हुज़ूर उनके ख़िलाफ़े अदब थी बेताबी
मेरी उमीद तुझे आरमीदा होना था
नज़ारा ख़ाके मदीना का और तेरी आँख
न इस क़दर भी क़मर शोख़ दीदा होना था
किनारे ख़ाके मदीना में राहते मिलतीं
दिले हज़ीं तुझे अश्के चकीदा होना था
पनाहे दामने दश्ते हरम में चैन आता
न सब्रे दिल को ग़िज़ाले रमीदा होना था
ये कैसे खुलता कि उन के सिवा शफ़ीअ नहीं
अबस न औरों के आगे तपीदा होना था
हिलाल कैसे न बनता कि माहे कामिल को
सलामे अबरुए शह में ख़मीदा होना था

ल–अम ल अन–न जहन्नम था वादए अ–ज़ली
न मुन्किरों को अबस बदअक़ीदा होना था
नसीम क्यूँ न शमीम उनकी तैबा से लाती
कि सुबहे गुल को गिरेबाँ दरीदा होना था
टपकता रंगे जुनूँ इश्क़े शह में हर गुल से
रगे बहार को नश्तर रसीदा होना था
बजा था अर्श पे ख़ाके मज़ारे पाक को नाज़
कि तुझसा अर्श नशीं आफ़रीदा होना था
गुज़रते जान से एक शोरे 'या ह़बीब' के साथ
.फुग़ाँ को नालए हल्क़े बुरीदा होना था
मेरे करीम गुनह ज़हर है मगर आख़िर
कोई तो शहदे शफ़ाअत चशीदा होना था
जो संगे दर पे जबीं साइयों में था मिटना
तो मेरी जान शरारे जहीदा होना था
तेरी क़बा के न क्यूँ नीचे नीचे दामन हों
कि ख़ाकसारों से याँ कब कशीदा होना था
'रज़ा' जो दिल को बनाना था जलवागाहे ह़बीब
तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

शोरे महे नौ सुनकर तुझ तक मैं दवाँ आया

शोरे महे नौ सुनकर तुझ तक मैं दवाँ आया
साक़ी मैं तेरे सदक़े मय दे र–मज़ाँ आया
इस गुल के सिवा हर फूल बागोशे गिराँ आया
दखे ही गी ऐ बुलबुल जब वक़्ते फ़ुग़ाँ आया
जब बामे तजल्ली पर वो नय्यरे जाँ आया
सर था जो गिरा झुक कर दिल था जो तपाँ आया
जन्नत को हरम समझा आते तो यहाँ आया
अब तक के हर एक का मुँह कहता हूँ कहाँ आया
तैबा के सिवा सब बाग़ पामाले फ़ना होंगे
देखोगे चमन वालो जब अहदे ख़िज़ाँ आया
सर और वो संगे दर आँख और वो बज़्मे नूर
ज़ालिम को वतन का ध्यान आया तो कहाँ आया

कुछ नात के तबक़े का आलम ही निराला है
सकते में पड़ी है अक़्ल चक्कर में गुमाँ आया
जलती थी ज़मीं कैसी थी धूप कड़ी कैसी
लो वो क़दे बे साया अब साया कुनाँ आया
तैबा से हम आते हैं कहिए तो जिनाँ वालो
क्या देख के जीता है जो वाँ से यहाँ आया
ले तौक़े अलम से अब आज़ाद हो ऐ क़ुमरी
चिट्ठी लिए बख़्शिश की वो सरवे रवाँ आया
नामे से **'रज़ा'** के अब मिट जाओ बुरे कामो
देखो मेरे पल्ले पर वो अच्छे मियाँ आया
बदकार **'रज़ा'** ख़ुश हो बद काम भले होंगे
वो अच्छे मियाँ प्यारा अच्छों का मियाँ आया

ख़राब हाल किया दिल को पुर मलाल किया

ख़राब हाल किया दिल को पुर मलाल किया
तुम्हारे कूचे से रुख़सत किया निहाल किया
न रू-ए गुल अभी देखा न बू-ए गुल सूंघी
क़ज़ा ने लाके क़फ़स में शिकस्ता बाल किया
वो दिल कि ख़ूँ-शुदा अरमाँ थे जिसमें मल डाला
फ़ुग़ाँ कि गोरे शहीदाँ को पाएमाल किया
ये राए क्या थी वहाँ से पलटने की ऐ नफ़्स
सितमगर उल्टी छुरी से हमें हलाल किया
ये कब की मुझसे अदावत थी तुझको ऐ ज़ालिम
छुड़ा के संगे दरे पाक सर वबाल किया
चमन से फेंक दिया आशियानए बुलबुल
उजाड़ा ख़ानए बेकस बड़ा कमाल किया
तेरा सितम-ज़दा आँखों ने क्या बिगाड़ा था
ये क्या समाई कि दूर इनसे वो जमाल किया
हुज़ूर उनके ख़्याले वतन मिटाना था
हम आप मिट गए अच्छा फ़राग़े बाल किया
न घर का रखा न इस दर का हाय नाकामी
हमारी बेबसी पर भी न कुछ ख़्याल आया

जो दिल ने मर के जलाया था मिन्नतों का चराग़
सितम कि अर्ज़ों रहे सरसरे ज़वाल किया
मदीना छोड़ के वीराना हिंद का भाया
ये कैसा हाए हवासों ने इख़्तेलाल किया
तू जिसके वास्ते छोड़ आया तैबा सा महबूब
बता तो इस सितम आरा ने क्या निहाल किया
अभी अभी तो चमन में थे चहचहे नागाह
ये दर्द कैसा उठा जिसने जी निढाल किया
इलाही सुन ले **'रज़ा'** जीते जी कि मौला ने
सगाने कूचा में चेहरा मेरा बहाल किया

बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया

बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया
लमअए बातिन मे गुमने जलवए ज़ाहिर गया
तेरी मर्ज़ी पा गया सूरज फिरा उल्टे क़दम
तेरी उगंली उठ गई मह का कलेजा चिर गया
बढ़ चली तेरी ज़िया अंधेर आलम से घटा
खुल गया गेसू तेरा रहमत का बादल घिर गया
बंध गई तेरी हवा सावा में ख़ाक उड़ने लगी
बढ़ चली तेरी ज़िया आतिश पे पानी फिर गया
तेरी रहमत से सफ़ीउल्लाह का बेड़ा पार था
तेरे सदक़े से नजीउल्लाह का बजरा तिर गया
तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थर थरा कर गिर गया
मोमिन उनका क्या हुआ अल्लाह उसका हो गया
काफ़िर उनसे क्या फिरा अल्लाह ही से फिर गया
वो कि उस दर का हुआ ख़ल्क़े ख़ुदा उसकी हुई
वो कि उस दर से फिरा अल्लाह उससे फिर गया
मुझको दीवाना बताते हो मैं वो हुश्यार हूँ
पाँव जब तौफ़े हरम में थक गए सर फिर गया
रहतुल लिल आलमीं आफ़त में हूँ कैसी करूँ
मेरे मौला मैं तो इस दिल से बला में घिर गया

मैं तेरे हाथों के सदक़े कैसी कंकरियाँ थीं वो
जिनसे इतने काफ़िरों का दफ़अतन मुँह फिर गया
क्यूँ जनाबे बू हुरैरा था वो कैसा जामे शीर
जिससे सत्तर साहिबों का दूध से मुँह फिर गया
वास्ता प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूँ न फ़रमायें तेरे शाहिद कि वो फ़ाजिर गया
अर्श पर धूमें मचें वो मोमिने स़ालेह मिला
फ़र्श से मातम उठे वो तय्यिब ो ताहिर गया
अल्लाह अल्लाह ये उलूए ख़ासे अब्दीय्यत **'रज़ा'**
बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया
ठोकरें खाते फिरोगे उनके दर पर पड़ रहो
क़ाफ़िला तो ऐ **'रज़ा'** अव्वल गया आख़िर गया

नेमतें बांटता जिस सम्त वह ज़ीशान गया

नेमतें बांटता जिस सम्त वह ज़ीशान गया
साथ ही मुंशीए रह़मत का क़लमदान गया
ले ख़बर जल्द कि ग़ैरों की तरफ़ ध्यान गया
मेरे मौला मेरे आक़ा तेरे .कुरबान गया
आह वह आँख कि नाकामे तमन्ना ही रही
हाय वह दिल जो तेरे दर से पुर अरमान गया
दिल है वह दिल जो तेरी याद से मामूर रहा
सर है वह सर जो तेरे क़दमों पे क़ुरबान गया
उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिलहम्द में दुनिया से मुसलमान गया
और तुम पर मेरे आक़ा की इनायत न सही
नज्दियो कलिमा पढ़ाने का भी एहसान गया
आज ले उनकी पनाह आज मदद मांग उनसे
फिर न मानेंगे क़यामत में अगर मान गया
उफ़ रे मुन्किर ये बढ़ा जोशे तअस्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कमबख़्त के ईमान गया
जानो दिल होशो ख़िरद सब तो मदीने पहँचे
तुम नहीं चलते **"रज़ा"** सारा तो सामान गया

ताबे मिर्आते सहर गर्द बयाबाने अरब

ताबे मिर्आते सहर गर्द बयाबाने अरब
ग़ाज़ए रू-ए क़मर दूदे चराग़ाने अरब

अल्लाह अल्लाह बहारे चमन्स्ताने अरब
पाक हैं लौसे ख़िज़ाँ से गुल ो रैहाने अरब

जोशिशे अब्र से ख़ूने गुले फ़िरदौस गिरे
छेड़ दे रग को अगर ख़ारे बयाबाने अरब

तश्नए नहरे जिनाँ हर अ-रबीयों अ-जमी
लबे हर नहरे जिनाँ तश्नए नीसाने अरब

तौक़े ग़म आप हवाए परे क़ुमरी से गिरे
अगर आज़ाद करे सर्वे ख़िरामाने अरब

मेहर मीज़ाँ में छुपा हो तो हमल में चमके
डाले एक बूंद शबे दे में जो बाराने अरब

अर्श से मुज़्दए बिलक़ीसे शफ़ाअत लाया
ताइरे सिदरा नशीं मुर्ग़े सुलैमाने अरब

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नाँ
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब

कूचे कूचे में महकती है यहाँ बूए क़मीस
यूसुफ़िस्ताँ है हर एक गोशए कनआने अरब

बज़्मे क़ुदसी में है यादे लबे जाँ बख़्शे हुज़ूर
आलमे नूर में है चश्मए हैवाने अरब

पाए जिबरील ने सरकार से क्या क्या अलक़ाब
ख़ुसरवे ख़ैले मलक ख़ादिमे सुलताने अरब

बुलबुलो नीलपरो कबक बनो परवानो
मह ो ख़ुर्शीद पे हंसते हैं चराग़ाने अरब

हूर से क्या कहें मूसा से मगर अर्ज़ करें
कि है ख़ुद हुस्ने अजल तालिबे जानाने अरब

क-रमे नात के नज़दीक तो कुछ दूर नहीं
कि **'रज़ाए'** अ-जमी हो सगे हस्साने अरब

फिर उठा वलवलए यादे मुग़ीलाने अरब

फिर उठा वलवलए यादे मुग़ीलाने अरब
फिर खिंचा दामने दिल सूए बयाबाने अरब
बाग़े फ़िरदौस को जाते हैं हज़ाराने अरब
हाय सहराए अरब हाय बयाबाने अरब
मीठीं बातें तेरी दीने अजम ईमाने अरब
न-मकीं हुस्न तेरा जाने अजम शाने अरब
अब तो है गिर्यए ख़ूँ गौहरे दामाने अरब
जिस में दो लअल थे ज़हरा के वो थी काने अरब
दिल वही दिल है जो आँखों से हो हैराने अरब
आँखें वो आँखें हैं जो दिल से हों क़ुर्बाने अरब
हाए किस वक़्त लगी फांस अलम की दिल में
कि बहुत दूर रहे ख़ारे मुग़ीलाने अरब
फ़स्ले गुल लाख न हो वस्ल की रख आस हज़ार
फूलते फलते हैं बेफ़स्ल गुलिस्ताने अरब
सद्क़े होने को चले आते हैं लाखों गुलज़ार
कुछ अजब रंग से फूला है गुलिस्ताने अरब
अन्दलीबी पे झगड़ते हैं कटे मरते हैं
गुलो बुलबुल को लड़ाता है गुलिस्ताने अरब
सदक़े रह़मत के कहाँ फूला कहाँ ख़ार का काम
ख़ुद है दामन कशे बुलबुल गुले ख़न्दाने अरब
शादीए हश्र है सदक़े में छूटेंगे क़ैदी
अर्श पर धूम से है दावते मेहमाने अरब
चर्चे होते हैं ये कुम्हलाए हुए फूलों में
क्यूँ ये दिन देखते पाते जो बयाबाने अरब
तेरे बे दाम के बन्दे हैं रईसाने अजम
तेरे बेदाम के बन्दी हैं हज़ाराने अरब
हश्त ख़ुल्द आयें वहाँ कस्बे लताफ़त को **'रज़ा'**
चार दिन बरसे जहाँ अब्रे बहाराने अरब

जोबनों पर है बहारे चमन आराइए दोस्त

जोबनों पर है बहारे चमन आराइए दोस्त
ख़ुल्द का नाम न ले बुलबुले शैदाइए दोस्त
थक के बैठे तो दरे दिल पे तमन्नाइए दोस्त
कौन से घर का उजाला नहीं ज़ेबाइए दोस्त
अर्सए हश्र कुजा? मौक़िफ़े महमूद कुजा?
साज़ हंगामों से रखती नहीं यकताइए दोस्त
मेहर किस मुँह से जिलो दरिए जाँना करता
साए के नाम से बेज़ार है यकताइए दोस्त
मरने वालों को यहाँ मिलती है उम्रे जावेद
ज़िन्दा छोड़ेगी किसी को न मसीहाइए दोस्त
उनको यकता किया और ख़ल्क़ बनाई यानी
अंजुमन करके तमाशा करे तन्हाइए दोस्त
काबा ओ अर्श में कोहराम है नाकामी का
आह किस बज़्म में है जलवए यकताइए दोस्त
हुस्ने बे पर्दा के पर्दे ने मिटा रखा है
ढूंढने जायें कहाँ जलवए हरजाइए दोस्त
शौक़ रोके न रुके पाँऊ उठाए न उठे
कैसी मुश्किल में हैं अल्लाह तमन्नाइए दोस्त
शर्म से झुकती है मेहराब कि साजिद हैं हुज़ूर
सजदा करवाती है काबे से जबीं साइए दोस्त
ताज वालों का यहाँ ख़ाक पे माथा देखा
सारे दाराओं की दारा हुई दाराइए दोस्त
तूर पर कोई कोई चर्ख़ पे ये अर्श से पार
सारे बालाओं पे बाला रही बालाइए दोस्त
अन–त फ़ीहिम ने अदू को भी लिया दामन में
ऐशे जावेद मुबारक तुझे शैदाइए दोस्त
रंजे अअदा का **'रज़ा'** चारा ही क्या है जब उन्हें
आप गुस्ताख़ रखे हिल्म ो शकेबाइए दोस्त

तूबा में जो सबसे ऊँची नाज़ुक सीधी निकली शाख़

तूबा में जो सबसे ऊँची नाज़ुक सीधी निकली शाख़
मांगू नाते नबी लिखने को रूहे क़ुदुस से ऐसी शाख़
मौला गुलबन रह़मत ज़हरा सिबतैन इसकी कलियाँ फूल
सिद्दीक़ ो फ़ारूक़ ो उस्माँ हैदर हर एक उसकी शाख़
शाख़े क़ामते शह में ज़ुल्फ़ ो चश्म ो रुख़सार ो लब हैं
सुंबुल नर्गिस गुल पंखड़ियाँ क़ुदरत की क्या फूली शाख़
अपने इन बाग़ों का सदक़ा वो रह़मत का पानी दे
जिससे नख़्ले दिल में हो पैदा प्यारे तेरी विला की शाख़
यादे रुख़ में आहें करके बन में मैं रोया आई बहार
झूमीं नसीमें नीसाँ बरसा कलियाँ चटकीं महकी शाख़
ज़ाहिर ो बातिन अव्वल ो आख़िर जैबे फ़ुरू ओ ज़ैने उसूल
बाग़े रिसालत में है तू ही गुल ग़ुंचा जड़ पत्ती शाख़
आले अह़मद ख़ुज़ बेयदी या सय्यिदी हम्ज़ा कुन म–ददी
वक़्ते ख़िज़ाने उम्रे **'रज़ा'** हो बरगे हुदा से न आरी शाख़

ज़हे इज़्ज़तो एतेलाए मुह़म्मद

ज़हे इज़्ज़त ो एतेलाए मुह़म्मद
कि है अर्शे हक़ ज़ेरे पाए मुह़म्मद
मकाँ अर्श उनका फ़लक फ़र्श उनका
मलक ख़ादिमाने सराए मुह़म्मद
ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुह़म्मद
अजब क्या अगर रह़म फ़रमाए हम पर
ख़ुदाए मुह़म्मद बराए मुह़म्मद
मुह़म्मद बराए जनाबे इलाही
जनाबे इलाही बराए मुह़म्मद
बसी इत्रे महबूबिए किबरिया से
अबाए मुह़म्मद क़बाए मुह़म्मद
बहम अहद बांधे हैं वसले अबद का
रज़ाए ख़ुदा और रज़ाए मुह़म्मद

दमे नज़्अ जारी हो मेरी ज़बाँ पर
मुह़म्मद मुह़म्मद .ख़ुदाए मुह़म्मद

असाए कलीम अज़्दहाए ग़ज़ब था
गिरों का सहारा असाए मुह़म्मद

मैं क़ुरबान क्या प्यारी प्यारी है निसबत
ये आने ख़ुदा वह ख़ुदाए मुह़म्मद

मुह़म्मद का दम ख़ास बहरे ख़ुदा है
सिवाए मुह़म्मद बराए मुह़म्मद

ख़ुदा उनको किस प्यार से देखता है
जो आँखें हैं महवे लिक़ाए मुह़म्मद

जिलो में इजाबत ख़वासी में रह़मत
बढ़ी किस तुज़ुक से दुआए मुह़म्मद

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया
बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुह़म्मद

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बन के निकली दुआए मुह़म्मद

"रज़ा" पुल से अब वज्द करते गुज़रिए
के है रब्बे सल्लिम सदाए मुह़म्मद

ऐ शाफ़ेए उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर

ऐ शाफ़ेए उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर
लिल्लाह ले ख़बर मिरी लिल्लाह ले ख़बर

दरिया का जोश, नाव, न बेड़ा, न नाख़ुदा
मैं डूबा तू कहाँ है मिरे शाह ले ख़बर

मंज़िल कड़ी है रात अंधेरी मैं ना बलद
ऐ ख़िज़्र ले ख़बर मेरी ऐ माह ले ख़बर

पहुँचे पहुँचने वाले तो मंज़िल मगर शहा
उनकी जो थक के बैठे सरे राह ले ख़बर

जंगल दरिन्दों का है मैं बे यार शब क़रीब
घेरे हैं चार सम्त से बदख़्वाह ले ख़बर

मंज़िल नई अज़ीज़ जुदा लोग ना शनास
टूटा है कोहे ग़म मैं परे काह ले ख़बर

वो सख़्तियाँ सवाल की वो सूरतें मुहीब

ऐ ग़मज़दों के हाल से आगाह ले ख़बर
मुजरिम को बारगाहे अदालत में लाए हैं
तकता है बेकसी में तेरी राह ले ख़बर
अहले अमल को उनके अमल काम आयेंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर
पुर-ख़ार राह बरहना पा तिश्ना आब दूर
मौला पड़ी है आफ़ते जाँकाह ले ख़बर
बाहर ज़बानें प्यास से हैं आफ़ताब गर्म
कौसर के शाह कस्स-रहुल्लाह ले ख़बर
माना कि सख़्त मुजरिम ो नाकारा है **'रज़ा'**
तेरा ही तो है बन्दए दरगाह ले ख़बर

दर मनक़बते हुज़ूर ग़ौसे आज़म (रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

बन्दा क़ादिर का भी क़ादिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

बन्दा क़ादिर का भी क़ादिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
सिर्रे बातिन भी है ज़ाहिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
मुफ़्तिए शरअ भी है क़ाज़ि-ए मिल्लत भी है
इल्मे असरार से माहिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
मम्बए फ़ैज़ भी है मजमअे अफ़ज़ाल भी है
मेहरे इरफ़ाँ का मुनव्विर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
क़ुतब अब्दाल भी है मिहवरे इर्शाद भी है
मरकज़े दाएरए सिर्र भी है अ़ब्दुल क़ादिर
सिल्के इर्फ़ां की ज़िया है यही दुर्रे मुख़्तार
फ़ख़्रे अश्बाह ो नज़ाइर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
इसके फ़रमान हैं सब शारेहे हुक्मे शारेअ़
मज़हरे नाहियो आमिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
ज़ी तसर्रुफ़ भी है माज़ून भी मुख़्तार भी है
कारे आलम का मुदब्बिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
रश्के बुलबुल है **'रज़ा'** लालए सद दाग़ भी हैं
आप का वासिफ़ ो ज़ाकिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

गुज़रे जिस राह से वो सय्यदे बाला होकर

गुज़रे जिस राह से वो सय्यदे वाला हो कर
रह गई सारी ज़मीं अम्बर सारा हो कर
रुख़े अनवर की तजल्ली जो क़मर ने देखी
रह गया बोसा दहे नक़्शे कफ़े पा हो कर
वाय महरूमीए क़िस्मत कि मैं फिर अब की बरस
रह गया हमरहे ज़ुव्वारे मदीना हो कर
च–मने तयबा है वो बाग़ कि मुर्ग़े सिदरह
बरसों चहके हैं जहाँ बुलबुले शैदा हो कर
सर सरे दश्ते मदीना का मगर आया ख़याल
रश्के गुलशन जो बना ग़ुन्चए दिल वा हो कर
गोशे शह कहते हैं फ़रयाद–रसी को हम हैं
वादए चश्म है बख़्शायेंगे गोया हो कर
पाए शह पर गिरे या रब तपिशे मेहर से जब
दिले बेताब उड़े हश्र में पारा हो कर
है ये उम्मीद **'रज़ा'** को तेरी रहमत से शहा
न हो ज़िन्दानिए दोज़ख़ तेरा बन्दा हो कर

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आरिज़

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आरिज़
ज़ुलमते हश्र को दिन कर दे नहारे आरिज़
मैं तो क्या चीज़ हूँ ख़ुद साहिबे .कुरआँ को शहा
लाख मुसहफ़ से पसन्द आई बहारे आरिज़
जैसे क़ुरआन है विर्द उस गुले महबूबी का
यूँ ही क़ुरआँ का वज़ीफ़ा है वक़ारे आरिज़
गरचे क़ुरआँ है न क़ुरआँ के बराबर लेकिन
कुछ तो है जिस पे है वो मदह निगारे आरिज़
तूर क्या अर्श जले देख के वो जलवए गर्म
आप आरिज़ हो मगर आईना दारे आरिज़

तुफ़ा आलम है वह क़ुरआन इधर देखे उधर
मुसहफ़े पाक हो हैराने बहारे आरिज़
तर्जमा है ये सिफ़त का वो ख़ुद आईनए ज़ात
क्यूँ न मुसहफ़ से ज़ियादा हो वक़ारे आरिज़
जलवा फ़रमायें रुख़े दिल की सियाही मिट जाए
सुब्ह हो जाए इलाही शबे तारे आरिज़
नामे हक़ पर करे महबूब दिल ो जाँ क़ुर्बां
हक़ करे अर्श से ता फ़र्श निसार आरिज़
मुश्क-बू ज़ुल्फ़ से रुख़ चेहरा से बालों में शुआ
मोजिज़ा है ह-ल-बे ज़ुल्फ़ ो ततारे आरिज़
हक़ ने बख़्शा है करम नज़्रे गदायाँ हो क़बूल
प्यारे इक दिल है वो करते हैं निसारे आरिज़
आह बे माएगिए दिल कि **'रज़ाए'** मुहताज
ले कर इक जान चला बहरे निसारे आरिज़

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ सितारहाए फ़लक

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ सितारहाए फ़लक
तुम्हारे नअ़ल की नाक़िस मसल ज़ियाए फ़लक
अगरचे छाले सितारों से पड़ गए लाखों
मगर तुम्हारी तलब में थके न पाए फ़लक
सरे फ़लक न कभी ता-ब आस्ताँ पहुँचा
कि इब्तिदाए बलन्दी थी इन्तिहाए फ़लक
ये मिट के उनकी रविश पर हुआ ख़ुद उनकी रविश
कि नक़्शे पा है ज़मीं पर न सौते पाए फ़लक
तुम्हारी याद में गुज़री थी जागते शब भर
चली नसीम हुए बन्द दो-दहाए फ़लक
न जाग उठ्ठे कहीं अहले बक़ीअ कच्ची नींद
चला यह नर्म न निकली सदाए पाए फ़लक
ये उनके जलवे ने कीं गर्मियाँ शबे असरा
के जब से चर्ख़ में है नुक़रओ तिलाए फ़लक
मिरे ग़नी ने जवाहिर से भर दिया दामन
गया जो कासए मह ले के शब गदाए फ़लक
रहा जो क़ानिए यक नाने सोख़्ता दिन भर
मिली हुज़ूर से काने गुहर जज़ाए फ़लक

तजम्मुले शबे असरा अभी सिमट न चुका
कि जब से वैसी ही कोतल हैं सब्ज़ाहाए फ़लक
ख़िताबे ह़क़ भी य्है दर बाबे ख़ल्क़ मिन अ-जलिक
अगर उधर से दमे ह़म्द है सदाए फ़लक
ये अहले बैत की चक्की से चाल सीखी है
रवाँ है बे मददे दस्त आसयाए फ़लक
'रज़ा' ये नाते नबी ने बलन्दियाँ बख़्शीं
लक़ब ज़मीने फ़लक का हुआ समाए फ़लक

क्या ठीक हो रुख़े न-बवी पर मिसाले गुल

क्या ठीक हो रुख़े न-बवी पर मिसाले गुल
पामाले जलवए कफ़े पा है जमाले गुल
जन्नत है उनके जलवे से जोयाए रंग ो बू
ऐ गुल हमारे गुल से है गुल को सुवाले गुल
उनके क़दम से सिल-अए ग़ाली हुई जिनाँ
वल्लाह मेरे गुल से है जाह ो जलाले गुल
सुनता हूँ इश्क़े शाह में दिल होगा ख़ूँफ़िशाँ
या रब ये मुज़दा सच हो मुबारक हो फ़ाले गुल
बुलबुल हरम को चल ग़मे फ़ानी से फ़ाएदा?
कब तक कहेगी हाए वो ग़न्जो दलाले गुल
ग़मगीं है शौक़े ग़ाज़ए ख़ाके मदीना में
शबनम से धुल सकेगी न गर्दे मलाले गुल
बुलबुल ये क्या कहा, मैं कहाँ फ़स्ले गुल कहाँ
उम्मीद रख के आम है जूदो नवाले गुल
बुलबुल धिरा है अब्रे विला मुज़दा हो कि अब
गिरती है आशियाना पे बर्क़े जमाले गुल
या रब हरा भरा रहे दाग़े जिगर का बाग़
हर मह महे बहार हो हर साल साले गुल
रंग मिज़ह से कर के ख़जिल यादे शाह में
खींचा है हमने कांटो पे इत्रे जमाले गुल
मैं यादे शह में रोऊँ अनादिल करें हुजूम
हर अश्के लाला फ़ाम पे हो एहतिमाले गुल
हैं अक्से चेहरा से लबे गुलगूँ में सुर्ख़ियाँ

डूबा है बदरे गुल से शफ़क़ में हिलाले गुल
नाते हुज़ूर में मुतरन्निम हैं अन्दलीब
शाख़ों के झूमने से अयाँ वज्द ो हाले गुल
बुलबुल गले मदीना हमेशा बहार है
दो दिन की है बहार फ़ना है मआले गुल
शैख़ैन इधर निसार ग़नी यो अली उधर
ग़ुन्चा है बुलबुलों का यमीनो शिमाले गुल
चाहे ख़ुदा तो पायेंगे इश्क़े नबी में ख़ुल्द
निकली है नामए दिले पुर ख़ूँ में फ़ाले गुल
कर उसकी याद जिससे मिले चैन अन्दलीब
देखा नहीं के ख़ारे अलम है ख़्याले गुल
देखा था ख़्वाबे ख़ारे हरम अन्दलीब ने
खटका किया है आँख में शब भर ख़्याले गुल
उन दो का सदक़ा जिनको कहा मेरे फूल हैं
कीजिए **'रज़ा'** हो हश्र में ख़न्दाँ मिसाले गुल

सर ता ब-क़दम है तने सुलताने ज़मन फूल

सर ता ब-क़दम है तने सुलताने ज़मन फूल
लब फूल दहन फूल ज़क़न फूल बदन फूल
सदक़े में तेरे बाग़ तो क्या लाये हैं बन फूल
इस .ग़ुन्चए दिल को भी तो ईमा हो कि बन फूल
तिनका भी हमारे तो हिलाए नहीं हिलता
तुम चाहो तो हो जाए अभी कोहे मिहन फूल
वल्लाह जो मिल जाए मेरे गुल का पसीना
मांगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल
दिल बस्ता ओ .ख़ूँ गश्ता न .ख़ुशबू न लताफ़त
क्यूँ .ग़ुन्चा कहूँ है मेरे आक़ा का दहन फूल
शब याद थी किन दांतों की शबनम कि दमे सुब्ह
शोख़ाने बहारी के जड़ाऊ हैं करन फूल
दंदान ो लब ो ज़ुल्फ़ो रुख़े शह के फ़िदाई
हैं दुर्रे अदन लाले यमन मुश्के ख़ुतन फूल
बू हो के निहाँ हो गए ताबे रुख़े शह में
लो बन गए हैं अब तो हसीनों के दहन फूल

हों बारे गुनाह से न ख़्जिल दोशे अज़ीज़ाँ
लिल्लाह मेरी नाश कर ऐ जाने चमन फूल
दिल अपना भी शैदाई है उस नाख़ुने पा का
इतना भी महे नौ पे न ऐ चर्ख़े कुहन फूल
दिल खोल के ख़ूँ रो ले ग़मे आरिज़े शह में
निकले तो कहीं हसरते ख़ूँ नाबा शुदन फूल
क्या ग़ाजा मला गर्दे मदीना का जो है आज
निखरे हुए जोबन में क़ियामत की फबन फूल
गर्मी ये क़ियामत है कि कांटे हैं ज़बाँ पर
बुलबुल को भी ऐ साक़ीए सहबाओ लबन फूल
है कौन कि गिरया करे या फ़ातिहा को आए
बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल
दिल ग़म तुझे घेरे हैं ख़ुदा तुझको वह चमकाये
सूरज तिरे ख़िरमन को बने तेरी किरन फूल
क्या बात **"रज़ा"** उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिसमें हुसैन और हसन फूल

है कलामे इलाही में शम्सो दोहा

है कलामे इलाही में शम्सो दोहा तेरे चेहरए नूरे फ़ज़ा की क़सम
क़-समे शबे तार में राज़ ये था कि ह़बीब की ज़ुल्फ़े दुता की क़सम
तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा तेरी ख़ल्क़ को हक़ ने जमील किया
कोई तुझसा हुआ है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े हुस्न ो अदा की क़सम
वो ख़ुदा ने है मरतबा तुझको दिया न किसी को मिले न किसी को मिला
के कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो कलाम ो बक़ा की क़सम
तेरा मसनदे नाज़ है अर्शे बरीं तेरा मेहरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दो जहाँ है शहा तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम
यही अर्ज़ है ख़ालिक़े अर्ज़ो समा वह रसूल हैं तेरे मैं बन्दा तेरा
मुझे उनके जवार में दे वह जगह कि है ख़ुल्द को जिसकी सफ़ा की क़सम
तू ही बन्दों पे करता है लुत्फ़ ो अता है तुझी पे भरोसा तुझी से दुआ
मुझे जलवए पाके रसूल दिखा तुझे अपने ही इज़्ज़ो उला की क़सम
मेरे गरचे गुनाह हैं हद से सिवा मगर उनसे उम्मीद है तुझसे रजा
तू रहीम है उनका करम है गवाह वह करीम हैं तेरी अता की क़सम
यही कहती है बुलबुले बाग़े जिना कि **'रज़ा'** की तरह कोई सहर बयाँ
नहीं हिन्द में वासिफ़े शाहे हुदा मुझे शोख़िए तबए **"रज़ा"** की क़सम

पाट वो कुछ धार ये कुछ ज़ार हम

पाट वो कुछ धार ये कुछ ज़ार हम
या इलाही क्यूँ कर उतरें पार हम
किस बला की मय से हैं सरशार हम
दिन ढला होते नहीं हुश्यार हम
तुम करम से मुश्तरी हर ऐब के
जिन्से ना मक़्बूले हर बाज़ार हम
दुश्मनों की आँख में भी फूल तुम
दोस्तों की भी नज़र में ख़ार हम
लग़ज़िशे पा का सहारा एक तुम
गिरने वाले लाखों ना हंजार हम
सदक़ा अपने बाज़ुओं का अल–मदद
कैसे तोड़ें ये बुते पिन्दार हम
दम क़दम की ख़ैर ऐ जाने मसीह
दर पे लाए हैं दिले बीमार हम
अपनी रहमत की तरफ़ देखें हुज़ूर
जानते हैं जैसे हैं बदकार हम
अपने मेहमानों का सदक़ा एक बूंद
मर मिटे प्यासे इधर सरकार हम
अपने कूचे से निकाले तो न दो
हैं तो हद भर के ख़ुदाई ख़्वार हम
हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम
हैं सख़ी के माल में हक़दार हम
चांदनी छिटकी है उनके नूर की
आओ देखें सैरे तूर ा नार हम
हिम्मत ऐ ज़ोअफ़ उनके दर पर गिर के हों
बे तकल्लुफ़ सायए दीवार हम
बा अता तुम शाह तुम मुख़्तार तुम
बे नवा हम ज़ार हम नाचार हम
तुम ने तो लाखों को जानें फेर दीं
ऐसा कितना रखते हैं आज़ार हम

अपनी सत्तारी का या रब वास्ता
हों न रुसवा बर सरे दरबार हम
इतनी अर्ज़ आख़िरी कह दो कोई
नाव टूटी आ पड़े मंजधार हम
मुँह भी देखा है किसी के अफ़्व का
देख ओ इस्याँ नहीं बे-यार हम
मैं निसार ऐसा मुसलमाँ कीजिए
तोड़ डालें नफ़्स का ज़ुन्नार हम
कब से फैलाए है दामन तेग़े इश्क़
अब तो पायें ज़ख़्मे दामनदार हम
सुन्नियत से खटके सब की आँख में
फूल होकर बन गए क्या ख़ार हम
नातवानी का भला हो बन गए
नक़्शे पाए तालिबाने यार हम
दिल के टुकड़े नज़्रे हाज़िर लाए हैं
ऐ सगाने कूचए दिलदार हम
क़िस्मते सौर ा हिरा की हिर्स है
चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम
चश्म पोशियों व करम शाने शुमा
कारेमा बेबाकियो व इसरार हम
फ़स्ले गुल सब्ज़ा सबा मस्ती शबाब
छोड़ें किस दिल से दरे ख़म्मार हम
मयकदा छुटता है लिल्लाह साक़िया
अब के साग़र से न हों हुशयार हम
साक़िए तसनीम जब तक आ न जायें
ऐ सियाह मस्ती न हो हुशयार हम
नाज़िशें करते हैं आपस में मलक
हैं ग़ुलामाने शहे अबरार हम
लुत्फ़ अज़ ख़ुद रफ़्तगी या रब नसीब
हों शहीदे जलवए रफ़्तार हम
उनके आगे दावए हस्ती **'रज़ा'**
क्या बके जाता है ये हर बार हम

आरिज़े शम्स ो क़मर से भी हैं अनवर एड़ियाँ

आरिज़े शम्स ो क़मर से भी हैं अनवर एड़ियाँ
अर्श की आँखों के तारे हैं वो ख़ुश्तर एड़ियाँ
जा-ब-जा परतौ फ़िगन हैं आसमाँ पर एड़ियाँ
दिन को हैं ख़ुर्शीद शब को माह ो अख़्तर एड़ियाँ
नज्मे गरदूँ तो नज़र आते हैं छोटे और वो पांव
अर्श पर फिर क्यूँ न हों महसूस लाग़र एड़ियाँ
दब के ज़ेरे पा न गुन्जाइश समाने की रही
बन गया जलवा कफ़े पा का उभर कर एड़ियाँ
उनका मंगता पांव से ठुकरा दे वो दुनिया का ताज
जिसकी ख़ातिर मर गए मुनइम रगड़ कर एड़ियाँ
दो क़मर दो पन्जए ख़ुर दो सितारे दस हिलाल
उनके तलवे पंजे नाख़ुन पए अतहर एड़ियाँ
हाए उस पत्थर से इस सीने की क़िसमत फोड़िए
बे तकल्लुफ़ जिसके दिल में यूँ करें घर एड़ियाँ
ताज रुहुल क़ुद्स के मोती जिसे सजदा करें
रखती हैं वल्लाह वो पाकीज़ा गौहर एड़ियाँ
एक ठोकर में उहद का ज़लज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अकबर एड़ियाँ
चर्ख़ पर चढ़ते ही चांदी में सियाही आ गई
कर चुकी हैं बदर को टकसाल बाहर एड़ियाँ
ऐ **'रज़ा'** तूफ़ाने महशर के तलातुम से न डर
शाद हो हैं कश्तिए उम्मत को लंगर एड़ियाँ

इश्क़े मौला में हों ख़ूंबार कनारे दामन

इश्क़े मौला में हों ख़ूंबार कनारे दामन
या ख़ुदा जल्द कहीं आए बहारे दामन
बह चली आँख भी अश्कों की तरह दामन पर
के नहीं तारे नज़र जुज़ दो सिह तारे दामन
अश्क बरसाऊँ चले कूचए जानाँ से नसीम
या ख़ुदा जल्द कहीं निकले बुख़ारे दामन
दिलशुदों का ये हुआ दामने अतहर पे हुजूम

बेदिल आबाद हुआ नामे दयारे दामन
मुश्क सा ज़ुल्फ़े शह ो नूर फ़शाँ रूए हुज़ूर
अल्ल्लाह अल्लाह ह–ल–बे जैब ो ततारे दामन
तुझसे ऐ गुल मैं सितम दीदए दश्ते हिरमाँ
ख़लिशे दिल की कहूँ या ग़मे ख़ारे दामन
अक्स अफ़ग़न है हिलाले लबे शह जैब नहीं
मेहरे आरिज़ की शुआएं हैं न तारे दामन
अश्क कहते हैं ये शैदाई की आंखें धोकर
ऐ अदब गिर्दे नज़र हो न ग़ुबारे दामन
ऐ **'रज़ा'** आह वो बुलबुल कि नज़र में जिसकी
जलवए जैबे गुल आए न बहारे दामन

रश्के क़मर हूँ रंगे रुख़े आफ़ताब हूँ

रश्के क़मर हूँ रंगे रुख़े आफ़ताब हूँ
ज़र्रा तेरा जो ऐ शहे गर्दूं जनाब हूँ
दुर्रे नजफ़ हूँ गौहरे पाके ख़ूशाब हूँ
यानी तुराबे रह गु–ज़रे बू तुराब हूँ
गर आँख हूँ तो अब्र की चश्मे पुर आब हूँ
दिल हूँ तो बर्क़ का दिले पुर इज़्तिराब हूँ
ख़ूनीं जिगर हूँ ताइरे बे आशियाँ शहा
रंगे परीदए रुख़े गुल का जवाब हूँ
बेअस्लो बेसबात हूँ बहरे करम मदद
परवरदए किनारे सराब ो हुबाब हूँ
इबरत फ़ज़ा है शर्मे गुनह से मिरा सुकूत
गोया लबे ख़ामूशे लहद का जवाब हूँ
क्यूँ नाला सोज़ लय करूँ क्यूँ ख़ूने दिल पियूँ
सीख़े कबाब हूँ न मैं जामे शराब हूँ
दिल बस्ता बेक़रार जिगर चाक अश्कबार
ग़ुन्चा हूँ गुल हूँ बर्क़े तपाँ हूँ सहाब हूँ
दावा है सब से तेरी शफ़ाअत पे बेशतर
दफ़तर में आसियों के शहा इन्तिख़ाब हूँ
मौला दुहाई नज़रों से गिर कर जला ग़ुलाम
अश्के मिज़ह रसीदए चश्मे कबाब हूँ
मिट जाए ये ख़ुदी तो वो जलवा कहाँ नहीं

दरदा मैं आप अपनी नज़र का हिजाब हूँ
सदक़े हूँ उस पे नार से देगा जो मुख़्लसी
बुलबुल नहीं कि आतिशे गुल पर कबाब हूँ
क़ालिब तिही किए हमा आग़ोश है हिलाल
ऐ शहसवारे तैबा में तेरी रिकाब हूँ
क्या क्या हैं तुझसे नाज़ तेरे क़स्र को कि मैं
काबे की जान अर्शे बरीं का जवाब हूँ
शाहा बुझे सक़र मिरे अशकों से ता न मैं
आबे अबस चकीदए चश्मे कबाब हूँ
मैं तो कहा ही चाहूँ कि बन्दा हूँ शाह का
पर लुत्फ़ जब है कह दे अगर वो जनाब "हूँ"
हसरत में ख़ाक बोसिए तैबा की ऐ **'रज़ा'**
टपका जो चश्मे मेहर से वो ख़ूने नाब हूँ

पूछते क्या हो अर्श पर यूँ गए मुस्तफ़ा कि यूँ

पूछते क्या हो अर्श पर यूँ गए मुस्तफ़ा कि यूँ
कैफ़ के पर जहाँ जलें कोई बताए क्या कि यूँ
क़स्रे दना के राज़ में अक़्लें तो गुम हैं जैसी हैं
रूहे क़ुदुस से पूछिए तुमने भी कुछ सुना कि यूँ
मैंने कहा के जलवए अस्ल में किस तरह गुमें
सुबह ने नूरे मेहर में मिट के दिखा दिया कि यूँ
हाए रे ज़ौक़े बे ख़ुदी दिल जो संभलने सा लगा
छक के महक में फूल की गिरने लगी सबा कि यूँ
दिल को दे नूर ो दाग़े इश्क़ फिर मैं फिदा दो नीम कर
माना है सुन के शक़्क़े माह आंखों से अब दिखा कि यूँ
दिल को है फ़िक्र किस तरह मुर्दे जिलाते हैं हुज़ूर
ऐ मैं फ़िदा लगा कर एक ठोकर उसे बता कि यूँ
बाग़ में शुकरे वस्ल था हिज्र में हाय हाय गुल
काम है उनके ज़िक्र से ख़ैर वो यूँ हुआ कि यूँ
जो कहे शेअर ो पासे शरअ दोनों का हुस्न क्यूँ कर आए
ला उसे पेशे जलवए ज़मज़माए **'रज़ा'** कि यूँ

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूँ

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूँ
दिल को जो अक़्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाए क्यूँ
रुख़सते क़ाफ़िले का शोर ग़श से हमें उठाए क्यूँ
सोते हैं उनके साये में कोई हमें जगाए क्यूँ
बार न थे ह़बीब को पालते ही ग़रीब को
रोयें जो अब नसीब को चैन कहो गंवाए क्यूँ
यादे हुज़ूर की क़सम ग़फ़लते ऐश है सितम
ख़ूब हैं क़ैदे ग़म में हम कोई हमें छुड़ाए क्यूँ
देख के हज़रते ग़नी फैल पड़े फ़क़ीर भी
छाई है अब तो छावनी हश्र ही आ न जाए क्यूँ
जान है इश्क़े मुस्तफ़ा रोज़ फ़ज़ूँ करे ख़ुदा
जिसको हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूँ
हम तो हैं आप दिलफ़िगार ग़म में हंसी है नागवार
छेड़ के गुल को नौबहार .ख़ून हमें रुलाए क्यूँ
या तो यूहीं तड़प के जायें या वही दाम से छुड़ायें
मिन्नते ग़ैर क्यूँ उठायें कोई तरस जताए क्यूँ
उनके जलाल का असर दिल से लगाए है क़मर
जो कि हो लोट ज़ख़्म पर दाग़े जिगर मिटाए क्यूँ
ख़ुश रहे गुल से अन्दलीब ख़ारे हरम मुझे नसीब
मेरी बला भी ज़िक्र पर फूल के ख़ार खाए क्यूँ
गर्दे मलाल अगर धुले दिल की कली अगर खिले
बर्क़ से आँख क्यूँ जले रोने पे मुस्कुराए क्यूँ
जाने सफ़र नसीब को किसने कहा मज़े से सो
खटका अगर सहर का हो शाम से मौत आए क्यूँ
अब तो न रोक ऐ ग़नी आदते सग बिगड़ गई
मेरे करीम पहले ही लुक़्मए तर खिलाए क्यूँ
राहे नबी में क्या कमी फ़र्शे बयाज़े दीदा की
चादरे ज़िल है मलगजी ज़ेरे क़दम बिछाए क्यूँ
संगे दरे हुज़ूर से हम को .ख़ुदा न सब्र दे
जाना है सर को जा चुके दिल को क़रार आए क्यूँ
है तो **"रज़ा"** निरा सितम जुर्म पे गर लजायें हम
कोई बजाए सोज़े ग़म साज़े तरब बजाए क्यूँ

यादे वतन सितम किया दश्ते ह़रम से लाई क्यूँ

यादे वतन सितम किया दश्ते ह़रम से लाई क्यूँ
बैठे बिठाए बदनसीब सर पे बला उठाई क्यूँ
दिल में तो चोट थी दबी हाय ग़ज़ब उभर गई
पूछो तो आहे सर्द से ठंडी हवा चलाई क्यूँ
छोड़ के उस ह़रम को आप बन में ठगों के आ बसो
फिर कहो सर पे धर के हाथ लुट गई सब कमाई क्यूँ
बाग़े अरब का सर्वे नाज़ देख लिया है वर्ना आज
क़ुमरीए जाने ग़मज़दा गूंज के चहचहाई क्यूँ
नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे ख़ुल्द
सोज़िशे ग़म को हम ने भी कैसी हवा बताई क्यूँ
किसकी निगाह की हया फिरती है मेरी आँख में
नरगिसे मस्त नाज़ ने मुझ से नज़र चुराई क्यूँ
तूने तो कर दिया तबीब आतिशे सीने का इलाज
आज के दूदे आह में बूए कबाब आई क्यूँ
फ़िक्रे मआश बद बला हौले मआद जाँ गुज़ा
लाखों बला में फंसने को रूह बदन में आई क्यूँ
हो न हो आज कुछ मिरा ज़िक्र हुज़ूर में हुआ
वर्ना मेरी तरफ़ ख़ुशी देख के मुस्कुराई क्यूँ
हूरे जिनाँ सितम क्या तैबा नज़र में फिर गया
छेड़ के पर्दए हिजाज़ देस की चीज़ गाई क्यूँ
ग़फ़लते शैख़ ो शाब पर हंसते हैं तिफ़्ले शीर ख़्वार
करने को गुदगुदी अबस आने लगी बहाई क्यूँ
अर्ज़ करूँ हुज़ूर से दिल की तो मेरे ख़ैर है
पीटती सर को आरज़ू दश्ते हरम से आई क्यूँ
हसरते नौ का सानेहा सुनते ही दिल बिगड़ गया
ऐसे मरीज़ को **'रज़ा'** मर्गे जवाँ सुनाई क्यूँ

अहले सिरात रूहे अमीं को ख़बर करें

अहले सिरात रूहे अमीं को ख़बर करें
जाती है उम्मते न-बवी फ़र्श पर करें
इन फ़ितना हाए हश्र से कह दो हज़र करें
नाज़ों के पाले आते हैं रह से गुज़र करें
बद हैं तो आपके हैं भले हैं तो आप के
टुकड़ों से तो यहाँ के पले रूख़ किधर करें
सरकार हम कमीनों के अतवार पर न जायें
आक़ा हुज़ूर अपने करम पर नज़र करें
उनके ह़रम के ख़ार कशीदा हैं किस लिए
आँखों में आयें सर पे रहें दिल में घर करें
जालों पे जाल पड़ गए लिल्लाह वक़्त है
मुश्किल कुशाई आप के नाख़ुन अगर करें
मंज़िल कड़ी है शाने तबस्सुम करम करें
तारों की छांव नूर के तड़के सफ़र करें
किल्के **'रज़ा'** है ख़न्जरे ख़ूंख़ार बर्क़ बार
अअ़दा से कह दो ख़ैर मनायें न शर करें

वो सुए लालाज़ार फिरते है

वो सुए लालाज़ार फिरते है
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं
जो तेरे दर से यार फिरते हैं
दर ब दर यूँ ही ख़ार फिरते हैं
आह कल ऐश तो किए हमने
आज वह बे क़रार फिरते हैं
उनके ईमा से दोनों बागों पर
ख़ैले लैलो नहार फिरते हैं
हर चराग़े मज़ार पर क़ुदसी
कैसे परवानावार फिरते हैं
उस गली का गदा हूँ मैं जिसमें
मांगते ताजदार फिरते हैं
जान हैं जान क्या नज़र आए
क्यूँ अदू गिरदे ग़ार फिरते हैं

फूल क्या देखूँ मेरी आखों में
दश्ते तैबा के ख़ार फिरते हैं

लाखों क़ुदसी है कामे ख़िदमत पर
लाखों गिरदे मज़ार फिरते हैं

वर्दियाँ बोलते हैं हरकारे
पहरा देते सवार फिरते हैं

रखिए जैसे हैं ख़ानाज़ाद हैं हम
मोल के ऐबदार फिरते हैं

हाए ग़ाफ़िल वह क्या जगह है जहाँ
पाँच जाते हैं चार फिरते हैं

बायें रस्ते न जा मुसाफ़िर सुन
माल है राह मार फिरते हैं

जाग सुनसान बन है रात आई
गुर्ग बहरे शिकार फिरते हैं

नफ़्स ये कोई चाल है ज़ालिम
जैसे ख़ासे बिजार फिरते हैं

कोई क्यूँ पूछे तेरी बात **"रज़ा"**
तुझसे कुत्ते हज़ार फिरते हैं

उनकी महक ने दिल के ग़ुन्चे खिला दिए है

उनकी महक ने दिल के ग़ुन्चे खिला दिए हैं
जिस राह चल दिए हैं कूचे बसा दिए हैं

जब आ गई हैं जोशे रहमत पे उनकी आँखें
जलते बुझा दिए हैं रोते हंसा दिए हैं

इक दिल हमारा क्या हैं आज़ार इसका कितना
तुमने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिए हैं

उनके निसार कोई कैसे ही रंज में हो
जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिए हैं

हमसे फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे
अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिए हैं

असरा में गुज़रे जिस दम बेड़े पे क़ुदसियों के
होने लगी सलामी परचम झुका दिए हैं

आने दो या डुबो दो अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोड़ी लंगर उठा दिए हैं

दूल्हा से इतना कह दो प्यारे सवारी रोको
मुश्किल में हैं बराती पुरख़ार बादिए हैं

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरिया बहा दिए हैं

मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरिया बहा दिए हैं दुर बेबहा दिए हैं

मुल्के सुख़न की शाही तुमको **"रज़ा"** मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिए हैं

है लबे ईसा से जाँ बख़्शी निराली हाथ में

है लबे ईसा से जाँ बख़्शी निराली हाथ में
संगरेज़े पाते हैं शीरीं मक़ाली हाथ में

बेनवाओं की निगाहें हैं कहाँ तहरीरे दस्त
रह गईं जो पाके जूदे ला यज़ाली हाथ में

क्या लकीरों में यदुल्लाह ख़त्ते सर्व आसा लिखा
राह यूँ इस राज़ लिखने की निकाली हाथ में

जूदे शाहे कौसर अपने प्यासों का जोया है आप
क्या अजब उड़ कर जो आप आए प्याली हाथ में

अब्रे नीसाँ मोमिनों को तेग़े उरयाँ कुफ़्र पर
जमअ हैं शाने जमालियो व जलाली हाथ में

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहाँ की नेमतें हैं उनके ख़ाली हाथ में

साया अफ़गन सर पे हो परचम इलाही झूम कर
जब लिवाउल ह़म्द ले उम्मत का वाली हाथ में

हर ख़ते कफ़ है यहाँ ऐ दस्ते बैज़ाए कलीम
मोजज़न दरियाए नूरे बे मिसाली हाथ में

वो गिराँ संगीए क़द्रे मिस वो अरज़ानीए जूद
नौइया बदला किए संगो लआली हाथ में

दस्तगीरे हर दो आलम कर दिया सिबतैन को
ऐ मैं क़ुरबाँ जाने जाँ अंगुश्त क्या ली हाथ में

आह वो आलम के आँखें बन्द और लब पर दुरूद
वक़्फ़े संगे दर जबीं रौज़े की जाली हाथ में
जिसने बैअत की बहारे हुस्न पर क़ुरबाँ रहा
हैं लकीरें नक़्शे तसख़ीरे जमाली हाथ में
काश हो जाऊँ लबे कौसर मैं यूँ वारफ़्ता होश
ले कर उस जाने करम का ज़ैले आली हाथ में
आँख महवे जलवए दीदार, दिल पुर जोशे वज्द
लब पे शुक्रे बख़्शिशे साक़ी प्याली हाथ में
हश्र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूँ **'रज़ा'**
लोट जाऊँ पा के वह दामाने आली हाथ में

राहे इरफ़ाँ से जो हम नादीदा-रू महरम नहीं

राहे इरफ़ाँ से जो हम नादीदा-रू महरम नहीं
मुस्तफ़ा है मसनदे इरशाद पर कुछ ग़म नहीं
हूँ मुसलमाँ गरचे नाक़िस ही सही ऐ कामिलो
माहियत पानी की आख़िर यम से नम में कम नहीं
ग़ुन्चे मा औहा के जो चटके दना के बाग़ में
बलबुले सिदरह तक उनकी बू से भी महरम नहीं
उस में ज़मज़म है कि थम थम इसमें जम जम है कि बेश
कसरते कौसर में ज़मज़म की तरह कम कम नहीं
पंजए मेहरे अरब है जिस से दरिया बह गए
चशमए ख़ुर्शीद में तो नाम को भी नम नहीं
ऐसा उम्मी किस लिए मिन्नत कशे उस्ताद हो
क्या किफ़ायत उसको इक़रा रब्बुकल अकरम नहीं
ओस मेहरे हश्र पर पड़ जाए प्यासो तो सही
उस गुले ख़न्दाँ का रोना गिरयए शबनम नहीं
है उन्हीं के दम क़दम की बाग़े आलम में बहार
वो न थे आलम न था गर वह न हों आलम नहीं
सायए दीवार ो ख़ाके दर हो या रब और **'रज़ा'**
ख़्वाहिशे दैहीमे क़ैसर शौक़े तख़्ते जम नहीं

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहाँ नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शम्अ है कि धुआँ नहीं
दो जहाँ की बेहतरियाँ नहीं कि अमानिए दिल ओ जाँ नहीं
कहो क्या है वो जो यहाँ नहीं मगर इक 'नहीं' कि वो हाँ नहीं

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किसको ज़बाँ नहीं
वो सुख़न है जिसमें सुख़न न हो वो बयाँ है जिसका बयाँ नहीं
बख़ुदा .ख़ुदा का यही है दर नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहाँ से हो यहीं आ के हो जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं

करे मुस्तफ़ा की इहानतें खुले बन्दों उस पे ये जुर्अतें
कि मैं क्या नहीं हूँ मुहम्मदी अरे हाँ नहीं अरे हाँ नहीं
तेरे आगे यूँ हैं दबे लचे .फ़ुसहा अरब के बड़े बड़े
कोई जाने मुँह में ज़बाँ नहीं नहीं बल्कि जिस्म में जाँ नहीं

वो शरफ़ कि क़ता हैं निसबतें वो करम कि सबसे क़रीब हैं
कोई कह दो यास ओ उम्मीद से वो कहीं नहीं वो कहाँ नहीं
ये नहीं के ख़ुल्द न हो निको वह निकोई की भी है आबरू
मगर ऐ मदीने की आरज़ू जिसे चाहे तो वो समाँ नहीं

है उन्हीं के नूर से सब अयाँ है उन्हीं के जलवे में सब निहाँ
बने सुब्ह ताबिशे मेहर से रहे पेश मेहर यह जाँ नहीं
वही नूरे हक़ वही ज़िल्ले रब है उन्हीं से सब है उन्हीं का सब
नहीं उनकी मिल्क में आसमाँ कि ज़मीं नहीं कि ज़मा नहीं

वही ला मकाँ के मकीं हुए सरे अर्श तख़्त नशीं हुए
वो नबी है जिसके हैं ये मकाँ वो .ख़ुदा है जिसका मकाँ नहीं
सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-ल-कूतो मुल्क में कोई शय नहीं वो जो तुझ पे अयाँ नहीं

करूँ तेरे नाम पे जाँ फ़िदा न बस एक जाँ दो जहाँ फ़िदा
दो जहाँ से भी नहीं जी भरा करूँ क्या करोरों जहाँ नहीं
तेरा क़द तो नादिरे दहर है कोई मिस्ल हो तो मिसाल दे
नहीं गुल के पौदों में डालियाँ कि चमन में सरवे चमाँ नहीं

नहीं जिसके रगं का दूसरा न तो हो कोई न कभी हुआ
कहो उसको गुल कहे क्या बनी कि गुलों का ढेर कहाँ नहीं
करूँ मदहे अहले दुवल **"रज़ा"** पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूँ अपने करीम का मेरा दीन पारए नाँ नहीं

रुख़ दिन है या मेहरे समा
ये भी नहीं वो भी नहीं

रुख़ दिन है या मेहरे समा ये भी नहीं वो भी नहीं
शब ज़ुल्फ़ या मुश्के ख़ुता ये भी नहीं वो भी नहीं
मुमकिन में ये क़ुदरत कहाँ? वाजिब में अबदियत कहाँ?
हैराँ हूँ ये भी है ख़ता ये भी नहीं वो भी नहीं
हक़ ये कि हैं अब्दे इलाह और आलमे इमकाँ के शाह
बरज़ख़ हैं वह सिर्रे ख़ुदा ये भी नहीं वो भी नहीं
बुलबुल ने गुल उनको कहा क़ुमरी ने सर्वे जाँ फ़िज़ा
हैरत ने झुंझला कर कहा ये भी नहीं वो भी नहीं
ख़ुरशीद था किस ज़ोर पर क्या बढ़ के चमका था क़मर
बेपर्दा जब वह रुख़ हुआ ये भी नहीं वो भी नहीं
डर था कि इस्याँ की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उनकी रहमत ने सदा ये भी नहीं वो भी नहीं
कोई है नाज़ाँ ज़ुह्द पर या हुस्ने तौबा है सिपर
याँ है फ़क़त तेरी अता ये भी नहीं वो भी नहीं
दिन लह्व में खोना तुझे शब सुब्ह तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा ये भी नहीं वो भी नहीं
रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया फ़रमाने हक़ टाला किया
शुक्रे करम तरसे सज़ा ये भी नहीं वो भी नहीं
है बुलबुले रंगीं **"रज़ा"** या तूतिए नग़मा सरा
हक़ ये कि वासिफ़ है तेरा ये भी नहीं वो भी नहीं

वस्फ़े रुख़ उनका किया करते हैं

वस्फ़े रुख़ उनका किया करते हैं शरहे वश्शम्स ो दुहा करते हैं
उनकी हम मदहो सना करते हैं जिनको महमूद कहा करते हैं
माहे शक़ गशता की सूरत देखो कांप कर मेहर की रजअत देखो
मुस्तफ़ा प्यारे की क़ुदरत देखो कैसे एजाज़ हुआ करते हैं
तू है ख़ुर्शीदे रिसालत प्यारे छुप गए तेरी ज़िया में तारे
अम्बिया और हैं सब मह पारे तुझसे ही नूर लिया करते हैं
ऐ बला बेख़ि-रदिए कुफ़्फ़ार रखते हैं ऐसे के हक़ में इन्कार
कि गवाही हो गर उसको दरकार बेज़ुबाँ बोल उठा करते हैं
अपने मौला की है बस शान अज़ीम जानवर भी करें जिनकी ताज़ीम

संग करते हैं अदब से तसलीम पेड़ सजदे में गिरा करते हैं
रिफ़अते ज़िक्र है तेरा हिस्सा दोनों आलम में है तेरा चर्चा
मुर्ग़े फ़िरदौस पस अज़ हम्दे ख़ुदा तेरी ही मदहो सना करते हैं
उगंलियाँ पाईं वो प्यारी प्यारी जिनसे दरियाए करम हैं जारी
जोश पर आती है जब ग़मख़्वारी तिश्ने सैराब हुआ करते हैं
हाँ यहीं करती हैं चिड़ियाँ फ़रयाद हाँ यहीं चाहती है हिरनी दाद
इसी दर पर शुतराने नाशाद गि-लए रंज ो अना करते हैं
आस्तीं रहमते आलम उल्टे क-मरे पाक पे दामन बांधे
गिरने वानों को चहे दोज़ख़ से साफ़ अलग खींच लिया करते हैं
जब सबा आती है तैबा से इधर खिलखिला पड़ती हैं कलियाँ यकसर
फूल जामे से निकल कर बाहर रुख़े रंगीं की सना करते हैं
तू है वह बादशाह कौन ो मकाँ कि मलक हफ़्त फ़लक के हर आँ
तेरे मौला से शहे अर्श ऐवाँ तेरी दौलत की दुआ करते हैं
जिसके जलवे से उहुद है ताबाँ मादने नूर है उसका दामाँ
हम भी उस चाँद पे होकर क़ुरबाँ दिले संगीं की जिला करते हैं
क्यूँ न ज़ेबा हो तुझे ताजवरी तेरे ही दम की है सब जलवागरी
म-ल-क ो जिन्न ो बशर हूर ो परी जान सब तुझ पे फ़िदा करते हैं
टूट पड़ती हैं बलाएं जिन पर जिनको मिलता नहीं कोई यावर
हर तरफ़ से वह पुर अरमाँ फिर कर उनके दामन में छुपा करते हैं
लब पे आ जाता है जब नामे जनाब मुँह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जाँ बेताब अपने लब चूम लिया करते हैं
लब पे किस मुँह से ग़मे उलफ़त लायें क्या बला दिल है अलम जिसका सुनायें
हम तो उनके कफ़े पा पर मिट जायें उनके दर पे जो मिटा करते हैं
अपने दिल का है उन्हीं से आराम सौंपे हैं अपने उन्हीं को सब काम
लौ लगी है कि अब उस दर के .गुलाम चारए दर्दे **"रज़ा"** करते हैं

मनक़बते सय्येदिना अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ुद्दि-स सिर्रुहु

(हुज़ूर नूरी मियाँ की सज्जादानशीनी के वक़्त पेश की गई)

बरतर क़यास से है मक़ामे अबुल हुसैन
सिदरा से पूछो रिफ़अते बामे अबुल हुसैन
वारफ़्ता पाए बस्तए दामे अबुल हुसैन
आज़ाद नार से है ग़ुलामे अबुल हुसैन

ख़त्ते सियह में नूरे इलाही की ताबिश
किया सुबहे नूर बार है शामे अबुल हुसैन
साक़ी सुना दे शीशए बग़दाद की टपक
महकी है बूए गुल से मुदामे अबुल हुसैन
बूए कबाबे सोख़्ता आती है मयकशो
छलका शराबे चिश्त से जामे अबुल हुसैन
गुलगूँ सहर को है सन्हरे सोज़े दिल से आँख
सुलताने सुहरवर्द है नामे अबुल हुसैन
कुर्सी नशीं है नक़्शे मुराद उनके फ़ैज़ से
मौलाए नक़्शबन्द है नामे अबुल हुसैन
जिस नख़्ले पाक में हैं छियालीस डालियाँ
इक शाख़ उनमें से है बनामे अबुल हुसैन
मस्तों को ऐ करीम बचाए ख़ुमार से
ता दौरे हश्र दौरए जामे अबुल हुसैन
उनके भले से लाखों ग़रीबों का है भला
या रब ज़माना बाद बकामे अबुल हुसैन
मेला लगा है शाने मसीहा की दीद है
मुर्दे जिला रहा है ख़िरामे अबुल हुसैन
सर गश्ता मेहर ो मह हैं पर अब तक खुला नहीं
किस चर्ख़ पर है माहे तमामे अबुल हुसैन
इतना पता मिला है कि यह चर्ख़े चंबरी
है हफ़्त पाया ज़ीनए बामे अबुल हुसैन
ज़र्रे को मेहर क़तरे को दरिया करे अभी
गर जोश ज़न हो बख़्शिशे आमे अबुल हुसैन
यह्या का सदक़ा वारिसे इक़बाल-मन्द पाएं
सज्जादए शुयूख़े किरामे अबुल हुसैन
इनआम लें बहारे जिनाँ तहनियत लिखें
फूले फले तो नख़्ले मरामे अबुल हुसैन
अल्लाह हम भी देख लें शहज़ादे की बहार
सूंघे गुले मुराद मशामे अबुल हुसैन
आक़ा से मेरे सुथरे मियाँ का हुआ है नाम
उस अच्छे सुथरे से रहे नामे अबुल हुसैन
या रब वो चाँद जो फ़-ल-के इज़्ज़ ो जाह पर
हर सैर में हो गाम बगामे अबुल हुसैन
आओ तुम्हें हिलाले सिपहरे शरफ़ दिखायें

गर्दन झुकायें बहरे सलामे अबुल हुसैन
क़ुदरत ख़ुदा की है कि तलातुम कुनाँ उठी
बहरे फ़ना से मौजे दवामे अबुल हुसैन
या रब हमें भी चाश्नी उस अपनी याद की
जिससे है शक्करीं लब ो कामे अबुल हुसैन
हाँ तालेअे **'रज़ा'** तेरी अल्लाह रे यावरी
ऐ बन्दए जुदूदे किरामे अबुल हुसैन

ज़ाइरो पासे अदब रख्खो हवस जाने दो

ज़ाइरो पासे अदब रख्खो हवस जाने दो
आंखें अंधी हुई हैं उनको तरस जाने दो
सूखी जाती है उम्मीदे ग़ु-र-बा की खेती
बूंदियाँ लक्क-ए-रह़मत की बरस जाने दो
पलटी आती है अभी वज्द में जाने शीरीं
नग़मए .क़ुम का ज़रा कानों में रस जाने दो
हम भी चलते हैं ज़रा क़ाफ़िले वालो ठहरो
गठरियाँ तोशए उम्मीद की कस जाने दो
दीदे गुल और भी करती है क़ियामत दिल पर
हमसफ़ीरो हमें फिर सूए क़फ़स जाने दो
आतिशे दिल भी तो भड़काओ अदबदाँ नालो
कौन कहता है कि तुम ज़ब्ते नफ़स जाने दो
यूँ तने ज़ार के दर पै हुए दिल के शोलो
शेवा-ए-ख़ाना बर अंदाज़ीए ख़स जाने दो
ऐ **'रज़ा'** आह कि यूँ सहल कटें जुर्म के साल
दो घड़ी की भी इबादत तो बरस जाने दो

च-म-ने तैबा में सुंबुल जो संवारे गेसू

च-म-ने तैबा में सुंबुल जो संवारे गेसू
हूर बढ़ कर शि-क-ने नाज़ पे वारे गेसू
की जो बालों से तेरे रौज़े की जारूब-कशी
शब को शबनम ने तबर्रुक को हैं धारे गेसू

ज़माना हज का है जलवा दिया है शाहिदे गुल का

ज़माना हज का है जलवा दिया है शाहिदे गुल को
इलाही ताक़ते परवाज़ दे परहाए बुलबुल को
बहारें आईं जोबन पर घिरा है अब्र रह़मत का
लबे मुश्ताक़ भीगें दे इजाज़त साक़िया मुल को
मिले लब से वो मुश्की मुहर वाला दम में दम आए
टपक सुन कर क़ुमे ईसा कहूँ मस्ती में क़ुलक़ुल को
मचल जाऊँ सवाले मुद्दआ पर थाम कर दामन
बहकने का बहाना पाऊँ क़स्दे बे तअम्मुल को
दुआ कर बख़्ते ख़ुफ़्ता जाग हंगामे इजाबत है
हटाया सुब्हे रुख़ से शाह ने शबहाए काकुल को
ज़बाने फ़ल्सफ़ी से अमन ो ख़क़ ो इल्तियाम असरा
पनाहे दौरे रह़मत हाए यक साअत तसलसुल को
दो शंबा मुस्तफ़ा का जुमअए आदम से बेहतर है
सिखाना क्या लिहाज़े हैसियत ख़ूए तअम्मुल को
वुफ़ूरे शाने रह़मत के सबब जुरअत है ऐ प्यारे
न रख बहरे ख़ुदा शर्मिन्दा अर्ज़े बे तअम्मुल को
परेशानी में नाम उनका दिले सद चाक से निकला
इजाबत शाना करने आई गेसूए तवस्सुल को
'रज़ा' नुह सबज़ए गरदूँ है कोतल जिस के मोकिब के
कोई क्या लिख सके उसकी सवारी के तजम्मुल को

याद में जिसकी नहीं होशे तन ो जाँ हमको

याद में जिसकी नहीं होशे तन ो जाँ हम को
फिर दिखा दे वो रुख़ ऐ मेहरे फ़रोज़ाँ हम को
देर से आप में आना नहीं मिलता है हमें
क्या ही ख़ुद रफ़्ता किया जलवए जानाँ हम को
जिस तबस्सुम ने गुलिस्ताँ पे गिराई बिजली
फिर दिखा दे वो अदाए गुले ख़न्दाँ हम को

काश आवेज़ए क़िन्दीले मदीना हो वो दिल
जिसकी सोज़िश ने किया रश्के चराग़ाँ हम को
अर्श जिस ख़ूबीए रफ़्तार का पामाल हुआ
दो क़दम चल के दिखा सरवे ख़िरामाँ हम को
शमअे तैबा से मैं परवाना रहूँ कब तक दूर
हाँ जला दे श–ररे आतिशे पिन्हाँ हम को
ख़ौफ़ है समअ ख़राशीए सगे तैबा का
वर्ना क्या याद नहीं नालए अफ़ग़ाँ हम को
ख़ाक हो जायें दरे पाक पे हसरत मिट जाए
या इलाही न फिरा बे सरो सामाँ हम को
ख़ारे सहराए मदीना न निकल जाए कहीं
वहशते दिल न फिरा कोह ो बियाबाँ हम को
तंग आए हैं दो आलम तेरी बेताबी से
चैन लेने दे तपे सीनए सोज़ाँ हम को
पांव ग़िरबाल हुए राहे मदीना न मिली
ऐ जुनूँ अब तो मिले रुख़्सते ज़िन्दाँ हम को
मेरे हर ज़ख़्मे जिगर से ये निकलती है सदा
ऐ मलीहे अ–र–बी कर दे नमकदाँ हम को
सैरे गुलशन से असीराने क़फ़स को क्या काम
न दे तकलीफ़े चमन बुलबुले बुस्ताँ हम को
जब से आंखों में समाई है मदीने की बहार
नज़र आते हैं ख़िज़ाँ दीदा गुलिस्ताँ हम को
गर लबे पाक से इक़रारे शफ़ाअत हो जाए
यूँ न बेचैन रखे जोशिशे इस्याँ हम को
नय्यरे हश्र ने एक आग लगा रखखी है
तेज़ है धूप मिले सायए दामाँ हम को
रह्म फ़रमाईए या शाह कि अब ताब नहीं
ता बकै ख़ून–रुलाए ग़मे हिजराँ हम को
चाके दामाँ में न थक जाईयो ऐ दस्ते जुनूँ
पुर्ज़े करना है अभी जेब ो गिरीबाँ हम को
पर्दा उस चेहरए अनवर से उठा कर एक बार
अपना आईना बना ऐ महे ताबाँ हम को
ऐ **'रज़ा'** वस्फ़े रुख़े पाक सुनाने के लिए
नज़्र देते हैं चमन मुर्ग़े ग़ज़ल–ख़्वाँ हम को

हाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो

हाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो
काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो
रुकने शामी से मिटी वहशते शामे ग़ुरबत
अब मदीने को चलो सुबहे दिल आरा देखो

आबे ज़मज़म तो पिया ख़ूब बुझाईं प्यासें
आओ जूदे शहे कौसर का भी दरिया देखो
ज़ेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे
अब्रे रह़मत का यहाँ ज़ो़र बरसना देखो

धूम देखी है दरे काबा पे बेताबों की
उनके मुशताक़ों में हसरत का तड़पना देखो
मिस्ले परवाना फिरा करते थे जिस शम्अ के गिर्द
अपनी उस शम्अ को परवाना यहाँ का देखो

ख़ूब आँखों से लगाया है ग़िलाफ़े काबा
क़सरे महबूब के पर्दे का भी जलवा देखो
वाँ मुतीओं का जिगर ख़ौफ़ से पानी पाया
याँ सियाहकारों का दामन पे मचलना देखो

अव्वलीं ख़ानए ह़क़ की तो ज़ियायें देखीं
आख़िरीं बैते नबी का भी तजल्ला देखो
ज़ीनते काबे में था लाखों उरूसों का बनाओ
जलवा फ़रमा यहाँ कौनैन का दूल्हा देखो

ऐमने तूर का था रुक्ने यमानी में फ़रोग़
शोलए तूर यहाँ अन्जुमन आरा देखो
मेहरे मादर का मज़ा देती थी आग़ोशे हतीम
जिनपे माँ बाप फ़िदा याँ करम उनका देखो

अर्ज़े हाजत में रहा कअबा कफ़ीलुल्हुज्जाज
आओ अब दाद-रसीए शहे तैबा देखो
धो चूका ज़ुलमते दिल बोसए संगे असवद
ख़ाक बोसिए मदीने का भी रुतबा देखो

कर चुकी रिफ़अते काबे पे नज़र परवाज़ें
टोपी अब थाम के ख़ाके दरे वाला देखो
बेनियाज़ी से वहाँ काँपती पाई ताअत
जोशे रह़मत पे यहाँ नाज़ गुनाह का देखो

जुमअए मक्का था ईद अहले इबादत के लिए
मुजरिमो आओ यहाँ। ईदे दोशम्बा देखो

मुलतज़िम से तो गले लग के निकाले अरमाँ
अ-द-बो शौक़ का याँ बाहम उलझना देखा

ख़ूब मस्आ में ब-उम्मीदे सफ़ा दौड़ लिए
रहे जानाँ की सफ़ा का भी तमाशा देखो

रक़्से बिस्मिल की बहारें तो मिना में देखीं
दिले ख़ूँ नाबा फ़िशाँ का भी तड़पना देखो

ग़ौर से सुन तो **"रज़ा"** काबे से आती है सदा
मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रौज़ा देखो

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्रील पर बिछायें तो पर को ख़बर न हो

कांटा मेरे जिगर से ग़मे रोज़गार का
यूँ खींच लीजिए के जिगर को ख़बर न हो

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं के ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

कहती थी यह बुराक़ से उसकी सुबक-रवी
यूँ जइये कि गर्दे सफ़र को ख़बर न हो

फ़रमाते हैं ये दोनों हैं सरदारे दो जहाँ
ऐ मुरतज़ा अतीक़ ो उमर को ख़बर न हो

ऐसा गुमा दे उनकी विला में .ख़ुदा हमें
ढूंडा करें पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

आ दिल हरम को रोकने वालों से छुप के आज
यूँ उठ चलें के पहलू ओ बर को ख़बर न हो

तैरे हरम हैं ये कहीं रिश्ता बपा न हों
यूँ देखिए कि तारे नज़र को ख़बर न हो

ऐ ख़ारे तैबा देख कि दामन न भीग जाए
यूँ दिल में आ कि दीदए तर को ख़बर न हो

ऐ शौक़े दिल ये सजदा गर उनको रवा नहीं
अच्छा वह सजदा कीजे के सर को ख़बर न हो

उनके सिवा **"रज़ा"** कोई हामी नहीं जहाँ
गुज़रा करे पिसर पे पिदर को ख़बर न हो

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाँऊ नज़्अ की तकलीफ़ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरा की जब आये सख़्त रात
उनके प्यारे मुँह की सुबहे जाँफ़िज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े महशर में शोरे दारोगीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आयें प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूद ो अता का साथ हो

या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुर्शीदे हश्र
सय्यदे बेसाया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

या इलाही गर्मीए महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठंडी हवा का साथ हो

या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क़, सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आंखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होटों की दुआ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे ख़न्दए बेजा रुलाए
चश्मे गिरयाने शफ़ीए मुरतजा का साथ हो

या इलाही रंग लायें जब मेरी बेबाकियाँ
उनकी नीची नीची नज़रों की हया का साथ हो

या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुलसिरात
आफ़ताबे हाशमी नूरुल हुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआए नेक हम तुझसे करें
.कुदसियों के लब से आमीं रब्बना का साथ हो

या इलाही जब **"रज़ा"** ख़्वाबे गिराँ से सर उठाये
दौलते बेदारे इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

क्या ही ज़ौक़ अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह

क्या ही ज़ौक़ अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह
क़र्ज़ लेती है गुनह परहेज़गारी वाह वाह

ख़ामए क़ुदरत का हुस्ने दस्तकारी वाह वाह
क्या ही तस्वीर अपने प्यारे की संवारी वाह वाह

अश्क शब भर इन्तज़ारे अफ़्वे उम्मत में बहे
मैं फ़िदा चाँद और यूँ अख़्तर शुमारी वाह वाह

उंगलियाँ हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नद्दियाँ पंजाबे रह़मत की हैं जारी वाह वाह

नूर की ख़ैरात लेने दौड़ते हैं मेहर ो माह
उठती है किस शान से गर्दे सवारी वाह वाह

नीम जलवे की न ताब आए क़मर साँ तो सही
मेहर और उन तलवों की आइनादारी वाह वाह

नफ़्स यह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म
नातवाँ के सर पे इतना बोझ भारी वाह वाह

मुजरिमों को ढूंढती फिरती है रह़मत की निगाह
तालए बरगश्ता तेरी साज़गारी वाह वाह

अर्ज़ बैगी है शफ़ाअत अफ़्व की सरकार में
छंट रही है मुजरिमों की फ़र्द सारी वाह वाह

क्या मदीने से सबा आई कि फूलों में है आज
कुछ नई बू भीनी भीनी प्यारी प्यारी वाह वाह

ख़ुद रहे परदे में और आइना अक्से ख़ास का
भेज कर अंजानों से की राहदारी वाह वाह

इस तरफ़ रौज़े का नूर उस सम्त मिम्बर की बहार
बीच में जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी वाह वाह

सदक़े इस इनाम के क़ुरबान इस इकराम के
हो रही है दोनों आलम में तुम्हारी वाह वाह

पारए दिल भी न निकला दिल से तुहफ़े में **"रज़ा"**
उन सगाने कू से इतनी जान प्यारी वाह वाह

रौनक़े बज़्मे जहाँ हैं आशिक़ाने सोख़्ता

रौनक़े बज़्मे जहाँ हैं आशिक़ाने सोख़्ता
कह रही है शम्अ की गोया ज़बाने सोख़्ता
जिसको क़ुर्से मेहर समझा है जहाँ ऐ मुनइमो
उनके ख़्वाने जूद से है एक नाने सोख़्ता
माहे मन ये नय्यरे महशर की गर्मी ता-बके
आतिशे इस्याँ में ख़ुद जलती है जाने सोख़्ता
बर्क़े अंगुश्ते नबी चमकी थी उस पर एक बार
आज तक है सीनए मह में निशाने सोख़्ता
मेहरे आलम ताब झुकता है पए तस्लीम रोज़
पेशे ज़र्राते मज़ारे बेदिलाने सोख़्ता
कूचए गेसूए जानाँ से चले ठंडी नसीम
बालो पर अफ़्शाँ हों या रब बुलबुलाने सोख़्ता
बहरे हक़ ऐ बहरे रहमत एक निगाहे लुत्फ़ बार
ता-ब-कै बे आब तड़पें माहियाने सोख़्ता
रूकशे ख़ुर्शीदे महशर हो तुम्हारे फ़ैज़ से
एक शरारे सीनए शैदाइयाने सोख़्ता
आतिशे तर दामनी ने दिल किए क्या क्या कबाब
ख़िज़्र की जाँ हो जिला दो माहियाने सोख़्ता
आतिशे गुलहाए तैबा पर जलाने के लिए
जान के तालिब हैं प्यारे बुलबुलाने सोख़्ता
लुत्फ़े बर्क़े जलवए मेराज लाया वज्द में
शोलए जव्वाला साँ है आसमाने सोख़्ता
ऐ **'रज़ा'** मज़्मू ने सोज़े दिल की रिफ़अत ने किया
इस ज़मीने सोख़्ता को आसमाने सोख़्ता

सबसे औला ओ आला हमारा नबी

सबसे औला ओ अअ्ला हमारा नबी ﷺ
सबसे बाला ओ वाला हमारा नबी ﷺ
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी ﷺ
दोनों आलम का दूल्हा हमारा नबी ﷺ
बज़्मे आख़िर का शम्ए फ़रोज़ाँ हुआ
नूरे अव्वल का जलवा हमारा नबी ﷺ

जिसको शायाँ है अर्शे ख़ुदा पर जुलूस
है वह सुलताने वाला हमारा नबी ﷺ

बुझ गईं जिसके आगे सभी मशअलें
श्मअ वह ले कर आया हमारा नबी ﷺ

जिसके तलवों का धोवन है आबे हयात
है वह जाने मसीहा हमारा नबी ﷺ

अर्शो कुर्सी की थीं आइना बन्दियाँ
सूए हक़ जब सिधारा हमारा नबी ﷺ

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी ﷺ

हुस्न खाता है जिसके नमक की क़सम
वह मलीहे दिल आरा हमारा नबी ﷺ

ज़िक्र सब फीके जब तक न मज़कूर हो
नमकीन हुस्न वाला हमारा नबी ﷺ

जिसकी दो बूंद हैं कौसर ो सलसबील
है वह रह़मत का दरिया हमारा नबी ﷺ

जैसे सब का ख़ुदा एक है वैसे ही
इनका उनका तुम्हारा हमारा नबी ﷺ

क़रनों बदली रसूलों की होती रही
चाँद बदली का निकला हमारा नबी ﷺ

कौन देता है देने को मुँह चाहिए
देने वाला है सच्चा हमारा नबी ﷺ

क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गये
पर न डूबे न डूबा हमारा नबी ﷺ

मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार
ताजदारों का आक़ा हमारा नबी ﷺ

लामकाँ तक उजाला है जिसका वह है
हर मकाँ का उजाला हमारा नबी ﷺ

सारे अच्छों से अच्छा समझिए जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी ﷺ

सारे ऊँचों से ऊँचा समझइये जिसे
है उस ऊँचे से ऊँचा हमारा नबी ﷺ

अम्बिया से करूँ अर्ज़ क्यूँ मालिको!
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी ﷺ

जिसने टुकड़े किए हैं क़मर के वह है
नूरे वहदत का टुकड़ा हमारा नबी ﷺ
सब चमक वाले उजलों में चमका किए
अन्धे शीशों में चमका हमारा नबी ﷺ
जिसने मुर्दा दिलों को दी उम्रे अबद
है वह जाने मसीहा हमारा नबी ﷺ
ग़मज़दों को **"रज़ा"** मुज़दा दीजे कि है
बेकसों का सहारा हमारा नबी ﷺ

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे
बेकसी लूट ले ख़ुदा न करे
इसमें रौज़े का सजदा हो कि तवाफ़
होश में जो न हो वह क्या न करे
यह वही हैं जो बख़्श देते हैं
कौन इन जुर्मों पर सज़ा न करें
सब तबीबों ने दे दिया है जवाब
आह ईसा अगर दवा न करे
दिल कहाँ ले चला हरम से मुझे
अरे तेरा बुरा ख़ुदा न करे
उज्ऱे उम्मीदे अफ़्व गर न सुने
रू-स्याह और क्या बहाना करे
दिल में रौशन है शम्अे इश्क़े रसूल
काश जोशे हवस हुआ न करे
हश्र में हम भी सैर देखेंगे
मुन्किर आज उन से इल्तेजा न करे
ज़ुअफ़ माना मगर यह ज़ालिम दिल
उनके रस्ते में तो थका न करे
जब तेरी ख़ू है सब का जी रखना
वही अच्छा जो दिल बुरा न करे
दिल से इक ज़ौक़े मय का तालिब हूँ
कौन कहता है इत्तिक़ा न करे
ले **"रज़ा"** सब चले मदीने को
मैं न जाऊँ अरे ख़ुदा न करे

मोमिन वह है जो उनकी इज़्ज़त पे मरे दिल से

मोमिन वह है जो उनकी इज़्ज़त पे मरे दिल से
ताज़ीम भी करता है नजदी तो मरे दिल से
वल्लाह वो सुन लेंगे फ़रयाद को पहुँचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से
बिछड़ी है गली कैसी बिगड़ी है बनी कैसी
पूछो कोई ये सदमा अरमान भरे दिल से
क्या उसको गिराए दहर जिस पर तू नज़र रख्खे
ख़ाक उसको उठाए हश्र जो तेरे गिरे दिल से
बहका है कहाँ मजनूँ ले डाली बनों की ख़ाक
दम भर न किया ख़ेमा लैला ने परे दिल से
सोने को तपायें जब कुछ मेल हो या कुछ मैल
क्या काम जहन्नम के धर्रे को खरे दिल से
आता है दरे वाला यूँ ज़ौक़े तवाफ़ आना
दिल जान से सदक़े हो सर गिर्द फिरे दिल से
ऐ अब्रे करम फ़रयाद फ़रयाद जला डाला
इस सोज़िशे ग़म का है ज़िद मेरे हरे दिल से
दरिया है चढ़ा तेरा कितनी ही उड़ायें ख़ाक
उतरेंगे कहाँ मुजरिम ऐ अफ़्व तेरे दिल से
क्या जानें यमे ग़म में दिल डूब गया कैसा
किस तह को गए अरमाँ अब तक न तिरे दिल से
करता तो है याद उनकी ग़फ़लत को ज़रा रोके
लिल्लाह **'रज़ा'** दिल से हाँ दिल से अरे दिल से

अल्लाह, अल्लाह के नबी से

अल्लाह, अल्लाह के नबी से
फ़रयाद है नफ़्स की बदी से
दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई
लाज आई न ज़र्रों की हंसी से
शब भर सोने ही से ग़रज़ थी
तारों ने हज़ार दांत पीसे

ईमान पे मौत बेहतर ओ नफ़्स
तेरी नापाक ज़िन्दगी से
ओ शहद नुमाए ज़हर दर जाम
गुम जाऊँ किधर तेरी बदी से
गहरे प्यारे पुराने दिल सोज़
गुज़रा मैं तेरी दोस्ती से
तुझ से जो उठाए मैंने सदमे
ऐसे न मिले कभी किसी से
उफ़ रे ख़ुद काम बे मुरव्वत
पड़ता है काम आदमी से
तूने ही किया ख़ुदा से नादिम
तूने ही किया ख़जिल नबी से
कैसे आक़ा का हुक्म टाला
हम मर मिटे तेरी ख़ुद सरी से
आती न थी जब बदी भी तुझको
हम जानते हैं तुझे जभी से
हद के ज़ालिम सितम के कट्टर
पत्थर शर्मायें तेरे जी से
हम ख़ाक में मिल चुके हैं कब के
निकला न ग़ुबार तेरे जी से
है ज़ालिम मैं निबाहूँ तुझसे
अल्लाह बचाए उस घड़ी से
जो तुमको न जानता हो हज़रत
चालें चलिए उस अजनबी से
अल्लाह के सामने वो गुन थे
यारों में कैसे मुत्तक़ी से
रहज़न ने लूट ली कमाई
फ़रयाद है ख़िज़्रे हाश्मी से
अल्लाह कुएँ में ख़ुद गिरा हूँ
अपनी नालिश करूँ तुझी से
है पुश्त पनाह ग़ौसे आज़म
क्यूँ डरते हो तुम **'रज़ा'** किसी से

शजरए आलिया क़ादिरिया बरकातिया

या इलाही रह़म फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजे ख़ुदा के वास्ते
मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलायें रद शहीदे करबला के वास्ते
सय्यिदे सज्जाद के सद्क़े में साजिद रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते
सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते
बहरे मारूफ़ ो सरी मारूफ़ दे बेख़ुद सरी
जुन्दे हक़ में गिन जुनैदे बासफ़ा के वास्ते
बहरे शिब्ली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अब्दे वाह़िद बे रिया के वास्ते
बुलफ़रह का सद्क़ा कर ग़म को फ़रह दे हुस्न ो सअद
बुल-हसन और बू सईदे सअद ज़ा के वास्ते
क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरियों में उठा
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते
अहसनल्लाहु लहुम रिज़्क़न से दे रिज़्क़े हसन
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल अस्फ़िया के वास्ते
नस्र अबी सालेह का सद्क़ा सालेह ो मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहिय्ये जाँ फ़िज़ा के वास्ते
तूरे इर्फ़ान ो उलूव्वो ह़म्द ो हुस्ना ओ बहा
दे अली मूसा हसन अहमद बहा के वास्ते
बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशा के वास्ते
ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमाँ को जमाल
शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते
दे मुह़म्मद के लिए रोज़ी कर अह़मद के लिए
ख़्वाने फ़ज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते
दीन ो दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्क़े हक़ दे इश्क़िए इश्क़ इन्तिमा के वास्ते
हुब्बे अहले बैत दे आले मुह़म्मद के लिए
कर शहीदे इश्क़ हम्ज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल उला के वास्ते
दो जहाँ में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वास्ते
सद्क़ा इन अअयाँ का दे छः ऐन इज़्ज़ इल्म ो अ़मल
अ़फ़्व ो इ़रफ़ाँ आ़फ़ियत अह़मद **"रज़ा"** के वास्ते

अर्शे हक़ है मसनदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की

अर्शे हक् है मसनदे रिफअत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की
क़ब्र में लहराएंगे ता हश्र चशमे नूर के
जलवा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की
काफ़िरों पर तेग़े बाला से गिरी बर्क़े ग़ज़ब
अब्र आ सा छा गई हैबत रसूलुल्लाह की
लावरब्बिल अर्श जिसको जो मिला उनसे मिला
बटती है कौनैन में नेमत रसूलुल्लाह की
वो जहन्नम में गया जो उनसे मुस्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
सूरज उलटे पाँव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नजदी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की
तुझसे और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जोयाँ रहे
फिर कहे मरदक कि हूँ उम्मत रसूलुल्लाह की
नजदी उसने तुझको मुहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िरो मुरतद पे भी रह़मत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वो करीम उनका ख़ुदा उनसे फ़ज़ूँ
और 'न' कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की
अहले सुन्नत का है बेड़ा पार असहाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की
ख़ाक होकर इश्क़ में आराम से सोना मिला
जान की अकसीर है उलफ़त रसूलुल्लाह की
टूट जायेंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैद ो बन्द
हश्र को खुल जायेगी ताक़त रसूलुल्लाह की

या रब इक साअत में धुल जायें सियाकारों के जुर्म
जोश पर आ जाए अब रह़मत रसूलुल्लाह की

है गुले बाग़े क़ुद्स रुख़सारे ज़ेबाए हुज़ूर
सर्वे गुलज़ारे क़िदम क़ामत रसूलुल्लाह की

ऐ **"रज़ा"** ख़ुद साहिबे क़ुरआँ है मद्दाहे हुज़ूर
तुझसे कब मुमकिन है फिर मिदहत रसूलुल्लाह की

क़ाफ़िले ने सूए तैबा कमर आराई की

क़ाफ़िले ने सूए तैबा कमर आराई की
मुश्किल आसान इलाही मिरी तन्हाई की

लाज रख ली तमए अफ़्वे के सौदाई की
ऐ मैं क़ुरबाँ मिरे आक़ा बड़ी आक़ाई की

फ़र्श ता अर्श सब आईना ज़माइर हाज़िर
बस क़सम खाइये उम्मी तेरी दानाई की

शश जिहत सम्ते मुक़ाबिल शबो रोज़ एक ही हाल
धूम वन्नज्म में है आपकी बीनाई की

पान सौ साल की राह ऐसी है जैसे दो गाम
आस हम को भी लगी है तिरी शनवाई की

चाँद इशारे का हिला हुक्म का बांधा सूरज
वाह क्या बात शहा तेरी तवानाई की

तंग ठहरी है **'रज़ा'** जिसके लिए वुसअते अर्श
बस जगह दिल में है उस जलवए हरजाई की

पेशे हक़ मुज़दा शफ़ाअत का सुनाते जायेंगे

पेशे हक़ मुज़दा शफ़ाअत का सुनाते जायेंगे
आप रोते जायेंगे हमको हंसाते जायेंगे

दिल निकल जाने की जा है आह किन आंखों से वो
हम से प्यासों के लिए दरिया बहाते जायेंगे

कुश्तगाने गर्मीए महशर को वह जाने मसीह
आज दामन की हवा दे कर जिलाते जायेंगे

गुल खिलेगा आज यह उनकी नसीमे फ़ैज़ से
ख़ून रोते आयेंगे हम मुस्कुराते जायेंगे

हाँ चलो हसरतज़दो सुनते हैं वह दिन आज है
थी ख़बर जिसकी कि वह जलवा दिखाते जायेंगे

आज ईदे आशिक़ाँ है गर ख़ुदा चाहे कि वह
अबरूए पैवस्ता का आलम दिखाते जायेंगे

कुछ ख़बर भी है फ़क़ीरो आज वह दिन है कि वह
नेमते ख़ुल्द अपने सदक़े में लुटाते जायेंगे

ख़ाक उफ़तादो बस उनके आने ही की देर है
ख़ुद वह गिर कर सजदे में तुमको उठाते जायेंगे

वुस्अतें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जायेंगे और वह छुपाते जायेंगे

लो वह आये मुस्कुराते हम असीरों की तरफ़
ख़िरमने इसयाँ पे अब बिजली गिराते जायेंगे

आँख खोलो ग़मज़दो देखो वह गिरयाँ आये हैं
लौहे दिल से नक़्शे ग़म को अब मिटाते जायेंगे

सोख़्ता जानों पे वह पुर जोशे रहमत आये हैं
आबे कौसर से लगी दिल की बुझाते जायेंगे

आफ़ताब उनका ही चमकेगा जब औरों के चराग़
सर सरे जोशे बला से झिलमिलाते जायेंगे

पाए कोबाँ पुल से गुज़रेंगे तेरी आवाज़ पर
रब्बे सल्लिम की सदा पर वज्द लाते जायेंगे

सरवरे दीं लीजे अपने नातवानों की ख़बर
नफ़्सो शैताँ सय्इदा कब तक दबाते जायेंगे

हश्र तक डालेंगे हम पैदाइशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िलअे गिराते जायेंगे

ख़ाक हो जायें अदू जल कर मगर हम तो **"रज़ा"**
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जायेंगें

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

बरसता नहीं देख कर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

मदीने के ख़ित्ते ख़ुदा तुझको रख्खे
ग़रीबों फ़क़ीरों के ठहराने वाले
तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चशमे आलम से छुप जाने वाले
मैं मुजरिम हूँ आक़ा मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले
हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़ा है ओ जाने वाले
चल उठ ज़िब्ह फ़र्सा हो साक़ी के दर पर
दरे जूद ऐ मेरे मस्ताने वाले
तेरा खायें तेरे ग़ुलामों से उलझें
हैं मुन्किर अजब खाने ग़ुर्राने वाले
रहेगा यूँही उनका चर्चा रहेगा
पड़ें ख़ाक हो जायें जल जाने वाले
अब आई शफ़ाअत की साअत अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले
"रज़ा" नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहाँ तुमने देखे हैं चन्दराने वाले

आँखें रो-रो के सुजाने वाले

आँखें रो-रो के सुजाने वाले
जाने वाले नहीं आने वाले
कोई दिन में ये सरा ऊजड़ है
अरे ओ छावनी छाने वाले
ज़िब्ह होते हैं वतन से बिछड़े
देस क्यूँ गाते हैं गाने वाले
अरे बदफ़ाल बुरी होती है
देस का जंगला सुनाने वाले
सुन ले आदा मैं बिगड़ने का नहीं
वह सलामत हैं बनाने वाले
आंखें कुछ कहती हैं तुझ से पैग़ाम
ओ दरे यार के जाने वाले
फिर न करवट ली मदीने की तरफ़
अरे चल झूटे बहाने वाले

नफ़्स मैं ख़ाक हुआ तू न मिटा
हे मेरी जान के खाने वाले

जीते क्या देख के हैं ऐ हूरो
तैबा से ख़ुल्द में आने वाले

नीम जलवे में दो आलम गुलज़ार
वाह वा रंग जमाने वाले

हुस्न तेरा सा न देखा न सुना
कहते हैं अगले ज़माने वाले

वही धूम उनकी है माशा अल्लाह
मिट गए आप मिटाने वाले

लबे सैराब का सदक़ा पानी
ऐ लगी दिल की बुझाने वाले

साथ ले लो मुझे मैं मुजरिम हूँ
राह में पड़ते हैं थाने वाले

हो गया धक से कलेजा मेरा
हाए रुख़सत की सुनाने वाले

ख़ल्क़ तो क्या कि हैं ख़ालिक़ को अज़ीज़
कुछ अजब भाते हैं भाने वाले

कुश्तए दश्ते हरम जन्नत की
खिड़कियाँ अपने सिरहाने वाले

क्यूँ **"रज़ा"** आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले

क्या महकते हैं महकने वाले

क्या महकते हैं महकने वाले
बू पे चलते हैं भटकने वाले

जगमगा उठ्ठी मिरी गोर की ख़ाक
तेरे क़ुर्बान चमकने वाले

महे बे दाग़ के सदक़े जाऊँ
यूँ दमकते हैं दमकने वाले

अर्श तक फैली है ताबे आरिज़
क्या झलकते हैं झलकने वाले

गुले तैबा की सना गाते हैं
नख़्ले तूबा पे चमकने वाले

आसियो थाम लो दामन उनका
वह नहीं हाथ झटकने वाले

अब्रे रह़मत के सलामी रहना
फलते हैं पौदे लचकने वाले

अरे ये जलवागहे जानाँ है
कुछ अदब भी है फड़कने वाले

सुन्नियो उनसे मदद मांगे जाओ
पड़े बकते रहें बकने वाले

शम्अे यादे रुख़े जानाँ न बुझे
ख़ाक हो जायें भड़कने वाले

मौत कहती है कि जलवा है क़रीब
इक ज़रा सो लें बिलकने वाले

कोई इन तेज़ रौओं से कह दो
किसके हो के रहें थकने वाले

दिल सुलगता ही भला है ऐ ज़ब्त
बुझ भी जाते हैं दहकने वाले

हम भी कुम्हलाने से ग़ाफ़िल थे कभी
क्या हंसा ग़ुन्चे चटकने वाले

नख़्ल से छुट के क्या हाल हुआ
आह ओ पत्ते खड़कने वाले

जब गिरे मुँह सुए मयख़ाना था
होश में हैं ये बहकने वाले

देख ओ ज़ख़्मे दिल आपे को संभाल
फूट बहते हैं तपकने वाले

मय कहाँ और कहाँ मैं ज़ाहिद
यूँ भी तो छकते हैं छकने वाले

कफ़े दरियाए करम में हैं **"रज़ा"**
पाँच फ़व्वारे छलकने वाले

राह पुरख़ार है क्या होना है

राह पुरख़ार है क्या होना है
पाँव अफ़गार है क्या होना है

ख़ुश्क है ख़ूँन कि दुश्मन ज़ालिम
सख़्त ख़ूँख़ार है क्या होना है

हमको बिद कर वही करना जिससे
दोस्त बेज़ार है क्या होना है
        तन की अब कौन ख़बर ले है है
        दिल का आज़ार है क्या होना है
मीठे शरबत दे मसीहा जब भी
ज़िद है इन्कार है क्या होना है
        दिल कि तीमार हमारा करता
        आप बीमार है क्या होना है
पर कटे तंग क़फ़स और बुलबुल
नौ गिरफ्तार है क्या होना है
        छुप के लोगों से किए जिसके गुनाह
        वह ख़बर दार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख
सर पे तलवार है क्या होना है
        तेरे बीमार को मेरे ईसा
        ग़श लगातार है क्या होना है
नफ़्से पुरज़ोर का वह ज़ोर और दिल
ज़ेर है ज़ार है क्या होना है
        काम ज़िन्दाँ के किए और हमें
        शौक़े गुलज़ार है क्या होना है
हाए रे नींद मुसाफ़िर तेरी
कूच तय्यार है क्या होना है
        दूर जाना है रहा दिन थोड़ा
        राह दुश्वार है क्या होना है
घर भी जाना है मुसाफ़िर कि नहीं
मत पे क्या मार है क्या होना है
        जान हलकान हुई जाती है
        बार सा बार है क्या होना है
पार जाना है नहीं मिलती नाव
ज़ोर पर धार है क्या होना है
        राह तो तेग़ पर और तलवों को
        गि–लऐ ख़ार है क्या होना है
रोशनी की हमें आदत और घर
तीरा ओ तार है क्या होना है

बीच में आग का दरिया हाएल
क़स्द उस पार है क्या होना है

उस कड़ी धूप को क्यूँकर झेलें
शोला ज़न नार है क्या होना है

हाए बिगड़ी तो कहाँ आकर नाव
ऐन मंजधार है क्या होना है

कल तो दीदार का दिन और यहाँ
आँख बेकार है क्या होना है

मुँह दिखाने का नहीं और सहर
आम दरबार है क्या होना है

उनको रह़म आए तो आए वरना
वो कड़ी मार है क्या होना है

ले वह हाकिम के सिपाही आए
सुबहे इज़हार है क्या होना है

वाँ नहीं बात बनाने की मजाल
चारा इक़रार है क्या होना है

साथ वालों ने यहीं छोड़ दिया
बेकसी यार है क्या होना है

आख़री दीद है आओ मिल लें
रंज बेकार है क्या होना है

दिल हमें तुम से लगाना ही न था
अब सफ़र बार है क्या होना है

जाने वालों पे यह रोना कैसा
बन्दा नाचार है क्या होना है

नज़्अ़ में ध्यान न बट जाए कहीं
ये अबस प्यार है क्या होना है

उसका ग़म है कि हर इक की सूरत
गले का हार है क्या होना है

बातें कुछ और भी तुमसे करते
पर कहाँ वार है क्या होना है

क्यूँ **"रज़ा"** कुढ़ते हो हंसते उट्ठो
जब वह ग़फ़्फ़ार है क्या होना है

किसके जलवे की झलक है ये उजाला क्या है

किसके जलवे की झलक है यह उजाला क्या है
हर तरफ़ दीदए हैरतज़दा तकता क्या है

मांग मन मानती मुँह मांगी मुरादें लेगा
न यहाँ 'ना' है न मंगता से ये कहना 'क्या है'

पन्द कड़वी लगे नासेह से तुर्श हो ऐ नफ़्स
ज़हरे इस्याँ में सितमगर तुझे मीठा क्या है

हम हैं उनके वह हैं तेरे तो हुए हम तेरे
इससे बढ़कर तेरी सम्त और वसीला क्या है

उनकी उम्मत में बनाया उन्हें रहमत भेजा
यूँ न फ़रमा कि तेरा रहम में दावा क्या है

सदक़ा प्यारे की हया का कि न ले मुझसे हिसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

ज़ाहिद उनका मैं गुनहगार वह मेरे शाफ़ेअ
इतनी निस्बत मुझे क्या कम है तू समझा क्या है

बेबसी हो जो मुझे पुर्सिशे आमाल के वक़्त
दोस्तो क्या कहूँ उस वक़्त तमन्ना क्या है

काश फ़रयाद मेरी सुन के यह फ़रमायें हुज़ूर
हाँ कोई देखो यह क्या शोर है ग़ोग़ा क्या है

कौन आफ़त-ज़दा है किस पे बला टूटी है
किस मुसीबत में गिरफ़्तार है सदमा क्या है

किससे कहता है कि लिल्लाह ख़बर लीजे मेरी
क्यूँ है बेताब ये बेचैनी का रोना क्या है

उसकी बेचैनी से है ख़ातिरे अक़्दस पे मलाल
बेकसी कैसी है पूछो कोई गुज़रा क्या है

यूँ मलाइक करें मअरूज़ कि इक मुजरिम है
उससे पुरसिश है बता तूने किया क्या क्या है

सामना क़हर का है दफ़्तरे आमाल हैं पेश
डर रहा है कि ख़ुदा हुक्म सुनाता क्या है

आपसे करता है फ़रयाद कि या शाहे रुसुल
बन्दा बेकस है शहा रहम में वक़्फ़ा क्या है

अब कोई दम में गिरफ़्तारे बला होता हूँ
आप आ जायें तो क्या ख़ौफ़ है खटका क्या है

सुन के यह अर्ज़ मेरी बहरे करम जोश में आए
यूँ मलाइक को हो इरशाद ठहरना क्या है

किसको तुम मूरिदे आफ़ात किया चाहते हो
हम भी तो आ के ज़रा देखें तमाशा क्या है

उनकी आवाज़ पे कर उट्ठूँ मैं बेसाख़्ता शोर
और तड़प के ये कहूँ अब मुझे परवा क्या है

लो वह आया मेरा हामी मेरा ग़मख़्वारे उमम
आ गई जाँ तने बेजाँ में ये आना क्या है

फिर मुझे दामने अक़दस में छुपा लें सरवर
और फ़रमायें हटो इस पे तक़ाज़ा क्या है

बन्दा आज़ाद शुदा है ये हमारे दर का
कैसा लेते हो हिसाब इस पे तुम्हारा क्या है

छोड़ कर मुझको फ़रिश्ते कहें महकूम हैं हम
हुक्मे वाला की न तामील हो ज़हरा क्या है

ये समाँ देख के महशर में उठे शोर कि वाह
चश्मे बद दूर हो क्या शान है रुतबा क्या है

सदक़े इस रहम के इस सायए दामन पे निसार
अपने बन्दे को मुसीबत से बचाया क्या है

ऐ **"रज़ा"** जाने अनादिल तेरे नग़मों के निसार
बुलबुले बाग़े मदीना तेरा कहना क्या है

सरवर कहूँ कि मालिक ो मौला कहूँ तुझे

सरवर कहूँ कि मालिक ो मौला कहूँ तुझे
बाग़े ख़लील का गुले ज़ेबा कहूँ तुझे

हिरमा नसीब हूँ तुझे उम्मीद-गह कहूँ
जाने मुराद ो काने तमन्ना कहूँ तुझे

गुलज़ारे क़ुद्स का गुले रंगी अदा कहूँ
दरमाने दर्दे बुलबुले शैदा कहूँ तुझे

सुबहे वतन पे शामेग़रीबाँ को दूँ शरफ़
बेकस नवाज़ गेसुओं वाला कहूँ तुझे

अल्लाह रे तेरे जिस्मे मुनव्वर की ताबिशें
ऐ जाने जाँ मैं जाने तजल्ला कहूँ तुझे
बेदाग़ लाला या क़मरे बे कलफ़ कहूँ
बे ख़ार गुलबने चमन आरा कहूँ तुझे
मुजरिम हूँ अपने अफ़्व का सामाँ करूँ शहा
यानी शफ़ीअ रोज़े जज़ा का कहूँ तुझे
इस मुर्दा दिल को मुज़दा हयाते अबद का दूँ
ताब ो तवाने जाने मसीहा कहूँ तुझे
तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैराँ हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूँ तुझे
कह लेगी सब कुछ उनके सनाख़्वाँ की ख़ामुशी
चुप हो रहा हूँ कह के मैं क्या क्या कहूँ तुझे
लेकिन **"रज़ा"** ने ख़त्म सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का मौला कहूँ तुझे

मुज़दाबाद ऐ आसियो शाफ़ेअ शहे अबरार है

मुज़दाबाद ऐ आसियो शाफ़ेअ शहे अबरार है
तहनीयत ऐ मुजरिमो ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है
अर्श सा फ़र्शे ज़मीं है फ़र्श पा अर्शे बरीं
क्या निराली तरज़ की नामे ख़ुदा रफ़्तार है
चाँद शक़ हो पेड़ बोलें जानवर सजदा करें
बार–कल्लाह मरजए़ आलम यही सरकार है
जिनको सूए आसमाँ फैला के जल थल भर दिए
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है
लब ज़ुलाले चश्मए कुन में गुंधे वक़्ते ख़मीर
मुर्दे ज़िन्दा करना ऐ जाँ तुम को क्या दुश्वार है
गोरे गोरे पांव चमका दो ख़ुदा के वास्ते
नूर का तड़का हो प्यारे गोर की शब तार है
तेरे ही दामन पे हर आसी की पड़ती है नज़र
एक जाने बे–ख़ता पर दो जहाँ का बार है
जोशे तूफ़ाँ बहरे बेपायाँ हवा नासाज़गार
नूह के मौला करम कर ले तो बेड़ा पार है

रहमतुल्लिलआलमीं तेरी दुहाई दब गया
अब तो मौला बे तरह सर पर गुनह का बार है
हैरतें हैं आइनादारे वफ़ूरे वस्फ़े गुल
उनके बुलबुल की ख़ामोशी भी लबे इज़्हार है
गूंज गूंज उट्ठे हैं नग़माते **'रज़ा'** से बोस्ताँ
क्यूँ न हो किस फूल की मिद्हत में वा मिनक़ार है

अर्श की अक़्ल दंग है चर्ख़ में आसमान है

अर्श की अक़्ल दंग है चर्ख़ में आसमान है
जाने मुराद अब किधर हाए तेरा मकान है
बज़्मे सनाए ज़ुल्फ़ में मेरी उरूसे फ़िक्र को
सारी बहारे हश्त ख़ुल्द छोटा सा इत्रदान है
अर्श पे जा के मुर्ग़े अक़्ल थक के गिरा ग़श आ गया
और अभी मंज़िलों परे पहला ही आसतान है
अर्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श पे तुरफ़ा धूमधाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है
इक तेरे रुख़ की रोशनी चैन है दो जहान की
इन्स का उन्स उसी से है जान की वो ही जान है
वो जो न थे तो कुछ न था वो जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वह जहान की जान है तो जहान है
गोद में आलमे शबाब हाले शबाब कुछ न पूछ
गुलबने बाग़े नूर की और ही कुछ उठान है
तुझ सा सियाहकार कौन उन सा शफ़ीअ है कहाँ
फिर वह तुझी को भूल जायें दिल ये तेरा गुमान है
पेशे नज़र वह नौ बहार सजदे को दिल है बेक़रार
रोकिये सर को रोकिये हाँ यही इम्तेहान है
शाने ख़ुदा न साथ दे उनके ख़िराम का वो बाज़
सिदरा से ताज़मीं जिसे नर्म सी एक उड़ान है
बारे जलाल उठा लिया गरचे कलेजा शक़ हुआ
यूँ तो ये माहे सब्ज़ रंग नज़रों में धान पान है
ख़ौफ़ न रख **"रज़ा"** ज़रा तू तो है अब्दे मुस्तफ़ा
तेरे लिए अमान है तेरे लिए अमान है

उठा दो परदा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी हिजाब में है

उठा दो परदा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी हिजाब में है
ज़माना तारीक हो रहा है कि मेहर कब से नक़ाब में है
नहीं वह मीठी निगाह वाला ख़ुदा की रह़मत है जलवा फ़रमा
ग़ज़ब से उनके ख़ुदा बचाए जलाले बारी इताब में है
जली जली बू से उसकी पैदा है सोज़िशे इश्क़े चश्मे वाला
कबाबे आहू में भी न पाया मज़ा जो दिल के कबाब में है
उन्हीं की बू मायए समन है उन्हीं का जलवा चमन चमन है
उन्हीं से गुलशन महक रहे हैं उन्हीं की रंगत गुलाब में है
तेरी जिलो में है माहे तैबा हिलाल हर मर्ग ो ज़िन्दगी का
हयाते जाँ का रिकाब में है ममाते आदा का डाब में है
स्याह लिबासाने दारे दुनया ओ सब्ज़ पोशाने अर्शे आला
हर इक है उनके करम का प्यासा यह फ़ैज़ उनकी जनाब में है
वह गुल हैं लबहाए नाज़ुक उनके हज़ारों झड़ते हैं फूल जिनसे
गुलाब गुलशन में देखे बुलबुल ये देख गुलशन गुलाब में है
जली है सोज़े जिगर से जाँ तक है तालिबे जल्वए मुबारक
दिखा दो वो लब कि आबे हैवाँ का लुत्फ़ जिनके ख़िताब में है
खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई हामी न कोई यावर
बता दो आकर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है
ख़ुदाए कह्हार है ग़ज़ब पर खुले हैं बदकारियों के दफ़्तर
बचा लो आकर शफ़ीए महशर तुम्हारा बन्दा अज़ाब में है
करीम ऐसा मिला कि जिसके खुले हैं हाथ और भरे ख़ज़ाने
बताओ ऐ मुफ़लिसो कि फिर क्यूँ तुम्हारा दिल इज़्तेराब में है
गुनह की तारीकियाँ ये छाईं उमंड के काली घटायें आईं
ख़ुदा के ख़ुर्शीद मेहर फ़रमा कि ज़र्रा बस इज़्तिराब में है
करीम अपने करम का सदक़ा लईमे बेक़द्र को न शरमा
तू और **"रज़ा"** से हिसाब लेना "रज़ा" भी कोई हिसाब में है

अंधेरी रात है ग़म की घटा इसियाँ की काली है

अंधेरी रात है ग़म की घटा इसियाँ की काली है
दिले बेकस का इस आफ़त में आक़ा तू ही वाली है
न हो मायूस आती है सदा गोरे ग़रीबाँ से
नबी उम्मत का हामी है ख़ुदा बन्दों का वाली है
उतरते चाँद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले
अंधेरा पाख आता है ये दो दिन की उजाली है
अरे ये भेड़ियों का बन है और शाम आ गई सर पर
कहाँ सोया मुसाफ़िर हाए कितना लाउबाली है
अंधेरा घर अकेली जान दम घुटता दिल उकताता
ख़ुदा को याद कर प्यारे वो साअत आने वाली है
ज़मीं तपती कटीली राह भारी बोझ घायल पांव
मुसीबत झेलने वाले तिरा अल्लाह वाली है
न चौंका दिन है ढलने पर तिरी मन्ज़िल हुई खोटी
अरे ओ जाने वाले नींद ये कब की निकाली है
'रज़ा' मन्ज़िल तो जैसी है वह इक मैं क्या सभी को है
तुम उसको रोते हो ये तो कहो याँ हाथ ख़ाली है

गुनहगारों को हातिफ़ से नवैदे ख़ुशमआली है

गुनहगारों को हातिफ़ से नवैदे ख़ुश मआली है
मुबारक हो शफ़ाअत के लिए अह़मद सा वाली है
क़ज़ा हक़ है मगर इस शौक़ का अल्लाह वाली है
जो उनकी राह में जाए वह जान अल्लाह वाली है
तेरा क़द्दे मुबारक गुल बने रह़मत की डाली है
उसे बो कर तेरे रब ने बिना रह़मत की डाली है
तुम्हारी शर्म से शाने जलाले हक़ टपकती है
ख़मे गर्दन हिलाले आसमाने ज़ुल्जलाली है
ज़हे ख़ुद गुम जो गुम होने पे यह ढूंडे कि क्या पाया
अरे जब तक कि पाना है जभी तक हाथ ख़ाली है

मैं इक मोहताजे बे वक़्अत गदा तेरे सगे दर का
तेरी सरकार वाला है तेरा दरबार आली है
तेरी बख़्शिश पसन्दी उज़्र जोई तौबा ख़्वाही से
उमूमे बेगुनाही जुर्मे शाने लाउबाली है
अबूबक्र ो उमर उसमान ो हैदर जिसके बुलबुल हैं
तेरा सर्वे सही उस गुलबने ख़ूबी की डाली है
"रज़ा" क़िसमत ही खुल जाए जो गीलाँ से ख़िताब आए
कि तू अदना सगे दरगाहे ख़ुद्दाम मआली है

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है
आँख से काजल साफ़ चुरा लें याँ वह चोर बला के हैं
तेरी गठरी ताकी है और तूने नींद निकाली है
यह जो तुझको बुलाता है यह ठग है मार ही रख्खेगा
हाय मुसाफ़िर दम में न आना मत कैसी मतवाली है
सोना पास है सूना बन है सोना ज़हर है उठ प्यारे
तू कहता है मीठी नींद है तेरी मत ही निराली है
आंखें मलना झुंझला पड़ना लाखों जमाई अंगड़ाई
नाम पर उठने के लड़ता है उठना भी कुछ गाली है
जुगनू चमके पत्ता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के
डर समझाए कोई पवन है या अगिया बेताली है
बादल गरजे बिजली तड़पे धक से कलेजा हो जाए
बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है
पाँव उठा और ठोकर खाई कुछ संभला फिर औंधे मुँह
मेंह ने फिसलन कर दी है और धुर तक खाई नाली है
साथी साथी कह कर पुकारूँ साथी हो तो जवाब दे
फिर झुंझला कर सर दे पटकूँ चल रे मौला वाली है
फिर फिर के हर जानिब देखूँ कोई आस न पास कहीं
हाँ इक टूटी आस ने हारे जी से रिफ़ाक़त पा ली है
तुम तो चाँद अरब के हो प्यारे तुम तो अजम के सूरज हो
देखो मुझ बेकस पर शब ने कैसी आफ़त डाली है

दुनिया को तू क्या जाने यह बिस की गांठ है हराफ़ा
सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली भाली है
शहद दिखाए ज़हर पिलाए क़ातिल डायन शौहरकुश
इस मुर्दार पे क्या ललचाया दुनिया देखी भाली है
वह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़लिस क्या मोल चुकायें अपना हाथ ही ख़ाली है
मौला तेरे अफ़्वो करम हों मेरे गवाह सफ़ाई के
वरना **"रज़ा"** से चोर पे तेरी डिगरी तो इक़बाली है

नबी सरवरे हर रसूल ो वली है

नबी सरवरे हर रसूल ो वली है
नबी राज़दारे मअल्लाह ली है
वह नामी कि नामे ख़ुदा नाम तेरा
रऊफ़ ो रहमो अ़लीम ो अ़ली है
है बेताब जिसके लिए अर्शे आज़म
वो उस रहरवे ला मकाँ की गली है
नकीरैन करते हैं ताज़ीम मेरी
फ़िदा हो के तुझ पे ये इज़्ज़त मिली है
तलातुम है कश्ती पे तूफ़ाने ग़म का
ये कैसी हवाए मुख़ालिफ़ चली है
न क्यूँ कर कहूँ या हबीबी अग़िसनी
इसी नाम से हर मुसीबत टली है
सबा है मुझे सर सरे दश्ते तैबा
इसी से कली मेरे दिल की खिली है
तेरे चारों हमदम हैं यक जान यक दिल
अबूबक्र फ़ारूक़ उसमाँ अली है
ख़ुदा ने किया तुझको आगाह सब से
दो आलम में जो कुछ ख़फ़ी यो जली है
करूँ अर्ज़ क्या तुझसे ऐ आले मुस्सिर
कि तुझ पर मेरी हालते दिल खुली है
तमन्ना है फ़रमाईए रोज़े महशर
ये तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है
जो मक़सद ज़ियारत का बर आए फिर तो
न कुछ क़स्द कीजिए ये क़स्दे दिली है

तेरे दर का दरबाँ है जिब्रीले आज़म
तेरा मुद्‌ह–ख़्वाँ हर नबी यो वली है
शफ़ाअत करे हश्र में जो **'रज़ा'** की
सिवा तेरे किसको ये क़ुदरत मिली है

न अर्श ऐमन न इन्नी ज़ाहिबुन में मेहमानी

न अर्श ऐमन न इन्नी ज़ाहिबुन में मेहमानी है
न लुत्फ़े उदनु या अह़मद नसीबे लन तरानी है
नसीबे दोस्ताँ गर उनके दर पर मौत आनी है
ख़ुदा यूँ ही करे फिर तो हमेशा ज़िन्दगानी है
उसी दर पर तड़पते हैं मचलते हैं बिलकते हैं
उठा जाता नहीं क्या ख़ूब अपनी ना–तवानी है
हर इक दीवार ो दर पर मेह़र ने की है जबीं साई
निगारे मस्जिदे अक़दस में कब सोने का पानी है
तेरे मंगता की ख़ामोशी शफ़ाअत ख़्वाह है उसकी
ज़बाने बे ज़बानी तर्जमाने ख़स्ता जानी है
खुले क्या राज़े महबूब ो मुहिब मस्ताने ग़फ़लत पर
शराबे क़द र–अल ह़क़ ज़ेबे जामे मन रआनी है
जहाँ की ख़ाक रूबी ने चमन आरा किया तुझ को
सबा हम ने भी उन गलियों की कुछ दिन ख़ाक छानी है
शहा क्या ज़ात तेरी ह़क़नुमा है फ़र्दे इमकाँ में
कि तुझ से कोई अव्वल है न तेरा कोई सानी है
कहाँ इस कोशके जाने जिनाँ में ज़र की नक़्क़ाशी
इरम के ताइरे रंगे परीदा की निशानी है
ज़ियाबुन फ़ी सियबिन लब पे कलिमा दिल में गुस्ताख़ी
सलाम इसलामे मुल्हिद को कि तसलीमे ज़बानी है
ये अकसर साथ उनके शानाओ मिस्वाक का रहना
बताता है कि दिल रेशों पे ज़ाएद मेहरबानी है
इसी सरकार से दुनया ओ दीं मिलते हैं साइल को
यही दरबारे आली कन्ज़ आमाल–ो अमानी है
दुरूदें सूरते हाला मुहीते माहे तैबा हैं
बरसता उम्मते आसी पे अब रह़मत का पानी है

तआलल्लाह इस्तिग़ना तेरे दर के गदाओं का
कि उनको आर फ़र्रो शौकते साहिब क़िरानी है
वह सर गर्मे शफ़ाअत हैं अरक़ अफ़शाँ है पेशानी
कि करम का इत्र सन्दल की ज़मीं रहमत की घानी है
ये सर हो और वो ख़ाके दर वह ख़ाके दर हो और ये सर
'रज़ा' वो भी अगर चाहें तो अब दिल में ये ठानी है

सुनते हैं कि महशर में सिर्फ़ उनकी रसाई है

सुनते हैं कि महशर में सिर्फ़ उनकी रसाई है
गर उनकी रसाई है लो जब तो बन आई है
मचला है कि रहमत ने उम्मीद बन्धाई है
क्या बात तेरी मुजरिम क्या बात बनाई है
सबने सफ़े महशर में ललकार दिया हमको
ऐ बेकसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है
यूँ तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो
ये टूटे हुए दिल ही ख़ास उन की कमाई है
ज़ाइर गए भी कब के दिन ढलने पे है प्यारे
उठ मेरे अकेले चल क्या देर लगाई है
बाज़ारे अमल में तो सौदा न बना अपना
सरकारे करम तुझ में ऐबी की समाई है
गिरते हुओं को मुज़्दा सजदे में गिरे मौला
रो-रो के शफ़ाअत की तम्हीद उठाई है
ऐ दिल ये सुलगना क्या जलना है तो जल भी उठ
दम घुटने लगा ज़ालिम क्या धूनी रमाई है
मुजरिम को न शरमाओ अहबाब कफ़न ढक दो
मुँह देख के क्या होगा परदे में भलाई है
अब आप ही सभांले तो काम अपने संभल जायें
हम ने तो कमाई सब खेलों में गंवाई है
ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है
हिरस ो हव-से बद से दिल तू भी सितम कर ले
तू ही नहीं बेगाना दुनिया ही पराई है

हम दिल जले हैं किस के हट फ़ितनों के पर काले
क्यूँ फूंक दूँ इक उफ़ से क्या आग लगाई है
तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है
मतले में यह शक क्या था वल्लाह **"रज़ा"** वल्लाह
सिर्फ़ उनकी रसाई है सिर्फ़ उनकी रसाई है

हिर्ज़े जाँ ज़िक्रे शफ़ाअत कीजिए

हिर्ज़े जाँ ज़िक्रे शफ़ाअत कीजिए
नार से बचने की सूरत कीजिए
उनके नक़्शे पा पे ग़ैरत कीजिए
आँख से छुप कर ज़ियारत कीजिए
उनके हुस्ने बा-मलाहत पर निसार
शीरए जाँ की हलावत कीजिए
उनके दर पर जैसे हो मिट जाइये
ना-तवानो कुछ तो हिम्मत कीजिए
फेर दीजे पंजए देवे लईं
मुस्तफ़ा के बल पे ताक़त कीजिए
डूब कर यादे लबे शादाब में
आबे कौसर की सबाहत कीजिए
यादे क़ामत करते उठिए क़ब्र से
जाने महशर पर क़ियामत कीजिए
उनके दर पर बैठिए बन कर फ़क़ीर
बे नवाओ फ़िक्रे सरवत कीजिए
जिसका हुस्न अल्लाह को भी भा गया
ऐसे प्यारे से महब्बत कीजिए
हय्यि बाक़ी जिसकी करता है सना
मरते दम तक उसकी मिदहत कीजिए
अर्श पर जिसकी कमानें चढ़ गईं
सदक़े उस बाज़ू पे क़ुव्वत कीजिए
नीमवा तैबा के फूलों पर हो आँख
बुलबुलो पासे नज़ाकत कीजिए
सर से गिरता है अभी बारे गुनाह
ख़म ज़रा फ़र्क़े इरादत कीजिए

आँख तो उठती नहीं क्या दें जवाब
हम पे बे पुर्सिश ही रहमत कीजिए

उज़्र बदतर अज़ गुनह का ज़िक्र क्या
बेसबब हम पर इनायत कीजिए

नारा कीजे या रसूलल्लाह का
मुफ़लिसो सामाने दौलत कीजिए

हम तुम्हारे हो के किस के पास जायें
सदक़ा शहज़ादों का रहमत कीजिए

मन रआनी क़द रअल हक़ जो कहे
क्या बयाँ उसकी हक़ीक़त कीजिए

आलिमे इल्मे दो आलम हैं हुज़ूर
आप से क्या अर्ज़े हाजत कीजिए

आप सुलताने जहाँ हम बेनवा
याद हम को वक़्ते नेमत कीजिए

तुझसे क्या क्या ऐ मिरे तैबा के चाँद
ज़ुल्मते ग़म की शिकायत कीजिए

दर-ब-दर कब तक फिरें ख़स्ता ख़राब
तैबा में मदफ़न इनायत कीजिए

हर बरस वो क़ाफ़िलों की धूम धाम
आह सुनिये और ग़फ़लत कीजिए

फिर पलट कर मुँह न उस जानिब किया
सच है और दावाए उलफ़त कीजिए

अक़रेबा हुब्बे वतन बे हिम्मती
आह किस किस की शिकायत कीजिए

अब तो आक़ा मुँह दिखाने का नहीं
किस तरह रफ़अे निदामत कीजिए

अपने हाथों ख़ुद लुटा बैठे हैं घर
किस पे दावाए बज़ाअत कीजिए

किस से कहिए क्या किया क्या हो गया
ख़ुद ही अपने पर मलामत कीजिए

अर्ज़ का भी अब तो मुँह पड़ता नहीं
क्या इलाजे दर्दे फ़ुरक़त कीजिए

अपनी इक मीठी नज़र के शहद से
चारए ज़हरे मुसीबत कीजिए

दे ख़ुदा हिम्मत कि ये जाने हज़ीं
आप पर वारें वो सूरत कीजिए

आप हम से बढ़ के हम पर मेहरबाँ
हम करें जुर्म आप रहमत कीजिए

जो न भूला हम ग़रीबों को **'रज़ा'**
याद उसकी अपनी आदत कीजिए

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिए

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिए
मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजिए

ज़िक्र उनका छेड़िए हर बात में
छेड़ना शैताँ का आदत कीजिए

मिस्ले फ़ारस ज़लज़ले हों नज्द में
ज़िक्रे आयाते विलादत कीजिए

ग़ैज़ में जल जायें बेदीनों के दिल
'या रसूलल्लाह' की कसरत कीजिए

कीजिए चर्चा उन्हीं का सुब्हो शाम
जाने काफ़िर पर क़ियामत कीजिए

आप दरगाहे ख़ुदा में हैं वजीह
हाँ शफ़ाअत बिल वजाहत कीजिए

हक़ तुम्हें फ़रमा चुका अपना हबीब
अब शफ़ाअत बिल महब्बत कीजिए

इज़्न कब का मिल चुका अब तो हुज़ूर
हम ग़रीबों की शफ़ाअत कीजिए

मुल्हिदों का शक निकल जाए हुज़ूर
जानिबे मह फिर इशारत कीजिए

शिर्क ठहरे जिसमें ताज़ीमे हबीब
उस बुरे मज़हब पे लानत कीजिए

ज़ालिमो महबूब का हक़ था यही
इश्क़ के बदले अदावत कीजिए

वद्दुहा हुजरात अलम-नश्रह से फिर
मोमिनो इत्मामे हुज्जत कीजिए

बैठते उठते हुज़ूरे पाक से
इल्तिजा ओ इस्तेआनत कीजिए

या रसूलल्लाह! दुहाई आप की
गोश्माले अहले बिदअत कीजिए
ग़ौसे आज़म आप से फ़रयाद है
ज़िन्दा फिर ये पाक मिल्लत कीजिए
या ख़ुदा तुझ तक है सब का मुन्तहा
औलिया को हुक्मे नुसरत कीजिए
मेरे आक़ा हज़रते अच्छे मियाँ
हो "रज़ा" अच्छा वो सूरत कीजिए

शुक्रे ख़ुदा कि आज घड़ी उस सफ़र की है

शुक्रे ख़ुदा कि आज घड़ी उस सफ़र की है
जिस पर निसार जान फ़लाह ो ज़फ़र की है
गर्मी है तप है दर्द है कुलफ़त सफ़र की है
नाशुक्र ये तो देख अज़ीमत किधर की है
किस ख़ाके पाक की तू बनी ख़ाके पा शिफ़ा
तुझ को क़सम जनाबे मसीहा के सर की है
आबे हयात रूह है ज़रक़ा की बूंद बूंद
अकसीरे आज़मे मिसे दिल ख़ाक दर की है
हम को तो अपने साए में आराम ही से लाए
हीले बहाने वालों को यह राह डर की है
लुटते हैं मारे जाते हैं यूँही सुना किए
हर बार दी वह अम्न कि ग़ैरत हज़र की है
वह देखो जगमगाती है शब और क़मर अभी
पहरों नहीं कि बिस्तो चहारुम सफ़र की है
माहे मदीना अपनी तजल्ली अता करे
यह ढलती चांदनी तो पहर दोपहर की है
मन ज़ार तुर्बती व-ज-बत लहू शफ़ा अती
उन पर दुरूद जिनसे नवैद उन बुशर की है
उसके तुफ़ैल हज भी ख़ुदा ने करा दिये
असले मुराद हाज़री उस पाक दर की है
काबे का नाम तक न लिया तैबा ही कहा
पूछा था हमसे जिसने कि नुहज़त किधर की है

काबा भी है उन्हीं की तजल्ली का एक ज़िल्ल
रौशन उन्हीं के अक्स से पुतली हजर की है
होते कहाँ ख़लीलो बिना काबा ओ मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है
मौला अली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वह भी अस्र सबसे जो आला ख़तर की है
सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जान उस पे दे चुके
और हिफ़्ज़े जाँ तो जान फ़रोज़े ग़ुरर की है
हाँ तूने उनको जान उन्हें फेर दी नमाज़
पर वह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है
साबित हुआ कि जुमला फ़राएज़ फ़ुरूअ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है
शर ख़ैर शोर सोर शरर दूर नार नूर
बुशरा कि बारगाह यह ख़ैरुल बशर की है
मुजरिम बुलाए आए हैं जाऊ–क है गवाह
फिर रद्द हो कब यह शान करीमों के दर
बद हैं मगर उन्हीं के है बाग़ी नहीं हैं हम
नजदी न आए उसको यह मंज़िल ख़तर की है
तुफ़ नजदियत न कुफ़्र न इसलाम सब पे हर्फ़
काफ़िर इधर की है न उधर की अधर की है
हाकिम हकीम दादो दवा दें यह कुछ न दें
मरदूद यह मुराद किस आयत ख़बर की है
शक्ले बशर में नूरे इलाही अगर न हो
क्या क़द्र उस ख़मीरए माओ मदर की है
नूरे इलाह क्या है महब्बत हबीब की
जिस दिल में यह न हो वह जगह ख़ूक ो ख़र की है
ज़िक्रे ख़ुदा जो उनसे जुदा चाहो नजदियो
वल्लाह ज़िक्रे हक़ नहीं कुंजी सक़र की है
बे उनके वास्ते के ख़ुदा कुछ अता करे
हाशा ग़लत ग़लत यह हवस बेबसर की है
मक़सूद यह हैं आदम ो नूह ो ख़लील से
तुख़्मे करम में सारी करामत समर की है
उनकी नुबुव्वत उनकी उबुव्वत है सब को आम
उम्मुल बशर उरूस उन्हीं के पिसर की है

ज़ाहिर में मेरे फूल हक़ीक़त में मेरे नख़्ल
उस गुल की याद में यह सदा बुल बशर की है

पहले हो उनकी याद कि पाए जिला नमाज़
यह कहती है अज़ान जो पिछले पहर की है

दुनया, मज़ार, हश्र जहाँ हैं ग़फ़ूर हैं
हर मन्ज़िल अपने चाँद की मन्ज़िल ग़फ़र की है

उन पर दुरूद जिनको हजर तक करें सलाम
उन पर सलाम जिनको तहीय्यत शजर की है

उन पर दुरूद जिनको कसे बेकसाँ कहें
उन पर सलाम जिनको ख़बर बे ख़बर की है

जिन्न ो बशर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह बारगाह मालिके जिन्न ो बशर की है

शम्स ो क़मर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
ख़ूबी उन्हीं की जोत से शम्स ो क़मर की है

सब बहर ो बर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
तमलीक उन्हीं के नाम तो हर बहर ो बर की है

संग ो शजर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
कलिमे से तर ज़बान दरख़्त ो हजर की है

अर्ज़ो असर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
मलजा यह बारगाह दुआ ओ असर की है

शोरीदा सर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
राहत उन्हीं के क़दमों में शोरीदा सर की है

ख़स्ता जिगर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
मरहम यहीं की ख़ाक तो ख़स्ता जिगर की है

सब ख़ुश्क ो तर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह जलवागाह मालिके हर ख़ुश्क ो तर की है

सब कर्रो फ़र सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
टोपी यहीं तो ख़ाक पे हर कर्रो फ़र की है

अहले नज़र सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह गर्द ही तो सुर्मा सब अहले नज़र की है

आँसू बहा कि बह गए काले गुनाह के ढेर
हाथी डुबाऊ झील यहाँ चश्मे तर की है

तेरी क़ज़ा ख़लीफ़ए अहकाम .ज़ुलजलाल
तेरी रज़ा हलीफ़ क़ज़ा ो क़दर की है

यह प्यारी प्यारी क्यारी तेरे ख़ाना बाग़ की
सर्द उसकी आब ो ताब से आतिश सक़र की है

जन्नत में आके नार में जाता नहीं कोई
शुक्रे ख़ुदा नवेद निजातो ज़फ़र की है

मोमिन हूँ मोमिनों पे रऊफ़ुर्रहीम हो
साइल हूँ साइलों को ख़ुशी ला नहर की है

दामन का वास्ता मुझे उस धूप से बचा
मुझको तो शाक़ जाड़ों में इस दोपहर की है

माँ दोनों भाई बेटे भतीजे अज़ीज़ दोस्त
सब तुझको सौंपे मिल्क ही सब तेरे घर की है

जिन जिन मुरादों के लिए अहबाब ने कहा
पेशे ख़बीर क्या मुझे हाजत ख़बर की है

फ़ज़्ले ख़ुदा से ग़ैब शहादत हुआ उन्हें
इस पर शहादत आयतो वह्यो असर की है

कहना न कहने वाले थे जब से तो इत्तेला
मौला को क़ौल ो क़ाइल ो हर ख़ुश्क ो तर की है

उन पर किताब उतरी बयानन लिकुल्लि शैय
तफ़सील जिसमं मा अबरो मा ग़बर की है

आगे रही अता वह बक़द्रे तलब तो क्या
आदत यहाँ उम्मीद से भी बेशतर की है

बे मांगे देने वाले की नेमत में ग़र्क़ हैं
मांगे से जो मिले किसे फ़ह्म उस क़दर की है

अहबाब उससे बढ़ के तो शायद न पायें अर्ज़
ना कर्दा अर्ज़ अर्ज़ यह तर्ज़े दिगर की है

दंदाँ का नअत-ख़्वाँ हूँ न पायाब होगी आब
नद्दी गले गले मेरे आबे गुहर की है

दश्ते हरम में रहने दे सय्याद अगर तुझे
मिट्टी अज़ीज़ बुलबुले बे बाल ो पर की है

यारब रज़ा न अहमदे पारीना हो के जाए
ये बारगाह तेरे हबीबे अबर की है

तौफ़ीक़ दे कि आगे न पैदा हो ख़ूए बद
तबदील कर जो ख़सलते बद पेशतर की है

आ कुछ सुना दे इश्क़ के बोलों में ऐ **"रज़ा"**
मुश्ताक़ तब्अ लज़्ज़ते सोज़े जिगर की है

भीनी सुहानी सुब्ह में ठंडक जिगर की है

भीनी सुहानी सुब्ह में ठंडक जिगर की है
कलियाँ खिलीं दिलों की यह हवा किधर की है

खुबती हुई नज़र में अदा किस सहर की है
चुभती हुई जिगर में सदा किस गजर की है

डालें हरी हरी हैं तो बालें भरी भरी
किश्ते अमल परी है ये बारिश किधर की है

हम जायें और क़दम से लिपट कर हरम कहे
सौंपा ख़ुदा को तुझको ये अज़मत सफ़र की है

हम गिर्दे काबा फिरते थे कल तक और आज वह
हम पर निसार है यह इरादत किधर की है

कालक जबीं की सजदए दर से छुड़ाओगे
मुझको भी ले चलो यह तमन्ना हजर की है

डूबा हुआ है शौक़ में ज़मज़म और आँख से
झाले बरस रहे हैं यह हसरत किधर की है

बरसा कि जाने वालों पे गौहर करूँ निसार
अब्रे करम से अर्ज़ यह मेज़ाबे ज़र की है

अग़ोशे शौक़ खोले है जिनके लिए हतीम
वह फिर के देखते नहीं यह धुन किधर की है

हाँ हाँ रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तू जाग
ओ पाँव रखने वाले यह जा चश्म ो सर की है

वारूँ क़दम क़दम पे कि हर दम है जाने नौ
यह राहे जाँ फ़िज़ा मेरे मौला के दर की है

घड़ियाँ गिनी हैं बरसों कि यह सुब घड़ी फिरी
मर मर के फिर यह सिल मेरे सीने से सर की है

अल्लाहु अकबर अपने क़दम और यह ख़ाके पाक
हसरत मलाइका को जहाँ वज़ए सर की है

मेराज का समाँ है कहाँ पहुँचे ज़ाइरो
कुर्सी से ऊँची कुर्सी इसी पाक दर की है

उश्शाक़े रौज़ा सजदा में सूए हरम झुके
अल्लाह जानता है कि निय्यत किधर की है

ये घर ये दर है उसका जो घर दर से पाक है
मुज़्दा हो बेघरो कि सिला अच्छे घर की है
महबूबे रब्बे अर्श है इस सब्ज़ क़ुब्बे में
पहलू में जलवागाह अतीक़ ो उमर की है
छाए मलाइका हैं लगातार है दुरूद
बदले हैं पहरे बदली में बारिश दुरर की है
सादैन का किरान है पहलूए माह में
झुरमुट किए हैं तारे तजल्ली क़मर की है
सत्तर हज़ार सुब्ह हैं सत्तर हज़ार शाम
यूँ बन्दिगिए ज़ुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है
जो एक बार आए दोबारा न आयेंगे
रुख़सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है
तड़पा करें बदल के फिर आना कहाँ नसीब
बेहुक्म कब मजाल परिन्दे को पर की है
ऐ वाए बेकसीए तमन्ना कि अब उमीद
दिन को न शाम की है न शब को सहर की है
यह बदलियाँ न हों तो करोरों की आस जाए
और बारगाह मरह-मते आम तर की है
मासूमों को है उम्र में सिर्फ़ एक बार बार
आसी पड़े रहें तो सिला उम्र भर की है
ज़िन्दा रहें तो हाज़िरीए बारगाह नसीब
मर जाये तो हयाते अबद ऐश घर की है
मुफ़लिस और ऐसे दर से फिरे बे-ग़नी हुए
चांदी हर इक तरह तो यहाँ गदयह गर की है
जानाँ पे तकिया ख़ाक निहाली है दिल निहाल
हाँ बेनवाओं ख़ूब यह सूरत गुज़र की है
है चत्रो तख़्त सायए दीवारो ख़ाके दर
शाहों को कब नसीब यह धज कर्रो फ़र की है
उस पाक कू में ख़ाक बसर सर ब-ख़ाक हैं
समझे हैं कुछ यही जो हक़ीक़त बसर की है
क्यूँ ताजदारा ख़्वाब में देखी कभी यह शय
जो आज झोलियों में गदायाने दर की है

जारूकशों में चेहरे लिखे हैं मुलूक के
वह भी कहाँ नसीब फ़क़त नाम भर की है

तैबा में मर के ठंडे चले जाओ आंखें बन्द
सीधी सड़क यह शहरे शफ़ाअत नगर की है

आसी भी हैं चहीते यह तैबा है ज़ाहिदो
मक्का नहीं कि जाँच जहाँ ख़ैरो शर की है

शाने जमाले तैबए जानाँ है नफ़अे महज़
वुस्अत जलाले मक्का में सूद ो ज़रर की है

काबा है बेशक अन्जुमन आरा दुल्हन मगर
सारी बहार दोंनों में दूल्हा के घर की है

काबा दुल्हन है तुरबते अतहर नहीं दुल्हन
यह रश्के आफ़ताब वह ग़ैरत क़मर की है

दोनों बनीं सजीली अनीली बनी मगर
जो पी के पास है वह सुहागन कुंवर की है

सर सब्ज़े वस्ल ये है सियाह पोशे हिज्र वो
चमकी दोपट्टों से है जो हालत जिगर की है

मा ओ शुमा तो क्या कि ख़लीले जलील को
कल देखना कि उनसे तमन्ना नज़र की है

अपना शरफ़ दुआ से है बाक़ी रहा क़बूल
ये जानें इनके हाथ में कुंजी असर की है

जो चाहे उनसे मांग कि दोनों जहाँ की ख़ैर
ज़र ना-ख़रीदा एक कनीज़ उनके घर की है

रूमी ग़ुलाम दिन हबशी बांदियाँ शबें
गिनती कनीज़-ज़ादों में शाम ो सहर की है

इतना अजब बलन्दीए जन्नत पे किस लिए
देखा नहीं कि भीक यह किस ऊँचे घर की है

अर्शे बरीं पे क्यूँ न हो फ़िरदौस का दिमाग़
उतरी हुई शबीह तेरे बाम ो दर की है

वो ख़ुल्द जिस में उतरेगी अबरार की बरात
अदना निछावर इस मेरे दूल्हा के सर की है

अम्बर ज़मीं अबीर हवा मुश्के तर ग़ुबार
अदना सी ये शनाख़्त तरी रहगुज़र की है

सरकार हम गंवारों में तर्ज़ अदब कहाँ
हमको तो बस तमीज़ यही भीक भर की है

मांगेंगे मांगे जायेंगे मुँह मांगी पायेंगे
सरकार में न ला है न हाजत अगर की है

उफ़ बे-हयाइयों कि ये मुँह और तेरे हुज़ूर
हाँ तू करीम है तेरी ख़ू दरगुज़र की है

तुझसे छुपाऊँ मुँह तो करूँ किसके सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ो नज़र की है

जाऊँ कहाँ पुकारूँ किसे किसका मुँह तकूँ
क्या पुरसिश और जा भी सगे बे हुनर की है

बाबे अता तो यह है जो बहका इधर उधर
कैसी ख़राबी उस नि-घरे दर बदर की है

आबाद एक दर है तिरा और तिरे सिवा
जो बारगाह देखिए ग़ैरत खंडर की है

लब वाहें आंखें बन्द हैं फैली हैं झोलियाँ
कितने मज़े की भीक तेरे पाक दर की है

घेरा अंधेरियों ने दुहाई है चाँद की
तन्हा हूँ काली रात है मन्ज़िल ख़तर की है

क़िस्मत में लाख पेच हों सौ बल हज़ार कज
ये सारी गुत्थी इक तेरी सीधी नज़र की है

ऐसी बंधे नसीब खुले मुश्किलें खुलीं
दोनों जहाँ में धूम तुम्हारी कमर की है

जन्नत न दें न दें तिरी रुयत हो ख़ैर से
इस गुल के आगे किसको हवस बर्गो बर की है

शरबत न दें न दें तो करे बात लुत्फ़ से
ये शहद हो तो फिर किसे परवा शकर की है

मैं ख़ानाज़ाद कुहना हूँ सूरत लिखी हुई
बन्दों कनीज़ों में मेरे मादर पिदर की है

मंगता का हाथ उठते ही दाता की देन थी
दूरी क़बूल ो अर्ज़ में बस हाथ भर की है

सनकी वह देख बादे शफ़ाअत कि दे हवा
यह आबरू **"रज़ा"** तेरे दामाने तर की हैं

वो सरवरे किशवरे रिसालत जो अर्श पर जलवागर हुए थे

वो सरवरे किशवरे रिसालत जो अर्श पर जलवागर हुए थे
नए निराले तरब के सामाँ अरब के मेहमान के लिए थे
बहार है शादियाँ मुबारक चमन को आबादियाँ मुबारक
मलक फ़लक अपनी अपनी लय में ये घुर अनादिल का बोलते थे
वहाँ फ़लक पर यहाँ ज़मी में रची थी शादी मची थी धूमें
उधर से अनवार हंसते आते इधर से नफ़हात उठ रहे थे
ये छूट पड़ती थी उनके रुख़ की कि अर्श तक चांदनी थी छिटकी
वो रात क्या जगमगा रही थी जगह जगह नस्ब आइने थे
नई दुल्हन की फबन में काबा निखर के संवरा संवर के निखरा
हजर के सदक़े कमर के इक तिल में रंग लाखों बनाओ के थे
नज़र में दूल्हा के प्यारे जलवे हया से मेहराब सर झुकाए
सियाह पर्दे के मुहँ पर आंचल तजल्लीए ज़ात बहत से थे
ख़ुशी के बादल उमंड के आए दिलों के ताऊस रंग लाए
वह नग़मए नअत का समाँ था हरम को ख़ुद वज्द आ रहे थे
ये झूमा मीज़ाबे ज़र का झूमर कि आ रहा कान पर ढलक कर
फुहार बरसी तो मोती झड़ कर हतीम की गोद में भरे थे
दुल्हन की ख़ुशबू से मस्त कपड़े नसीम गुस्ताख़ आंचलों से
ग़िलाफ़े मुश्कीं जो उड़ रहा था ग़िज़ाल नाफ़े बसा रहे थे
पहाड़ियों का वह हुस्ने तज़ईं वो ऊँची चोटी वो नाज़ो तमकीं
सबा से सब्ज़े में लहरें आतीं दुपट्टे धानी चुने हुए थे
नहा के नहरों ने वो चकमता लिबास आबे रवाँ का पहना
कि मौजें छड़ियाँ थीं धार लचका हुबाबे ताबाँ के थल टके थे
पुराना पुर दाग़ मलगजा था उठा दिया फ़र्श चांदनी का
हुजूमे तारे निगह से कोसों क़दम क़दम फ़र्श बादले थे
ग़ुबार बन कर निसार जायें कहाँ अब उस रहगुज़र को पायें
हमारे दिल हुरियों की आंखें फ़िरिश्तों के पर जहाँ बिछे थे
ख़ुदा ही दे सब्र जाने पुर ग़म दिखाऊँ क्यूँ कर तुझे वो आलम
जब उनको झुरमुट में ले के क़ुदसी जिनाँ का दूल्हा बना रहे थे
उतार कर उनके रुख़ का सदक़ा ये नूर का बट रहा था बाड़ा
कि चाँद सूरज मचल मचल कर जबीं की ख़ैरात मांगते थे
वही तो अब तक छलक रहा है वही तो जोबन टपक रहा है
नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिए थे

बचा जो तलवों का उनके धोवन बना वो जन्नत का रंग ो रोग़न
जिन्होंने दूल्हा की पाई उतरन वो फूल गुलज़ारे नूर के थे

ख़बर ये तहवीले मेहर की थी कि रुत सुहानी घड़ी फिरेगी
वहाँ की पोशाक ज़ेबे तन की यहाँ का जोड़ा बढ़ा चुके थे

तजल्लीए ह़क़ का सेहरा सर पर सलातो तसलीम की निछावर
दो रोया .क़ुदसी परे जमा कर खड़े सलामी के वास्ते थे

जो हम भी वाँ होते ख़ाके गुलशन लिपट के क़दमों से लेते उतरन
मगर करें क्या नसीब में तो ये नामुरादी के दिन लिखे थे

अभी न आए थे पुश्ते ज़ीं तक कि सर हुई मग़फ़िरत की शल्लक
सदा शफ़ाअत ने दी मुबारक गुनाह मसताना झूमते थे

अजब न था रख़्श का चमकना ग़िज़ाले दम ख़ुर्दा सा भड़कना
शुआयें बुक्के उड़ा रही थीं तड़पते आंखों पे साएक़े थे

हुजूमे उम्मीद है घटाओ मुरादें दे कर इन्हें हटाओ
अदब की बागें लिए बढ़ाओ मलाइका में ये ग़ुलग़ुले थे

उठी जो गर्दे रहे मुनव्वर वो नूर बरसा कि रास्ते भर
घिरे थे बादल भरे थे जल थल उमंड के जंगल उबल रहे थे

सितम क्या कैसी मत कटी थी क़मर वह ख़ाक उनके रह गुज़र की
उठा न लाया कि मलते मलते ये दाग़ सब देखता मिटे थे

बुराक़ के नक़्शे सुम के सदक़े वह गुल खिलाए कि सारे रस्ते
महकते गुलबन लहकते गुलशन हरे भरे लहलहा रहे थे

नमाज़े अक़्सा में था यही सिर अयाँ हों मअनए अव्वल आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे हाज़िर जो सलतनत आगे कर गए थे

ये उनकी आमद का दबदबा था निखार हर शय का हो रहा था
नुजूम ो अफ़लाक जाम ो मीना उजालते थे खंगालते थे

नक़ाब उलटे वह मेहरे अनवर जलाले रुख़सार गर्मियों पर
फ़लक को हैबत से तप चढ़ी थी तपकते अन्जुम के आबले थे

ये जोशिशे नूर का असर था कि आबे गौहर कमर कमर था
सफ़ाए रह से फिसल फिसल कर सितारे क़दमों पे लोटते थे

बढ़ा ये लहरा के बहरे वहदत कि धुल गया नामे रेगे कसरत
फ़लक के टीलों की क्या हक़ीक़त ये अर्शो कुर्सी दो बुलबुले थे

वह ज़िल्ले रह़मत वो रुख़ के जलवे कि तारे छुपते न खिलने पाते
सुनहरी ज़रबफ़्त ऊदी ऊदी अतलस ये थान सब धूप छांव के थे

चला वो सर्वे चमाँ ख़िरामा न रुक सका सिदरा से भी दामाँ
पलक झपकती रही वह कब के सब ईनो आँ से गुज़र चुके थे

झलक सी इक क़ुदसियों पर आई हवा भी दामन की फिर न पाई
सवारी दूल्हा की दूर पहुँची बरात में होश ही गए थे
थके थे रूहुल अमीं के बाज़ू छुटा वो दामन कहाँ वो पहलू
रकाब छूटी उमीद टूटी निगाहे हसरत के वलवले थे
रविश की गर्मी को जिसने सोचा दिमाग़ से इक भभूका फूटा
ख़िरद के जंगल में फूल चमका दहर दहर पेड़ जल रहे थे
जिलौ में जो मुर्ग़े अक़्ल उड़े थे अजब बुरे हालों गिरते पड़ते
वो सिदरा ही पर रहे थे थक कर चढ़ा था दम तेवर आ गए थे
क़वी थे मुर्ग़ाने वह्म के पर उड़े तो उड़ने को और दम भर
उठाई सीने की ऐसी ठोकर कि ख़ूने अन्देशा थूकते थे
सुना ये इतने में अर्शे ह़क़ ने कि ले मुबारक हो ताज वाले
वही क़दम ख़ैर से फिर आए जो पहले ताजे शरफ़ तेरे थे
ये सुन के बे ख़ुद पुकार उट्ठा निसार जाऊँ कहाँ हैं आक़ा
फिर उनके तलवों का पाऊँ बोसा ये मेरी आंखों के दिन फिरे थे
झुका था मुजरे को अर्शे अअ्ला गिरे थे सजदे में बज़्मे बाला
ये आंखें क़दमों से मल रहा था वो गिर्द .क़ुर्बान हो रहे थे
ज़ियायें कुछ अर्श पर ये आईं कि सारी क़िन्दीलें झिलमिलाईं
हुज़ूरे ख़ुर्शीद क्या चमकते चराग़ मुहँ अपना देखते थे
यही समा था कि पैके रह़मत ख़बर ये लाया कि चलिए ह़ज़रत
तुम्हारी ख़ातिर कुशादा हैं जो कलीम पर बन्द रास्ते थे
बढ़ ऐ मुह़म्मद क़रीं हो अह़मद क़रीब आ सरवरे मुमज्जद
निसार जाऊँ ये क्या निदा थी ये क्या समाँ था ये क्या मज़े थे
तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ेबा है बेनियाज़ी
कहीं तो वो जोशे लन तरानी कहीं तक़ाज़े विसाल के थे
ख़िरद से कह दो कि सर झुका ले गुमाँ से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं याँ ख़ुद जिहत को लाले किसे बताए किधर गए थे
सुराग़ ऐनो मता कहाँ था निशाने कैफ़ो इला कहाँ था
न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल न मरहले थे
उधर से पैहम तक़ाज़े आना इधर था मुश्किल क़दम बढ़ाना
जलाल ो हैबत का सामना था जमालो रह़मत उभारते थे
बढ़े तो लेकिन झिझकते डरते हया से झुकते अदब से रुकते
जो .क़ुर्ब उन्हीं की रविश पे रखते तो लाखों मन्ज़िल के फ़ासले थे
पर उनका बढ़ना तो नाम को था ह़क़ीक़तन फ़ेल था उधर का
तनज़्ज़ुलों में तरक़्क़ी अफ़्ज़ा दना तदल्ला के सिलसिले थे

हुआ न आख़िर कि एक बजरा तमव्वुजे बहरे हू में उभरा
दना की गोदी में उनको ले कर फ़ना के लंगर उठा दिए थे
किसे मिले घाट का किनारा किधर से गुज़रा कहाँ उतारा
भरा जो मिस्ले नज़र तरारा वो अपनी आंखों से ख़ुद छुपे थे
उठे जो क़सरे दना के पर्दे कोई ख़बर दे तो क्या ख़बर दे
वहाँ तो जा ही नहीं दुई की न कह कि वो भी न थे अरे थे
वो बाग़ कुछ ऐसा रंग लाया कि ग़ुन्चा ओ गुल का फ़र्क़ उठाया
गिरह में कलियों की बाग़ फूले गुलों के तुकमे लगे हुए थे
मुहीत ो मरकज़ में फ़र्क़ मुश्किल रहे न फ़ासिल ख़ुतूते वासिल
कमानें हैरत में सर झुकाए अजीब चक्कर में दाइरे थे
हिजाब उठने में लाखों पर्दे हर एक पर्दे में लाखों जलवे
अजब घड़ी थी कि वस्ल ो फ़ुरक़त जनम के बिछड़े गले मिले थे
ज़बानें सूखी दिखा के मौजें तड़प रही थीं कि पानी पायें
भंवर को ये ज़ोअफ़ तशनगी था कि हलक़े आंखों में पड़ गए थे
वही है अव्वल वही है आख़िर वही है बातिन वही है ज़ाहिर
उसी के जलवे उसी से मिलने उसी से उसकी तरफ़ गए थे
कमाने इमकाँ के झूटे नुक़तो तुम अव्वल आख़िर के फेर में हो
मुहीत की चाल से तो पूछो किधर से आए किधर गए थे
इधर से थीं नज़्रे शह नामज़ें उधर से इनआमे ख़ुसरवी में
सलाम ो रहमत के हार गुंध कर गुलूए पुर नूर में पड़े थे
ज़बान को इन्तज़ारे गुफ़तन तो गोश को हसरते शुनीदन
यहाँ जो कहना था कह लिया था जो बात सुन्नी थी सुन चुके थे
वो बुर्जे बतहा का माह पारा बहिश्त की सैर को सुधारा
चमक पे था ख़ुल्द का सितारा कि उस क़मर के क़दम गए थे
सुरूरे मक़दम की रौशनी थी कि ताबिशों से महे अरब की
जिनाँ के गुलशन थे झाड़ फ़र्शी जो फूल थे सब कंवल बने थे
तरब की नाज़िश कि हाँ लचकिए अदब वो बन्दिश कि हिल न सकिए
ये जोशे ज़िद्दैन था कि पौदे कशाकशे अर्रह के तले थे
ख़ुदा की .क़ुदरत कि चाँद हक़ के करोरों मन्ज़िल में जलवा कर के
अभी न तारों की छांव बदली कि नूर के तड़के आ लिए थे
नबीए रहमत शफ़ीए उम्मत **'रज़ा'** पे लिल्लाह हो इनायत
उसे भी उन ख़लअतों से हिस्सा जो ख़ास रहमत के वाँ बटे थे
सनाए सरकार है वज़ीफ़ा क़बूले सरकार है तमन्ना
न शायरी की हवस न परवा रवी थी क्या कैसे क़ाफ़िए थे

क़सीदए नूर

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का
बाग़े तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्त बू हैं बुलबुलें पढ़ती हैं कलिमा नूर का
बारहवीं के चाँद का मुजरा है सजदा नूर का
बारह बुर्जों से झुका एक एक सितार नूर का
उनके क़स्रे क़द्र से ख़ुल्द इक कमरा नूर का
सिदरा पायें बाग़ में नन्हा सा पैदा नूर का
अर्श भी फ़िरदौस भी उस शाहे वाला नूर का
ये मुसम्मन बुर्ज वो मश्कूए अअ्ला नूर का
आई बिदअत छाई ज़ुल्मत रंग बदला नूर का
माहे सुन्नत मेहरे तलअत ले ले बदला नूर का
तेरे ही माथे रहा ऐ जान सेहरा नूर का
बख़्त जागा नूर का चमका सितारा नूर का
मैं गदा तू बादशाह भर दे प्याला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदक़ा नूर का
तेरे ही जानिब है पाँचों वक़्त सजदा नूर का
रुख़ है क़िब्ला नूर का अबरू है काबा नूर का
पुश्त पर ढलका सरे अनवर से शिमला नूर का
देखें मूसा तूर से उतरा सहीफ़ा नूर का
ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का
सर झुकाते हैं इलाही बोल बाला नूर का
बीनिए पुर नूर पर रख़्शाँ है बुक्का नूर का
है लिवाउल ह़म्द पर उड़ता फरैरा नूर का
मुसहफ़े आरिज़ पे है ख़त्ते शफ़ीआ नूर का
लो सियहकारों मुबारक हो क़बाला नूर का
आबे ज़र बनता है आरिज़ पर पसीना नूर का
मुसहफ़े एजाज़ पर चढ़ता है सोना नूर का

पेच करता है फ़िदा होने को लमआ नूर का
गिर्दे सर फिरने को बनता है इमामा नूर का
हैबते आरिज़ से थर्राता है शोअ़ला नूर का
कफ़्शे पा पर गिर के बन जाता है गुफ्फा नूर का
शमअ दिल मिश्कात तन सीना ज़ुजाजा नूर का
तेरी सूरत के लिए आया है सूरह नूर का
मैल से किस दर्जा सुथरा है वो पुतला नूर का
है गले में आज तक कोरा ही कुर्ता नूर का
तेरे आगे ख़ाक पर झुकता है माथा नूर का
नूर ने पाया तेरे सजदे से सीमा नूर का
तू है साया नूर का हर उज़्व टुकड़ा नूर का
साया का साया न होता है न साया नूर का
क्या बना नामे ख़ुदा असरा का दूल्हा नूर का
सर पे सेहरा नूरा का बर में शहाना नूर का
बज़्मे वहदत में मज़ा होगा दोबाला नूर का
मिलने शमअे तूर से जाता है इक्का नूर का
वस्फ़े रुख़ से गाती हैं हूरें तराना नूर का
क़ुदरती बीनी में क्या बजता है लहरा नूर का
ये किताबे कुन में आया तर्फ़ा आयह नूर का
ग़ैर क़ाएल कुछ न समझा कोई मअना नूर का
देखने वालों ने कुछ देखा न भाला नूर का
मन रआ कैसा? ये आइना दिखाया नूर का
सुबह कर दी कुफ़्र की सच्चा था मुज़्दा नूर का
शाम ही से था शबे तीरह को धड़का नूर का
पड़ती है नूरी भरन उमडा है दरिया नूर का
सर झुका ऐ किश्ते कुफ़्र आता है अहला नूर का
नारियों का दौर था दिल जल रहा था नूर का
तुम को देखा हो गया ठंडा कलेजा नूर का
नस्ख़े अदयाँ करके ख़ुद क़ब्ज़ा बिठाया नूर का
ताजवर ने कर लिया कच्चा इलाक़ा नूर का
जो गदा देखो लिए जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का
भीक ले सरकार से ला जल्द कासा नूर का
माहे नौ तैबा में बटता है महीना नूर का

देख इन के होते ना ज़ेबा है दावा नूर का
मेहर लिख दे यॉं के ज़र्रों को मुचलका नूर का
यॉं भी दाग़े सजदए तैबा है तमग़ा नूर का
ऐ क़मर क्या तेरे ही माथे है टीका नूर का
शमा सॉं एक एक परवाना है इस बा नूर का
नूरे हक़ से लौ लगाए दिल में रिश्ता नूर का
अन्जुमन वाले हैं अन्जुम बज़्म हलक़ा नूर का
चॉंद पर तारों के झुरमुट से है हाला नूर का
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का
नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का
किसके पर्दे ने किया आईना अंधा नूर का
मांगता फिरता है आखें हर नगीना नूर का
अब कहॉं वो ताबिशे कैसा वो तड़का नूर का
मेहर ने छुप कर किया ख़ासा धुंदलका नूर का
तुम मुक़ाबिल थे तो पहरों चॉंद बढ़ता नूर का
तुम से छुट कर मुँह निकल आया ज़रा सा नूर का
क़ब्रे अनवर कहिए या क़स्रे मुअल्ला नूर का
चर्ख़े अतलस या कोई सादा सा .कुब्बा नूर का
ऑंख मिल सकती नहीं दर पर है पहरा नूर का
ताब हैं बे हुक्म पर मारे परिन्दा नूर का
नज़अ में लोटेगा ख़ाके दर पे शैदा नूर का
मर के ओढ़ेगी उरूसे जॉं दुपट्टा नूर का
ताबे मेहर हश्र से चौके न कुश्ता नूर का
बूंदियॉं रहमत की देने आईं छींटा नूर का
वज़ऐ वाज़ऐ में तेरी सूरत है मअना नूर का
यूँ मजाज़न चाहें जिस को कह दें कलिमा नूर का
अम्बिया अजज़ा हैं तू बिल्कुल है जुमला नूर का
इस इलाक़े से हैं उन पर नाम सच्चा नूर का
ये जो मेहर ो मह पे है इतलाक़ आता नूर का
भीक तेरे नाम की है इस्तिआरा नूर का
सुरमगीं ऑंखें हरीमे हक़ के वो मुश्की ग़िज़ाल
है फ़ज़ाए ला मकॉं तक जिनका रमना नूर का

ताबे हुस्ने गर्म से खिल जाएंगे दिल के कंवल
नौ बहारें लाएगा गर्मी का झलका नूर का

ज़र्रे मेहरे क़ुदुस तक तेरे तवस्सुत से गए
हद्दे औसत ने किया सुग़रा को कुबरा नूर का

सब्ज़ए गर्दूं झुका था बहरे पा बोसे बुराक़
फिर न सीधा हो सका खाया वो कोड़ा नूर का

ताबे सुम से चौंधिया कर चाँद उन्हीं क़दमों फिरा
हंस के बिजली ने कहा देखा छलावा नूर का

दीद नक़्शे सुम को निकली सात पर्दों से निगाह
पुतलियाँ बोलीं चलो आया तमाशा नूर का

अक्से सुम ने चाँद सूरज को लगाए चार चाँद
पड़ गया सीम ा ज़रे गर्दूं पे सिक्का नूर का

चाँद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का

एक सीने तक मुशाबेह एक वहाँ से पांव तक
हुस्ने सिबतैन उनके जामों में है नीमा नूर का

साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयाँ
ख़त्ते तौ अम में लिखा है ये दो वर्क़ा नूर का

काफ़ गेसू हा दहन या अबरू आँखें ऐन स्वाद
'काफ़-हा-या-ऐन-स़ाद' उनका चेहरा नूर का

ऐ **"रज़ा"** ये अह़मदे नूरी का फ़ैज़े नूर है
हो गई मेरी ग़ज़ल बढ़ कर क़सीदा नूर का

वस्ले अव्वल

तिरा ज़र्रा महे कामिल है या ग़ौस

तिरा ज़र्रा महे कामिल है या ग़ौस
तेरा क़तरा यमे साइल है या ग़ौस

कोई सालिक है या वासिल है या ग़ौस
वो कुछ भी हो तेरा साइल है या ग़ौस

क़दे बेसाया ज़िल्ले किब्रिया है
तू उस बे साया ज़िल का ज़िल है या ग़ौस

तेरी जागीर में है शर्क़ ता ग़र्ब
क़लमरू में हरम ता हिल है या ग़ौस

दिले इश्क़ ो रुख़े हुस्न आईना हैं
और इन दोनों में तेरा ज़िल्ल है या ग़ौस
तेरी शमे दिल आरा की तब ो ताब
गुल ो बुलबुल की आब ो गिल है या ग़ौस
तेरा मजनूँ तेरा सहरा तेरा नज्द
तेरी लैला तेरा महमिल है या ग़ौस
ये तेरी चंपई रंगत हुसैनी
हसन के चाँद सुबहे दिल है या ग़ौस
गुलिस्ताँ ज़ार तेरी पंखड़ी है
कली सौ ख़ुल्द का हासिल है या ग़ौस
उगाल उसका अधार अबरार का हो
जिसे तेरा उलश हासिल है या ग़ौस
इशारे में किया जिसने क़मर चाक
तू उस मह का महे कामिल है या ग़ौस
जिसे अर्शे दोएम कहते हैं अफ़लाक
वो तेरी कुर्सिए मंज़िल है या ग़ौस
तू अपने वक़्त का सिद्दीक़े अकबर
ग़नी ो हैदर ो आदिल है या ग़ौस
वली क्या मुर्सल आयें ख़ुद हुज़ूर आयें
वो तेरी वाज़ की महफ़िल है या ग़ौस
जिसे मांगे न पायें जाह वाले
वो बे मांगे तुझे हासिल है या ग़ौस
फ़्यूज़े आलिमे उम्मी से तुझ पर
अयाँ माज़ी व मुस्तक़बिल है या ग़ौस
जो क़र्नों सैर में आरिफ़ न पायें
वो तेरी पहली ही मंज़िल है या ग़ौस
मलक मशग़ूल हैं उसकी सना में
वो तेरा ज़ाकिर ो शाग़िल है या ग़ौस
न क्यूँ हो तेरी मंज़िल अर्शे सानी
कि अर्शे हक़ तेरी मंज़िल है या ग़ौस
वहीं से उबले हैं सातों समन्दर
जो तेरी नहर का साहिल है या ग़ौस
मलाइक के बशर के जिन्न के हलक़े
तेरी ज़ौ माह हर मंज़िल है या ग़ौस
बुख़ारा व इराक़ ो चिश्त ो अजमेर
तेरी लौ शमअे हर महफ़िल है या ग़ौस

जो तेरा नाम ले ज़ाकिर है प्यारे
तसव्वुर जो करे शग़िल है या ग़ौस
जो सर दे कर तेरा सौदा ख़रीदे
ख़ुदा दे अक़्ल वो आक़िल है या ग़ौस
कहा तू ने कि जो मांगो मिलेगा
"रज़ा" तुझ से तेरा साइल है या ग़ौस

वस्ले दोम

जो तेरा तिफ़्ल है कामिल है या ग़ौस

जो तेरा तिफ़्ल है कामिल है या ग़ौस
तुफ़ैली का लक़ब वासिल है या ग़ौस
तसव्वुफ़ तेरे मकतब का सबक़ है
तसर्रुफ़ पर तेरा आमिल है या ग़ौस
तेरी सैरे इलल्लाह ही है फ़िल्लाह
कि घर से चलते ही मूसिल है या ग़ौस
तू नूरे अव्वल ो आख़िर है मौला
तू ख़ैर अजिल व आजिल है या ग़ौस
मलक के कुछ बशर कुछ जिन्न के हैं पीर
तू शैख़े आली व साफ़िल है या ग़ौस
किताबे हर दिल आसारे तअर्रुफ़
तेरे दफ़्तर ही से नाक़िल है या ग़ौस
फ़ुतूहुल ग़ैब अगर रौशन न फ़रमाए
फ़ुतूहात ो ख़ुसूस आफ़िल है या ग़ौस
तेरा मन्सूब है मरफ़ूअ़ उस जा
इज़ाफ़त रफ़अ की आमिल है या ग़ौस
तेरे कामी मशक़्क़त से बरी हैं
कि बरतर नसब से फ़ाइल है या ग़ौस
अहद से अहमद और अहमद से तुझको
कुन और सब कुन मकुन हासिल है या ग़ौस
तेरी इज़्ज़त तेरी रिफ़अत तेरा फ़ज़्ल
ब-फ़ज़्लिहि अफ़ज़ल ो फ़ाज़िल है या ग़ौस
तेरे जलवे के आगे मुन्तक़ा से
मह ो ख़ुर पर ख़ते बातिल है या ग़ौस
सियाही माएल उस की चाँदनी आई
क़मर का यूँ फ़लक माएल है या ग़ौस

तिलाए मेहर है टकसाल बाहर
कि ख़ारिज मरकज़े हासिल है या ग़ौस

तू बरज़ख़ है ब-रंगे नूने मिन्नत
दो जानिब मुतस्सिल वासिल है या ग़ौस

नबी से आख़िज़ और उम्मत पे फ़ाइज़
उधर क़ाबिल इधर फ़ाइल है या ग़ौस

नतीजा हद्दे औसत गर के दे और
यहाँ जब तक कि तू शामिल है या ग़ौस

अला तूबा लकुम है वो कि जिनका
शबाना रोज़ विर्दे दिल है या ग़ौस

अजम कैसा अरब हिल क्या ह़रम में
जमी हर जा तेरी महफ़िल है या ग़ौस

है शरहे इस्मे अलक़ादिर तेरा नाम
ये शरहे उस मतन की हामिल है या ग़ौस

जबीने जुब्बा फ़रसाई का सन्दल
तेरी दीवार की कहगल है या ग़ौस

बजा लाया वो अम्रे सारिऊ को
तेरी जानिब जो मुस्तअजिल है या ग़ौस

तेरी .कुदरत तो फ़ितरिय्यात से है
कि क़ादिर नाम में दाख़िल है या ग़ौस

तसर्रुफ़ वाले सब मज़्हर हैं तेरे
तू ही इस पर्दे मे फ़ाइल है या ग़ौस

"रज़ा" का काम और रुक जाए हाशा
तेरा साइल है तू बाज़िल है या ग़ौस

वस्ले सोम

बदल या फ़र्द जो कामिल है या ग़ौस

बदल या फ़र्द जो कामिल है या ग़ौस
तेरे ही दर से मुस्तकमिल है या ग़ौस

जो तेरी याद से जाहिल है या ग़ौस
वो ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल है या ग़ौस

अनस्सय्याफ़ से जाहिल है या ग़ौस
जो तेरे फ़ज़्ल पर साइल है या ग़ौस

सुख़न हैं अस्फ़िया तो मग़ज़े मअना
बदन हैं औलिया तू दिल है या ग़ौस
अगर वो जिस्मे इर्फ़ां हैं तो तू आँख
अगर वो आँख हैं तू तिल है या ग़ौस
उलूहिय्यत नुबुव्वत के सिवा तू
तमाम अफ़ज़ाल का क़ाबिल है या ग़ौस
नबी के क़दमों पर है जुज़ नुबुव्वत
कि ख़त्म इस राह में हाएल है या ग़ौस
उलूहिय्यत ही अह़मद ने न पाई
नुबुव्वत ही से तू आतिल है या ग़ौस
सहाबिय्यत हुई फिर ताबेईय्यत
बस आगे क़ादिरी मन्ज़िल है या ग़ौस
हज़ारों ताबई से तू फ़ज़ूँ है
वो तबक़ा मुजमलन फ़ाज़िल है या ग़ौस
रहा मैदान ा शहरिस्ताने इर्फ़ान
तेरा रमना तेरी महफ़िल है या ग़ौस
ये चिश्ती, सुहरवर्दी, नक़्शबन्दी
हर एक तेरी तरफ़ आइल है या ग़ौस
तेरी चिड़िया हैं तेरा दाना पानी
तेरा मेला तेरी महफ़िल है या ग़ौस
उन्हें तो क़ादिरी बैअत है तजदीद
वो हाँ खाती जो मुस्तबदिल है या ग़ौस
क़मर पर जैसे ख़ुर का चूँ तेरा क़र्ज़
सब अहले नूर पर फ़ाज़िल है या ग़ौस
ग़लत करदम तू वाहिब है न मक़रिज़
तेरी बख़्शिश तेरा नाइल है या ग़ौस
कोई क्या जाने तेरे सर का रुतबा
कि तलवा ताजे अहले दिल है या ग़ौस
मशाइख़ म किसी की तुझ पे तफ़ज़ील
ब-हुक्मे औलिया बातिल है या ग़ौस
जहाँ दुश्वार हो वहमे मसावात
ये जुरअत किस क़द्र हाइल है या ग़ौस

तेरे ख़ुद्दाम के आगे है एक बात
जो और अक़्ताब को मुश्किल है या ग़ौस
उसे इदबार जो मुदबिर है तुझसे
वो ज़ी इक़बाल जो मुक़बिल है या ग़ौस
ख़ुदा के दर से है मतरूद ो मख़ज़ूल
जो तेरा तारिक ो ख़ाज़िल है या ग़ौस
सितम कोरी वहाबी राफ़ज़ी की
कि हिन्दू तक तेरा क़ाइल है या ग़ौस
वो क्या जानेगा फ़ज़्ले मुरतज़ा को
जो तेरे फ़ज़्ल का जाहिल है या ग़ौस
'रज़ा' के सामने की ताब किस में
फ़लकवार उस पे तेरा ज़िल्ल है या ग़ौस

वस्ले चहारुम

तलब का मुँह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस

तलब का मुँह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस
मगर तेरा करम कामिल है या ग़ौस
दुहाई या मुहीय्युद्दीं दुहाई
बला इस्लाम पर नाज़िल है या ग़ौस
वो संगी बिदअतें वो तेज़ीए कुफ़्र
कि सर पर तेग़ दिल पर सिल है या ग़ौस
अज़ूमन क़ातिलन इन्दल क़िताली
मदद को आ दमे बिस्मिल है या ग़ौस
ख़ुदारा नाख़ुदा आ दे सहारा
हवा बिगड़ी भंवर हाइल है या ग़ौस
जिला दे दीं जला दे कुफ़्र ो इलहाद
कि तू मुहयी है तू क़ातिल है या ग़ौस
तेरा वक़्त और पड़े यूँ दीन पर वक़्त
न तू आजिज़ न तू ग़ाफ़िल है या ग़ौस
रही हाँ शामते आमाल ये भी
जो तू चाहे अभी ज़ाइल है या ग़ौस

ग़य्यूरा अपनी ग़ैरत का तसद्दुक़
वही कर जो तेरे क़ाबिल है या ग़ौस
ख़ुदारा मरहमे ख़ाके क़दम दे
जिगर ज़ख़्मी है दिल घाइल है या ग़ौस
न देखूँ शक्ले मुश्किल तेरे आगे
कोई मुश्किल सी ये मुश्किल है या ग़ौस
वो घेरा रिश्तए शिर्के ख़फ़ी ने
फंसा ज़ुन्नार में ये दिल है या ग़ौस
किए तरसा व गब्र अक़ताब ो अबदाल
ये महज़ इसलाम का साइल है या ग़ौस
तू क़ुव्वत दे मैं तन्हा काम बिसयार
बदन कमज़ोर दिल काहिल है या ग़ौस
अदू बद दीन मज़हब वाले हासिद
तू ही तन्हा का ज़ोरे दिल है या ग़ौस
हसद से इन के सीने पाक कर दे
कि बद तर दिक़ से भी ये सिल है या ग़ौस
ग़िज़ाए दिक़ यही ख़ूँ इस्तख़्वाँ गोश्त
ये आतिश दीन की आकिल है या ग़ौस
दिया मुझको उन्हें महरूम छोड़ा
मेरा क्या जुर्म हक़ फ़ासिल है या ग़ौस
ख़ुदा से ले लड़ाई वो है मुअती
नबी क़ासिम है तू मोसिल है या ग़ौस
अतायें मुक़तदर ग़फ़्फ़ार की हैं
अबस बन्दों के दिल में ग़िल है या ग़ौस
तेरे बाबा का फिर तेरा करम है
ये मुँह वर्ना किसी क़ाबिल है या ग़ौस
भरन वाले तेरा झाला तू झाला
तेरा छींटा तेरा ग़ासिल है या ग़ौस
सना मक़सूद है अर्ज़े ग़रज़ क्या
ग़रज़ का आप तो काफ़िल है या ग़ौस
'रज़ा' का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा
तेरी रहमत अगर शामिल है या ग़ौस

करोरों दुरूद

काबे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद
तैबा के शम्सुद्दुहा तुम पे करोरों दुरूद
शाफ़िए रोज़े जज़ा तुम पे करोरों दुरूद
दाफ़िए जुमला बला तुम पे करोरों दुरूद
जान ो दिले अस्फ़िया तुम पे करोरों दुरूद
आब ो गिले अम्बिया तुम पे करोरों दुरूद
लायें तो यह दूसरा दूसरा जिसको मिला
कोशकि अर्शो दना तुम पे करोरों दुरूद
और कोई ग़ैब क्या तुमसे निहाँ हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद
तूर पे जो शमा था चाँद था साईर का
नय्यरे फ़ाराँ हुआ तुम पे करोरों दुरूद
दिल करो ठंडा मेरा वो कफ़े पा चाँद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद
ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुए लाजवाब
नाम हुआ मुस्तफ़ा तुम पे करोरों दुरूद
ग़ायत ो इल्लत सबब बहरे जहाँ तुम हो सब
तुमसे बना तुम बिना तुम पे करोरों दुरूद
तुमसे जहाँ की हयात तुमसे जहाँ का सबात
अस्ल से है ज़िल्ल बँधा तुम पे करोरों दुरूद
मग़्ज़ हो तुम और पोस्त और हैं बाहर के दोस्त
तुम हो दरूने सरा तुम पे करोरों दुरूद
क्या हैं जो बेहद हैं लौस तुम तो हो ग़ैस और ग़ैस
छींटे में होगा भला तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो हफ़ीज़ ो मुग़ीस क्या है वो दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद
वह शबे मेराज राज वह वस्फ़े महशर का ताज
कोई भी ऐसा हुआ तुम पे करोरों दुरूद

नुह्ता फ़लाहल फ़लाह रुहता फ़राहल मराह
उद लिए ऊदल हना तुम पे करोरों दुरूद

जान ो जहाने मसीह दाद के दिल है जरीह
नब्ज़ें छुटीं दम चला तुम पे करोरों दुरूद

उफ़ वह रहे संगलाख़ आह ये पा शाख़ शाख़
ऐ मेरे मुश्किल–कुशा तुम पे करोरों दुरूद

तुमसे खुला बाबे जूद तुमसे है सब का वुजूद
तुमसे है सब की बक़ा तुम पे करोरों दुरूद

ख़स्ता हूँ और तुम मआज़ बस्ता हूँ और तुम मलाज़
आगे जो शह की रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

गरचे हैं बेहद क़ुसूर तुम हो अफ़ुव्व ो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़ता तुम पे करोरों दुरूद

मेहरे ख़ुदा नूर नूर दिल है स्याह दिन है दूर
शब में करो चाँदना तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो शहीद ो बसीर और मैं गुनाह पर दिलैर
खोल दो चश्मे हया तुम पे करोरों दुरूद

छींट तुम्हारी सहर छूट तुम्हारी क़मर
दिल में रचा दो ज़िया तुम पे करोरों दुरूद

तुमसे ख़ुदा का ज़हूर उससे तुम्हारा ज़हूर
लिम है यह वो इन हुआ तुम पे करोरों दुरूद

बेहुनर ो बेतमीज़ किसको हुए हैं अज़ीज़
एक तुम्हारे सिवा तुम पे करोरों दुरूद

आस है कोई न पास एक तुम्हारी है आस
बस है यही आसरा तुम पे करोरों दुरूद

तारिमे आला का अर्श जिस कफ़े पा का है फ़र्श
आंखों पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद

कहने को हैं आम ो ख़ास एक तुम्हीं हो ख़लास
बन्द से कर दो रिहा तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो शिफ़ाए मरज़ ख़ल्क़े ख़ुदा ख़ुदग़र्ज़
ख़ल्क़ की हालत भी क्या तुम पे करोरों दुरूद

आह वह राहे सिरात बन्दों की कितनी बिसात
अलमदद ऐ रहनुमा तुम पे करोरों दुरूद

बेअदब ो बद लिहाज़ कर न सका कुछ हिफ़ाज़
अफ़्व पे भूला रहा तुम पे करोरों दुरूद

लो तहे दामन के शमा झोंकों में है रोज़े जमा
आंधियों से हश्र उठा तुम पे करोरों दुरूद

सीना के है दाग़ दाग़ कह दो करे बाग़ बाग़
तैबा से आकर सबा तुम पे करोरों दुरूद

गेसू व क़द लाम अलिफ़ कर दो बला मुनसरिफ़
ला के तहे तेग़े ला तुम पे करोरों दुरूद

तुमने बरंगे फ़लक जेबे जहाँ करके शक
नूर का तड़का किया तुम पे करोरों दुरूद

नौबते दर हैं फ़लक ख़ादिमे दर हैं मलक
तुम हो जहाँ बादशा तुम पे करोरों दुरूद

ख़ल्क़ तुम्हारी जमील ख़ुल्क़ तुम्हारा जलील
ख़ल्क़ तुम्हारी गदा तुम पे करोरों दुरूद

तैबा के माहे तमाम जुमला रुसुल के इमाम
नौशए मुल्के ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

तुमसे जहाँ का निज़ाम तुम पे करोरों सलाम
तुम पे करोरों सना तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो जव्वाद ो करीम तुम हो रऊफ़ुर्रहीम
भीक हो दाता अता तुम पे करोरों दुरूद

ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुमसे मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद

नाफ़िओ दाफ़े हो तुम शाफ़ेओ राफ़ेअ हो तुम
तुमसे बस अफ़ज़ूँ ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

शाफ़ी व नाफ़ी हो तुम काफ़ी व वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा तुम पे करोरों दुरूद

जायें न जब तक .ग़ुलाम ख़ुल्द है सब पर हराम
मिल्क तो है आपका तुम पे करोरों दुरूद

मज़हरे हक़ हो तुम्हीं मुज़हिरे हक़ हो तम्हीं
तुम में है ज़ाहिर ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

ज़ोरे दहे नारसाँ तकिया गहे बे कसाँ
बादशहे मावरा तुम पे करोरों दुरूद

बरसे करम की भरन फूले नेअम के चमन
ऐसी चला दो हवा तुम पे करोरों दुरूद

एक तरफ़ आदाए दीं एक तरफ़ हासिदीं
बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोरों दुरूद

क्यूँ कहूँ बेकस हूँ मैं क्यूँ कहूँ बेबस हूँ मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

गन्दे निकम्मे कमीन महंगे हैं कौड़ी के तीन
कौन हमें पालता तुम पे करोरों दुरूद

बाट न दर के कहीं घाट न घर के कहीं
ऐसे तुम्हीं पालना तुम पे करोरों दुरूद

ऐसों को नेमत खिलाओ दूध के शरबत पिलाओ
ऐसों को ऐसी ग़िज़ा तुम पे करोरों दुरूद

गिरने को हों रोक लो ग़ोता लगे हाथ दो
ऐसों पर ऐसी अता तुम पे करोरों दुरूद

अपने ख़तावारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे यह भला तुम पे करोरों दुरूद

करके तुम्हारे गुनाह मांगें तुम्हीं से पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोरों दुरूद

कर दो अदू को तबाह हासिदों को रू बराह
अहले विला का भला तुम पे करोरों दुरूद

हमने ख़ता में न की तुमने अता में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोरों दुरूद

काम ग़ज़ब के किए उस पे है सरकार से
बन्दों को चश्मे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

आँख अता कीजिए उसमें ज़िया दीजिए
जलवा क़रीब आ गया तुम पे करोरों दुरूद

काम वह ले लीजिए तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे **"रज़ा"** तुम पे करोरों दुरूद

सलामे रज़ा

मुस्तफ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम
शमअ़े बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

मेहरे चर्ख़े नुबुव्वत पे रौशन दुरूद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम

शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफ़ाअत पे लाखों सलाम

शबे असरा के दूल्हा पे दाइम दुरूद
नौशाए बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम

अर्श की ज़ेबो ज़ीनत पे अर्शी दुरूद
फ़र्श की तीब ो नुज़हत पे लाखों सलाम

नूरे ऐने लताफ़त पे अलतफ़ दुरूद
ज़ेब ो ज़ीने नज़ाफ़त पे लाखों सलाम

सरवे नाज़े क़िदम मग़्ज़े राज़े हिकम
यक्का ताज़े फ़ज़ीलत पे लाखों सलाम

नुक़तए सिर्रे वहदत पे यकता दुरूद
मरकज़े दौरे कसरत पे लाखों सलाम

साहिबे रजअते शम्स ो शक़्कुल क़मर
नाइबे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

जिसके ज़ेरे लिवा आदम ो मन सिवा
उस सज़ाए सियादत पे लाखों सलाम

अर्श ता फ़र्श है जिसके ज़ेरे नगीं
उसकी क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

अस्ले हर बूद ो बहबूदे तुख़्मे वुजूद
क़ासिमे कन्ज़े नेअमत पे लाखों सलाम

फ़तहे बाबे नुबुव्वत पे बेहद दुरूद
ख़त्मे दौरे रिसालत पे लाखों सलाम

शर्क़े अनवारे .कुदरत पे नूरी दुरूद
फ़तक़े अज़हारे .कुरबत पे लाखों सलाम

बे सहीम ो क़सीम ो अदील ो मसील
जौहरे फ़र्दे इज़्ज़त पे लाखों सलाम

सिर्रे ग़ैबे हिदायत पे ग़ैबी दुरूद
इत्रे ज़ेबे निहायत पे लाखों सलाम

माहे लाहूते ख़लवत पे लाखों दुरूद
शाहे नासूते जलवत पे लाखों सलाम

कन्ज़ हर बेकस ो बेनवा पर दुरूद
हिर्ज़े हर रफ़्ता ताक़त पे लाखों सलाम

मतलए हर सआदत पे असअद दुरूद
मक़्तए हर सियादत पे लाखों सलाम

परतवे इस्मे ज़ाते अहद पर दुरूद
नुस्ख़ए जामिईयत पे लाखों सलाम

ख़ल्क़ के दादरस सब के फ़रयाद रस
कहफ़े रोज़े मुसीबत पे लाखों सलाम

मुझसे बेकस की दौलत पे लाखों दुरूद
मुझसे बेबस की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

शमअे बज़्मे दना हूँ में गुम कुन अना
शरहे मतने हुविय्यत पे लाखों सलाम

इन्तिहाए दुई इब्तिदाए यकी
जमअे तफ़रीक़ ो कसरत पे लाखों सलाम

कसरते बादे क़िल्लत पे अकसर दुरूद
इज़्ज़ते बादे ज़िल्लत पे लाखों सलाम

रब्बे आला की नेमत पे आला दुरूद
हक़ तआला की मिन्नत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

फ़रहते जाने मोमिन पे बेहद दुरूद
ग़ैज़े क़ल्बे ज़लालत पे लाखों सलाम

सबबे हर सबब मुन्तहाए तलब
इल्लते जुमला इल्लत पे लाखों सलाम

मसदरे मज़हरिय्यत पे अज़हर दुरूद
मज़हरे मसदरिय्यत पे लाखों सलाम

जिसके जलवे से मुरझाई कलियाँ खिलीं
उस गुले पाक मम्बत पे लाखों सलाम

क़दे बेसाया के सायाए मरहमत
ज़िल्ले ममदूद ो दिराफ़त पे लाखों सलाम

ताइराने कुद्स जिसकी हैं कुमरियाँ
उस सही सर्वे क़ामत पे लाखों सलाम

वस्फ़ जिसका है आइनए हक़नुमा
उस ख़ुदा साज़ तलअत पे लाखों सलाम

जिसके आगे सरे सरवरा ख़म रहें
उस सरे ताजे रिफ़अत पे लाखों सलाम

वो करम की घटा गेसूए मुश्क सा
लक्कए अब्रे राफ़त पे लाखों सलाम

लैलतुल क़द्र में मतलइल फ़ज्रे हक़
मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम

लख़्त लख़्ते दिले हर जिगर चाक से
शाना करने की हालत पे लाखों सलाम

दूर ो नज़दीक की सुनने वाले वह कान
काने लाले करामत पे लाखों सलाम

चश्मए मेहर में मौजे नूरे जलाल
उस रगे हाशमियत पे लाखों सलाम

जिसके माथे शफ़ाअत का सेहरा रहा
उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम

जिसके सजदे को मेहराबे काबा झुकी
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम

उनकी आंखों पे वह साया अफ़गन मिज़ह
ज़िल्लए क़सरे रहमत पे लाखों सलाम

अश्कबारिए मिज़गाँ पे बरसे दुरूद
सिल्के दुर्रे शफ़ाअत पे लाखों सलाम

मअनए क़द रआ मक़सदे मा तग़ा
नरगिसे बाग़े क़ुदरत पे लाखों सलाम

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

नीची आंखों की शर्म ो हया पर दुरूद
ऊँची बीनी की रिफ़अत पे लाखों सलाम

जिनके आगे चराग़े क़मर झिलमिलायें
उन इज़ारों की तलअत पे लाखों सलाम

उनके ख़द की सुहूलत पे बेहद दुरूद
उनके क़द की रिशाक़त पे लाखों सलाम

जिससे तारीक दिल जगमगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

चाँद से मुँह पे ताबाँ दरख़्शाँ दुरूद
नमक आगीं सबाहत पे लाखों सलाम

शबनमे बाग़े हक़ यानी रुख़ का अरक़
उसकी सच्ची बराक़त पे लाखों सलाम

ख़त की गिर्दे दहन वह दिल आरा फबन
सब्ज़ए नहरे रहमत पे लाखों सलाम

रीशे ख़ुश मोतदिल मरहमे रेशे दिल
हालए माहे नुदरत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले क़ुद्स की पत्तियाँ
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

वो दहन जिसकी हर बात वहीए ख़ुदा
चश्मए इल्म ो हिकमत पे लाखों सलाम

जिसके पानी से शादाब जानो जिनाँ
उस दहन की तरावत पे लाखों सलाम

जिससे खारी कुएँ शीरए जाँ बनें
उस ज़ुलाले हलावत पे लाखों सलाम

वह ज़ुबाँ जिसको सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

उसकी प्यारी फ़साहत पे लाखों दुरूद
उसकी दिलकश बलाग़त पे लाखों सलाम

उसकी बातों की लज़्ज़त पे लाखों दुरूद
उसके ख़ुतबे की हैबत पे लाखों सलाम

वह दुआ जिसका जोबन बहारें क़बूल
उस नसीमे इजाबत पे लाखों सलाम

जिनके गुच्छे से लच्छे झड़ें नूर के
उन सितारों की नुज़हत पे लाखों सलाम

जिसकी तस्कीं से रोते हुए हंस पड़े
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

जिसमें नहरें हैं शीर ो शकर की रवाँ
उस गले की नज़ारत पे लाखों सलाम

दोश बर दोश है जिनसे शाने शरफ़
ऐसे शानों की शौकत पे लाखों सलाम

हजरे असवद ो काबए जान ो दिल
यानी मोहरे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

रूए आईनए इल्मे पुश्ते हुज़ूर
पुशतीए कसरे मिल्लत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

जिसको बारे दो आलम की परवा नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

काबए दीन ो इमाँ के दोनों सुतून
साईदैने रिसालत पे लाखों सलाम

जिसके हर ख़त में है मौजे नूरे करम
उस कफ़े बहरे हिम्मत पे लाखों सलाम

नूर के चश्मे लहरायें दरिया बहें
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम

ईदे मुश्किल कुशाई के चमकें हिलाल
नाख़ुनों की बशारत पे लाखों सलाम

रफ़अे ज़िक्रे जलालत पे अरफ़ा दुरूद
शरहे सद्रे सदारत पे लाखों सलाम

दिल समझ से वरा है मगर यूँ कहूँ
.गुन्चए राज़े वहदत पे लाखों सलाम

कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम

जो के अज़्मे शफ़ाअत पे खिंच कर बंधी
उस कमर की हिमायत पे लाखों सलाम

अम्बिया तह करें ज़ानू उनके हुज़ूर
ज़ानूओं की वजाहत पे लाखों सलाम

साक़ अस्ले क़दम शाख़े नख़्ले करम
शमअे राहे इसाबत पे लाखों सलाम

खाई क़ुरआँ ने ख़ाके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पा की हुरमत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

पहले सजदे पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारीए उम्मत पे लाखों सलाम

ज़रअ़ शादाब व हर ज़िरअ पुर शीर से
बरकाते रज़ाअत पे लाखों सलाम

भाईयों के लिए तर्के पिस्ताँ करें
दूध पीतों की निसफ़त पे लाखों सलाम

महदे वाला की क़िस्मत पे सदहा दुरूद
बुर्जे माहे रिसालत पे लाखों सलाम

अल्लाह अल्लाह वह बचपने की फबन
उस ख़ुदा भाती सूरत पे लाखों सलाम

उठते बूटों के नश्वो नुमा पर दुरूद
खिलते ग़ुन्चों की निकहत पे लाखों सलाम

फ़ज़्ले पैदाइशी पर हमेशा दुरूद
खेलने से कराहत पे लाखों सलाम

एतलाए जबिल्लत पे आली दुरूद
एतदाले तविय्यत पे लाखों सलाम

बे बनावट अदा पर हज़ारों दुरूद
बे तकल्लुफ़ मलाहत पे लाखों सलाम

भीनी भीनी महक पे महकती दुरूद
प्यारी प्यारी नफ़ासत पे लाखों सलाम

मीठी मीठी इबारत पर शीरीं दुरूद
अच्छी अच्छी इशारत पे लाखों सलाम

सीधी सीधी रविश पे करोंरों दुरूद
सादी सादी तबीयत पे लाखों सलाम

रोज़े गर्मो शबे तीर ो तार में
कोह ो सहरा की ख़ल्वत पे लाखों सलाम

जिसके घेरे में है अम्बिया ओ मलक
उस जहांगीरे बेअसत पे लाखों सलाम

अंधे शीशे झलाझल दमकने लगे
जलवा रेज़ीए दावत पे लाखों सलाम

लुत्फ़े बेदारीए शब पे बेहद दुरूद
आलमे ख़्वाबे राहत पे लाखों सलाम

ख़नदए सुबहे इशरत पे नूरी दुरूद
गिरयए अब्रे रहमत पे लाखों सलाम

नर्मीए ख़ूए लीनत पे दाएम दुरूद
गर्मीए शाने सितवत पे लाखों सलाम

जिसके आगे खिंची गर्दनें झुक गईं
उस ख़ुदा दाद शौकत पे लाखों सलाम

किस को देखा ये मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

गिर्दे मह ो दस्ते अन्जुम में रख़्शाँ हिलाल
बद्र की दफ़ऐ .जुलमत पे लाखों सलाम

शोरे तकबीर से थरथराती ज़मीन
जुम्बिशे जैशे नुसरत पे लाखों सलाम

नअरा हाए दिलेराँ से बन गूंजते
.गुर्रिशे कोसे जुरअत पे लाखों सलाम

वह चक़ाचक़ ख़न्जर से आती सदा
मुस्तफ़ा तेरी सौलत पे लाखों सलाम

उनके आगे वो हमज़ा की जाँबाज़ियाँ
शेरे ग़ुर्राने सितवत पे लाखों सलाम

अलग़रज़ उनके हर मू पे लाखों दुरूद
उनकी हर ख़ू ो ख़सलत पे लाखों सलाम

उनके हर नाम ो निसबत पे नामी दुरूद
उनके हर वक़्त ो हालत पे लाखों सलाम

उनके मौला के उन पर करोरों दुरूद
उनके असहाब ो इतरत पे लाखों सलाम

पार हाए सहफ़ .गुन्चा हाए .कुदुस
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

आबे ततहीर से जिस में पौदे जमे
उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम

ख़ूने ख़ैरुर्रुसुल से है जिनका ख़मीर
उनकी बे लौस तीनत पे लाखों सलाम

उस बतूले जिगर पारए मुस्तफ़ा
हुजला आराए इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

जिसका आंचल न देखा माह ो मेहर ने
उस रिदाए नुज़ाहत पे लाखों सलाम

सय्येदा ज़ाहेरा तय्येबा ताहेरा
जाने अह्मद की राहत पे लाखों सलाम

वह हसन मुजतबा सय्येदुल अस्ख़िया
राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम

औजे मेहरे हुदा मौजे बहरे निदा
रौहे रूहे सख़ावत पे लाखों सलाम

शहद ख़्वारे लुआबे ज़बाने नबी
चाशनी गीर अस्मत पे लाखों सलाम

उस शहीदे बला शाहे गुलगूँ क़बा
बेकसे दस्ते ग़ुरबत पे लाखों सलाम

दुर्रे दुरजे नजफ़ मेहर बुर्जे शरफ़
रंग रूए शहादत पे लाखों सलाम

अहले इसलाम की मादराने शफ़ीक़
बानवाने तहारत पे लाखों सलाम

जिलो गय्यान बैतुश्शरफ़ पर दुरूद
पर वगय्याने इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

सिय्येमा पहली माँ कहफ़े अमन ो अमाँ
हक़ गुज़ारे रिफ़ाक़त पे लाखों सलाम

अर्श से जिस पे तसल्ली नाज़िल हुई
उस सराए सलामत पे लाखों सलाम

मनज़ेलुन मिन क़सब ला नसब ला सख़ब
ऐसे कोशक की ज़ीनत पे लाखों सलाम

बिन्ते सिद्दीक़े आरामे जाने नबी
उस हरीमे बराअत पे लाखों सलाम

यानी है सूरए नूर जिन की गवाह
उन की पुर नूर सूरत पे लाखों सलाम

जिन में रूहुल क़ुदुस बे इजाज़त न जायें
उस सुरादक़ की इसमत पे लाखों सलाम

शमअ़े ताबाने काशानए इज्तिहाद
मुफ़्तीए चार मिल्लत पे लाखों सलाम

जाँनिसाराने बद्र ो उहुद पर दुरूद
हक़ गुज़ाराने बैअत पे लाखों सलाम

वो दसों जिनको जन्नत का मुज़्दा मिला
उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

ख़ास उस साबिक़े सैरे .क़ुर्बे ख़ुदा
औहदे कामिलिय्यत पे लाखों सलाम

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बादर्रुसुल
सानी इसनैने हिजरत पे लाखों सलाम

अस्दकुस्सादिक़ीं सय्येदुल मुत्तक़ीं
चश्म ो गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

वह उमर जिसके अअदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

फ़ारिक़े हक़्क़ ो बातिल इमामुल हुदा
तेग़े मसलूले शिद्दत पे लाखों सलाम

तर्जमाने नबी हमज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

ज़ाहिदे मस्जिदे अहमदी पर दुरूद
दौलते जैशे उसरत पे लाखों सलाम

दुर्रे मन्सूर क़ुरआँ की सिल्के बही
ज़ौजे दो नूरे इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

यानी उसमान साहिबे क़मीसे हुदा
हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

मुरतज़ा शेरे हक़ अश्जउ़ल अशजई
साक़ीए शीर ो शरबत पे लाखों सलाम

अस्ले नस्ले सफ़ा वजहे वस्ले ख़ुदा
बाबे फ़स्ले विलायत पे लाखों सलाम

अव्वलीं दाफ़ेए अहले रिफ़्ज़ो ख़ुरूज
चारमी रुकने मिल्लत पे लाखों सलाम

शेरे शमशीर ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
परतवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

माहिए रिफ़्ज़ ो तफ़ज़ील ो नस्ब ो ख़ुरूज
हामिए दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

मोमिनीन पेशे फ़तह व पसे फ़तह सब
अहले ख़ैर ो अदालत पे लाखों सलाम

जिस मुसलमाँ ने देखा उन्हें इक नज़र
उस नज़र की बसारत पे लाखों सलाम

जिन के दुश्मन पे लानत है अल्लाह की
उन सब अहले महब्बत पे लाखों सलाम

बाक़िए साक़ियाने शराबे तहूर
ज़ीने अहले इबादत पे लाखों सलाम

और जितने हैं शहज़ादे उस शाह के
उन सब अहले मकानत पे लाखों सलाम
उनकी बाला शराफ़त पे आला दुरूद
उनकी वाला सियादत पे लाखों सलाम
शाफ़ई, मालिक, अह़मद इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम
कामिलाने तरीक़त पे कामिल दुरूद
हामिलाने शरीअत पे लाखों सलाम
ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवए शाने .कुदरत पे लाखों सलाम
.कुत्बो अबदाल ो इरशाद ो रुश्दुर्रिशाद
मुहयए दीन ो मिल्लत पे लाखों सलाम
मर्दे ख़ैले तरीक़त पे बेहद दुरूद
फ़र्दे अहले हक़ीक़त पे लाखों सलाम
जिसकी मिम्बर हुई गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम
शाह बरकात ो बरकात पेशीनियाँ
नौ बहारे तरीक़त पे लाखों सलाम
सय्यिद आले मुह़म्मद इमामुर्रशीद
गुले रौज़े रियाज़त पे लाखों सलाम
हज़रते हमज़ा शेरे .खुदा -ओ- रसूल
ज़ीनते क़ादिरीयत पे लाखों सलाम
नाम ो काम ो तन ो जान ो हाल ो मक़ाल
सबसे अच्छे की सूरत पे लाखों सलाम
नूरे जाँ इत्र मजमूआ आले रसूल
मेरे आक़ाए नेमत पे लाखों सलाम
ज़ेबे सज्जादा सज्जादे नूरी निहाद
अह़मदे नूरे तीनत पे लाखों सलाम
बेअज़ाब ो इताब ो हिसाब ो किताब
ताअबद अहले सुन्नत पे लाखों सलाम
तेरे इन दोस्तों के तुफ़ैल ऐ ख़ुदा
बन्दए नंगें ख़लक़त पे लाखों सलाम
मेरे उस्ताद माँ बाप भाई बहन
अहलो वुल्द ो अशीरत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम
काश महशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के क़ुदसी कहें हाँ **"रज़ा"**
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा ख़ैरुल वरा हो

मुस्तफ़ा ख़ैरुल वरा हो
सरवरे हर दो सरा हो
अपने अच्छों को तसद्दुक़
हम बदों को भी निबाहो
किसके फिर हो कर रहें हम
गर तुम्हीं हमको न चाहो
बद हसें तुम उनकी ख़ातिर
रात भर रोओ करा हो
बद करें हर दम बुराई
तुम कहो उनका भला हो
हम वही नाशुस्ता रू हैं
तुम वही बहरे अता हो
हम वही शायाने रद हैं
तुम वही शाने सख़ा हो
हम वही बेशर्मो बद हैं
तुम वही काने हया हो
हम वही नंगे जफ़ा हैं
तुम वही जाने वफ़ा हो
हम वही क़ाबिल सज़ा के
तुम वही रह़मे ख़ुदा हो
चर्ख़ बदले दहर बदले
तुम बदलने से वरा हो
अब हमें हों सहव हाशा
ऐसी भूलों से जुदा हो
उम्र भर तो याद रखा
वक़्त पर क्या भूलना हो

वक़्ते पैदाइश न भूले
कैफ़ा यनस क्यूँ क़ज़ा हो
यह भी मौला अर्ज़ कर दूँ
भूल अगर जाओ तो क्या हो
वह हो जो तुम पर गिराँ हो
वह हो जो हरगिज़ न चाहो
वह हो जिसका नाम लेते
दुश्मनों का दिल बुरा हो
वह हो जिसके रद की ख़ातिर
रात दिन वक़्फ़े दुआ हो
मर मिटें बरबाद बन्दे
ख़ाना आबाद आग का हो
शाद हो इबलीस मलऊँ
ग़म किसे इस क़हर का हो
तुमको हो वल्लाह तुमको
जान ो दिल तुम पर फ़िदा हो
तुमको ग़म से हक़ बचाए
ग़म अदू को जाँ गुज़ा हो
तुमसे ग़म को क्या तअल्लुक़
बेकसों के ग़मजुदा हो
हक़ दुरूदें तुम पे भेजे
तुम मदाम उसको सरा हो
वह अता दे तुम अता लो
वह वही चाहे जो चाहो
बर तू ओ पा शुद तू बर मा
ताअबद ये सिलसिला हो
क्यूँ **"रज़ा"** मुश्किल से डरिए
जब नबी मुश्किलकुशा हो

मुल्के ख़ास किबरिया हो

मुल्के ख़ासे किबरिया हो
मालिके हर मा सवा हो
कोई क्या जाने के क्या हो
अक़्ले आलम से वरा हो

कन्ज़े मकतूमे अज़ल में
दुर्रे मकनूने ख़ुदा हो
सबसे अव्वल सबसे आख़िर
इब्तिदा हो इन्तेहा हो
थे वसीले सब नबी तुम
अस्ले मक़सूदे हुदा हो
पाक करने को वुज़ू थे
तुम नमाज़े जाँफ़िज़ा हो
सब बशारत की अज़ाँ थे
तुम अज़ाँ का मुद्दआ हो
सब तुम्हारी ही ख़बर थे
तुम मुअख़्ख़र मुब्तदा हो
क़ुर्बे हक़ की मंज़िलें थे
तुम सफ़र का मुन्तहा हो
क़ब्ले ज़िक्र इज़्मार किया जब
रुतबा साबिक़ आप का हो
तूरे मूसा चर्ख़े ईसा
क्या मुसावीए दना हो
सब जिहत के दायरे में
शश जिहत से तुम वरा हो
सब मकाँ तुम ला मकाँ में
तन हैं तुम जाने सफ़ा हो
सब तुम्हारे दर के रस्ते
एक तुम राहे ख़ुदा हो
सब तुम्हारे आगे शाफ़ेअ
तुम हुज़ूरे किबरिया हो
सबकी है तुम तक रसाई
बारगाह तक तुम रसा हो
वह कलस रौज़े का चमका
सर झुकाओ कज कुला हो
वह दरे दौलत पे आये
झोलियाँ फैलाओ शाहो

ज़मीन ो ज़मा तुम्हारे लिए

ज़मीन ा ज़माँ तुम्हारे लिये मकीन ो मकाँ तुम्हारे लिए
चुनीन ो चुनाँ तुम्हारे लिए बने दो जहाँ तुम्हारे लिए
दहन में ज़ुबाँ तुम्हारे लिए बदन में है जाँ तुम्हारे लिए
हम आए यहाँ तुम्हारे लिए उठें भी वहाँ तुम्हारे लिए
फ़रिश्ते ख़िदम रसूले हशम तमामे उमम .गुलामे करम
वुजूद ो-अदम हुदूस ो-क़िदम जहाँ में अयाँ तुम्हारे लिए
कलीम ो नजी मसीह ो सफ़ी ख़लील ो रज़ी रसूल ो नबी
अतीक़ ो वसी ग़नी ओ अ़ली सना की ज़ुबाँ तुम्हारे लिए
इसालते कुल इमामते कुल सियादते कुल इमारते कुल
हुकूमते कुल विलायते कुल ख़ुदा के यहाँ तुम्हारे लिए
तुम्हारी चमक तुम्हारी दमक तुम्हारी झलक तुम्हारी महक
ज़मीन ो फ़लक सिमाक ो समक में सिक्का निशाँ तुम्हारे लिए
वो कन्ज़े निहाँ ये नूरे फ़शाँ वो कुन से अयाँ ये बज़्मे फ़िकाँ
ये हर तन ो जाँ ये बाग़े जिनाँ ये सारा समाँ तुम्हारे लिए
ज़ुहूरे निहाँ क़ियामे जहाँ रुकूए मिहाँ सुजूदे शहाँ
नियाज़ें यहाँ नमाज़ें वहाँ ये किसके लिए हाँ तुम्हारे लिए
ये शम्स ो क़मर ये शाम ो सहर ये बर्ग ो शजर ये बाग़ ो समर
ये तेग़ ो सिपर ये ताज ो क़मर ये हुक्म रवाँ तुम्हारे लिए
ये फ़ैज़ दिए वो जूद किए के नाम लिए ज़माना जिए
जहाँ ने लिए तुम्हारे दिए ये अकरमियाँ तुम्हारे लिए
सहाबे करम रवाना किए के आबे नेअम ज़माना पिए
जो रखते थे हम वो चाक सिए ये सत्रे बदाँ तुम्हारे लिए
सना का निशाँ वो नूरे फ़शाँ के मेहरे वशाँ ब-आँ हुमा शाँ
बसा ये कशाँ मवाकिबे शाँ ये नाम ो निशाँ तुम्हारे लिए
अताए अरब जिलाए करब फ़ुयूज़े अजब बग़ैरे तलब
ये रहमते रब है किसके सबब बरब्बे जहाँ तुम्हारे लिए
ज़ुनूबे फ़ना उयूब हिबा .कुलूबे सफ़ा ख़ुतूब रवा
ये ख़ूब अता कुरूबे ज़ुवा पए दिल ो जाँ तुम्हारे लिए
न जिन्न ो बशर के आठों पहर मलाइका दर पे बस्ता कमर
ये जुब्बा ो सर के क़ल्ब ो जिगर हैं सदजा कुनाँ तुम्हारे लिए
न रूहे अमीं न अर्शे बरीं न लौहे मुबीं कोई भी कहीं
ख़बर ही नहीं जो रमज़ें खुलीं अज़ल की निहाँ तुम्हारे लिए

जिनाँ मे चमन चमन में समन समन में फबन फबन मे दुल्हन
सज़ाए मिहन ये ऐसे मिनन ये अमन ो अमाँ तुम्हारे लिए
कमाले महाँ जलाले शहाँ जमाले हिसाँ में तुम हो अयाँ
के सारे जहाँ में रोज़े फ़काँ ज़िल आइना साँ तुम्हारे लिए
ये तूर कुजा सिपहर ता क्या कि अर्शे उला भी दूर रहा
जहत से वरा विसाल मिला ये रिफ़अते शाँ तुम्हारे लिए
ख़लील ो नजी मसीह ो सफ़ी सभी से कही कहीं भी बना
ये बेख़बरी के ख़ल्क़ फिरी कहाँ से कहाँ तुम्हारे लिए
ब-फ़ौर सदा समाँ ये बंधा ये सिदरा उठा वो अर्श झुका
सुफ़ूफ़े समा ने सजदा किया हुई जो अज़ाँ तुम्हारे लिए
ये मरहमतें के कच्ची मतें न छोडें लतें न अपनी गतें
क़ुसूर करें और उनसे भरें क़ुसूरे जिनाँ तुम्हारे लिए
फ़ना ब-दरत बका ब-परत ज़े-हर दो जिहत बगेरदे सरत
है मरकज़ीयत तुम्हारी सिफ़त कि दोनों कमाँ तुम्हारे लिए
इशारे से चाँद चीर दिया छुपे हुए ख़ुर को फेर दिया
गए हुए दिन को अस्र किया ये ताबो तवाँ तुम्हारे लिए
सबा वो चले के बाग़ फले वो फूल खिले के दिन हो भले
लिवा के तले सना में खुले **"रज़ा"** की ज़ुबाँ तुम्हारे लिए।

नज़र इक चमन से दोचार है

नज़र इक चमन से दोचार है न चमन चमन भी निसार है
अजब उसके गुल की बहार है के बहारे बुलबुले ज़ार है
न दिले बशर ही फ़िगार है के मलक भी उसका शिकार है
ये जहाँ के हज़्दा हज़ार है जिसे देखो उसका हज़ार है
नहीं सर के सजदा कुनाँ न हो न ज़ुबाँ के ज़मज़मा ख़्वाँ न हो
न वह दिल के उस पे तपाँ न हो न वह सीना जिसको क़रार है
वह है भीनी भीनी वहाँ महक के बसा है अर्श से फ़र्श तक
वह है प्यारी प्यारी वहाँ चमक के वहाँ की शब भी नहार है
कोई और फूल कहाँ खिले न जगह है जोशिशे हुस्न से
न बहार और पे रुख़ करे के झपक पलक की तो ख़ार है
ये समन ये सुसन ो यासमन ये बनफ़शा सुम्बुल ो नस्तरन
गुल ो सर्वो लाला भरा चमन वही एक जलवा हज़ार है
ये सबा सनक वो कली चटक ये ज़ुबाँ चहक लबे जू झलक
ये महक छलक ये चमक दमक सब उसी के दम की बहार है

वही जलवा शहर ब-शहर है वही अस्ले आलम ो दहर है
वही बहर है वही लहर है वही पाट है वही धार है
वह न था तो बाग़ में कुछ न था वह न हो तो बाग़ हो सब फ़ना
वह है जान जान से है बक़ा वही बुन है बुन से ही बार है
ये अदब के बुलबुले बे नवा कभी खुल के कर न सके नवा
ये सबा को तेज़ रविश रवा न छलकती नहरों की धार है
बा अदब झुका लो सरे विला के मैं नाम लूँ गुलो बाग़ का
गुले तर मुह़म्मदे मुस्तफ़ा चमन उनका पाक दयार है
वही आँख उनका जो मुँह तके वही लब के महव हों नात के
वही सर जो उनके लिए झुके वही दिल जो उन पे निसार है
ये किसी का हुस्न है जलवागर के तपाँ हैं ख़ूबों के दिल जिगर
नहीं चाक जेबे गुल ो सहर के क़मर भी सीना फ़िगार है
वही नज़्रे शह में ज़रे निकू जो हो उनके इश्क़ में ज़र्द रू
गुले ख़ुल्द उससे हो रंग जू ये ख़िज़ाँ वो ताज़ा बहार है
जिसे तेरी सिफ़ते नआल से मिले दो निवाले नवाल से
वो बना के उसके उगाल से भरी सल्तनत का अधार है
वह उठीं चमक के तजल्लियाँ के मिटा दे सब की ताअल्लियाँ
दिल ो जाँ को बख़्शे तसल्लियाँ तेरा नूर बार दुहार है
रुसुल ो मलक पे दुरूद हो वही जाने उनके शुमार को
मगर इक ऐसा दिखा तो दो जो शफ़ीअे रोज़े शुमार है
न हिजाबे चर्ख़ ो मसीह पर न कलीम ो तूर निहाँ मगर
जो गया है अर्श से भी उधर वो अरब का नाक़ा सवार है
वह तेरी तजल्ली को दिलनशीं के झलक रहे हैं फ़लक ज़मीं
तेरे सदक़े मेरे महे मुबीं मेरी रात क्यूँ अभी तार है
मेरी ज़ुलमतें हैं सितम मगर तेरा मह न मेहर के मेहर गर
अगर एक छींट पड़े इधर शबे ताज भी तो नहार है
गुनहे 'रज़ा' का हिसाब क्या वह अगरचे लाखों से हैं सिवा
मगर ऐ अफ़ुव्व तेरे अफ़्व का न हिसाब है न शुमार है
तेरे दीने पाक की वो ज़िया के चमक उठी रहे इस्तेफ़ा
जो न माने आप सक़र गया कहीं नूर है कहीं नार है
कोई जान बस के महक रही किसी दिल में इस के खटक रही
नहीं उसके जलवे में यक रही कहीं फूल है कहीं ख़ार है
वह जिसे वहाबिया ने दिया है लक़ब शहीद ो ज़बीह का
वह शहीदे लैलए नज्द था वह ज़बीहे तेग़े ख़यार है

यह है दीं की तक़वियत उसके घर ये है मुस्तक़ीमे सिराते शर
जो शक़ी के दिल में है गाओ ख़र तो ज़ुबाँ पे चूड़ा चमार है
वह हबीब प्यारा तो उम्र भर करे फ़ैज़ व जूद ही सर बसर
अरे तुझको खाए तपे सक़र तेरे दिल में किससे बुख़ार है
वह **"रज़ा"** के नेज़े की मार है के अदू के सीने में ग़ार है
किसे चाराजोई का वार है के ये वार वार से पार है

ईमान है काले मुस्तफ़ाई

ईमान है काले मुस्तफ़ाई
क़ुर्आन है हाले मुस्तफ़ाई
अल्लाह की सलतनत का दूल्हा
नक़्श तेमसाले मुस्तफ़ाई
कुल से बाला रुसुल से आला
इजजाल ो जलाले मुस्तफ़ाई
असहाब नुजूम रहनुमा हैं
कश्ती है आले मुस्तफ़ाई
इदबार से तू मुझे बचा
प्यारे इक़बाले मुस्तफ़ाई
मुरसल मुश्ताक़े ह़क़ हैं और हक़
मुशताक़े विसाले मुस्तफ़ाई
ख़्वाहाने विसाले किब्रिया हैं
जोयाने जमाले मुस्तफ़ाई
महबूब ो मुहिब की मिल्क हैं इक
कौनैन हैं माले मुस्तफ़ाई
अल्लाह न छूटे दस्ते दिल से
दामाने ख़्याले मुस्तफ़ाई
हैं तेरे सुपुर्द सब उम्मीदें
ऐ जूद ो नवाले मुस्तफ़ाई
रौशन कर क़ब्र बेकसों की
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
अंधेर है बे तेरे मेरा घर
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
मुझको शबे ग़म डरा रही है
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई

आंखों में चमक के दिल में आ जा
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
मेरी शबे तार दिन बना दे
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
चमका दे नसीबे बद नसीबाँ
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
क़ज़्ज़ाक़ हैं सर पे राह गुम है
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
छाया आँखों तले अंधेरा
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
दिल सर्द है अपनी लौ लगा दे
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
घंघोर घटायें ग़म की छाईं
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
भटका हूँ तू रास्ता बता जा
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
फ़रियाद दबाती है सियाही
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
मेरे दिले मुर्दा को जिला दे
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
आंखें तेरी राह तक रही हैं
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
दुख में है अंधेरी रात वाले
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
तारीक है रात ग़मज़दों की
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
हो दोनों जहाँ में मुँह उजाला
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
तारीकिए गोर से बचाना
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
पुर नूर है तुझसे बज़्मे आलम
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
हम तीरा दिलों पे भी करम कर
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई

लिल्लाह इधर भी कोई फेरा
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई
तक़दीर चमक उठे **'रज़ा'** की
ऐ शमअे जमाले मुस्तफ़ाई

ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के

ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के
ताजे सर बनते हैं सय्यारों के
हमसे चोरों पे जो फ़रमायें करम
ख़लअते ज़र बने पुश्तारों के
मेरे आक़ा का वह दर है जिस पर
माथे घिस जाते हैं सरदारों के
मेरे ईसा तेरे सदक़े जाऊँ
तौर बेतौर हैं बीमारों के
मुजरिमो चश्मे तबस्सुम रखो
फूल बन जाते हैं अंगारों के
तेरे अबरू के तसद्दुक़ प्यारे
बन्द करें हैं गिरफ़्तारों के
जानो दिल तेरे क़दम पर वारे
क्या नसीबे हैं तेरे यारों के
सिद्क़ ो अदल ो करम ो हिम्मत में
चार सू शोहरे हैं इन चारों के
बहरे तसलीमे अली मैदाँ में
सर झुके रहते हैं तलवारों के
कैसे आक़ओं का बन्दा हूँ **"रज़ा"**
बोल बाले मेरी सरकारों के

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझको क्या

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझको क्या
दिल था साजिद नजदिया फिर तुझको क्या
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह कहा फिर तुझको क्या
या ग़रज़ से छुटके महज़ ज़िक्र को
नामे पाक उनका जपा फिर तुझको क्या

बेख़ुदी में सजदए दर या तवाफ़
जो किया अच्छा किया फिर तुझको क्या

उनको तमलीके मलीकुल्मुल्क से
मालिके आलम कहा फिर तुझको क्या

उनके नामे पाक पर दिल जान ओ माल
नजदिया सब तज दिया फिर तुझको क्या

या इबादी कह के हमको शाह ने
अपना बन्दा कर लिया फिर तुझको क्या

देव के बन्दों से कब है यह ख़िताब
तू न उनका है न था फिर तुझको क्या

लायऊद्दू न आगे होगा भी नहीं
तू अलग है दाइमा फिर तुझको क्या

दश्ते गर्दो पेश तैबा का अदब
मक्का सा था या सिवा फिर तुझको क्या

नजदी मरता है के क्यूँ ताज़ीम की
यह हमारा दीन था फिर तुझको क्या

देव तुझसे खुश है फिर हम क्या करें
हमसे राज़ी है .ख़ुदा फिर तुझको क्या

देव के बन्दों से हमको क्या ग़रज़
हम हैं अब्दे मुस्तफ़ा फिर तुझको क्या

तेरी दोज़ख़ से तो कुछ छीना नहीं
ख़ुल्द में पहुँचा **"रज़ा"** फिर तुझको क्या

वही रब है जिसने तुझको हमअ तन करम बनाया

वही रब है जिसने तुझको हमअ तन करम बनाया
हमे भीक मांगने को तेरा आस्ताँ बताया
तुझे ह़म्द है ख़ुदाया

तुम्हीं हाकिमे बराया तुम्हीं क़ासिमे अताया
तुम्हीं दाफ़ेए बलाया तुम्हीं शाफ़ेए ख़ताया
कुइ तुम सा कौन आया

वह कुआंरी पाक मरियम वह नफ़ख़्तो फ़ीहे का दम
है अजब निशाने आज़म मगर आमना का जाया
वही सबसे अफ़ज़ल आया

यही बोले सिदरा वाले चमने जहाँ के थाले
सभी मैने छान डाले तेरे पाए का न पाया
तुझे यक ने यक बनाया

फ़इज़ा फ़रग़ता फ़नसब यह मिला है तुझको मनसब
जो गदा बना चुके अब उठो वक़्ते बख़्शिश आया
करो क़िस्मते अताया

वइलल इलाहि फ़रग़ब करो अर्ज़ सब के मतलब
के तुम्हीं को तकते हैं सब करो उन पर अपना साया
बनो शाफ़ेए ख़ताया

अरे ऐ .ख़ुदा के बन्दो कोई मेरे दिल को ढूंढो
मेरे पास था अभी तो अभी क्या हुआ .ख़ुदाया
न कोई गया न आया

हमें ऐ **'रज़ा'** तेरे दिल का पता चला बमुश्किल
दरे रौज़े के मुक़ाबिल वह हमें नज़र तो आया
ये न पूछो कैसा पाया

कभी ख़न्दा ज़ेरे लब है कभी गिरया सारी शब है
कभी ग़म कभी तरब है न सबब समझ में आया
न उसी ने कुछ बताया

कभी ख़ाक पर पड़ा है सरे चर्ख़ ज़ेरे पा है
कभी पेशे दर खड़ा है सरे बन्दगी झुकाया
तो क़दम में अर्श आया

कभी वह तपक के आतिश कभी वह टपक के बारिश
कभी वह हुजूमे नालिश कोई जाने अब्र छाया
बड़ी जोशिशों से आया

कभी वह चहक के बुलबुल कभी वह महक के ख़ुद गुल
कभी वह लहक के बिल्कुल चमने जिनाँ खिलाया
गुले क़ुद्स लहलहाया

कभी ज़िन्दगी के अरमाँ कभी मरगे नौ का ख़्वाहाँ
वह हया के मरगे .क़ुरबाँ वह मुवा के ज़ीस्त लाया
कहे रूह हाँ जिलाया

कभी गुम कभी अयाँ है कभी सर्द गै तपाँ है
कभी ज़ेरे लब फ़ग़ाँ है कभी चुप के दम न था या
रूख़ा काम जाँ दिखाया

यह तसव्वुराते बातिल तेरे आगे क्या है मुश्किल
तेरी क़ुदरतें हैं कामिल उन्हें रास्त कर ख़ुदाया
मैं उन्हें शफ़ीअ़ लाया

लहद में इश्क़े रूख़े शह का दाग़ ले के चले

लहद में इश्क़े रूख़े शह का दाग़ ले के चले
अंधेरी रात सुनी थी चराग़ ले के चले
तेरे .गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या बहक सके जो ये सुराग़ ले के चले
जिना बनेगी मुहिब्बाने चार यार की क़ब्र
जो अपने सीने में यह चार बाग़ ले के चले
गये ज़ियारते दर की सद आह वापस आए
नज़र के अश्क पुछे दिल का दाग़ ले के चले
मदीना जाने जिनाँ ो जहाँ है वह सुन लें
जिन्हें जुनूने जिनाँ सूए ज़ाग़ ले के चले
तेरे हिसाबे सुख़न से न नम के नम से भी कम
बलीग़े बहरे बलाग़त बलाग़ ले के चले
हुज़ूरे तैबा से भी कोई काम बढ़ कर है
के झूटे हीलिओ मक्र ो फ़राग़ ले के चले
तुम्हारे वस्फ़े जमालो कमाल में जिब्रील
मुहाल है के मजालो मसाग़ ले के चले
गिला नहीं है मुरीदे रशीदे शैताँ से
के उसके वुसअते इल्मी का लाग़ ले के चले
हर एक अपने बड़े की बड़ाई करता है
हर एक मग़बचा मग़ का अयाग़ ले के चले
मगर .ख़ुदा पे जो धब्बा दरोग़ का थोपा
यह किस लईं की .गुलामी का दाग़ ले के चले
वुक़ूए किज़्ब के मअना दुरुस्त और .क़ुद्दूस
हिए की फूटे अजब सब्ज़ बाग़ ले के चले
जहाँ में कोई भी काफ़िर सा काफ़िर ऐसा है
के अपने रब पे सफ़ाहत का दाग़ ले के चले
पड़ी है अंधे को आदत के शोरबे ही से खाए
बटेर हाथ न आई तो ज़ाग़ ले के चले
ख़बीस बहरे ख़बीसा ख़बीसा बहरे ख़बीस
के साथ जिन्स को बाज़ ओ कलाग़ ले के चले

जो दीन कव्वों को दे बैठे उनको यकसाँ है
कलाग़ ले के चले या उलाग़ ले के चले
"रज़ा" किसी सगे तैबा के पाँव भी चूमे
तुम और आह कि इतना दिमाग़ ले के चले

ग़ज़ल क़ता बन्द

अम्बिया को भी अजल आनी है
मगर ऐसी के फ़क़त आनी है
फिर उस आन के बाद उनकी हयात
मिस्ले साबिक़ वही जिस्मानी है
रूह तो सब की है ज़िन्दा उनका
जिस्मे पुर नूर भी रूहानी है
औरों की रूह हो कितनी ही लतीफ़
उनके अजसाम की कब सानी है
पाँव जिस ख़ाक पर रख दें वह भी
रूह है पाक है नूरानी है
उसकी अज़वाज को जाएज़ है निकाह
उसका तर्का बटे जो फ़ानी है
ये हैं हय्ये अ-बदी उनको **"रज़ा"**
सिदक़े वादा की क़ज़ा मानी है

रुबाइयात

(1)

आते रहे अम्बिया कमा क़ील लहुम
वल ख़ातमु हक़्क़ुकुम कि ख़ातिम हुए तुम
यानी जो हुआ दफ़तरे तन्ज़ील तमाम
आख़िर में हुई मुहर कि अकमलतु लकुम

(2)

शब लिह्‌यओ शारिब है रुख़े रौशन दिन
गेसू व शबे क़द्र ो बराते मोमिन
मिज़गाँ की सफ़ें चार हैं दो अबरू हैं
वल फ़ज्र के पहलू में लयालिन अशरिन

(3)

अल्लाह की सर ता ब-क़दम शान हैं यह
इन सा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं यह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

(4)

बोसा गहे असहाब वह मेहरे सामी
वह शानए चप में उसकी अम्बर फ़ामी
यह तुरफ़ा कि है काबाए जान ो दिल में
संगे असवद नसीबे रुक्ने शामी

(5)

काबे से अगर तुरबते शह फ़ाज़िल है
क्यूँ बायें तरफ़ उस के लिए मन्ज़िल है
इस फ़िक्र में जो दिल की तरफ़ ध्यान गया
समझा कि वह जिस्म है यह मरक़दे दिल है

(6)

तुम जो चाहो तो क़िसमत की मुसीबत टल
ज ा ए
क्यूँ कर कहूँ साअत से क़ियामत टल जाए
लिल्लाह उठा दो रुख़े रौशन से नक़ाब
मौला मेरी आई हुई शामत टल जाए

(7)

याँ शुबहे शबीह का गुज़रना कैसा
बेमिस्ल की तेमसाल संवरना कैसा
उनका मुतअल्लिक़ है तरक़्क़ी पे मुदाम
तसवीर का फिर कहिए उतरना कैसा

(8)

यह शाह की तवाज़ोअ का तक़ाज़ा ही नहीं
तसवीर खिंचे उनको गवारा ही नहीं
मअना हैं यह मानी कि करम किया माने
खींचना तो यहाँ किसी से ठहरा ही नहीं

(9)

हूँ अपने कलाम से निहायत महज़ूज़
बेजा से है अल मिन्नतु लिल्लाह
म ह ज ू . ज .
.क़ुर्आन से मैंने नातगोई सीखी
यानी रहे अहकामे शरीअत मल्हूज़

(10)

पेशा मिरा न शाइरी न दावा मुझको
हाँ शरा को अल्बत्ता है जम्बा मुझको
मौला की सना में हुक्मे मौला का ख़िलाफ़
लो ज़ीना में सैर तो न भाया मुझको

(11)

महसूर जहाँदानी ओआली में है
क्या शुबह 'रज़ा' की बेमिसाली में है
हर शख़्स को इक वस्फ़ में होता है कमाल
बन्दे को कमाल बेकमाली में

(12)

किस मुँह से कहूँ रश्के अनादिल हूँ मैं
शाइर हूँ फ़सीह बेमुमासिल हूँ मैं
हक़्क़ा कोई सनअत नहीं आती मुझको
हाँ यह है कि नुक़सान में कामिल हूँ मैं

(13)

तोशे में ग़मो अश्क का सामाँ बस है
अफ़ग़ाने दिले ज़ार हुदाख़्वाँ बस है
रहबर की रहे नात में गर हाजत हो
नक़्शे क़दमे हज़रते हस्साँ बस है

(14)

हर जा है बलन्दीए फ़लक का मज़कूर
शायद अभी देखे नहीं तैबा के क़ुसूर
इन्सान को इन्साफ़ का भी पास रहे
गो दूर के ढोल हैं सुहाने मशहूर

(15)

किस दर्जा है रौशन तने महबूबे इलाह
जामे से अयाँ रंगे बदन है वल्लाह
कपड़े पे नहीं मैले हैं उस गुल के 'रज़ा'
फ़रयाद को आई है सियाहीए गुनाह

(16)

है जलवागहे नूरे इलाही वह रू
क़ौसैन की मानिन्द हैं दोनों अबरू
आँखें यह नहीं सब्ज़ए मिज़गाँ के क़रीब
चरते हैं फ़ज़ाए लामकाँ में आहू

(17)

मादूम न था सायए शहे सक़लैन
उस नूर की जलवागह थी ज़ाते हसनैन
तमसील ने उस साये के दो हिस्से किए
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन

(18)

दुनया में हर आफ़त से बचाना मौला
उक़्बा में न कुछ रंज दिखाना मौला
बैठूँ जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर
ईमान पर उस वक़्त उठाना मौला

(19)

ख़ालिक़ के कमाल हैं तजद्दुद से बरी
मख़लूक़ ने महदूद तबीयत पाई
बिलजुमला वुजूद में है इक ज़ाते रसूल
जिसकी है हमेशा रोज़ अफ़ज़ूँ ख़ूबी

(20)

हूँ कर दो तो गरदूँ की बिना गिर जाए
अबरू जो खिंचे तेग़े क़ज़ा फिर जाए
ऐ साहिबे क़ौसैन बस अब रद न करे
सहमे हुओं से तीर बला फिर जाए

(21)

नुक़सान न देगा तुझको इसयाँ मेरा
ग़ुफ़रान में कुछ ख़र्च न होगा तेरा
जिससे नुक़सान नहीं कर दे माफ़
जिसमें तेरा कुछ ख़र्च नहीं दे मौला

वाह क्या जूद ो करम है शहे बतहा तेरा

वाह – कलिमए तहसीन है यानी किसी की तारीफ़ के लिए इस्तेमाल करते हैं ★★★ जूद – वह बख़्शिश जो बिना मांगे अता हो ★★★ करम – वह बख़्शिश जो मांग कर मिले ★★★ बतहा – मक्का मुकर्रमा ★★★ शहे बतहा – मक्का मुकर्रमा के बादशाह यानी हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ धारा – पानी का बहाव, चश्मा ★★★ अता – देन ★★★ क़तरा – पानी की एक बूंद ★★★ तारे खिलना – चमकना ★★★ सख़ा – सख़ावत, बख़्शिश ★★★ ज़र्रा – बहुत छोटा ★★★ फ़ैज़ – करम ★★★ शहे तस्नीम – तस्नीम के बादशाह, तस्नीम जन्नत की एक नहर का नाम है ★★★ तजस्सुस – तलाश ★★★ अग़निया – अमीर लोग ★★★ दर – दरवाज़ा ★★★ बाड़ा – ख़ैरात ★★★ अस्फ़िया – सूफ़ी लोग यानी अल्लाह के मक़बूल बन्दे ★★★ फ़र्श वाले – यानी ज़मीन के बसने वाले ★★★ शौकत – दबदबा या रोब ★★★ उलू – बलन्दी ★★★ ख़ुसरवा – शहनशाह ★★★ फरैरा – झंडा ★★★ ख़्वान – दस्तरख़्वान ★★★ साहिबेख़ाना – मेज़बान ★★★ मालिक के ह़बीब – यानी अल्लाह के महबूब ★★★ मुहिब – महब्बत करने वाला ★★★ महबूब – जिससे महब्बत की जाए ★★★ बहरे साइल – बहने वाला दरिया ★★★ साइल – मांगने वाला (दूसरी बार जो साइल आया है उसके मअना मांगने वाला के हैं) ★★★ हाकिम – हुकूमत करने वाला ★★★ आंखें ठंडी होना – ख़ुश होना ★★★ जिगर ताज़े होना – चैन से रहना ★★★ दिल आरा – दिल को संवारने वाला ★★★ अबस – बेकार ★★★ ख़ौफ़ – डर ★★★ पत्ता सा उड़ा जाना – पत्ते की तरह उड़ना ★★★ एक मैं क्या – यानी मेरी हैसियत ही क्या ★★★ इस्याँ – गुनाह ★★★ निकम्मा – कामचोर, बेकार ★★★ ख़्वार – ज़लील ★★★ राफ़ेअ – बलन्द करने वाला ★★★ नाफ़ेअ – फ़ायदा पहुँचाने वाला ★★★ शाफ़ेअ – शफ़ाअत या सिफ़ारिश करने वाला ★★★ महव – मिटा देना ★★★ इस्बात – साबित करना ★★★ कड़ोड़ा – क़ब्ज़ा ★★★ करीम – बख़्शिश वाला ★★★ सितम तल्ख़ – बहुत कड़वा ★★★ ज़हरा बए नाब – ख़ालिस ज़हरीला पानी ★★★ बदकार – बेअमल ★★★ बेकस – मजबूर ★★★ तन्हा – अकेला ★★★ हरम – क़ाबिले एहतेराम मुराद यहाँ काबए मुअज़्ज़मा ★★★ तैबा – मदीनए मुनव्वरा ★★★ बग़दाद – इराक़ का एक शहर जहाँ ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का मज़ार शरीफ़ है ★★★ जोत – रोशनी ★★★ सरकार – दरबार ★★★ शफ़ीअ – सिफ़ारिशी

★★★ ग़ौस – फ़रयाद–रस, मददगार, फ़रयाद को पहुँचने वाला यहाँ मुराद ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं ★★★ रज़ा – तख़ल्लुस सरकार आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ★★★ तख़ल्लुस – शायरों का अदबी नाम।

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा

ग़ौस – फ़रयाद को पहुँचने वाला ★★★ बाला – बलन्द ★★★ आला – ऊँचा ★★★ मुहीयुद्दीन – दीन को ज़िन्दा करने वाला ★★★ मजमाए बहरैन – दो दरियाओं के मिलने की जगह ★★★ तने बे साया – जिस बदन की परछाई न हो यानी हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बेसाया जिस्म ★★★ जलवए ज़ेबा – ख़ूबसूरत जलवा ★★★ इब्ने ज़हरा – हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के बेटे यानी सरकार ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ★★★ उरूसे .कुदरत – .कुदरत व ताक़त की दुल्हन ★★★ तसद्दुक़ – सदक़ा ★★★ क़ासिम – बाटने वाला ★★★ इब्ने अबिल क़ासिम – अबुल क़ासिम का बेटा और अबुल क़ासिम हुज़ूर अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की कुन्नियत (नाम) है ★★★ क़ादिर – क़ुदरत वाला ★★★ मुख़्तार – जिसे इख़्तयार दिया गया हो ★★★ बाबा – वालिद या दादा हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं ★★★ नबवी मेंह – नबी वाली बारिश ★★★ अलवी फ़सल – अली वाली फ़सल ★★★ बतूली गुलशन – बतूल यानी हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा वाला चमन ★★★ नबवी ज़िल – नबी का साया ★★★ अलवी बुर्ज – अली के बुर्ज ★★★ बतूली मन्ज़िल – फ़ातमी मन्ज़िल ★★★ नबवी ख़ुर – नबी के सूरज ★★★ अलवी कोह – अली के पहाड़ ★★★ बतूली मअदन – हज़रते फ़तिमा की खान ★★★ बहर – दरिया, समन्दर ★★★ बर – ख़ुश्की ★★★ क़ुरा – जमा क़रया की यानी बहुत से गांव ★★★ सहल – नर्म ज़मीन ★★★ हज़न – सख़्त ज़मीन ★★★ दश्त – जंगल ★★★ चमन – बाग़ ★★★ चक – ज़मीन का टुकड़ा ★★★ हुस्ने नियत – अच्छी नियत ★★★ यगाना – बेमिस्ल ★★★ दो गाना – दो रकअत नमाज़ यहाँ वह नफ़्ली नमाज़ मुराद है जो सलातुल ग़ौसिया के नाम से मशहूर है ★★★ अर्ज़े अहवाल – अपने हाल को पेश करना, बयान करना ★★★ ताब – ताक़त ★★★ अब्रे करम – करम का बादल ★★★ आब आमद – पानी आया ★★★ तयम्मुम बर्ख़ास्त – तयम्मुम ख़त्म हो गया मुहावरा है ★★★ मुश्ते ख़ाक – एक मुट्ठी धूल यहाँ जिस्म मुराद है★★★ अहला – मूसलाधार बारिश, रोग़ने उन्स ★★★ सग – कुत्ता ★★★ सगाने

बग़दाद – बग़दाद शरीफ़ के कुत्ते *** निसार – क़ुर्बान *** ख़्वार – ज़लील *** करीमा – ऐ मेहरबान *** बरदा – ग़ुलाम *** जय्यिद बेहतर *** दहर – ज़माना *** नज़्मे रफ़ीअ – बलन्द शान की नज़्म *** सनाख़्वाँ – तारीफ़ करने वाले।

तू है वह ग़ौस के हर ग़ौस है शैदा तेरा

(इस मनक़बत के ज़्यादातर अश्आर मुश्किल हैं मतलब समझने के लिए उलमा से राबता करें)

ग़ौस – विलायत का अहम मरतबा, फ़रयाद को पहुँचने वाला *** शैदा – आशिक़ *** ग़ैस – फ़ायदेमन्द बारिश *** उफ़क़ – आसमान का किनारा मतलब वह किनारा जहाँ पर सूरज निकलता है *** मेहर – सूरज *** असील – अच्छी नसल का मुर्ग़ *** नवासंज – अच्छी आवाज़ में बोलने वाला *** क़ब्ल – पहले, जो गुज़र गया *** बक़सम कहना – क़सम खा कर कहना *** शाहाने सरीफ़ैनो हरीम – सरीफ़ैन और हरीम के बादशाह, यहाँ सरीफ़ैन के शाह से मुराद हज़रते अबू उसमान सरीफ़ैनी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं और हरीम के शाह से मुराद अबू मुहम्मद अब्दुल ह़क़ हरीमी हैं। ये दोनों बुज़ुर्ग ग़ौस पाक के ज़माने के हैं *** हमता – मिस्ल, तरह *** दहर – ज़माना *** अक़्ताब – क़ुतुब की जमा है, क़ुतुब विलायत का एक बहुत बड़ा दर्जा होता है *** परवाना – वह पतिंगा जो शमा के चारों तरफ़ घूमता रहता है *** शजरे सर्व – सर्व का दरख़्त जो बहुत लम्बा होता है *** मारिफ़त – ख़ुदा की पहचान (मारिफ़त विलायत की एक मन्ज़िल का नाम है) *** नौशा – दूल्हा *** गुलज़ार – बाग़ *** समन – चमेली का फूल *** रक़्स – नाच *** हज़ारों की चहक – बुलबुलों की चहक *** सफ़ – क़तार, लाइन *** फ़स्ले बहारी – फूल खिलने का मौसम *** ख़ुद्दाम – ख़ादिम की जमा *** बाज – टैक्स *** मज़रए – खेती यहाँ मुराद विलायत की खेती है *** किश्त – खेती *** यकसाँ – बराबर *** फ़र्द – विलायत का एक बहुत बड़ा मरतबा है *** सरापा – सर से पांव तक *** बफ़राग़त – इत्मिनान से *** नीमा – एक क़िस्म का ऊँचा पाजामा *** कश्फ़ – खुलना, खोलना *** साक़ – पिंडली *** फ़र्क़े उरफ़ा – आरिफ़ों का सर *** सुकर – नशा *** ख़िज़्र – हज़रते ख़िज़्र *** ज़ेरे हज़ीज़ – घाटी, नशेबी इलाक़ा *** ओज – बलन्दी

अल्अमाँ क़हर है ऐ ग़ौस वह तीखा तेरा

अल्अमाँ – ख़ुदा की पनाह *** अक्स – परछाईं *** बिफर जाना – .गुस्से में आ जाना *** चार आईना – लोहे का बकतर यानी हैलमेट *** तेग़ा – छोटी और चौड़ी तलवार *** कोह – पहाड़ *** सर मुख – बाल के सिरे बराबर, सामने होना *** पर काले – पत्थर के टुकड़े *** व-र-फ़अना ल-क ज़िकरक – यह हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए .कुरआन में आया है। वराफ़अना लका ज़िकरक का साया यानी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का साया *** आदा – दुश्मन *** सिम्मे क़ातिल – जान लेवा ज़हर *** सय्याफ़ – ख़ूब तलवार चलाने वाला *** बाक – डर *** इब्ने ज़हरा – हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का बेटा यानी ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** बल बे – वाह रे *** ज़हरा – हौसला *** बाज़ अशहब – सफ़ेद बाज़ *** मुअम्मा – पहेली *** सगे दर – दरबारी कुत्ता *** बन्द बन्द – जोड़ जोड़ *** रुबए दुनिया – दुनिया की लोमड़ी *** ख़ातिर – तबीयत, दिल *** नाफ़िज़ – जारी *** ख़ामा – क़लम *** सैफ़ – तलवार *** दम में – एक सेकन्ड में *** ख़ज़ीना – ख़ज़ाना *** कन्दा – खुदा हुआ *** दुज़्दे रजीम – मरदूद चोर यानी शैतान *** नज़अ – जब दम निकलता हो वह वक़्त *** गोर – क़ब्र *** मीज़ान – वह तराज़ू जिस पर रोज़े क़यामत आमाल तोले जायेंगे *** सरे पुल – पुलसिरात पर *** दामाने मुअल्ला – ऊँचा दामन *** महशर– क़यामत का दिन *** जाँ सोज़ – जान को जलाने वाली बहुत तेज़ *** पल्ला – आंचल *** बहजत – ख़ुशी *** सिर – राज़, भेद *** बहजतुल असरार – सरकारे ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर लिखी किताब का नाम *** फ़लकवार – आसमान की तरह *** चीस्त – क्या है *** अर जुमला जहाँ दुश्मने तस्त – अगर पूरी दुनिया तेरी दुश्मन हो जाए *** कर्दा अम मा मने ख़ुद – मैंने क़िब्लए हाजात यानी सरकार ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अपनी पनाहगाह बनाया *** क़िब्लए हाजात – जहाँ से ज़ुरूरत पूरी हो।

हम ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा

हम ख़ाक हैं – यानी मिट्टी से बने हैं *** मावा – ठिकाना *** जद्दे आला – सबसे बड़ा दादा, नस्ल का सबसे पहला शख़्स यानी आदम अलैहिस्सलाम *** तलब – तलाश *** ख़ाक करे – फ़ना करे *** सय्यदे आलम – तमाम आलम के सरदार

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ ख़म – टेढ़ी ★★★ पुश्ते फ़लक – आसमान की पीठ ★★★ तअन – ऐतराज़ ★★★ मुद्दईयों – दुश्मनों, मुख़ालिफ़ों ★★★ ख़ाक न समझे – कुछ न समझे ★★★ मदफ़ूँ – दफ़न किए गए ★★★ शहे बतहा – मदीने के बादशाह यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ तामीर – इमारत बनाना ★★★ शहे कौनैन – दोनों जहान के बादशाह यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ मामूर – आबाद ★★★ हम ख़ाक उड़ायेंगे – दीवाने हो जायेंगे ★★★ रज़ा – तख़ल्लुस सरकार आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ★★★ तख़ल्लुस – शयरों का अदबी नाम।

ग़म हो गए बेशुमार आक़ा

निसार – क़ुर्बान ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते ★★★ वक़ार – जाह ओ जलाल ★★★ ग़मज़दा – ग़म का मारा हुआ ★★★ ग़मगुसार – हमदर्द ★★★ गिर्दाब – भंवर ★★★ नाज़ – फख्र ★★★ आर – शर्म ★★★ ख़िज़ाँ – पतझड़ ★★★ नामदार – नामी गिरामी ★★★ कामगार – ख़ुशनसीब ★★★ नाबकार – नालायक़ ★★★ ताजदार – बादशाह ★★★ अदना – छोटा ★★★ गदा – मांगने वाला ★★★ अब्रे करम – करम का बादल ★★★ लातग़सिलुहुलबिह़ार – बहुत से समन्दर भी उसे नहीं धुल सकते ★★★ ला यक़रबुहुल बवार – तबाही उसके पास न आए।

मुह़म्मद मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का

मज़हर – ज़ाहिर होने की जगह, स्टेज ★★★ कामिल – पूर्ण ★★★ कसरत – ज़्यादा होना ★★★ वहदत – अकेला होना ★★★ अस्ले आलम – दुनिया की बुनयाद ★★★ माद्दा – चीज़ की अस्ल ★★★ ख़ल्क़त – मख़्लूक़ ★★★ गदा – मांगने वाला ★★★ मुन्तज़िर – जो इन्तेज़ार में हो ★★★ ख़ुल्द – जन्नत ★★★ ज़ियाफ़त – मेहमानी ★★★ गुनाह मग़फ़ूर – गुनहा बख़्श दिए गए ★★★ दिल रौशन – दिल मुनव्वर ★★★ ख़ुनक – ठंडी ★★★ तआलल्लाह – अल्लाह बड़ा है यह कलिमा तअज्जुब के लिए बोला जाता है ★★★ माहे तैबा – मदीने के चाँद ★★★ तलअत – चमकना ★★★ गुल – फूल ★★★ जोशे हुस्न – हुस्न का ज़ोर ★★★ गुलशन – बाग़ ★★★ जा – जगह ★★★ .ग़ुंचा चटकना – कली खिलना ★★★ काले कोसों – बहुत दूर ★★★ इस्याँ – गुनाह ★★★ ज़ुलमत – तारीकी, अंधेरा ★★★ सफ़े मातम – वह फ़र्श जिस पर मातम करने वाले बैठें ★★★ ज़िन्दाँ – क़ैदख़ाना

★★★ चश्मे शफ़ाअत – शफ़ाअत यानी सिफ़ारिश की नज़र ★★★ कसरत – ज़्यादा होना ★★★ अफ़ज़ाल – मेहरबानियाँ ★★★ वाला – बलन्द ★★★ ख़मे ज़ुल्फ़ – ज़ुल्फ़ का पेच ★★★ साजिद है – सजदे में है या झुका है ★★★ मेहराब – इमाम के खड़े होने की जगह ★★★ दो अबरू – दो भवं ★★★ सियाहकाराने उम्मत – उम्मत के गुनहगार लोग ★★★ गिरया – रोना ★★★ कोह – पहाड़ ★★★ सहरा – जंगल ★★★ बेहिजाब – बेपर्दा ★★★ तुरबत – मज़ारे पाक ★★★ कमख़्वाबीए हिजराँ – महबूब की जुदाई में नींद न आना या कम आना ★★★ कमख़्वाब – मशहूर रेशमी कपड़ा ★★★ अस्तार – जमा है सत्र की बमअना पर्दा ★★★ पा बोस – पांव चूमने वाला ★★★ नमक छिड़कना – तकलीफ़ में इज़ाफ़ा करना, रंजीदा व ग़मगीन करना ★★★ मरहमे काफ़ूर – काफ़ूर से बना हुआ मरहम ★★★ नमक परवर्दा – नमक ख़्वार, नमक खाने वाला ★★★ मलाहत – हुस्न, ख़ूबसूरती ★★★ मुन्तज़िर – जो इन्तेज़ार में हो ★★★ ख़िरामे नाज़ – महबूबाना अन्दाज़ से चलना ★★★ कमख़्वाबे बसारत – नज़र का कमख़्वाब ★★★ सद्द – रोकना ★★★ ज़राए – ज़रिए की जमा ★★★ दाब – आदत, तरीक़ा ★★★ ज़बाने ख़ार – कांटे की नोक ★★★ दश्ते तैबा – मदीने शरीफ़ के जंगल ★★★ जिगर अफ़गार – ज़ख़्मी दिल वाला ★★★ फ़ुरक़त – जुदाई ★★★ बिस्मिल ★★★ घायल मुराद यहाँ पर आशिक़ है ★★★ शहे कौसर – कौसर के बादशाह यानी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ तरह्हम – रहम कीजिए ★★★ तश्ना – प्यासा ★★★ मरक़द – सोने की जगह, मज़ारे पाक ★★★ ता हश्र – हश्र तक ★★★ तजल्ली – चमक ★★★ जानाँ – महबूब ★★★ चश्मे तूर का सुर्मा– तूर पहाड़ की आँख का सुर्मा यानी मुश्ताक़े ज़्यारत का दिल चश्म तूर का सुर्मा बन जाए ★★★ मुश्ताक़ – ख़्वाहिश–मन्द ★★★ रज़ाए ख़स्ता – ऐ रंजीदा रज़ा ★★★ बहरे इस्याँ – गुनाहों का समन्दर।

लुत्फ़ उनका आम हो ही जाएगा

लुत्फ़ – मेहरबानी, ★★★ शाद – ख़ुश ★★★ नाकाम – जिसे अपना मक़सद न मिल सके ★★★ वादए दीदार – यहाँ दीदार के उस वायदे की तरफ़ इशारा है जो क़ब्र में हुज़ूर पुर नूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का होगा ★★★ नक़्द होना – हाथ के हाथ मिलना ★★★ फ़िरदौस – जन्नत ★★★ क़िस्मते ख़ुद्दाम हो ही जाएगा – यानी जन्नत इसलिए ख़ुश है कि किसी न किसी दिन हुज़ूर अक़्दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के गुलामों के हिस्से

में आ जाऊँगी (हुज़ूर के ग़ुलाम मुझको आबाद करेंगे ★★★ राम होना – यानी क़ाबू में आ जाना ★★★ बेनिशानों – जिन पर किसी और की निशानी का ठप्पा नहीं लगा हो ★★★ गेसू – बाल

★★★ यादे गेसू ज़िक्रे हक़ है आह कर
दिल में पैदा लाम हो ही जाएगा

यानी हुज़ूर की ज़ुल्फ़ों को याद करना अल्लाह का ज़िक्र करना है। वह इस तरह कि ज़ुल्फ़ों (जो लाम की तरह हैं) को याद करके आह कर। इस सूरत में ज़ुल्फ़ों का नक़्शा खिंच कर दो लामों की शक्ल में आह (अलिफ़ और हे) के बीच में आ जाएगा और इस तरह लफ़्ज़े अल्लाह बन जाएगा।

★★★ आवाज़ बदलेंगे साज़ – मुहावरा है कि एक दिन फ़ानी दुनिया की ख़ुशियाँ ख़त्म हो जायेंगी ★★★ चहचहा – नग़मा, ख़ुशइल्हानी ★★★ कोहराम – वाबेला (फ़ानी दुनिया की चहचहाहट या शोर व ग़ुल ख़त्म हो जाएगा) ★★★ साइलो – मांगने वाले ★★★ सख़ी – बहुत देने वाला ★★★ अबरू – भव ★★★ दाम – जाल ★★★ मुफ़लिस – बहुत ग़रीब ★★★ बाग़े ख़ुल्द – जन्नत का बाग़ ★★★ इकराम – बख़्शिश ★★★ बादहख़्वारी – शराब पीना ★★★ क़र्ज़े हयात – ज़िन्दगी का क़र्ज़ ★★★ आक़िलो – अक़्ल वालो ★★★ शफ़ाअत – गुनाह मिटाने के लिए सिफ़ारिश ★★★ अफ़्व – माफ़ी।

लमयाति नज़ीरु–क फ़ी न–ज़–रिन

लम याति – नहीं आया ★★★ नज़ीरुका – आपकी तरह, आप जैसा ★★★ फ़ी नज़रिन – किसी नज़र में ★★★ जग राज – दो जहाँ की हुकूमत ★★★ सोहे – ज़ेब देता है, जंचता है ★★★ शहे दो सरा – दो जहाँ के बादशाह ★★★ अल बहरु – समन्दर ★★★ अला – बलन्द हुआ ★★★ अल मौजु – भंवर ★★★ तग़ा – सरकश हुई, तुग़यानी पर आई ★★★ होश रुबा – होश उड़ाने वाला ★★★ या शम्स – ऐ सूरज ★★★ नज़रति – तूने देखा ★★★ इला लैली – मेरी रात को ★★★ चू – जब ★★★ ब–तैबा – मदीने शरीफ़ को ★★★ रसी – तू पहुँचे ★★★ अर्ज़ – गुज़ारिश ★★★ बुकुनी – कर ★★★ जोत – रोशनी ★★★ शब – रात ★★★ लका – आपका ★★★ बदरुन – चौदहवीं का चाँद ★★★ फ़िल वजहिल अजमल – सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत चेहरे में ★★★ ख़त – यहाँ हज़ूर की दाढ़ी मुबारक मुराद है ★★★ हाला – कुन्डल जो चाँद के चारों तरफ़ होता है ★★★ गेसू – ज़ुल्फ़ या बाल ★★★ अब्र – बादल ★★★ अजल – अज़ीम, बड़ा ★★★

चन्दन – सन्दल *** चन्द्र – चाँद *** भरन – बारिश *** अना – मैं *** फ़ी अतशिन – प्यास में, प्यासा *** सख़ाका – आपकी सख़ावत *** अतम – मुकम्मल, भरपूर *** अब्रे करम – करम के बादल *** या क़ाफ़िलती – ऐ मेरे क़ाफ़िले *** ज़ीदी – ज़्यादा कर *** अ–ज–लक – अपने ठहरने की मुद्दत *** वाहन – आह अफ़सोस *** सुवैआतिन – मामूली घड़ियाँ, थोड़ी देर *** ज़–ह–बत गुज़र गईं *** आँ – वह *** अहद – वक़्त ज़माना *** हुज़ूर – हाज़री *** बारगहत – आपके दरबार में *** अलक़ल्बु – दिल *** शजू – ज़ख़्मी *** अलहमु – ग़म *** शुजू – तरह तरह के *** ज़ार – कमज़ोर *** ज़ेर – दबा हुआ *** चुनाँ – ऐसा *** चुनूँ – इस तरह *** पत – महबूब *** बिपत – मुसीबत, परेशानी *** जाना – ऐ महबूब *** अर्रूहु फ़िदाका – मेरी रूह आप पर .क़ुरबान *** फ़ज़िद हरक़न – अपनी तपिश ज़्यादा कर *** यक शोला दिगर – एक के बाद एक शोला *** बरज़न इश्क़ा – इश्क़ में लगा *** ख़ामए – क़लम *** नवाए रज़ा – रज़ा की आवाज़, राग *** तर्ज़ – तरीक़ा *** इरशाद – हुक्म *** अहिब्बा – दोस्त लोग *** नातिक़ – बोलने वाला *** नाचार – मजबूरन *** नातिक़ और इरशाद यह दो आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दोस्त थे और दोनों शायर भी थे। इरशाद और नातिक़ उनका तख़ल्लुस था। इन दोनों ने आलाहज़रत से फ़रमाइश की थी कि आप एक ऐसी नात लिखें जिसमें दो ज़बाने हों तो आलाहज़रत ने ऐसी नात लिख दी कि हर शेर में चार ज़बानें इस्तेमाल फ़रमाईं अरबी, फ़ारसी, उर्दू और हिन्दी। मक़ते यानी आख़री शेर में वाक़ेआ और अपना और उन दोनों हज़रात का तख़ल्लुस (शायरों का अदबी नाम) किस ख़ूबसूरती से फ़रमाया कि आलाहज़रत की जितनी तारीफ़ की जाए कम है।

न आस्मान को यूँ सर कशीदा होना था

सर कशीदा – घमंडी *** हुज़ूर – सामने *** ख़मीदा – झुका हुआ *** गुलों – गुल की जमा यानी फूल *** ख़िज़ाँ नारसीदा – जिस पर पतझड़ के मौसम का असर न हो *** किनार – गोद में *** ख़ार – कांटा *** दमीदा – उगा हुआ *** हुज़ूर – सामने *** आरमीदा – आराम पाया हुआ मतलब पुरसुकून *** क़मर – चाँद *** शोख़ दीदा – बेअदब, चंचल *** किनारे ख़ाके मदीना – मदीने की ख़ाक में मिल कर *** दिल हज़ीं – ग़मगीन दिल *** अश्क चकीदा – आँसू टपका हुआ *** दश्ते हरम – मदीने का जंगल

★★★ ग़िज़ाले रमीदा – भागा हुआ हिरन ★★★ शफ़ीअ – शफ़ाअत यानी सिफ़ारिश करने वाला ★★★ अबस – बेकार ★★★ तपीदा – तड़पा हुआ ★★★ हिलाल – शुरू के महीने का चाँद ★★★ माहे कामिल – चौद्यवीं का चाँद ★★★ अबरूए शह – हुजर अलैहिस्सलाम की भवें ★★★ ल-अम ल अन्ना जहन्नम – मैं बेशक ज़रूर ज़रूर जहन्नम को भरूंगा (क़ुरआन में अल्लाह का फ़रमान है) ★★★ वादए अज़ली – रोज़े अज़ल का वादा ★★★ मुन्किर – इन्कार करने वाला ★★★ अबस – बेकार ★★★ बदअक़ीदा – ख़राब अक़ीदे वाला ★★★ नसीम – सुबह की हवा ★★★ शमीम – ख़ुशबू ★★★ गुल – फूल ★★★ गिरेबाँ दरीदा – फटे हुए गिरेबान वाला यहाँ मुराद फूल खिलने से है ★★★ रंगे जुनूँ – दीवानगी का रंग ★★★ इश्क़ शहे – हुज़ूर की महब्बत ★★★ नश्तर रसीदा – चाक़ू का लगा हुआ ज़ख़्म ★★★ बजा था – दुरुस्त था ★★★ नाज़ – फ़ख़्र ★★★ अर्श नशीं – अर्श पर बैठने वाला ★★★ आफ़रीदह – पैदा किया गया ★★★ .फ़ुग़ाँ – फ़रयाद ★★★ नालए हलक़ बरीदा – ऐसी आवाज़ जिससे हलक़ फट जाए ★★★ शफ़ाअत चशीदा – शफ़ाअत चखा हुआ ★★★ संगे दर – दर का पत्थर ★★★ जबीं साई – पेशानी का झुकाना ★★★ शरार जहीदा – तड़पने वाली चिंगारी ★★★ क़बा – जुब्बा ★★★ ख़ाकसारों – कमज़ोरों ★★★ कशीदा होना – रंजीदा होना ★★★ जलवागाहे हबीब – जहाँ पर हबीब के जलवे नज़र आयें ★★★ क़ैदे ख़ुदी – ऐंठ की क़ैद ★★★ रहीदा होना – छुटकारा पाना

शोरे महे नौ सुनकर तुझ तक मैं दवाँ आया

महे नौ – नया चाँद ★★★ दवाँ – दौड़ा हुआ ★★★ साक़ी – पिलाने वाला ★★★ मय – शराब ★★★ रमज़ाँ – रमज़ान का महीना ★★★ गुल – फूल ★★★ बागोश गिराँ – बहरा ★★★ .फ़ुग़ाँ – फ़रयाद ★★★ बाम – छत ★★★ तजल्ली – रोशनी ★★★ नय्यर – सूरज ★★★ तपाँ – तड़पता हुआ, बेक़रार ★★★ पामाल – रौंदा हुआ ★★★ फ़ना – मिटा हुआ, बरबाद ★★★ अहदे ख़िज़ाँ – यहाँ मुराद वह दिन है जब सूर फूंका जाएगा और सब चीज़ें फ़ना हो जायेंगी ★★★ बज़्मे नूर – नूरानी महफ़िल ★★★ क़दे बेसाया – जिस जिस्म का साया न हो ★★★ साया कुनाँ – साया डालने वाला ★★★ जिनाँ – जननत ★★★ तौक़े अलम – ग़म का फंदा ★★★ .कुमरी – फ़ाख़्ता की तरह एक परिन्दा ★★★ सर्वे रवाँ – चलने वाला यहाँ मुराद मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। ★★★ नामा – दफ़्तर ★★★ अच्छे मियाँ ★★★ हुज़ूर आले अहमद मारहरवी रदि़यल्लाहु तआला अन्हु का उर्फ़ी नाम है।

ख़राब हाल किया दिल को पुर मलाल किया

पुर मलाल - रंज से भरा हुआ *** निहाल - ख़ुश *** रुए गुल - फूल जैसा चेहरा *** क़ज़ा - तक़दीर *** क़फ़स - पिंजरा *** शिकस्ता बाल - पर कटा हुआ *** ख़ूँ-शुदा - ख़ून बना हुआ *** .फ़ुग़ाँ - फ़रयाद *** गोरे शहीदाँ - शहीदों की क़ब्र *** पाएमाल - कुचला हुआ *** सितमगर - ज़ालिम *** चमन - बाग़ यहाँ मुराद मदीनए पाक *** आशयाना - घोंसला *** ख़ानए बेकस - मजबूर का घर *** सितमज़दा - मज़लूम, जिस पर ज़ुल्म हुआ हो *** फ़राग़ बाल - बेकारी *** सर सरे ज़वाल - फ़ना की तेज़ आंधी *** हवासों - जमा हवास की यानी देखने, सुनने, सूंघने, चखने और पकड़ने की ताक़त *** इख़्तेलाल - ख़लल पैदा करना *** नागाह - अचानक *** सगाने कूचा - गली के कुत्ते *** चेहरा मेरा बहाल किया - यानी मुझे पहचान लिया कि मैं आप के दर का .ग़ुलाम हूँ

बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया

हज़रते क़ादिर - अल्लाह के दरबार में *** लमअ - चमक *** बातिन - पोशीदा, छुपा हुआ *** गुमने - फ़ना होने *** जलवए ज़ाहिर - वह नूर जो ज़ाहिर हुआ *** मह - चाँद *** ज़िया - रोशनी, नूर *** गेसू - बाल *** सावा - एक दरया का नाम *** आतिश - यहाँ वह आग मुराद है जो फ़ारस के पूजाघरों में जलती रहती थी और जब हमारे आक़ा इस दुनिया में तशरीफ़ लाए तो वह बुझ गई *** सफ़ी उल्लाह - लक़ब हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम का *** नजी उल्लाह - लक़ब हज़रते नूह अ़लैहिस्सलाम का *** बजरा - एक क़िस्म की कश्ती *** तिर गया - पार हो गया *** आमद - तशरीफ़ आवरी *** बैतुल्लाह मुजरे को झुका - यानी जब हमारे आक़ा पैदा हुए तो काबा शरीफ़ सजदे को झुक गया *** तौफ़े ह़रम - ह़रम का तवाफ़ यानी चक्कर *** रह़मतुल्लिल आलमीं - तमाम आलम के लिए रह़मत, यह लक़ब है हमारे आक़ा मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ल्म का *** दफ़अतन - अचानक *** बूहुरैरह - मशहूर सहाबी हज़रते अबू हुरैरह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** जामे शीर - दूध का प्याला *** फ़ाजिर - गुनहगार *** सालेह - नेक आदमी *** तय्यब ो ताहिर - पाक साफ़ *** उलूए ख़ास - ख़ास बलन्दी *** अबदियत - बन्दगी।

नेमतें बांटता जिस सम्त वह ज़ीशान गया

सम्त – तरफ़ ★★★ ज़ीशान – शान वाला ★★★ मुंशी – लिखने वाला ★★★ रहमत – मेहरबानी ★★★ मौला – सरदार, आक़ा, मालिक ★★★ पुर अरमान – अरमान से भरा हुआ ★★★ मामूर – आबाद, भरा हुआ ★★★ लिल्लाहिल ह़म्द – अल्लाह का शुक्र अदा करते वक़्त पढ़ते हैं ★★★ नजदियो – नज्द का रहने वाला यहाँ मुराद वहाबी लोग हैं ★★★ मुन्किर – इन्कार करने वाला ★★★ तअस्सुब – अदावत, दुश्मनी ★★★ कमबख़्त – कम क़िस्मत वाला ★★★ ख़िरद – अक़्ल

ताबे मिर्आते सहर गर्द बयाबाने अरब

ताब – चमक ★★★ मिरात – आइने ★★★ सहर – सुबह ★★★ बयाबान – जंगल ★★★ ग़ाज़ा – पाउडर ★★★ रू–ए क़मर – चाँद का चेहरा ★★★ दूद – धुआँ ★★★ चराग़ाने अरब – अरब के चराग़ ★★★ चमनिस्तान – बाग़ ★★★ लौस – आलूदगी, ऐब ★★★ ख़िज़ाँ – पतझड़ ★★★ रैहान – फूल ★★★ जोशिशे अब्र – बादल का ज़ोर ★★★ ख़ूने गुल – फूल का ख़ून ★★★ फ़िरदौस – जन्नत का आला मक़ाम ★★★ ख़ार – कांटा ★★★ बयाबान – जंगल ★★★ तश्ना – प्यासा ★★★ नहरे जिनाँ – जन्नत की नहर ★★★ अ–जमी – जो अरब का रहने वाला न हो ★★★ नीसाने अरब – अरब की बारिश ★★★ तौक़े ग़म – ग़म का हार ★★★ सर्वे ख़िरामाने अरब – यहाँ मुराद हुज़ूर का क़द है ★★★ मेहर – सूरज ★★★ मीज़ान – एक बुर्ज का नाम ★★★ हमल – एक बुर्ज का नाम ★★★ शब – रात ★★★ बाराने अरब – अरब की बारिश ★★★ मुज़दा – ख़ुशख़बरी ★★★ बिलक़ीसे शफ़ाअत – शफ़ाअत की मलका ★★★ ताइर – चिड़िया ★★★ सिदरा नशीं – सिदरा पर क़याम करने वाला मराद हज़रते जिब्रील अलैहिस्सलाम ★★★ मुर्ग़ – एक परिन्दा ★★★ सुलैमाने अरब – यहाँ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं ★★★ अंगुश्ते ज़नाँ – औरतों की उंगलियाँ ★★★ गोशा – कनारा ★★★ कनआन – हज़रते यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का वतन, कूचा, गली ★★★ बूए कमीस – क़मीज़ की महक ★★★ यूसुफ़िस्ताँ – यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब बस्ती ★★★ बज़्मे .क़ुदसी – फ़िरिश्तों की महफ़िल ★★★ लब – होंट ★★★ जाँ बख़्श – जान अता करने वाला ★★★ चश्मए हैवान – आबे हयात का चश्मा, अमृत ★★★ अलक़ाब – लक़ब की जमा, एज़ाज़ी नाम ★★★ ख़ुसरो – बादशाह ★★★ ख़ैल –

जमाअत *** मलक – फ़िरिश्ते *** नील पर – नीलकठ *** कुबक – चकोर *** मह – चाँद *** ख़ुर्शीद – सूरज *** हुस्ने अज़ल – मुराद अल्लाह तआ़ला है *** जानान – महबूब *** करमे नात – नात की बख़्शिश, इनायत *** सग – कुत्ते *** हस्सान – एक सहाबीए रसूल हैं जो सरकार के दरबार के शायर थे *** सगे हस्सान – हस्सान के दरबार का कुत्ता।

फिर उठा वल्वलए यादे मुग़ीलाने अरब

वलवलए याद – याद का जोश *** मुग़ीलाने अरब – अरब का कांटेदार जंगल *** सूए बयाबान अरब – अरब के जंगल की तरफ़ *** बाग़े फ़िरदौस – जन्नत का बाग़ *** हज़ाराने अरब – अरब की बुलबुलें *** सहराए अरब – अरब का जंगल *** अजम – अरब के अलावा दुनिया का हिस्सा *** गिरयए ख़ूँ – ख़ून के आंसू *** ज़हरा – हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हा *** कान – खान *** वस्ल – मुलाक़ात *** आस – उम्मीद *** गुलिस्तान – बाग़ *** गुलज़ार – बाग़ *** अन्दलीबी – आशिक़ होना *** दामन कश – दामन खींचने वाला *** गुले ख़न्दाँ – खिला हुआ फूल *** शादी – ख़ुशी *** बेदाम – मुफ़्त के, बग़ैर जाल के *** हज़ाराने – अरब की बुलबुल *** हश्त ख़ुल्द – आठों जन्नतें *** कसब – कमाना, हासिल करना *** लताफ़त – पाकीज़गी *** अब्र – बादल।

जोबनों पर है बहारे चमनआराई दोस्त

जोबनों – ख़ूबसूरतियाँ *** चमनआराई – बाग़ को संवारना *** ख़ुल्द – जन्नत *** शैदाई – आशिक़ *** ज़ेबाई – ख़ूबसूरती *** अर्सए हश्र – हश्र का मैदान *** मौक़िफ़ – ठहरने की जगह *** मौक़िफ़ महमूद – मक़ामे महमूद जो हुज़ूर को रोज़े क़ियामत अता होगा *** साज़ – मुवाफ़्क़त *** जिलोदारी – साथ चलना *** उम्रे जावेद – हमेशा की ज़िन्दगी *** मसीहाई – मुर्दे जिलाना *** यकता – बेमिस्ल *** ख़ल्क़ – मख़लूक़ *** अन्जुमन – महफ़िल *** जबीं साई – पेशानी रगड़ना *** दारा – नाम एक बादशाह का जो बहुत बहादुर था *** चर्ख़ – आसमान *** अन–त फ़ीहिम – इशारा है इस आयत की तरफ़ जिसमें फ़रमाया गया कि आप जब तक उनमें रहेंगे अल्लाह उन पर अज़ाब न भेजेगा *** अदू – दुश्मन *** ऐशे जावेद – हमेशा की ज़िन्दगी *** आदा – बहुत से दुश्मन *** हिल्म – नर्मी, बर्दाश्त *** शकेबाई – सब्र।

तूबा में जो सबसे ऊँची नाज़ुक सीधी निकली शाख़

तूबा – जन्नत का एक दरख़्त ★★★ रुहुल .कुदुस – हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ★★★ गुलबने रह़मत – रह़मत का पौधा ★★★ ज़हरा – हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ★★★ सिबतैन – दो नवासे यानी इमामे हसन व हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ★★★ हैदर – मौला अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लक़ब ★★★ क़ामत – क़द ★★★ ज़ुल्फ़ – बाल ★★★ चश्म – आँख ★★★ रुख़्सार – गाल ★★★ लब – होंट ★★★ सुम्बुल – एक क़िस्म की घास है, बालछड़ जो बहुत ख़ुशबूदार होती है ★★★ नरगिस – एक फूल का नाम ★★★ नख़्ल – खजूर का दरख़्त, बाग़ ★★★ विला – महब्बत ★★★ यादे रुख़ – चेहरे की याद ★★★ नसीमें – सुबह की ठंडी हवायें ★★★ नीसाँ – बारिश ★★★ ज़ाहिर – खुला हुआ ★★★ बातिन – छुपा हुआ ★★★ ज़ैब व ज़ैन – सजावट, सिंगार ★★★ .फुरूअ – शाख़ें, औलाद ★★★ उसूल – अस्ल की जमा जड़, आबा ओ अजदाद ★★★ आले अह़मद – मारहरा शरीफ़ के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग का नाम जो आलाहज़रत के पीरों में हैं ★★★ ख़ुज़ – पकड़ ले ★★★ बेयदी – मेरे हाथ को ★★★ ह़म्ज़ा – मारहरा शरीफ़ के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग का नाम जो आलाहज़रत के पीरों में हैं ★★★ कुन – कीजिए ★★★ म–ददी – मदद ★★★ वक़्ते ख़िज़ाने उम्र – बुढ़ापे का वक़्त ★★★ बर्गे हुदा – हिदायत का पत्ता ★★★ आरी – ख़ाली।

ज़हे इज़्ज़तो एतेलाए मुह़म्मद

ज़हे – वाह वाह ★★★ ऐतला – बलन्दी, ऊँचाई ★★★ ज़ेरे पा – पांव के नीचे ★★★ फ़लक – आसमान ★★★ मलक – फ़रिश्ते ★★★ ख़ादमान – ख़िदमत करने वाले ★★★ सराए – घर, मकान ★★★ रज़ा – ख़ुशी ★★★ अजब – तअज्जुब ★★★ बराए मुह़म्मद – मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वास्ते ★★★ किबरिया – अल्लाह का नाम ★★★ अबा – मशहूर लिबास ★★★ .कबा – जुब्बा ★★★ बहम – आपस में ★★★ अहद – वादा ★★★ वस्ल – मिलना ★★★ अबद – हमेशा ★★★ दमे नज़अ – मौत का वक़्त जब रूह क़ब्ज़ की जाती है ★★★ असा – लाठी ★★★ कलीम – मूसा अलैहिस्सलाम का लक़ब ★★★ आन – इज़्ज़त ★★★ दम – जान ★★★ बहर – वास्ते ★★★ महव – मसरूफ़ ★★★ लिक़ा – दीदार, देखना, मिलना ★★★ जिलो – हमराह, साथ ★★★ इजाबत – दुआ का क़बूल होना ★★★ ख़वासी – ख़िदमतगारी ★★★ तुज़ुक – शान व शौकत ★★★ रब्बे सल्लिम –

या रब सलामती से गुज़ार। पुलसिरात पर से अपनी उम्मत के गुज़रते वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला से यही दुआ करेंगे यानी रब्बे सल्लिम।

ऐ शाफ़ेए उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर

शफ़ेए उमम – उम्मतों की सिफ़ारिश कराने वाले ★★★ शहे ज़ी जाह – मरतबे वाले बादशाह ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते ★★★ नाख़ुदा – कश्ती चलाने वाला ★★★ नाबलद – अन्जान, नावाक़िफ़ ★★★ ख़िज़्र – रहनुमा ★★★ सरे राह –रास्ते में ★★★ बेयार – जिसका कोई मददगार न हो ★★★ चार सम्त – चारों तरफ़ ★★★ बदख़्वाह – बुरा चाहने वाला, दुश्मन ★★★ अज़ीज़ – क़रीबी लोग ★★★ नाशनास – न पहचानने वाले ★★★ कोहे ग़म – रंज का पहाड़ ★★★ परे काह – घास का तिनका, हक़ीर ★★★ मुहीब – डरावना ★★★ ग़मज़दों – ग़म के मारे हुए लोग ★★★ पुरख़ार राह – कांटों से भरा रास्ता ★★★ बरहना पा – नंगे पांव ★★★ तश्ना – प्यासा ★★★ आब – पानी ★★★ जाँकाह – जान को घटा देने वाला रंज ★★★ आफ़ताब – सूरज ★★★ कौसर – जन्नत की मशहूर नहर का नाम ★★★ शहे कौसर – कौसर के मालिक।

मनक़बते हुज़ूरे ग़ौसे पाक

बन्दा क़ादिर का भी क़ादिर भी है अब्दुल क़ादिर

क़ादिर – अल्लाह तआला का नाम ★★★ क़ादिर – जिसे क़ुदरत व इख़्तेयार दिया गया हो ★★★ अब्दुल क़ादिर – क़ादिर का बन्दा, यह ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम है ★★★ सिर्रे बातिन – छुपा हुआ राज़ ★★★ मुफ़्तीए शरा – शरीअत का फ़तवा देने वाला ★★★ क़ाज़ी – हाकिम, इस्लामी क़ानून से फ़ैसला करने वाला ★★★ असरार – राज़ ★★★ मम्बा – चश्मा ★★★ अफ़ज़ाल – जमा फ़ज़्ल की, बख़्शिश, बुज़ुर्गी ★★★ मेहर – सूरज ★★★ इरफ़ाँ – ख़ुदा की मारिफ़त ★★★ मुनव्विर – रौशन करने वाला ★★★ .क़ुतुब – औलिया अल्लाह का एक मरतबा ★★★ अबदाल – औलिया अल्लाह ★★★ मिहवर – घूमने या लौटने की जगह ★★★ मरकज़े दायरा – गोले का केन्द्र ★★★ सिर्र – राज़ ★★★ सिल्के इरफ़ाँ – मारिफ़त की लड़ी या डोरी ★★★ ज़िया – रोशनी ★★★ दुर्रे मुख़्तार – उम्दा मोती ★★★ शारेह – तफ़सील से बताने वाला ★★★ मज़हर – ज़ाहिर होने की जगह ★★★ नाही – मना करने वाला ★★★ आमिर – हुक्म देने वाला। यहाँ आमिर व नाही से

मुराद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हैं *** ज़ी तसर्रुफ़ – क़ब्ज़े वाला, इख़्तेयार वाला *** माज़ून – जिसे इजाज़त दी गई हो *** मुख़्तार – जिसे इख़्तेयार दिया गया हो *** कारे आलम – दुनिया का कारोबार *** मुदब्बिर – तदबीर करने वाला, इन्तेज़ाम करने वाला *** लाला – एक सुर्ख़ फूल जिसमें स्याह दाग़ होता है *** वासिफ़ – तारीफ़ करने वाला।

गुज़रे जिस राह से वह सय्यदे वाला होकर

अम्बर – समन्दर की एक क़िस्म की सूखी झाग जिसे जलाने से ख़ुशबू पैदा होती है *** रुख़े अनवर – ख़ूबसूरत चेहरा *** क़मर – चाँद *** बोसा दहे – चूमने वाला *** नक़्शे कफ़े पा – पावों के तलवों का निशान *** वाए – अफ़सोस के वक़्त बोला जाता है *** महरूमीए क़िस्मत – तक़दीर की नाकामी *** हमराह – साथी *** ज़ुव्वारे मदीना – मदीने की ज़्यारत करने वाले *** सरसरे दश्त – जंगल की तेज़ आंधी *** गोशे शह – बादशाह के कान, हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के कान मुराद हैं *** फ़रयादरसी – फ़रयाद सुनना *** गोया – बोलने वाला *** पाए शह – बादशाह के पांव, हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पांव मुराद हैं *** मेहर – सूरज *** पारा – दुनिया का सबसे भारी द्रव यानी बहने वाली चीज़ *** ज़िन्दानिए दोज़ख़ – जहन्नम का क़ैदी।

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आरिज़

नारे दोज़ख़ – दोज़ख़ की आग *** आरिज़ – गाल, रुख़्सार *** ज़ुलमत – तारीकी, अंधेरा *** हश्र – क़ियामत का दिन *** नहार – दिन *** साहिबे .क़ुरआँ – .क़ुर्आन वाला यानी अल्लाह तआ़ला *** मुस्हफ़ – .क़ुर्आने पाक *** विर्द – वज़ीफ़ा *** गुले महबूबी – महबूबियत का फूल *** वक़ार – इज़्ज़त *** मदहनिगार – तारीफ़ लिखने वाला *** तूर – उस पहाड़ का नाम जहाँ हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला की तजल्ली का दीदार हुआ और तजल्ली ने उस पहाड़ को जला दिया था *** तुर्फ़ा आलम – अजीब बात, अनोखा हाल *** ख़ुद आइनए ज़ात – मज़हरे ज़ाते ख़ास *** निसार – .क़ुर्बान *** मुश्क बू – मुश्क की ख़ुश्बू *** ज़ुल्फ़ – गेसू, बाल *** शुआअ – चमक, किरन *** हलब – एक जगह का नाम जहाँ का आइना मशहूर है *** ततार – एक जगह का नाम जहाँ का मुश्क मशहूर है *** गदायों – मांगने वाले लोग *** बेमाएगी – कोई सामान न होना, मुफ़लिसी *** बहर – वास्ते।

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ सिताराहाए फ़लक

परतौ – अक्स, परछाई *** फ़लक – आसमान *** नाक़िस – कमतर *** मसल – मिसाल *** ज़िया – रोशनी *** तलब – तलाश *** पाए फ़लक – आसमान के पांव *** आसताँ – चौखट *** इब्तिदा – शुरू *** इन्तिहा – आख़िर *** रविश – रफ़्तार *** नक़्शे पा – पांव का निशान *** सौत – आवाज़ *** नसीम – सुबह की ठंडी हवा *** दीदाहाए फ़लक – आसमान की आंखें यहाँ मुराद तारे हैं *** अहले बक़ीअ – बक़ीअ वाले, बक़ीअ मदीने शरीफ़ के क़ब्रस्तान का नाम है जहाँ बहुत से सहाबए किराम दफ़न हैं *** सदाए पाए फ़लक – आसमान के पैरों की आवाज़ *** गर्मियाँ – तेज़ियाँ *** शबे असरा – मेराज की रात *** चर्ख़ – आसमान *** नुक़रा – चांदी *** तिला – सोना *** ग़नी – मालदार *** कासा – प्याला *** मह – चाँद *** शब – रात *** गदाए फ़लक – मांगने वाला आसमान *** क़ानिअे – क़नाअत करने वाला, जो मिले उस पर सब्र करने वाला *** नाने सोख़्ता – जली हुई रोटी यहाँ सूरज मुराद है *** काने गुहर – मोतियों की खान, सितारे मुराद हैं *** जज़ा – बदला *** तजम्मुले शबे असरा – मेराज की रात का हुस्न व जमाल *** कोतल – उस घोड़े को कहते हैं जो अमीरों की सवारी के आगे सिर्फ़ शान के लिए सजावट के तौर पर ख़ाली चला करता है *** सब्ज़ाहा– ए बहुत सफ़ेद घोड़ा *** ख़िताबे हक़ – फ़रमाने इलाही *** दर – में *** मिन अज–लिक – आपकी ख़ातिर *** अहले बैत – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के घर वाले *** रवाँ – चलने वाला *** बेमददे दस्त – बिना हाथ की मदद से *** असियाए फ़लक – आसमान की चक्की *** समा – बलन्द, आसमान

क्या ठीक हो रुख़े नबवी पर मिसाले गुल

रुख़ – चेहरा *** नबवी – नबी से निसबत रखने वाला *** पामाल – रोंदा हुआ *** कफ़े पा – पांव का तलवा *** जमाल – ख़ूबसूरती *** गुल – फूल *** जोया – तलाश करने वाला *** सिल्अए ग़ाली – बहुत क़ीमती सामान *** जिनाँ – जन्नत *** वल्लाह – अल्लाह की क़सम *** जाह – मरतबा *** जलाल – बुज़ुर्गी *** ख़ूँ फ़शाँ – ख़ून बहाने वाला *** मुज़दा – ख़ुशख़बरी *** फ़ाले गुल – शगुन, पेशीनगोई *** ग़मे फ़ानी – मिट जाने वाला ग़म *** ग़मगीं – रंजीदा *** गन्ज –

अदा *** ग़ाज़ए ख़ाके मदीना – मदीने पाक की ख़ाक का पाउडर *** शबनम – ओस *** फ़सले गुल – फूलों का मौसम *** जूद – बख़्शिश जो बिन मांगे अता हो *** नवाल – एहसान *** अब्र – बादल *** विला – महब्बत *** मुज़दा – ख़ुशख़बरी *** आशयाना – घोंसला, झोपड़ा *** बर्क़ – बिजली *** दाग़े जिगर – जिगर का दाग़ *** माह – महीना *** माहे बहार – बहार का महीना *** रंगे मिज़ह – पलकों का रंग *** ख़जिल – शर्मिन्दा *** अनादिल – बुलबुलें *** हुजूम – भीड़ *** अश्क – आंसू *** लाला – सुर्ख़ रंग का फूल *** एहतेमाल – शक व शुबा *** लबे गुलगूँ – फूल जैसे होंट *** बदर –– चौदवीं का चाँद *** शफ़क़ – सुर्ख़ी या सफ़ेदी जो सूरज डूबने के बाद आसमान में दिखाई देती है *** हिलाल – शुरू के दिनों का चाँद *** मुतरन्निम – गुनगुनाने वाला *** अयाँ – ज़ाहिर *** वज्द – बेअन्दाज़ा ख़ुशी में नाचना *** फ़ना – मिट जाना *** मआल – अन्जाम, नतीजा *** शैख़ैन – हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ और हज़रते उमरे फ़ारूक़े आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा *** ग़नी – हज़रते उसमाने ग़नी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** यमीन – दहना *** शिमाल – बायाँ *** ख़ुल्द – जन्नत *** नामए दिल पुर ख़ूँ – ख़ून से भरे हुए दिल के नाम में *** ख़ारे अलम – रंज का कांटा *** ख़्याल – याद *** उन दो का सद्क़ा – यहाँ उन दो से मुराद हज़रते इमामे हसन व हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा हैं *** ख़न्दाँ – हंसने वाला *** मिसाले गुल – फूल की तरह।

सर ता ब–क़दम है तने सुलताने ज़मन फूल

सर ता ब–क़दम – सर से पांव तक *** तन – बदन *** सुलताने ज़मन – ज़माने के बादशाह, हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं *** दहन – मुँह *** ज़क़न – थोड़ी, ठुड्डी *** सदक़े – तुफ़ैल, वास्ते *** बन – जंगल *** ग़ुन्चा – कली *** ईमा – इशारा *** कोहे मिहन – ग़म का पहाड़ *** वल्लाह – ख़ुदा की क़सम *** गुल – फूल, महबूब *** दिल बस्ता – जिसका दिल घुटा हुआ हो *** ख़ूँ गश्ता – जो ख़ून हो गया हो *** लताफ़त – नाज़ुकी *** शबनम – ओस *** दमे सुबह – सुबह के वक़्त *** शोख़ान – जमा शोख़ की, हसीन *** बहारी – बहार वाले *** जड़ाऊ – जवाहारात से जड़ा हुआ *** करन फूल – कान में पहनने का एक ज़ेवर *** दनदान – दांत ***

लब – होंट *** ज़ुल्फ़ – सर के बाल *** रुख़ – चेहरा *** शह – बादशाह *** बारे गुनाह – गुनाह का बोझ *** ख़जिल – शर्मिन्दा *** दोशे अज़ीज़ाँ – अज़ीज़ों का कांधा *** लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते *** नअश – लाश *** जाने चमन – बाग़ की रूह *** शैदा – क़ुर्बान होने वाला *** नाख़ुने पा – पैर का नाख़ुन *** महे नौ – नया चाँद *** चर्ख़े कुहन – आसमान *** फूल – हल्का फुलका *** ग़ाज़ह – सुफ़ूफ़, पाउडर *** साक़ी – पिलाने वाला *** सहबा – शराब *** लबन – दूध *** गिरया करना – रोना धोना *** भरन – ज़ोरों की बारिश *** ख़िरमन – खलयान *** चमनिस्ताने करम – करम का बाग़ *** ज़हरा – हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा।

है कलामे इलाही मे शम्सो दुहा

कलामे इलाही – अल्लाह तआ़ला का कलाम यानी क़ुरआन शरीफ़ *** शम्स – सूरज *** दुहा – चाश्त का वक़्त यहाँ शम्सुद्दुहा से सूरह वश्शम्स और सूरह वद्दुहा मुराद है *** नूर फ़ज़ा – नूर बढ़ाने वाला *** शबे तार – अंधेरी रात *** हबीब – दोस्त यानी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम *** ज़ुल्फ़े दुता – घुंगराले बाल *** ख़ुल्क़ – आदत *** अज़ीम – बड़ा *** ख़ल्क़ – तख़लीक़ *** जमील – ख़ूबसूरत *** ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम – आपकी अदा और हुस्न को पैदा करने वाला यानी अल्लाह तआ़ला की क़सम *** बक़ा – ज़िन्दगी *** मसनद – तकिया लगा कर बैठने की जगह *** मेहरम – वाक़िफ़ *** राज़ – भेद *** रूहे अमीं – लक़ब हज़रते जिब्रील का *** सरवर – सरदार *** अर्ज़ – गुज़ारिश (जब ऐन से लिखा जाए) ज़मीन (जब अलिफ़ से लिखा जाए) *** समा – आसमान *** जवार – क़रीब *** ख़ुल्द – जन्नत *** सफ़ा – पाकी *** लुत्फ़ – मेहरबानी *** इज़्ज़ – इज़्ज़त *** उला – बलन्दी *** गरचे – अगर चे *** रजा – उम्मीद *** बुलबुले बाग़े जिनाँ – जन्नत के बाग़ की बुलबुल *** सहर बयाँ – जिसके कलाम में जादू सा असर हो *** वासिफ़ – तारीफ़ करने वाला *** शाहे हुदा – हिदायत के बादशाह *** शोख़ी – तेज़ी *** तबअ – तबीयत।

पाट वो कुछ धार ये कुछ ज़ार हम

पाट – दरिया की चौड़ाई, पट *** ज़ार – कमज़ोर *** मय – शराब *** सरशार – मस्त व बेख़ुद *** मुश्तरी – ख़रीदार *** जिन्स – सामान, सौदा *** नामक़बूल – जो अच्छी

न मानी जाए ★★★ ख़ार – कांटा ★★★ लग़ज़िशे पा – पांव का फिसलना, बहकना ★★★ ना–हंजार – बदचलन ★★★ पिन्दार – .गुरूर ★★★ दम क़दम की ख़ैर – जान की सलामती ★★★ जाने मसीह – हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम की जान, हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं ★★★ ख़ुदाई–ख़्वार – ज़माने भर में ज़लील ★★★ सैर – तमाशा ★★★ तूर – उस पहाड़ का नाम जिस पर हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला की तजल्ली का दीदार हुआ था ★★★ नार – आग, दोज़ख़ ★★★ ज़ुअफ़ – कमज़ोरी ★★★ बा–अता – अता करने वाले ★★★ शाह़ – बादशाह ★★★ मुख़्तार – जिसे इख़्तयार दिया गया ★★★ बेनवा – फ़क़ीर ★★★ आज़ार – तकलीफ़ ★★★ सत्तारी – ऐब छुपाना, पर्दापोशी ★★★ बरसरे दरबार – दरबार में ★★★ अफ़्व – माफ़ी ★★★ इस्याँ – गुनाह ★★★ बे–यार – जिसका कोई मददगार न हो ★★★ निसार – .क़ुर्बान ★★★ ज़ुन्नार – जनेऊ ★★★ तेग़े इश्क़ – इश्क़ की तलवार ★★★ ज़ख़्मे दामनदार – बहुत बड़ा ज़ख़्म ★★★ नातवानी – कमज़ोरी ★★★ नक़्श पाए – पांव का निशान ★★★ तालिबाने यार – महबूब की तलाश करने वाले ★★★ नज़्रे हाज़िर – जो नज़राना उस वक़्त मयस्सर हो ★★★ सगाने कूचा – गली के कुत्ते ★★★ दिलदार – महबूब ★★★ सौर – उस ग़ार का नाम जहाँ हिजरत के वक़्त हुज़ूर रहे थे ★★★ हिरा – उस ग़ार का नाम जहाँ हुज़ूर इबादत किया करते थे ★★★ चश्मपोशी – माफ़ करना ★★★ शाने शुमा – आपकी शान ★★★ कारेमा – हमारा काम ★★★ इसरार – कोई ग़लती बार बार करना ★★★ फ़स्ले गुल – मौसमे बहार ★★★ सब्ज़ा – हरियाली ★★★ सबा – सुबह की हवा ★★★ शबाब – जवानी ★★★ ख़म्मार – शराब देने वाला ★★★ मयकदा – शराबख़ाना ★★★ साक़िया – ऐ साक़ी ★★★ साग़र – प्याला ★★★ साक़िए तसनीम – जन्नत की नहर तसनीम से पिलाने वाले ★★★ स्याह मस्ती – बदमस्ती ★★★ नाज़िशें – जमा नाज़िश की बमअना फ़ख़्र ★★★ मलक – फ़िरिश्ते ★★★ शहे अबरार – नेकों के बादशाह ★★★ ख़ुदरफ़्तगी – अपने को भूल जाना

आरिज़े शम्स ो क़मर से भी हैं अनवर एड़ियाँ

शम्स – सूरज ★★★ क़मर – चाँद ★★★ अनवर – ज़्यादा रोशन ★★★ आंखों का तारा – मुहावरा है मतलब बहुत प्यारा होना ★★★ ख़ुश्तर – बहुत ख़ूबसूरत ★★★ जा–ब–जा – जगह जगह ★★★ परतौ फ़िगन – अक्स डालने वाला ★★★ ख़ुर्शीद – सूरज ★★★ माह – चाँद ★★★ अख़्तर

– सितारे *** नज्म गरदूँ – आसमान के तारे *** लाग़र – नाज़ुक *** ज़ेरे पा – पांव के नीचे *** कफ़े पा – पांव का तलवा *** मुनइम – दौलतमन्द *** ख़ुर – सूरज *** हिलाल – शुरू के दिनों का चाँद *** अतहर – पाक *** ताजे रूहुल क़ुदुस – हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम का ताज *** वल्लाह – ख़ुदा की क़सम *** गौहर – मोती *** उहुद – मदीना शरीफ़ के पास के एक पहाड़ का नाम *** वक़ार – इज़्ज़त *** चर्ख़ – आसमान *** चांदी में स्याही – मुहावरा है मतलब धुंधला पड़ना, चलन ख़त्म होना *** बदर – चौद्यवी रात का चाँद *** टकसाल – सिक्के ढालने की जगह *** तलातुम – पानी का मौज मारना *** शाद – ख़ुश

इश्क़े मौला में हों ख़ूँबार कनारे दामन

ख़ूँबार *** ख़ून की बारिश करने वाला *** ख़ुल्द – जन्नत *** अश्क – आंसू *** तारे नज़र – नज़र की रोशनी *** दो सिह – दो तीन *** कूचए जानाँ – महबूब की गली *** नसीम – ठंडी हवा *** बुख़ारे दामन – दामन की हरारत *** दिल शुदों – जिसका दिल महबूब के पास हो यानी दीवाना *** अतहर – पाक *** मुश्क सा – मुश्क जैसा *** नूर फ़शा – नूर बिखेरने वाला *** रूए हुज़ूर – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का चेहराए मुबारक *** हलब – एक शहर जहाँ का शीशा मशहूर है *** ततार – एक मुल्क जहाँ की ख़ुशबू मशहूर है *** जैब – गरेबान *** सितमदीदा – रंज व ग़म झेलने वाला *** दश्ते हिरमाँ– महरूमियों का मैदान *** ख़ार – कांटा *** अक्स अफ़गन – झलक मारने वाला *** हिलाल लबे शह – हुज़ूर के हिलाल जैसे होंट मुबारक *** मेहरे आरिज़ – सूरज जैसा चेहरा *** शैदाई – आशिक़ *** जैबे गुल – महबूब का गरेबान।

रश्के क़मर हूँ रंगे रुख़े आफ़ताब हूँ

रश्के क़मर – चाँद जिस पर रश्क करे *** रंगे रुख़े आफ़ताब – सूरज के लिए ज़ीनत *** शहे गरदूँ जनाब – ऊँची बारगाह वाले बादशाह *** दुर – मोती *** नजफ़ – वह जगह जहाँ मौला अली का मज़ारे पाक है *** गौहर – मोती *** ख़ूशाब – आबदार, रंगदार *** तुराब – मिट्टी *** बूतुराब – लक़ब मौला अली का *** अब्र – बादल *** चश्म – आँख *** आब – पानी *** बर्क़ – बिजली *** पुर इज़्तिराब – बेचैन *** ताइरे बे आशयाँ – चिड़िया जिसका घोंसला न हो ***

रंगे परीदए रुख़े गुल – वह फूल जिसका रंग उड़ गया हो यानी कुम्हला गया हो *** बेअस्ल – जिसकी जड़ मज़बूत न हो *** बेसबात – जिसकी बुनयाद पायदार न हो *** बहरे करम – मेहरबानी के समन्दर *** परवरदए – पला हुआ *** किनार – गोद *** सराब – वह रेत जो पानी सा दिखाई देता है *** हुबाब – बुलबुला *** इबरत फ़ज़ा – नसीहत पैदा करने वाला *** सुकूत – ख़ामोशी *** लब – कनारा *** ख़ामोश लहद – सन्नाटे वाली जगह क़ब्र *** नाला – फ़रयाद *** सोज़ – गर्मी *** ख़ून दिल पियूँ – मुहावरा है मतलब रंज करना *** दिल–बस्ता – घुटन *** अश्कबार – आंसू बरसाने वाला *** . गुन्चा – कली जो खिली न हो *** गुल – फूल *** बर्क़े तपाँ – कौंदने वाली बिजली *** सहाब – बादल *** दावा – हक़ *** बेश्तर – बहुत ज़्यादा *** आसियों – गुनहगार लोग *** इन्तेख़ाब – चुना हुआ *** अश्क – आंसू *** मिज़ह – पलक *** चश्म – आँख *** अश्के मिज़ह रसीदा चश्मे कबाब – वह आंसू रूपी बूंद जो भुनते हुए कबाब से टपकती है *** ख़ुदी – अना, अंह *** दर्दा – हाए अफ़सोस *** हिजाब – पर्दा *** नार – आग, दोज़ख़ *** मुख़लसी – रिहाई *** आतिशे गुल – फूल का हुस्न *** क़ालिब – जिस्म *** तिही – ख़ाली *** हमा आग़ोश – सरापा गोद बन जाना *** हिलाल – शुरू के दिनों का चाँद *** शहसवारे तैबा – मुराद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम *** रकाब – पांव रखने की जगह *** नाज़ – फ़ख़्र *** क़स्र – महल *** सक़र – जहन्नम *** आबे अबस – बेकार पानी *** चकीदा – टपका हुआ *** बन्दा – .गुलाम।

पूछते क्या हो अर्श पर यूँ गए मुस्त़फ़ा कि यूँ

कैफ़ – मस्ती, सुरूर, नशा *** क़स्रे दना – दना का महल दना से सुम्म दना फ़तदल्ला आयत की तरफ़ इशारा है इसकी तफ़सीर किसी आलिम से समझें *** रूहे .क़ुदुस – हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम *** जलवए अस्ल – नूरे इलाही की तजल्ली *** नूरे महर – सूरज का नूर *** ज़ोक़े बेख़ुदी – बेख़ुदी का शौक़ *** नूर ो दाग़ – नूर और इश्क़ का दाग़ *** दो नीम – दो टुकड़े *** शक़्क़े माह – चाँद के दो टुकड़े हो जाना ये मोजज़ा है हुज़ूर का *** शुक्रे वस्ल – मुलाक़ात पर अल्लाह का शुक्र *** हिज्र – जुदाई, फ़िराक़ *** ख़ैर – अच्छा *** ज़मज़मा रज़ा – रज़ा का नग़मा

जो कहे शेर ओ पास शरा दोनों का हुस्न क्यूँकर आए
ला उसे पेश जलवए ज़मज़मा रज़ा के यूँ

जो यह कि शेर की फ़साहत व बलाग़त शरीअत की पाबन्दी दोनों कैफ़ियतें एक जगह शेर में कैसे जमा हो सकती हैं तो उसके सामने अहमद रज़ा का शेर पढ़ कर सुना।

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खायें क्यूँ

बार – बोझ *** फ़ज़ूँ – ज़्यादा *** दिल फ़िगार – ज़ख़्मी दिल *** दाम – जाल *** जलाल – ग़ज़ब *** क़मर – चाँद *** ग़नी – मालदार *** सग – कुत्ता *** लुक़मए तर – तर निवाल *** संगे दरे हुज़ूर – हुज़ूर के दर का पत्थर यानी चौखट *** सोज़े ग़म – ग़म की सोज़िश *** साज़े तरब – ख़ुशी का बाजा।

यादे वतन सितम किया दश्ते हरम से लाई क्यूँ

दश्ते हरम – हरम शरीफ़ के जंगल *** आहे सर्द – ठंडी आह *** सर्वे नाज़ – सर्व का नया पौधा *** .कुमरी – फ़ाख़्ता की तरह की एक चिड़िया *** जाने ग़मज़दा – ग़मगीन, दुखी जान, रंजीदा *** नसीमे ख़ुल्द – जन्नत की ठंडी हवा *** सोज़े ग़म – ग़म की तेज़ी *** हया – शर्म *** नरगिस – एक ख़ूबसूरत फूल अन्दर से ज़र्द बाहर से सफ़ेद *** तबीब – हकीम, डाक्टर *** आतिशे सीना – सीने की आग *** फ़िक्रे मआश – रोज़ी रोटी की फ़िक्र *** हौले मुआद – आख़िरत की फ़िक्र *** जाँ गुज़ा – जान को बहुत से ख़तरे *** हूरे जिनाँ – जन्नत की हूर *** पर्दाए हिजाज़ – अरबी नग़मा *** ग़फ़लते शैख़ ो शबाब – बूढ़ो और जवानों की ग़फ़लतें *** तिफ़्ले शीरख़्वार – दूध पीते बच्चे *** अबस – बेकार *** बहाई – एक रूह का नाम है जो बच्चों को सोते में हंसाती व रुलाती है *** हसरते नौ का सान्हा – नए अरमानों के ख़ून होने को सुनते ही यानी बुरे हादिसे को सुनते ही *** मर्गे जवाँ – जवानी की मौत।

अहले सिरात रूहे अमीं को ख़बर करें

अहले सिरात – पुलसिरात पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते *** रूहे अमीं – हज़रते जिब्रील अलैहिस्सलाम *** उम्मते नबवी – हुज़ूर की उम्मत *** फ़र्शे पर – पंख का फ़र्श करना यानी अपने पंख को बिछा के फ़र्श बना दें ताकि उस पर से ये गुनहगार उम्मत आसानी से गुज़र जाय हज़रते जिब्रील ही ने यह ख़्वाहिश की थी *** फ़ितना हाए हश्र

– हश्र का हंगामा *** हज़र – परहेज़ *** नाज़ो के पाले – यानी हुज़ूर के उम्मती *** रह से गुज़र करें – राह से हट जायें *** अतवार – तौर तरीक़े *** ख़ार – कांटे *** कशीदा – खिंचे हुए *** लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते *** मुश्किल कुशाई – मुश्किल दूर करना *** शाने तबस्सुम – मुस्कुराहट की शान *** तड़के – बहुत सुबह *** किलके रज़ा – रज़ा का क़लम *** ख़ूँख़्वार – ख़ून पीने वाला *** बर्क़ बार – बिजली गिराने वाला *** अअदा – दुश्मन *** शर – शरारत, शैतानी।

वो सूए लालाज़ार फिरते हैं

लालाज़ार – हरियाली *** वह सूए लाला ज़ार फिरते हैं – वह हरियाली की तरफ़ जाते हैं *** तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं – ऐ बहार तेरे दिन अब बदलते हैं यानी और बेहतर होते हैं *** ख़्वार – ज़लील ओ ख़्वार *** उनके ईमा से – उनके इशारे से *** ख़ैले लैल ो नहार – दिन और रात के घोड़े *** क़ुदसी – फ़रिश्ते *** गदा – मांगने वाला *** ताजदार – बादशाह *** अदू – दुश्मन *** दश्ते तैबा – मदीने का जंगल *** ख़ार – कांटे *** वर्दियाँ बोलते हैं हरकारे –– सिपाहियों का नौबत बजाना, मुख़बिर ख़बर देने वाले *** ख़ानाज़ाद – ग़ुलाम बच्चा, घर के पले हुए *** राह मार – डाकू।

उनकी महक ने दिल के ग़ुनचे खिला दिए हैं

महक – ख़ुशबू *** कूचे – गलियाँ *** बसा दिए – महका दिए *** जोशे रहमत – जज़बए रहमत का बढ़ जाना *** आज़ार – तकलीफ़ *** निसार – क़ुर्बान *** असरा – मेराज का सफ़र *** क़ुदसी – फ़रिश्ते *** परचम – झंडा *** पुर ख़ार – कांटों से भरा *** बादिये – जंगल *** सर्द – ठंडा *** करीम – मेहरबान *** दुर – मोती *** बेबहा – बहुत क़ीमती *** मुल्के सुख़न की शाही – शायरी के फ़न की सलतनत की बादशाहत *** मुसल्लम – मानी हुई बात *** सिक्के बिठा देना – क़ब्ज़ा कर लेना।

है लबे ईसा से जाँ बख़्शी निराली हाथ में

लबे ईसा – हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के होंट *** जान बख़्शी – जिन्दा कर देना, ज़िन्दगी देना (यहाँ हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम के मोजज़े की तरफ़ इशारा है कि आप मुर्दे ज़िन्दा फ़रमा देते थे और आप मिट्टी का परिन्दा बनाते और छोड़ते तो वह उड़ने लगता) *** संगरेज़े – कंकरियाँ *** शीरीं मक़ाली – उम्दा अन्दाज़ में गुफ़्तगू

करना (यहाँ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उस मोजज़े की तरफ़ इशारा है कि आपके हुक्म से कंकरियों ने कलिमा पढ़ा) ★★★ बेनवाओं – मोहताज लोग ★★★ तहरीरे दस्त – हाथ की लकीरें ★★★ जूदे लायज़ाली – हमेशा की बख़्शिश ★★★ यदुल्लाह – अल्लाह का हाथ ★★★ ख़त्ते सिरो आसा – एक क़िस्म का अन्दाज़े तहरीर जिसमें सिर्फ़ लकीरों वग़ैरह खींच कर बात समझाई जाती है ★★★ शहे कौसर – जन्नत की एक नहर कौसर के बादशाह ★★★ जोया – ढूंढने वाला ★★★ अब्र – बादल ★★★ नीसाँ – बारिश या बारिश का महीना ★★★ तेग़े उरयाँ – नंगी तलवार ★★★ जमाली – जमाल वाली ★★★ जलाली – जलाल वाली ★★★ मालिके कौनैन – दोनों जहान के मालिक ★★★ साया फ़िगन – साया करने वाला ★★★ परचम – झंडा ★★★ लिवाउल ह़म्द – उस झंडे का नाम जो क़ियामत के दिन हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अता होगा ★★★ वाली – आक़ा, मालिक ★★★ ख़ते कफ़ – हाथ की लकीर ★★★ दस्त बैज़ाए कलीम – हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम का सफ़ेद रौशन हाथ ★★★ मोजज़न – मौज मारने वाला ★★★ गिराँ संगी – पत्थर का भारी होना ★★★ मिस – तांबा ★★★ अरज़ानिए जूद – बख़्शिश का आम कर देना ★★★ नौइया – तरज़ ★★★ संग – पत्थर ★★★ लआली – मोतियाँ ★★★ दस्तगीर – मददगार ★★★ सिबतैन – हज़रते इमाम हसन व हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ★★★ अंगुश्त – उंगली ★★★ संगे दर – चौखट का पत्थर ★★★ जबीं – पेशानी, माथा ★★★ बैअत – मुरीद होना ★★★ नक़्शे तस्ख़ीर – किसी को तावीज़ के ज़रिए अपना बना लेना यानी अपने से महब्बत करने वाला बना लेना ★★★ लबे कौसर – हौज़े कौसर के कनारे ★★★ वारफ़्ता होश – आपे से बाहर होने की हालत ★★★ ज़ैले आली – ऊँचा दामन ★★★ महव – खोया हुआ, मसरूफ़, ख़्याल में गुम ★★★ दीदार – नज़ारा ★★★ पुर जोश – मस्ती से भरा हुआ ★★★ वज्द – बहुत ज़्यादा ख़ुशी इतनी कि आदमी नाचने तक लगे ★★★ साक़ी – पिलाने वाला ★★★ वारफ़्तगी – बेख़ुदी ★★★ लोट जाना – बेक़रार हो जाना, निहायत ख़ुश होना।

राहे इरफ़ाँ से जो हम नादीदा रू महरम नहीं

राहे इरफ़ाँ – अल्लाह तआ़ला की मारफ़त, ख़ुदाशनासी का रास्ता ★★★ नादीदा रू – जो चेहरा कभी न देखा हो ★★★ महरम – राज़दार, हमराज़ ★★★ मस्नदे इरशाद – रहनुमाई करने वाले का तख़्त ★★★ नाक़िस – बेकार, जो पूरा न हो ★★★ कामिल –

मुकम्मल ईमान वाले लोग ★★★ माहिय्यत – हक़ीक़त ★★★ यम – दरिया ★★★ नम – तरी ★★★ .गुन्चे – कलियाँ ★★★ मा औहा – इशारा है सूरह नज्म की आयत "फ़ औहा इला अ़बदेही मा औहा" की तरफ़ यानी अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब पर जो वही फ़रमाई ★★★ दना – इशारा है सूरह नज्म की आयत "सुम–म दना फ़–तदल्ला" की तरफ़ जब मेराज में अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने क़रीब बुलाया ★★★ बुलबुले सिदरा – मुराद हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ★★★ ज़मज़म – कुआँ है मक्का शरीफ़ में जिसका पानी बड़ा बाबरकत है मअना इसका ठहर ठहर ★★★ जम जम – बहुत ज़्यादा ★★★ बेश – ज़्यादा ★★★ कसरते कौसर – कौसर का ज़्यादा होना ★★★ मेहरे अरब – अरब का सूरज ★★★ ख़ुर्शीद – सूरज ★★★ उम्मी – जिसका कोई उस्ताज़ नहीं जिसे किसी ने नहीं पढ़ाया। यह लक़ब है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का और यह आपकी ख़ूबी भी है कि आपको किसी ने सिखाया या पढ़ाया नहीं बल्कि आपको आपके रब ने ही सब कुछ सिखाया ★★★ मिन्नत कशे उस्ताद – उस्ताद का एहसान उठाने वाला ★★★ किफ़ायत – काफ़ी होना ★★★ इक़रा रब्बुकल अकरम – तेरे बुज़ुर्ग रब ने तुझे पढ़ाया ★★★ ओस पड़ जाना – मुहावरा है मतलब बुझ जाना ★★★ गुले ख़न्दाँ – खिला हुआ फूल मुराद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ गिरया – रोना ★★★ शबनम – ओस ★★★ दम क़दम – ज़िन्दगी, वजूद, सलामती ★★★ दैहीम – ताजे शाही ★★★ क़ैसर – रूम के बादशाह का लक़ब ★★★ जम – ईरान के बादशाह जमशेद का उप नाम।

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्से जहाँ नहीं

कमाले हुस्न – मुकम्मल हुस्न ★★★ नक़्स – कमी, ऐब ★★★ ख़ार – कांटा ★★★ शमा – चराग ★★★ अमानीए दिल ओ जाँ – दिल और जान की आरज़ूयें ★★★ निसार – .क़ुर्बान ★★★ सुख़न – इस नात में पहले सुख़न के मअना बात और दूसरे के मअना ऐतराज़ ★★★ बख़ुदा – ख़ुदा की क़सम ★★★ मफ़र – भागने की जगह ★★★ मक़र – चैन की जगह ★★★ इहानतें – तौहीन ★★★ खुले बन्दों – खुल्लम खुल्ला ★★★ फ़ुसहा – ज़बान के माहिर लोग ★★★ शरफ़ – बुज़ुर्गी ★★★ क़ता – ख़त्म, अलग ★★★ यास – नाउम्मीदी ★★★ ख़ुल्द – जन्नत ★★★ निको – अच्छी, ख़ूबसूरत ★★★ निकोई – ख़ूबसूरती ★★★ आबरू – इ़ज़्ज़त ★★★ समाँ – मौसम ★★★ अयाँ – ज़ाहिर ★★★ निहाँ – छुपा हुआ ★★★ ताबिश – चमक ★★★ मेहर

– सूरज *** पेशे मेहर – सूरज के सामने *** नूरे हक़ – ख़ुदा का नूर *** ज़िल्ले रब – ज़िल्ले इलाही *** मिल्क – मालिक होना *** ज़माँ – ज़माना *** ला मकाँ – जो मकान होने से पाक हो *** मकीं – मकान में रहने वाला *** सरे अर्श – अर्श पर *** तख़्तनशीं – तख़्त पर बैठने वाला *** मलाकूत ो मुल्क – फ़रिश्तों का आलम *** शय चीज़ *** अयाँ – ज़ाहिर *** नादिर – अनोखा *** दहर – ज़माना *** गुल – फूल *** सरवे चमाँ – चमन का सर्व यानी सीध दरख़्त *** रंग – अन्दाज़, रूप *** मदह – तारीफ़ *** अहले दुवल – दौलत वाले लोग *** गदा – फ़क़ीर, मंगता *** पारा – टुकड़ा *** नान – रोटी

मशहूर है कि आलाहज़रत से किसी ने नानपारा के नवाब की शान में क़सीदा लिखने की फ़रमाइश की थी। इस नात के मक़ते में इसी तरफ़ इशारा है कि मैं रोटी की ख़ातिर किसी की शान में लिखने वाला नहीं, मेरा दीन व मज़हब रोटी का टुकड़ा नहीं बल्कि मैं तो अपने आक़ा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का .गुलाम हूँ। यहाँ आपने नानपारा को उलट कर पारए नाँ भी लिख दिया और अपनी बात भी कह दी।

रूख़ दिन है या मेहरे समा ये भी नहीं वो भी नहीं

रुख़ – चेहरा *** मेहर – सूरज *** समा – आसमान *** शब – रात *** ज़ुल्फ़ – गेसू, बाल *** मुश्क – कस्तूरी *** ख़ुता – एक शहर का नाम जहाँ का मुश्क मशहूर होता है *** मुमकिन – जो फ़ना हो सके *** क़ुदरत – ताक़त *** वाजिब – जो हमेशा से हो और हमेशा रहे *** अबदियत – बन्दा होना *** हक़ – सच *** अब्दे इलाह – अल्लाह का बन्दा *** आलमे इम्काँ – मुमकिनात का आलम *** बरज़ख़ – आड़, पर्दा *** सिर्रे ख़ुदा – अल्लाह का राज़ *** गुल – फूल *** क़ुमरी – एक बहुत अच्छी आवाज़ वाला परिन्दा *** सरवे जाँफ़िज़ा – दिल ख़ुश करने वाला सर्व दरख़्त जो सीधा होता है *** ख़ुर्शीद – सूरज *** क़मर – चाँद *** बेपर्दा – बेनक़ाब *** रुख़ – चेहरा *** इसयाँ – गुनाह *** रोज़े जज़ा – क़ियामत का दिन *** नाज़ाँ – फ़ख़्र करने वाला *** ज़ुहद – परहेज़गारी *** हुस्ने तौबा – ख़ूबिए तौबा *** सिपर – ढाल *** फ़क़त – सिर्फ़ *** लहव – खेल कूद *** तर्से सज़ा – सज़ा का डर *** रंगीं – दिल को पसन्द आने वाला *** नग़मा सरा – गाने वाला *** वासिफ़ – तारीफ़ करने वाला।

वस्फ़े रुख़ उनका किया करते हैं

वस्फ़े रुख़ – सरकार के चेहरे मुबारक की तारीफ़ *** शरह – खोल कर बयान करना यानी एक्सप्लेन करना *** वश्शम्सुदुहा – यहाँ कुर्आन पाक की दो सूरतें शम्स और दुहा मुराद हैं *** मदह – तारीफ़ *** सना – तारीफ़ *** महमूद – सय्यदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का वस्फ़ है जिसका मतलब है जिसकी तारीफ़ की जाए *** माहे शक़ गश्ता की सूरत – टुकड़े किए हुए चाँद की सूरत। हुज़ूर ने चाँद के दो टुकड़े अपनी उंगली के इशारे से कर दिए। यहाँ यही कहा गया है कि चाँद के टुकड़े हो जाना देखो *** मेहर की रजअत – सूरज का पलटना, सूरज को पलटाना भी हमारे आक़ा का मोजज़ा था *** .कुदरत – ताक़त *** एजाज़ – मोजज़ा होना *** ख़ुर्शीदे रिसालत – रिसालत का सूरज *** ज़िया – रोशनी, चमक *** अम्बिया – नबी की जमा *** माह पारे – चाँद के टुकड़े *** बेख़िर्दीए – बेअक़्ली, नासमझी *** दरकार – ज़रूरत *** संग – पत्थर *** रिफ़अत – बलन्दी *** मुर्ग़े फ़िरदौस – जन्नत की चिड़िया *** पस अज़ ह़म्दे ख़ुदा – ख़ुदा की तारीफ़ के बाद *** मदह – तारीफ़ *** सना – तारीफ़ *** ग़मख़्वारी – मुसीबत मे किसी का साथ देना *** तश्ना – प्यासा *** सैराब – पेट भरा हुआ *** दाद – इन्साफ़ *** शुतरान – ऊँट, शुतर की जमा *** नाशाद – दुखी *** गिला – शिकायत *** रंजो अना – दुख व मेहनत *** सबा – हवा *** तैबा – मदीनए मुनव्वरा *** रुख़े रंगी की सना – सरकार के चेहरए मुबारक की तारीफ़ *** बादशाहे कौन ों मकाँ – दोनों जहाँ के बादशाह *** मलक हफ़्त फ़लक – सातों आसमानों के फ़रिश्ते *** हर आँ – हर घड़ी *** शहे अर्श ऐवाँ – ऐसा बादशाह कि अर्श जिसका महल हो *** उहुद – मदीने शरीफ़ के एक पहाड़ का नाम *** ताबाँ – चमकदार *** मअदन – खान *** दिले संगीं – पत्थर जैसा दिल *** जिला – रोशन करना *** ज़ेबा – लाइक़ *** ताजवरी – बादशाही *** जलवागरी – शान ो शौकत *** मलक – फ़रिश्ते *** यावर – मददगार *** पुर अरमाँ – आरज़ू से भरा हुआ *** लब – होंट *** नायाब – न हासिल होने वाला *** ग़मे उलफ़त – महब्बत की तकलीफ़ *** अलम – रंज *** कफ़े पा – तलवा *** लौ लगाना – उम्मीद बांधना *** चारए दर्दे रज़ा – रज़ा के दर्द की दवा।

मनक़बत

बरतर क़यास से है मक़ामे अबुल हुसैन

बरतर – बलन्द, अफ़ज़ल ★★★ क़यास – सोच ★★★ मक़ाम – मरतबा ★★★ सिदरा – वह मक़ाम जहाँ से आगे जिब्रील अ़लैहिस्सलाम भी न जा सके ★★★ रिफ़अत – बलन्दी ★★★ बाम– छत ★★★ अबुल हुसैन – आलाहज़रत के पीरज़ादे हैं बहुत बड़े बुज़ुर्ग हैं, अबुल हुसैन अह़मदे नूरी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ वारस्ता – छुटकारा पाया हुआ ★★★ पाए बस्ता – जिसके पांव को बांध दिया गया हो यानी क़ैदी ★★★ दाम – जाल ★★★ नार – दोज़ख़ ★★★ ख़ते स्याह – काली तहरीर मुराद दाढ़ी ★★★ नूरे इलाही – अल्लाह का नूर ★★★ ताबिशें – चमक ★★★ नूरे बार – नूर बरसाने वाला ★★★ साक़ी – पिलाने वाला ★★★ शीशए बग़दाद – बग़दाद की शीशी ★★★ टपक – पानी के क़तरे की लगातार गिरने की आवाज़ ★★★ मुदाम – शराब ★★★ बूए कबाब सोख़्ता – जले हुए कबाब की बू ★★★ मयकशो – शराब पीने वाले लोग ★★★ चिश्त – नाम एक जगह का ★★★ जाम – प्याला ★★★ गुलगूँ – गुलाब की तरह सुर्ख़ रंग वाला ★★★ सहर – बड़े हे से लिखा जाए तो सुबह और छोटे हे से लिखा जाए तो बेदारी या जागना यानी नींद न आना ★★★ सुहरवर्द – ईरान में एक जगह यहाँ हज़रते शैख़ शहाबुद्दीन रहते थे इसी लिए आपके मुरीदों को सोहरवर्दी कहते हैं ★★★ कुर्सी नशीन – दरबार में कुर्सी पर बैठने वाला ★★★ नक़्शे मुराद – मुराद पूरी करने वाला तावीज़ ★★★ नक़्शबन्द – लक़ब हज़रते ख़्वाजा बहा उद्दीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का, इनके मुरीदों को नक़्शबंदी कहते हैं ★★★ नख़्ल – खजूर का दरख़्त ★★★ छियालीस डालियाँ – इशारा इस तरफ़ है कि हुज़ूर शाह अबुल हुसैन नूरी मियाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सिलसिलए तरीक़त में छियालीसवाँ नम्बर है ★★★ मस्तों – मतवाले लोग ★★★ ख़ुमार – नशा ★★★ ता – तक ★★★ दौरे हश्र – क़ियामत का आना ★★★ दौरए जाम – प्याले की गर्दिश ★★★ ज़माना बाद – ज़माना रहे ★★★ बकाम – मक़सद में ★★★ शाने मसीहा – हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम की शान व शौकत ★★★ दीद – नज़ारा ★★★ ख़िराम – नाज़ो अदा की चाल ★★★ सरगश्ता – परेशान व हैरान ★★★ मेहर – सूरज ★★★ माह – चाँद ★★★ चर्ख़ – आसमान ★★★ माहे तमाम – पूरा चाँद, चौद्यवीं रात का चाँद ★★★ चर्ख़े चम्बरी – गोल आसमान ★★★ हफ़्त – सात ★★★ पाया – सीढ़ी, क़दमचा ★★★ बाम – छत ★★★ ज़र्रा को महर – छोटे से रेत के कण को

सूरज ★★★ क़तरा को दरिया – पानी के एक क़तरे को दरिया ★★★ जोश ज़न – ज़्यादती पर आ जाए ★★★ बख़्शिशे आम – ऐसा इनाम जो सबको दिया जाए ★★★ यहया – नाम एक पैग़म्बर का ★★★ वारिस – जाएज़ हक़दार ★★★ इक़बालमन्द – ख़ुश क़िस्मत ★★★ सज्जादा – पीर या बुज़ुर्ग की गद्दी ★★★ शुयूख़ – शैख़ की जमा ★★★ बहारे जिनाँ – जन्नत की बहार ★★★ तहनियत – मुबारकबाद ★★★ नख़्ल – खजूर का दरख़्त ★★★ मराम – मक़सद ★★★ गुले मुराद – मुराद का फूल ★★★ मशाम – दिमाग़ ★★★ सुथरे मियाँ – मारहरा शरीफ़ के एक बुज़ुर्ग ★★★ फ़लक – आसमान ★★★ इज़्ज़ – इज़्ज़त ★★★ जाह – मरतबा ★★★ गाम बगाम – क़दम क़दम पर ★★★ हिलाल – शुरू के दिनों का बारीक चाँद ★★★ सिपहर – आसमान ★★★ तलातुम – मौज ★★★ कुनाँ – करने वाला ★★★ बहरे फ़ना – फ़ना का दरिया ★★★ दवाम – हमेश ★★★ चाशनी – ज़ाएक़ा ★★★ शक्करीं – मिठास वाला ★★★ लब – होंट ★★★ काम – फ़ारसी में हलक़ को कहते हैं ★★★ तालअे – क़िस्मत ★★★ यावरी – मुवाफ़िक़ होना, मदद करना ★★★ बन्दा – ग़ुलाम ★★★ जुदूद – जमा जद की बमअना दादा ★★★ किराम – जमा करीम की बमअना शरीफ़ लोग।

ज़ाइरो पासे अदब रखो हवस जाने दो

ज़ाइरो – ज़्यारत करने वाले लोग ★★★ पासे अदब – अदब का लिहाज़ ★★★ हवस – शौक़, ख़्वाहिश ★★★ ग़ुरबा – ग़रीब लोग ★★★ लक्कए रहमत – रहमत का बादल ★★★ वज्द – बेअन्दाज़ा ख़ुशी इतनी कि आदमी नाच उठे ★★★ जाने शीरीं – प्यारी जान ★★★ क़ुम – वह कलिमा जो मुर्दे को ज़िन्दा करने के लिए कहा जाता है ★★★ तोशा – वह ज़रूरत का सामान जो मुसाफ़िर साथ ले जाए ★★★ दीदे गुल – महबूब की ज़्यारत ★★★ हमसफ़ीरो – जमा हमसफ़ीर की वह परिन्दे जो एक तरह की बोली बोलते हैं ★★★ सूए क़फ़स – पिंजरे की तरफ़ ★★★ आतिशे दिल – दिल की आग ★★★ अदब दाँ – अदब जानने वाले ★★★ नालो – जमा नाला की यानी फ़रयाद ★★★ ज़ब्ते – बर्दाश्त ★★★ तने ज़ार – कमज़ोर जिस्म ★★★ दर पै होना – मुहावरा है मतलब पीछे पड़ जाना ★★★शेवा – तरीक़ा ★★★ ख़ाना बरअन्दाज़िए – घर बार उजाड़ देने की आदत ★★★ ख़स – सूखी घास ★★★ सहल कटें – आसानी से गुज़र जायें।

चमने तैबा में सुम्बुल

चमन – बाग़ ★★★ सुम्बुल – एक क़िस्म की ख़ुशबूदार घास

जिससे बालो को तशबीह दी जाती है, बालछड़ ★★★ गेसू – बाल, ज़ुल्फ़ ★★★ शिकने नाज़ – सिलवट ★★★ वारे – क़ुर्बान करना ★★★ जारूबकशी – झाड़ू लगाना ★★★ शब – रात ★★★ शबनम – ओस ★★★ तबर्रुक – जिससे बरकत हो ★★★ स्याहकारों – गुनाहगारों ★★★ तपिशे महशर – हश्र की धूप ★★★ साया फ़िगन – साया किए हुए ★★★ बुराक़ – वह जन्नती जानवर जो शबे मेराज को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी बना ★★★ सुम्बुल – एक फूल का नाम ★★★ ख़ुल्द – जन्नत ★★★ आख़िर हज – मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी हज ★★★ तीराबख़्त – ख़राब क़िस्मत वाले ★★★ गोश – कान ★★★ ता दोश – कांधे तक ★★★ ख़ानाबदोशों – आवारा लोग, जिसका कोई मुस्तक़िल घर बार न हो ★★★ सूखे धानों – यहाँ वह अमल मुराद हैं जो अल्लाह की बारगाह में क़बूल होने के लाएक़ नहीं ★★★ काबए जान – रूह का काबा ★★★ मुश्कीं – मुश्क की तरह ख़ुशबूदार ★★★ अबरू – भव ★★★ सजदए शुक्र – शुक्राने के तौर पर सजदा ★★★ मुश्कबू – मुश्क से बसा हुआ ★★★ हुरियो – हूर की जमा ★★★ अम्बरे सारा – ख़ालिस अम्बर, बग़ैर मिलावट वाला ★★★ शबे क़द्र – लैलतुल क़द्र, रमज़ान के महीने की एक निहायत बाबरकत रात ★★★ मतलए फ़ज्र – आसमान में वह जगह जहाँ पर सुबह की रोशनी पहले पहल ज़ाहिर हो ★★★ आरिज़ – रुख़सार ★★★ शाना – कंघी ★★★ दम भर – थोड़ी सी देर के लिए ★★★ सीना चाकों – जिनका सीना चिर गया हो मतलब बहुत दुखी लोग ★★★ उहुद – मदीने शरीफ़ के एक पहाड़ का नाम ★★★ शब – रात ★★★ मुज़दा – ख़ुशख़बरी ★★★ क़िब्ला – काबा ★★★ अबरू – भव ★★★सुबह आरिज़ – आरिज़ (रुख़सार) की सुबह।

ज़माना हज का है

जलवा दिया है – संवारा है ★★★ शाहिदे – महबूब माशूक़ ★★★ ताक़ते परवाज़ – उड़ने की ताक़त ★★★ पर हाए बुलबुल – बुलबुल के परों का ★★★ जोबन – रौनक़ ★★★ अब्रे रहमत – रहमत का बादल ★★★ लबे मुश्ताक़ – आशिक़ का होंट ★★★ साक़या – ऐ पिलाने वाल ★★★ मुल – शराब ★★★ लब – होंट ★★★ मुश्की मोहर वाले – वह बर्तन जिसका मुँह मुश्क की मोहर से बन्द किया गया हा ★★★ दम में दम आना – मुहावरा है मतलब जान में जान आना ★★★ टपक – पानी के क़तरे की गिरने की आवाज़ ★★★ क़ुमे ईसा – ईसा अलैहिस्सलाम का क़ुम कह कर मुर्दे

ज़िन्दा करना ★★★ क़ुल क़ुल – शीशी या सुराही के दहाने या शराब गिरने की आवाज़ ★★★ मुद्दआ – मक़सद, मतलब ★★★ क़स्द – इरादा ★★★ बे–तअम्मुल – बे सोचे समझ ★★★ बख़्ते ख़ुफ़्ता – सोई हुई क़िस्मत ★★★ हंगामे इजाबत – दुआ क़बूल होने का वक़्त ★★★ शबहाए – रातें ★★★ काकुल – ज़ुल्फ़, गेसू, बाल ★★★ फ़लसफ़ी – फ़लसफ़ा (साइंस) जानने वाल ★★★ ख़र्क़ इलतियाम – फटना फिर मिल जाना ★★★ असरा – रात में ले जाना शबे मेराज मुराद है (साइंसदानो का एतराज़ कि शबे मेराज को जाते वक़्त आसमान कैसे फट गया फिर मिल गया इसी की तरफ़ यहाँ इशारा है) ★★★ यक साअत – एक लम्हा, एक घड़ी ★★★ तसल्सुल – लगातार होना ★★★ दोशम्बा – पीर का दिन यानी इस दिन हुज़ूर अ़लैस्सिलाम पैदा हुए ★★★ जुमए आदम – आदम अ़लैहिस्सलाम का जुमा यानी आप इस दिन पैदा हुए ★★★ ख़ूए तअम्मुल – ग़ौर और फ़िक्र करने की आदत ★★★ वुफ़ूर – ज़्यादती ★★★ सबब – वजह ★★★ जुरअत – दिलेरी, हौसला ★★★ बहरे ख़ुदा – अल्लाह के वास्ते ★★★ अर्ज़े बे तअम्मुल – बेसोचे समझे की गुज़ारिश ★★★ सद चाक – टुकड़े टुकड़े ★★★ इजाबत – दुआ क़बूल होना ★★★ शाना – कंघी ★★★ गेसू – ज़ुल्फ़, बाल ★★★ तवस्सुल – वसीला ढूंढना ★★★ सब्ज़ा गरदूँ – नीला आसमान ★★★ कोतल – वह घोड़ा जो अमीरों की सवारी के आगे आगे महज़ सजावट के लिए सजा संवरा चलता है ★★★ मोकिब – सवारी ★★★ तजम्मुल – शान ो शौकत।

याद में जिसकी नहीं होशे तनो जाँ हमको

रुख़ – चेहरा ★★★ मेहरे फ़रोज़ाँ – चमकदार सूरज ★★★ आप में आना न मिलना – मुहावरा है मतलब होश व हवास का ख़त्म हो जाना ★★★ ख़ुदरफ़्ता – बेख़ुद, बेहोश ★★★ जलवए जानाँ – महबूब का जलवा ★★★ तबस्सुम – मुस्कुराहट ★★★ गुलिस्ताँ – बाग़ ★★★ गुले ख़न्दाँ – खिला हुआ फूल ★★★ आवेज़ा – लटकाया हुआ ★★★ क़िन्दील – फ़ानूस ★★★ सोज़िश – जलन ★★★ चराग़ाँ – रोशनी करना ★★★ रश्के चराग़ाँ – जिस पर रोशनी नाज़ करे ★★★ ख़ूबीए रफ़्तार – उम्दा चाल ★★★ पामाल – रौंदा हुआ ★★★ ख़िरामा – धीरे धीरे चलते हुए ★★★ शरर – चिंगारी ★★★ आतिशे पिन्हाँ – छुपी हुई आग मतलब इश्क़ ★★★ समा ख़राशीए – शोर मचा कर कान खाना ★★★ सगे तैबा – मदीने शरीफ़ का कुत्ता ★★★ नाल ओ अफ़ग़ाँ – शोर व फ़रयाद ★★★ बे–सरो सामाँ

– बिना माल व सामान के ★★★ ख़ारे सहराए मदीना – मदीने शरीफ़ के जंगल का कांटा ★★★ वहशत – घबराहट ★★★ कोह ो बियाबाँ – पहाड़ व मैदान ★★★ तपे सीनए सोज़ाँ – जलने वाले सीने की गर्मी ★★★ ग़िरबाल – छलनी ★★★ जुनूँ – दीवानापन ★★★ रुख़सत – इजाज़त ★★★ ज़िन्दाँ – जेलख़ाना ★★★ सदा – आवाज़ ★★★ मलीह – नमकीन, मुराद महबूब ★★★ नमकदाँ – नमक रखने का बर्तन ★★★ सैर गुलशन – बाग़ की सैर ★★★ असीरान – क़ैदी ★★★ चमन – बाग़ ★★★ क़फ़स – पिंजरा ★★★ बुस्ताँ – बाग़ ★★★ ख़िज़ाँ – पतझड़ ★★★ गुलिसताँ – बाग़ ★★★ लब – होंट ★★★ जोशिशे इस्याँ – गुनाहों की ज़्यादती ★★★ नय्यरे हश्र – क़ियामत का सूरज ★★★ सायए दामाँ – हुज़ूर के दामन का सायए रहमत ★★★ ताब – ताक़त या बर्दाश्त ★★★ ताबकै – कब तक ★★★ ग़मे हिज्राँ – जुदाई का ग़म ★★★ चाक दामाँ – जिसका दामन फटा हो ★★★ दश्त – जंगल ★★★ जुनूँ – दीवानगी ★★★ पुर्ज़े करना – टुकड़े टुकड़े करना ★★★ चेहरए अनवर – रोशनी बिखेरने वाला चेहरा ★★★ महे ताबाँ – चमकता चाँद ★★★ वस्फ़े रुख़े पाक – सरकार के चेहरे की तारीफ़ ★★★ नज़र देना – तोहफ़ा पेश करना ★★★ ग़ज़लख़्वाँ – ग़ज़ल पढ़ने वाला।

हाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो

शहंशाह : बादशाहों का बादशाह यानी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ रौज़ा – वह मक़बरा जिस पर गुम्बद बना हो यहाँ मुराद गुम्बदे ख़ज़रा है जिसमें हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मज़ार शरीफ़ है ★★★ रुक्न – कोना ★★★ रुक्ने शामी – काबे शरीफ़ के कोनों में से एक कोना ★★★ वहशत – घबराहट ★★★ शामे ग़ुरबत – परदेस की शाम ★★★ दिल आरा – दिल को संवारने वाली ★★★ जूद – वह करम जो बिन मांगे अता हो ★★★ शहे कौसर – हौज़े कौसर के मालिक ★★★ मीज़ाब – काबे शरीफ़ के परनाले को मीज़ाब कहते हैं ★★★ ज़ेरे मीज़ाब – मीज़ाब के नीचे ★★★ अब्रे रहमत – रहमत का बादल ★★★ क़स्रे महबूब – महबूब का महल ★★★ मुतीअ – फ़रमाँबरदार ★★★ सियाहकार – गुनाहगार ★★★ अव्वलीं – सबसे से पहले ★★★ ख़ानए हक़ – अल्लाह का घर यानी काबए मुअज़्ज़मा ★★★ ज़ियायें – रोशनियाँ ★★★ बैत – घर ★★★ तजल्ला – चमक, रोशनी ★★★ ज़ीनत – ख़ूबसूरती ★★★ उरूस – दुल्हन ★★★ कौनैन – दोनों जहान ★★★ ऐमन – मुबारक, दायाँ ★★★ तूर – उस

पहाड़ का नाम जहाँ हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला की तजल्ली का दीदार हुआ ★★★ रुक्ने यमानी – काबे शरीफ़ का एक रुक्न जो दाहनी तरफ़ है ★★★ फ़रोग़ – रोशनी ★★★ शोलए तूर – वह नूर जो हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम को तूर पर दिखाई दिया ★★★ अन्जुमन आरा – महफ़िल सजाने वाला ★★★ मेहरे मादर – माँ की महब्बत ★★★ आग़ोश – गोद ★★★ हतीम – काबे शरीफ़ की उत्तर की तरफ़ काबे से थोड़ी दूर कमान की तरह एक छोटी सी दीवार है पहले यह हिस्सा काबे में शामिल था मगर पैसे की कमी की वजह से इस हिस्से को छोड़ दिया गया। काबे शरीफ़ से इस दीवार तक के हिस्से को हतीम कहते हैं ★★★ कफ़ीले हुज्जाज – हाजियों का ज़ामिन ★★★ दादरसी – फ़रियाद का सुनना ★★★ ज़ुल्मते दिल – दिल की सियाही ★★★ बोसए संगे असवद – संगे असवद का चूमना। काबे शरीफ़ के एक कोने पर जन्नत का एक पत्थर लगा है जिसे हाजी चूमते हैं उसे हज्रे असवद या संगे असवद कहते हैं ★★★ ख़ाक बोसीए मदीना – मदीने शरीफ़ की ख़ाक या ज़मीन का चूमना ★★★ रुतबा – दर्जा ★★★ रिफ़अते काबा – काबे शरीफ़ की बलन्दी ★★★ परवाज़ – उड़ान ★★★ मुल्तज़िम – काबे शरीफ़ मे रुक्ने यमानी के सामने एक मक़ाम जिससे लिपट कर हाजी दुआ मांगते हैं, यहाँ दुआ क़बूल होती है ★★★ बाहम – आपस में ★★★ मसआ – दौड़ने की जगह (सफ़ा व मरवा – दो पहाड़ियों के नाम जिसके दरमियान हाजी लोग दौड़ते हैं) ★★★ बउम्मीदे सफ़ा – क़ल्ब की सफ़ाई के उम्मीद में ★★★ राहे जानाँ – महबूब का रास्ता ★★★ सफ़ा – क़ल्ब की सफ़ाई ★★★ रक़्स – नाच ★★★ बिस्मिल – जिसकी गर्दन काट दी गई हो और ज़ख़्मी तड़प रहा हो ★★★ मिना – मक्का शरीफ़ में एक जगह का नाम जहाँ हाजी क़ुर्बानी करते हैं ★★★ दिले ख़ूँ नाबा फ़िशाँ – ख़ालिस ख़ून बहाने वाला दिल

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो

पुल – यानी पुल सिरात जिस पर होकर रोज़े क़यामत हर एक को गुज़रना है जो तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा महीन होगा। ★★★ राहगुज़र – रास्ता ★★★ ग़मे रोज़गार – दुनिया का रंज ★★★ हाले ज़ार – बुरा हाल ★★★ ख़ैरे बशर – सबसे बेहतरीन इन्सान यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ सुबकरवी – तेज़रफ़्तारी ★★★ मुरतज़ा – हज़रते मौला अली रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लक़ब ★★★ अतीक़ – हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लक़ब ★★★ गुमा दे – फ़ना कर दे ★★★ पहलू ओ बर – बाज़ू और सीना ★★★ तैरे हरम – हरम की

चिड़िया *** रिश्ता बपा होना – जाल में फंस जाना *** ख़ारे तैबा – मदीने शरीफ़ के कांटे *** दीदए तर – आंसू भरी आंखें *** शौक़े दिल – दिल की ख़्वाहिश *** रवा – जाएज़ *** हामी – मददगार *** पिसर – बेटा *** पिदर – बाप।

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो

मुश्किल कुशा – मुश्किल दूर करने वाले *** नज़ा की तकलीफ़ – मौत के वक़्त जो तकलीफ़ होती है उसे नज़ा की तकलीफ़ कहते हैं *** शादिए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा – रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखने की ख़ुशी *** गोरे तीरा – अंधेरी क़ब्र *** सुबहे जाँफ़िज़ा – रूह बढ़ाने वाली ख़ुश करने वाली सुबह *** शोरे दारो गीर – पकड़ धकड़ का शोर *** साहिबे कौसर – कौसर जन्नत के एक चश्मे का नाम है ---- साहिबे कौसर यानी कौसर के मालिक यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम *** सर्द मेहरी – बेरहमी, बेमुरव्वती *** ख़ुर्शीदे हश्र – क़ियामत के दिन का सूरज *** सय्यदे बेसाया – यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि जिनका साया न था *** ज़िल्ले लिवा – हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के झंडे का साया जो आपको रोज़े क़ियामत दिया जाएगा *** ऐब पोशे ख़ल्क़ – मख़लूक़ के ऐब छुपाने वाले *** सत्तारे ख़ता – ख़ता ढकने वाले *** हिसाबे जुर्म में – जुर्म के हिसाब में *** तबस्सुम रेज़ होंट – मुस्कराते होंट *** ख़न्दए बेजा – बेमौक़े की हंसी *** चश्मे गिरयाने – रोती हुई आंखें *** शफ़ीअ – शफ़ाअत करने वाले *** मुरतजा – जिससे उम्मीदें लगी हों *** आफ़ताबे हाशमी – हाशमी ख़ानदान के सूरज, नूरुल हुदा – हिदायत की रोशनी *** सरे शमशीर – यानी पुलसिरात पर जो कि तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा महीन होगा *** रब्बिसल्लिम – जब हुज़ूर के उम्मती पुलसिरात से गुज़रेंगे तब हुज़ूर वहाँ पर खड़े फ़रमा रहे होंगे रब्बिसल्लिम उम्मती यानी ऐ अल्लाह मेरी उम्मत को सलामती से गुज़ार दे *** ग़मज़ुदा – ग़म दूर करने वाले *** क़ुदसी – फ़रिश्ते *** ख़्वाबे गिराँ – बहुत गहरी नीद यानी मौत *** दौलते बेदारे इश्क़े मुस्तफ़ा – हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महब्बत जो जीती जागती है।

क्या ही ज़ौक़ अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह

ज़ौक़ अफ़ज़ा – शौक़ बढ़ाने वाली *** शफ़ाअत – रोज़े

क़ियामत हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का गुनाहगारों की सिफ़ारिश करने को शफ़ाअत करना कहते हैं ★★★ ख़ामए क़ुदरत – क़ुदरत का क़लम ★★★ हुस्ने दस्तकारी – ख़ूबसूरत कारीगरी ★★★ अश्क – आंसू ★★★ शब भर – रात भर ★★★ इन्तज़ारे अफ़्वे उम्मत – उम्मत की माफ़ी का इन्तेज़ार ★★★ मैं क़ुरबाँ – मैं क़ुरबान हो जाऊँ ★★★ अख़्तर शुमारी – तारे गिनना, बेचैनी से रात काटना ★★★ पंजाब – वह जगह जहाँ पांच नदियाँ मिलती हैं। यहाँ हुज़ूर की पांच उंगलियों जिनसे पानी निकलना हमारे आक़ा का मोजज़ा है, की तरफ़ इशारा है। ★★★ मेहर – सूरज ★★★ माह – चाँद ★★★ गर्दे सवारी – सवारी का ग़ुबार ★★★ नीम जलवा – मामूली झलक ★★★ ताब न आना – बर्दाश्त न करना ★★★ क़मर साँ – चाँद की तरह ★★★ आइनादारी – आइना दिखाने की ख़िदमत करना ★★★ नफ़्स – ख़्वाहिशे नफ़्सानी ★★★ ताज़ा जुर्म – नया गुनाह ★★★ नातवाँ – कमज़ोर ★★★ तालए बरगश्ता – फिरा हुआ नसीब ★★★ साज़गारी – मुवाफ़िक़ होना ★★★ अर्ज़ बैगी – वह ओहदा जिसके ज़रिए से बादशाह से गुज़ारिश की जा सके ★★★ अफ़्व – माफ़ी ★★★ फ़र्दसारी – रजिस्टर, फ़ेहरिस्त ★★★ सबा – वह हवा जो पूरब से चले ★★★ अक्से ख़ास – यहाँ अल्लाह तआ़ला की तजल्ली मुराद है ★★★ अन्जानों – न जानने वाले ★★★ इकराम – करम ★★★ पारए दिल – दिल का टुकड़ा ★★★ सगाने कू – गली में रहने वाले कुत्ते, यहाँ मदीने शरीफ़ की गली मुराद है।

रौनक़े बज़्मे जहाँ हैं आशिक़ाने सोख़्ता

बज़्म – महफ़िल ★★★ आशिक़ाने सोख़्ता – जो महब्बत में फ़ना हो गए ★★★ गोया – तसलीम करो ★★★ ज़बाने सोख़्ता – जली हुई ज़बान, यहाँ मुराद बत्ती का सिरा है ★★★ क़ुर्से मेहर – सूरज की टिकिया ★★★ मुनइमो – ऐ बख़्शिश करने वालो ★★★ ख़्वाने जूद – बख़्शिश का दस्तरख़्वान ★★★ नान सोख़्ता – जली हुई रोटी ★★★ माहे मन – मेरे चाँद ★★★ नय्यरे महशर – रोज़े क़ियामत का सूरज ★★★ ता–बके – कब तक ★★★ आतिशे इस्याँ – गुनाहों की आग ★★★ जाने सोख़्ता – जली हुई जान, सूखी हुई जान ★★★ बर्क़े अंगुश्ते नबी – नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उंगली की बिजली ★★★ सीनए माह – चाँद का सीना ★★★ निशाने सोख़्ता – जलने का निशान ★★★ मेहरे आलम ताब – दुनिया को चमकाने वाला सूरज ★★★ झुकता है – अदब बजा लाता है ★★★ पए तसलीम – सलाम करने के लिए ★★★

पेश – सामने *** ज़र्राते मज़ार – क़ब्र के ज़र्रे *** बेदलाने – आशिक़ *** कूचा – गली *** गेसूए जानाँ – महबूब की ज़ुल्फ़ *** नसीम – ठंडी हवा *** पर अफ़शाँ – पर छिड़कना *** बहरे हक़ – अल्लाह के वास्ते *** बहरे रहमत – रहमत का दरिया *** लुत्फ़ बार – मेहरबानी की बारिश *** ता बके – कब तक *** बे–आब – बिन पानी के *** माहियान – मछलियाँ *** रूकश– मुक़ाबिल *** ख़ुर्शीदे महशर – क़ियामत के दिन का सूरज *** शरार – चिंगारी *** शैदाइयान – फ़िदा होने वाले लोग *** आतिशे तर दामनी – गुनाहगारी की आग *** गुलहाए तैबा – मदीने शरीफ़ के फूल *** बर्क़ – बिजली *** जलवए मेराज – मेराज का नज़ारा *** शोलए जव्वाला – गिर्दा गिर्द फिरने वाला शोला *** साँ – तरह, मिस्ल *** मज़मून – मतलब, मअना *** सोज़े दिल – दिल की जलन *** रिफ़अत – बलन्दी *** ज़मीन को आसमान कर देना– ज़मीन को आसमान का मक़ाम और मरतबा देना।

सबसे औला ओ अअला हमारा नबी

औला – बेहतर *** आला–ऊँचा *** बाला – ऊँचा *** वाला – बुज़ुर्ग, बड़ा *** मौला – आक़ा *** बज़्मे आख़िर – आख़री महफ़िल *** शम्अे फ़रोज़ाँ – शमअ रोशन करने वाला *** नूरे अव्वल – पहला नूर *** शायाँ – लायक़ *** जुलूस – जलसा करना यानी बैठना *** सुलताने वाला – बड़ा बादशाह *** मशअलें – जमा मशअल की *** आबे हयात – अमृत *** मसीहा – लक़ब हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का जो बतौर मोजज़ा मुर्दे ज़िन्दा करते थे *** जाने मसीहा – मसीहा की जान *** आइना बन्दियाँ – किसी के आने के इस्तिक़बाल में सजावट करना *** सू–ए–हक़ – अल्लाह की तरफ़ *** ख़ल्क़ – मख़लूक़ *** औलिया – वली की जमा *** रुसुल – रसूल की जमा *** मलीह – हसीन, ख़ूबसूरत *** दिल आरा – दिल को संवारने वाला *** मज़कूर – ज़िक्र किया हुआ *** कौसरो और सलसबील – जन्नत की दो मशहूर नहरों के नाम *** क़र्नों – सदियों *** बदली – तबदीली *** मुल्के कौनैन – दोनों जहाँ की सल्तनत *** अम्बिया – नबी की जमा *** ताजदार – ताज वाले यानी बादशाह *** ला मकाँ – आलमे क़ुद्स *** क़मर – चाँद *** नूरे वहदत – अल्लाह का नूर *** अंधे शीशे – जिसमें स्याही हो *** उम्रे अबद – हमेशा की ज़िन्दगी *** जाने मसीहा – मसीहा की जान *** ग़मज़दों – ग़म के मारे लोग *** मुज़दा –

ख़ुशख़बरी ★★★ बेकस मजबूर लोग।

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे

जुदा – अलग ★★★ बेकसी – मजबूरी ★★★ तवाफ़ – चक्कर लगाना ★★★ तबीब – हकीम या डाक्टर ★★★ ह़रम – मक्का व मदीना शरीफ़ ★★★ उज़्र – बहाना ★★★ अफ़्व – माफ़ी ★★★ रूसियाह – गुनाहगार ★★★ जोशे – तेज़ी ★★★ हवस – झूटा इश्क़ ★★★ हश्र – क़ियामत का दिन ★★★ सैर – तमाशा ★★★ इल्तिजा – दरख़्वास्त ★★★ ज़ुअफ़ – कमज़ोरी ★★★ ख़ू – आदत ★★★ जी रखना – दिल रखना ★★★ ज़ौक़ मय – शराब का मज़ा मतलब इश्क़ के नशे वाली शराब ★★★ तालिब – चाहने वाला ★★★ इत्तिक़ा – परहेज़गारी।

मोमिन वो है जो उनकी ताज़ीम पर मरे दिल से

मोमिन – ईमान वाला ★★★ मरे दिल – दो बार आया जब मोमिन के साथ आया तो मतलब इसका बड़े ख़ुश दिल से यानी दिली ताज़ीम और जब नजदी के साथ आया तो मतलब है मुर्दा दिल से ★★★ नजदी – नज्द के रहने वाले को कहते हैं यहाँ नजदी से मुराद वह वहाबी फ़िरक़ा है जो अल्लाह व रसूल की तौहीन करके काफ़िर व मुरतद हो गया ★★★ दहर – ज़माना ★★★ नज़र रखना – मुहावरा है मतलब महरबान होना ★★★ तेरे गिरे दिल से – यानी जो तेरे दिल से गिर जाए ★★★ परे – दूर ★★★ दरे वाला – बलन्द दरवाज़ा यानी हुज़ूर का दरे वाला ★★★ गिर्द – ख़्याल में सर को चारों तरफ़ घुमाना ★★★ अब्रे करम – रह़मत का बादल ★★★ सोज़िशे ग़म – ग़म की आग ★★★ हरे दिल – हरा दिल ★★★ अफ़्व – माफ़ करने वाला ★★★ यमे ग़म – रंज का दरिया ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते।

अल्लाह अल्लाह के नबी से

लाज – शर्म ★★★ शब भर – पूरी रात ★★★ दांत पीसे – ग़ुस्सा हुए ★★★ शहदनुमा ज़हर – जो देखने में शहद मालूम हो लेकिन हक़ीक़त में ज़हर हो ★★★ गुम जाऊँ – खो जाऊँ ★★★ दिल सोज़ – दिल जलाने वाला ★★★ नादिम – शर्मिन्दा ★★★ ख़जल – शर्मिन्दा ★★★ आक़ा – मालिक ★★★ ख़ुदसरी – घमंड ★★★ गुन – आमाल ★★★ मुत्तक़ी – परहेज़गार ★★★ रहज़न – लुटेरा ★★★ ख़िज़्रे हाशमी – मुराद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ नालिश – शिकायत ★★★ पुश्त पनाह – मददगार ★★★ ग़ौसे आज़म – बहुत बड़े फ़रयाद को पहुँचने वाले, बड़े पीर साहब मुराद हैं।

शजरा

या इलाही रह़म फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते

शहे मुश्किल कुशा – मुश्किलें दूर करने वाले बादशाह यहाँ मौला अ़ली मुश्किल कुशा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुराद हैं *** शहीदे करबला – हज़रते इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** सय्यदे सज्जाद – लक़ब हज़रते इमाम ज़ैनुल आबेदीन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का जो हज़रते इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मंझले साहबज़ादे हैं *** साजिद – सजदा करने वाला *** इल्मे हक़ – सच्चा इल्म यानी इल्मे दीन *** बाक़र – इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पोते और हज़रते इमाम ज़ैनुल आबेदीन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बेटे हज़रते इमाम बाक़र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** इल्मे हुदा – हिदायत का इल्म *** सिद्क़ – सच्चाई *** सादिक़ – लक़ब हज़रते इमाम जाफ़र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का *** तसद्दुक़ – सदक़ा, तुफ़ैल *** सादिक़ुल इस्लाम – सच्चे इस्लाम वाला जो ज़ाहिर और बातिन दोनों तौर पर इस्लाम पर हो *** बेग़ज़ब – बग़ैर नाराज़ हुए *** काज़िम – हज़रते इमाम मूसा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लक़ब *** रज़ा – हज़रते इमाम रज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** बहरे – वास्ते, लिए *** मारूफ़ – हज़रते मारूफ़ करख़ी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** सरी – हज़रते सिर्री सक़ती रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** मारूफ़ दे – नकी दे *** बेख़ुदसरी – ज़िद न करने की सिफ़त *** जुन्दे हक़ – हक़ वालों की फ़ौज *** जुनैद – हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** बासफ़ा – साफ़ दिल वाले *** बहरे शिबली शेरे हक़ – अल्लाह के शेर हज़रते अबूबक्र शिबली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिए *** अब्दे वाहिद – हज़रते अब्दुल वाहिद तमीमी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** बे-रिया – जिसमें रियाकारी यानी दिखावा न हो *** बुल फ़रह – हज़रते अबुल फ़रह़ तरतूसी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** ग़म को फ़राह देना – ग़म को ख़ुशी में बदलना *** हुस्नो सअद – ख़ूबसूरती और नेकबख़्ती *** बुल हसन – हज़रते अबुल हसन अली क़र्शी हुंकारी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** बू सईद – अबू सईद मख़ज़ूमी बिन अबुल ख़ैर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा *** सादज़ा – नेकी व भलाई वाले *** क़ादिरी – हज़रते ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की

तरफ़ निसबत ★★★ क़ादिरियों में उठा – रोज़े क़यामत भी ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के .ग़ुलामों में उठा यानी मेरा हश्र उनके साथ कर ★★★ क़द्रे – इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी ★★★ अब्दुल क़ादिर – नाम हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ★★★ .क़ुदरतनुमा – ख़ुदा की क़ुदरत का जलवा दिखाने वाले ★★★ अहसनल्लाहु लहुम रिज़्क़न – अहसनल्लाहु रिज़्क़न आयत मुराद है जिसका मअना अल्लाह ने उसको अच्छा रिज़्क़ अता फ़रमाया ★★★ रिज़्क़े हसन – अच्छा रिज़्क़ ★★★ बन्दए रज़्ज़ाक़ – हज़रत सय्येदिना अब्दुल रज़्ज़ाक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बेटे हैं ★★★ ताजुल अस्फ़िया – बुज़ुर्गों के सर का ताज, यह लक़ब है हज़रते अब्दुल रज़्ज़ाक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ★★★ नस्र अबी स़ालेह – सय्यद अह़मद अबू स़ालेह़ नस्र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु यह हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पोते हैं ★★★ स़ालेह – परहेज़गार ★★★ मन्सूर – कामयाब ★★★ हयाते दीं – दीनी ज़िन्दगी ★★★ मुहीय्ये जाँ फ़िज़ा – हज़रत सय्यद मुहीयुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुह़म्मद रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु, यह हज़रते अबू स़ालेह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बेटे हैं।

तूरे इरफ़ान ो उलूव्वो हम्द ो हुस्ना ओ बहा
दे अली मूसा हसन अह़मद बहा के वास्ते

★★★ तूरे इरफ़ान – मारिफ़त का तूर यानी पहाड़ ★★★ उलू – बलन्दी ★★★ हम्द – तारीफ़ ★★★ हुस्ना – बेहतरी ★★★ बहा – रोनक़ ★★★ इस शेर में पांच बुज़ुर्गों का ज़िक्र है हज़रते सय्यद अली, सय्येदिना सय्यद मूसा, सय्येदिना सय्यद हसन, सय्येदिना सय्यद अह़मद जीलानी सय्येदिना बहाउद्दीन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम।

बहरे इब्राहीम – हज़रते सय्येदिना इब्राहीम ईरजी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वास्ते ★★★ नारे ग़म – रंज की आग ★★★ गुलज़ार – बाग़ ★★★ बादशाह भिकारी – हज़रत निज़ाम क़ादिरी सय्येदिना मुह़म्मद भिकारी बादशाह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ ख़ानए दिल – दिल का घर ★★★ ज़िया – रोशनी ★★★ रूए ईमाँ – ईमान का चेहरा ★★★ जमाल – ख़ूबसूरती ★★★ शह ज़िया – हज़रत शाह ज़ियाउद्दीन उर्फ़ क़ाज़ी ज़िया रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ जमालुल औलिया – हज़रते अबू मुह़म्मद अब्दुल अ़ज़ीज़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रते मख़्दूम जहानियाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो आपके वालिदे गिरामी भी हैं ★★★ मुह़म्मद – हज़रत मीर मुह़म्मद काल्पवी रद़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु मुराद हैं ★★★ अह़मद – मीर सय्यद अह़मद काल्पवी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुराद हैं ★★★ ख़्वान – दसतरख़्वान ★★★ फ़ज़्लुल्लाह – सय्यद शाह फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ गदा – फ़क़ीर ★★★ बरकात – जमा बरकत की ★★★ बरकात – लक़ब है हज़रत सय्यद बरकतुल्लाह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ★★★ इश्क़ी – शाह बरकतुल्लाह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तख़ल्लुस है ★★★ इश्क़े इन्तेमा – इश्क़ से निसबत रखने वाला ★★★ हुब्बे अहले बैत – अहले बैत की महब्बत ★★★ आले मुह़म्मद – शाह बरकतुल्लाह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहबज़ादे और ख़लीफ़ा हैं ★★★ शहीदे इश्क़ – इश्क़े इलाही में शहीद ★★★ ह़म्ज़ा – हज़रते सय्यद शाह ह़म्ज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु, आप सय्यद आले मुह़म्मद रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़र्ज़न्द हैं ★★★ पुर नूर – नूर वाला ★★★ शम्से दीं – हज़रते सय्यद शम्सुद्दीन कुन्नियत अबुल फ़ज़ल लक़ब अच्छे मियाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु, आप सय्यद ह़म्ज़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहबज़ादे हैं ★★★ बदरुल उला – बलन्दी के चाँद ★★★ आले रसूल – रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की औलाद और नाम हज़रते आले रसूल अह़मदी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का, आप हज़रते सुथरे मियाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मंझले साहबज़ादे हैं। आलाहज़रत मुजद्दिदे दीन ओ मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आप ही के ख़लीफ़ा और मुरीद हैं। ★★★ मुक़तदा – पेशवा ★★★ अअयाँ – ऐन की जमा बमअना सरदार बड़े लोग ★★★ छः ऐन – छः चीज़ें इत्तेफ़ाक़ यह है कि छः चीज़ें जिनको तलब किया है वो सब ऐन (ع) ही से शुरू हो रहीं हैं यानी इज़्ज़, इल्म, अमल, अफ़्व, इरफ़ाँ, आफ़ियात ★★★ इज़्ज़ – इज़्ज़त ★★★ अफ़्व – माफ़ी ★★★ इरफ़ाँ – रब की पहचान ★★★ आफ़ियत – सेहतो सलामती।

अर्शे हक़ है मसनदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की

अर्शे हक़ – अल्लाह तआ़ला की जलवागाह ★★★ मसनद – टेंक लगा कर बैठने की जगह ★★★ ता हश्र – हश्र तक ★★★ तलअत – चमक ★★★ तेग़ – तलवार ★★★ बर्क़े ग़ज़ब – .ग़ुस्से की बिजली ★★★ ला व रब्बिल अर्श – ख़ुदा की क़सम ★★★ कौनैन – दोनों जहाँ ★★★ मुस्तग़नी – बेपरवाह ★★★ ख़लीलुल्लाह – अल्लाह का दोस्त यानी हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम ★★★ फ़ज़ूँ – बढ़ कर ★★★ इकसीर – किमिया ★★★ उलफ़त – महब्बत ★★★ सियाहकार – गुनाहगार ★★★ साहिबे .क़ुरआँ – क़ुरआन वाला यानी

अल्लाह तआ़ला *** मद्दाहे हुज़ूर – हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की तारीफ़ करने वाला *** मिदहत – तरीफ़।

क़ाफ़िले ने सूए तैबा कमरआराई की

सूए तैबा – मदीने की तरफ़ *** कमरआराई – चलने की तैयारी करना *** लाज रख ली – इ़ज़्ज़त बचा ली *** तमअ अफ़्व – माफ़ी का लालच रखना *** सौदाई – दीवाना *** फ़र्श ता अर्श – ज़मीन से अर्शे आज़म तक *** आईना – ज़ाहिर रौशन *** ज़माइर – सब ढकी छपी चीज़ें यहाँ तक कि दिल व दिमाग़ में सोची जा रही बातें *** उम्मी – लक़ब हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मअना इसके जिसको किसी ने न पढ़ाया हो यानी आपने दुनिया के किसी आदमी से कभी पढ़ा नहीं आपको जो इल्म अता हुआ अल्लाह से डारेक्ट अता हुआ *** दानाई – इल्मो दानिश *** शश जिहत – छः सम्तें (यानी आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, दायें, बायें) *** सम्ते मुक़ाबिल – सामने का रुख़ यानी आगे पीछे ऊपर नीचे दायें बायें सब दिशायें एक ही दिशा यानी आगे की जिहत की तरह हैं कोई फ़र्क़ नहीं *** शबो रोज़ – दिन रात *** वन्नज्म – क़ुर्आने पाक की एक सूरत का नाम जिसमें हुज़ूर की बीनाई का चर्चा है *** बीनाई – देखने की ताक़त *** पांच सौ साल की राह – यानी ऐसी दूरी कि अगर दरमियानी चाल से पैदल चला जाए तो पांच सौ साल लगें *** दो गाम – दो क़दम *** आस – उम्मीद *** शनवाई – सुनने की ताक़त, दादरसी *** तवानाई – ताक़त, क़ुदरत *** वुस्अते अर्श – अर्श की समाई *** जलवए हरजाई – हर जगह पाया जाने वाला नूर।

पेशे हक़ मुज़दा शफ़ाअत का सुनाते जायेंगे

पेशे हक़ – अल्लाह तआ़ला के सामने *** मुज़दा – ख़ुशख़बरी *** कुश्तगाने गर्मीये महशर – महशर की गर्मी से मारे हुए *** गुल – फूल *** नसीमे फ़ैज़ – फ़ैज़ की ठंडी हवा *** ईदे आशिक़ाँ – आशिक़ों की ख़ुशी का दिन यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आशिक़ों के लिए क़ियामत का दिन ख़ुशी का दिन होगा कि आज उनका दीदार होगा *** अबरुए पेवस्ता – मिली हुई भवें *** नेमते ख़ुल्द – जन्नत की नेअमत *** ख़ाक उफ़तादो – ख़ाक में गिरे पड़े लोगो *** वुसअतें – गुन्जाइशें *** असीरों – क़ैदियों यानी गुनाहगार *** ख़िरमने इसयाँ – गुनाहों का खलयान *** ग़मज़दो – ग़म के मारे *** गिरयाँ –

रोते गिड़गिड़ाते ★★★ लौहे दिल – दिल की तख़्ती ★★★ सोख़्ता जानों – जान जले हुए ★★★ पुर जोश – जोश से भरे हुए ★★★ आबे कौसर – कौसर जन्नत के एक चश्मे का नाम जो रोज़े क़ियामत जारी होगा आबे कौसर यानी कौसर का पानी ★★★ आफ़ताब – सूरज ★★★ सरसर – आंधी ★★★ जोशे बला – बला का ज़ोर ★★★ पाए कोबा – नाचते हुए ★★★ रब्बे सल्लिम – जब हुज़ूर के उम्मती पुलसिरात से गुज़रेंगे तब हुज़ूर वहाँ पर खड़े फ़रमा रहे होंगे रब्बिसल्लिम यानी ऐ अल्लाह इन्हें सलामती से गुज़ार दे ★★★ सरवरे दीं – दीन के सरदार यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ★★★ नातवानों – कमज़ोर लोग ★★★ मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िलअे गिराते जायेंगे – यानी जिस तरह फ़ारस के क़िले मुसलमानों ने गिराए थे उसी तरह नज्द यानी वहाबियों के सदर मक़ाम के क़िलअे गिराते जायेंगे ★★★ अदू – दुश्मन।

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले

अब्रे रहमत – रहमत का बादल ★★★ ख़ित्ता – इलाक़ा ★★★ वल्लाह – ख़ुदा की क़सम ★★★ चश्मे आलम – दुनिया की आँख ★★★ ज़बह फ़र्सा – पेशानी रगड़ना, रखना ★★★ साक़ी – पिलाने वाला ★★★ जूद – वह करम जो बिन मांगे अता हो ★★★ मुन्किर – इन्कार करने वाले यानी बदमज़हब ★★★ साअत – घड़ी ★★★ नफ़्स – वह ख़्वाहिश जो नफ़्स की तरफ़ माइल करे ★★★ चंद्वाने वाले – झुटलाने वाले।

आंखें रो रो के सुजाने वाले

सरा – घर, मुसाफ़िरख़ाना ★★★ छावनी छाना – डेरा डालना ★★★ ज़िबह होना – मारे जाना, हलाक व बरबाद होना ★★★ देस गाना – एक राग जो आधी रात के वक़्त गाया जाता है ★★★ बद फ़ाल – ख़राब फ़ाल ★★★ जंगला – एक रागनी का नाम है ★★★ आदा – दुश्मन ★★★ नीम जलवा – थोड़ी सी झलक ★★★ गुलज़ार – बाग़ व बहार ★★★ लब – होंट ★★★ ख़ल्क़ – मख़लूक़ ★★★ ख़ालिक़ – पैदा करने वाला यानी अल्लाह तआ़ला ★★★ कुश्ता – मारा हुआ ★★★ दश्त – जंगल।

क्या महकते हैं महकने वाले

गोर – क़ब्र ★★★ महे बेदाग़ – बेदाग़ चाँद ★★★ ताबे आरिज़ – रुख़सार की चमक ★★★ गुले तैबा – मदीने के फूल यानी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ सना – तारीफ़ ★★★

नख़्ल – खजूर का दरख़्त ★★★ तूबा – जन्नत के एक दरख़्त का नाम जिसकी शाख़ हर जन्नती के घर में होगी और इसी दरख़्त से सब रोशनी पायेंगे जिस तरह सूरज से दुनिया में रोशनी पाते हैं ★★★ आसियों – गुनाहगारों ★★★ अब्रे रहमत – रहमत का बादल ★★★ जलवा गहे जानाँ – महबूब की जलवागाह ★★★ शमा यादे रुख़े जानाँ – हुज़ूर के चेहरे की याद ★★★ तेज़ रो–ओं – तेज़ चलने वालों ★★★ मय – शराब ★★★ कफ़ – हथेली ★★★ दरियाए करम – मेहरबानी का दरिया

राह पुरख़ार है क्या होना है

पुरख़ार – कांटों से भरा हुआ ★★★ अफ़गार – ज़ख़्मी ★★★ बेज़ार – नाराज़, नाख़ुश ★★★ आज़ार – बीमारी ★★★ क़फ़स – पिंजरा ★★★ नौ गिरफ़्तार – जो शिकार नया नया जाल में फ़ंसा हो ★★★ पुरज़ोर – ताक़तवर ★★★ ज़ेर – कमज़ोर ★★★ ज़ार – लाग़र ★★★ ज़िन्दाँ – जेलख़ाना मतलब यहाँ जहन्नम है ★★★ गुलज़ार – बाग़ मतलब यहाँ जन्नत है ★★★ तेग़ – तलवार ★★★ गिलए ख़ार – कांटा चुभने की शिकायत ★★★ तीरओ तार – बहुत अन्धेरी यानी क़ब्र एक दम अन्धेरी है ★★★ शोलाज़न – भड़कने वाला ★★★ सहर – सुबह ★★★ आख़री दीद – आख़िरी दीदार ★★★ अबस – बेकार ★★★ ग़फ़्फ़ार – माफ़ करने वाला।

किसके जलवे की झलक है ये उजाला क्या है

दीदए हैरत ज़दा – आँख फाड़ कर देखने वाला ★★★ पन्द – नसीहत ★★★ नासेह – नसीहत करने वाला ★★★ तुर्श – खट्टा ★★★ इसयाँ – गुनाह ★★★ सितमगर – ज़ालिम ★★★ ज़ाहिद – परहेज़गार ★★★ शाफ़ेअ – शफ़ाअत करने वाला ★★★ पुरसिशे आमाल – अमल की पूछ गछ ★★★ ग़ोग़ा – शोर ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के लिए ★★★ ख़ातिरे अक़दस – मुक़द्दस दिल ★★★ मलाल – रंज ★★★ मारूज़ – बड़े के सामने बात कहना ★★★ दफ़तरे आमाल – वह काग़ज़ जिनमें आमाल लिखे होंगे और क़ियामत के दिन हाथ में दिया जाएगा यानी नामए आमाल ★★★ शाहे रुसुल – रसूलों के सरदार ★★★ वक़्फ़ा – देर ★★★ बहरे करम – मेहरबानी का दरिया ★★★ मलाइक – फ़रिश्ते ★★★ मौरिदे आफ़ात – आफ़तें पहुँचने की जगह ★★★ हामी – मददगार ★★★ ग़मख़्वारे उमम – उम्मत के ग़म दूर करने वाला ★★★ तने बेजाँ – वह जिस्म जिसमें जान न हो ★★★ सरवर – सरदार ★★★ तक़ाज़ा – मुतालबा ★★★

बन्दा – .गुलाम ★★★ आज़ाद शुदा – आज़ाद किया हुआ ★★★ महकूम – ताबेदार, हुक्म मानने वाले ★★★ ज़हरा – हिम्मत ★★★ समाँ – मन्ज़र ★★★ चश्मे बद दूर – बुरी नज़र दूर हो ★★★ निसार – क़ुर्बान ★★★ अनादिल – जमा अन्दलीब यानी बहुत सी बुलबुलें।

सरवर कहूँ के मालिक ो मौला कहूँ तुझे

सरवर – सरदार ★★★ मौला – आक़ा, मालिक ★★★ ख़लील – दोस्त, लक़ब हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का ★★★ गुले ज़ेबा – ख़ूबसूरत फूल ★★★ गुलज़ारे क़ुद्स – पाकीज़गी का बाग़ ★★★ गुले रंगीं अदा – ख़ुश अदा फूल ★★★ दरमाने दर्द – दर्द का इलाज ★★★ बुलबुले शैदा – वह बुलबुल जो आशिक़ हो ★★★ सुबहे वतन – वतन की सुबह ★★★ शामे ग़रीबाँ – मुसाफ़िर की शाम ★★★ शरफ़ – मरतबा ★★★ बेकस नवाज़ – बेकसों को नवाज़ने वाला ★★★ जिस्मे मुनव्वर – नूर वाला जिस्म ★★★ ताबिश – चमक दमक ★★★ जाने जाँ – बहुत अज़ीज़ ★★★ तजल्ला – रोशनी ★★★ लाला – एक क़िस्म का सुर्ख़ फूल जिसके अन्दर स्याह दाग़ होता है ★★★ क़मर – चाँद ★★★ बे कलफ़ – बेदाग़ ★★★ बेख़ार गुलबन – बिना कांटों का पौधा ★★★ चमनआरा – बाग़ संवारने वाला ★★★ अफ़्व – माफ़ ★★★ शफ़ीए रोज़े जज़ा – क़ियामत के दिन शफ़ाअत कराने वाले यानी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़नेबीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ मुज़दा – ख़ुशख़बरी ★★★ हयाते अबद – हमेशा की ज़िन्दगी ★★★ वस्फ़ – ख़ूबी ★★★ ऐब तनाही – किसी हद पर रुकने का ऐब ★★★ बरी – पाक व साफ़ ★★★ सुख़न – बात ★★★ ख़ालिक़ – पैदा करने वाला यानी अल्लाह तआ़ला ★★★ ख़ल्क़ – मख़लूक़।

मुज़्दाबाद ऐ आसियों शाफ़ए शहे अबरार है

मुज़्दाबाद – ख़ुशख़बरी हो ★★★ आसियो – गुनाहगार लोगो ★★★ शाफ़ेअ – सिफ़ारिश करने वाले ★★★ शहे अबरार – सारे नेकों के बादशाह ★★★ तहनियत – मुबारकबाद ★★★ ग़फ़्फ़ार – बहुत बख़्शने वाला ★★★ अर्श सा – अर्श की तरह ★★★ फ़र्शे पा अर्शे बरीं – और अर्शे बरीं आपके पांव का फ़र्श है ★★★ निराली तर्ज़ – अनोखी क़िस्म ★★★ नामे ख़ुदा – ख़ुदा के नाम ★★★ शक़ – फट जाना, टुकड़े हो जाना ★★★ बा–रकल्लाह – अल्लाह बरकत दे ★★★ मरजेअ आलम – जिसकी तरफ़ आलम अपनी मुराद के लिए आए ★★★ सूए आसमान – आसमान की तरफ़ ★★★ दरकार – चाहिए, ज़रूरत है ★★★ लब – होंट ★★★ ज़ुलाल – मीठा ख़ालिस पानी

★★★ कुन – वह लफ़्ज़ जिसको आलम पैदा करते वक़्त अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया यानी हो जा ★★★ चश्मए कुन – कुन का सोता ★★★ तड़का – सवेरा ★★★ गोर – क़ब्र ★★★ तार – अंधेरी ★★★ आसी – गुनहगार ★★★ जाने बे-ख़ता – जिसका कोई गुनाह न हो ★★★ बार– बोझ, ज़िम्मेदारी ★★★ जोशे तूफ़ाँ – तूफ़ान का तेज़ होना ★★★ बहरे बेपायाँ – गहरा दरिया ★★★ नासाज़गार – जो मुवाफ़िक़ न हो ★★★ नूह का मौला – हज़रते नूह अ़लैहिस्सलाम के सरदार ★★★ बेड़ा – कश्ती या नाव ★★★ रहमतुल्लिल आ़लमीन – लक़ब है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मतलब इसका है सारी कायनात के लिए रह़मत ★★★ बेतरह – बुरी तरह ★★★ बार – बोझ ★★★ आइनादार – ऐब या ख़ूबी ज़ाहिर करने वाला ★★★ वुफ़ूर – ज़्यादा होना ★★★ वस्फ़ – ख़ूबी ★★★ गुल – फूल ★★★ लबे इज़हार – ज़ाहिर करना ★★★ बूस्ताँ – बाग़ ★★★ मिदहत – तारीफ़ ★★★ वा होना – खुला होना ★★★ मिन्क़ार – चोंच यहाँ लब मुराद हैं।

अर्श की अक़्ल दंग है चर्ख़ में आसमान है

चर्ख़ – चक्कर ★★★ जाने मुराद – महबूब ★★★ बज़्म – महफ़िल ★★★ सनाए ज़ुल्फ़ – बाल की तारीफ़ ★★★ हश्त ख़ुल्द – आठों जन्नतें ★★★ छेड़छाड़ – बातचीत ★★★ तुर्फ़ा – नया या अनोखा ★★★ इन्स – इन्सान ★★★ उन्स – महब्बत, मानूस होना ★★★ आलमे शबाब – जवानी का आलम ★★★ गुलबन – फूल का पौधा ★★★ सियाहकार – गुनाहगार ★★★ शफ़ीअ़ – सिफ़ारिश करने वाला ★★★ पेशे नज़र – नज़र के सामने ★★★ नौबहार – नई रौनक़ यहाँ मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं ★★★ ख़िराम – नाज़ ओ अदा की चाल ★★★ बाज़ – एक शिकारी परिन्दे का नाम यहाँ हज़रते जिब्रील मुराद हैं ★★★ बारे जलाल – ख़ुदा के जलाल का बोझ ★★★ धान पान – दुबला पतला ★★★ अ़ब्दे मुस्तफ़ा – मुस्तफ़ा का ग़ुलाम ★★★ अमान – चैन व सुकून।

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी हिजाब में है

नूरे बारी – ख़ुदा का नूर ★★★ मेहर – सूरज ★★★ सोज़िश – जलन, दर्द ★★★ कबाबे आहू – हिरन का कबाब ★★★ मायए समन – चमेली की पूंजी ★★★ चमन चमन – हर चमन में ★★★ गुलशन – बाग़ ★★★ जिलो – हमराह, साथ साथ ★★★ हिलाल – शुरू के दिनों का चाँद ★★★ मर्ग – मौत ★★★ हयात – ज़िन्दगी ★★★ ममात – मौत ★★★ आदा – दुश्मन लोग ★★★ डाब – परतला, बांध

बुनने की लम्बी घास ★★★ स्याह लिबासान – काले रंग का कपड़ा पहनने वाले जो मातमी रंग कहलाता है ★★★ दारे दुनिया – दुनिया का घर ★★★ सब्ज़ पोशान – सब्ज़ लिबास वाले लोग यहाँ फ़रिश्ते मुराद हैं ★★★ गुल – फूल ★★★ लबहाए नाज़ुक – नाज़ुक होंट ★★★ सोज़े जिगर – जिगर की गर्मी ★★★ तालिब – चाहने वाला ★★★ जलवए मुबारक – बरकत वाला दीदार ★★★ आबे हैवाँ – अमृत ★★★ लुत्फ़ – मज़ा ★★★ ख़िताब – कलाम ★★★ मुन्कर नकीर – दो फ़रिश्तों के नाम जो क़ब्र में सवाल करेंगे ★★★ हामी – मददगार ★★★ यावर – मददगार ★★★ पयम्बर – पैग़म्बर ★★★ क़ह्हार – सख़्त क़हर वाला ★★★ शफ़ीए महशर – महशर में शफ़ाअत करने वाले ★★★ बन्दा – .गुलाम ★★★ मुफ़लिस – बहुत ग़रीब ★★★ इज़्तेराब – बेचैनी ★★★ मेहर – सूरज ★★★ माह – चाँद ★★★ लईम – ह़कीर ★★★ बेक़द्र – जिसकी कोई अहमियत न हो।

अंधेरी रात है ग़म की घटा इस्याँ की काली है

इस्याँ – गुनाह ★★★ दिले बेकस – बेसहारा दिल ★★★ वाली – सरपरस्त ★★★ सदा – आवाज़ ★★★ गोरे ग़रीबाँ – क़ब्रस्तान ★★★ हामी – मददगार ★★★ वाली – मालिक ★★★ उतरता चाँद – मुहावरा है यानी महीने के आख़री हिस्से के लिए आया है ★★★ ढलती चांदनी – मुहावरा है यानी महीने के आख़री हिस्से के लिए आया है ★★★ अंधेरा पाख – महीने का आख़री हिस्सा जिसमें चाँद का उजाला न हो ★★★ लाउबाली – बेपरवाह ★★★ साअत – घड़ी, वक़्त ★★★ कटीली राह – कांटों की राह ★★★ वाली – मददगार ★★★ न चौंका – न जमा।

गुनाहगारों को हातिफ़ से नवेदे ख़ुशमआली है

हातिफ़ – ग़ैबी आवाज़ या ग़ैबी आवाज़ देने वाला ★★★ नवैद ख़ुशख़बरी ★★★ ख़ुशमआली – बेहतर अन्जाम वाला होना ★★★ वाली – मददगार ★★★ क़ज़ा – मौत ★★★ गुलबने रह़मत– रह़मत का पौधा ★★★ जलाले हक़ – अल्लाह की बुज़ुर्गी ★★★ ख़मे गर्दूं – गर्दन का झुकाव ★★★ हिलाल – शुरू के दिनों का चाँद ★★★ ज़ुलजलाली – ज़ुलजलाल (अल्लाह) वाला ★★★ ज़हे – वाह वाह ★★★ ख़ुद गुम – अपने आपको न पाने वाला ★★★ गदा– फ़क़ीर, मांगने वाला ★★★ सगे दर – दर का कुत्ता ★★★ आली – बलन्द ★★★ बख़्शिश पसन्दी – माफ़ी को पसन्द करने वाली आदत ★★★ उज़्र जोई – उज़्र को तसलीम करने का मिज़ाज ★★★ तौबा ख़्वाही – तौबा क़बूल कर लेने की ख़सलत ★★★ उमूम –

आम होना *** हैदर – लक़ब मौला अली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का *** सर्वे सही – सर्व एक ख़ूबसूरत दरख़्त है जिससे महबूब के क़द की मिसाल दी जाती है *** गीलाँ – जीलान ईराक़ की एक जगह का नाम जहाँ ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पैदा हुए *** अदना – छोटा, मामूली सा *** दरगाह – दरबार *** ख़ुद्दाम – जमा ख़ादिम की *** मआली – बलन्दियाँ, ऊचाईयाँ।

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है

आँख से काजल चुराना – मुहावरा है मतलब चोरी में माहिर होना *** मत – अक़्ल *** बिस की गांठ – ज़हर की पुड़िया *** हर्राफ़ा – बहुत चालाक औरत, फ़साद की जड़ *** पवन – हवा *** अगिया बेताली – ऐसी वीरान जगह जहाँ भूत वग़ैरह रहते हैं *** डायन शौहर कुश – ऐसी डायन जो शौहर तक को खा जाए *** मेंह – बरसता पानी *** धुर – आख़ीर, इन्तेहा *** रिफ़ाक़त – सफ़र में किसी का साथ होना *** मुफ़लिस – बहुत ग़रीब *** अजम – अरब के अलावा ज़मीन का सारा हिस्सा अजम कहलाता है *** मौला – मालिक *** अफ़्व – बख़्शिश *** गवाह सफ़ाई – वह गवाह जो मुजरिम के बेगुनाह होने की गवाही दें *** डिग्री – अदालत का फ़ैसला *** इक़बाली – वह जुर्म जो ख़ुद क़बूल कर लिया जाए।

नबी सरवरे हर रसूल ो वली है

सरवर – सरदार *** मअल्लाहि ली – एक हदीस की तरफ़ इशारा है जिसमें हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक वह वक़्त भी होता है जिसमें मेरे अलावा किसी रसूल या फ़िरिश्ते को क़ुर्ब हासिल नहीं *** नामी – नाम वाला *** रऊफ़ – बहुत मेहरबान *** रहीम – ख़ास रह़मत वाला *** अलीम – जानने वाला *** अली – बलन्दी वाला *** रहबर – रास्ता चलाने वाला *** लामकाँ – जहाँ कोई मकान न हो यानी अल्लाह तआ़ला की जलवागाह *** नकीरैन – क़ब्र के उन फ़िरिश्तों के नाम जो सवाल करेंगे *** तलातुम – तूफ़ान का थपेड़ा *** हवाए मुख़ालिफ़ – उल्टी हवा *** ह़बीबी – मेरे प्यारे *** अग़िस्नी – मेरी मदद फ़रमायें*** सबा – हवा *** सर सर – आंधी *** दश्ते तैबा – मदीने के मैदान *** हमदम – साथी *** यक जान – ख़ूब मिले हूए *** यक दिल – हमराज़ *** आगाह – वाक़िफ़, जानकार *** ख़फ़ी – पोशीदा, छुपा हुआ *** जली – ज़ाहिर *** आले

मुस्सिर – राज़ों का जानने वाला ★★★ बर आए – पूरा हो जाए ★★★ क़स्द – इरादा ★★★ क़स्दे दिली – दिल का इरादा ★★★ दर – दरवाज़ा ★★★ दरबाँ – पहरेदार ★★★ मद्ह ख़्वाँ – तारीफ़ करने वाला

न अर्श ऐमन न इन्नी ज़ाहिबुन में मेहमानी है

ऐमन – मुराद तूर का पहाड़ ★★★ इन्नी ज़ाहिबुन – हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम का फ़रमान मैं अपने रब की तरफ़ जाऊँगा वह मुझे राह दिखाएगा ★★★ उदनू या अह़मद – ऐ अह़मद क़रीब आ वह फ़रमान मुराद है जो शबे मेराज अर्श पर पहुँचने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाया ★★★ लन तरानी – तुम मुझे नहीं देख सकते ★★★ यहाँ इस पहले शेर में मेराज शरीफ़ और मूसा अ़लैहिस्सलाम के तूर के वाक़िए का मुक़ाबला किया है कि वहाँ बार बार लन तरानी कहा गया और यहाँ अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब को ख़ुद अर्श पर बुलाया और अपना दीदार अता फ़रमाया ★★★ नसीबे दोस्ताँ – दोस्तों को दुआ देते वक़्त बोला जाता है मतलब दोस्त का अच्छा नसीब हो ★★★ गर – अगर ★★★ दर – दरवाज़ा ★★★ नातवानी – कमज़ोरी ★★★ जबीं साई – माथा रगड़ना ★★★ निगार – सजावट ★★★ शफ़ाअत ख़्वाह – शफ़ाअत यानी सिफ़ारिश का चाहने वाला ★★★ ख़स्ता जानी – परेशानी ★★★ महबूब – जिससे महब्बत की जाए ★★★ मुहिब – महब्बत करने वाला ★★★ मस्ताने ग़फ़लत – लापरवाही में मस्त रहने वाला ★★★ क़द र–अल–ह़क़ – ह़क़ का दीदार हुआ ★★★ ज़ेब – ज़ीनत ★★★ जाम – प्याला ★★★ मन रआनी – जिसने मेरा दीदार किया (नोट – यहाँ इशारा है उस हदीस की तरफ़ जिसमें हुज़ूर ने फ़रमाया कि जिसने मेरा दीदार किया उसने दीदारे ह़क़ किया यानी हमारे आक़ा ख़ुदा से जुदा नहीं हैं और ख़ुदा भी नहीं हैं) ★★★ ख़ाक रूबी – झाड़ू देना ★★★ चमनआरा – बाग़ संवारने वाला ★★★ ह़क़नुमा – ह़क़ का दीदार कराने वाला ★★★ कोशक – महल ★★★ जाने जिनाँ – जन्नतों की जान ★★★ ज़र – सोना ★★★ नक़्क़ाशी – नक़्शनिगारी ★★★ इरम – जन्नत ★★★ ताइर – चिड़िया ★★★ रंगपरीदा – पीला रंग ★★★ ज़ियाबुन फ़ी सियाबिन – भेड़िये जिन्होंने इन्सानी लिबास पहन रखा है यानी सूरत में इन्सान और सीरत में भेड़िये हैं यह हदीस पाक में है कि आख़िर ज़माने में कुछ लोग ऐसे होंगे ★★★ लब – होंट ★★★ गुस्ताख़ी – बेअदबी ★★★ सलाम अस्सलाम – मुहावरा

है मतलब तुमसे बाज़ आए ★★★ इसलामे मुल्हिद – बेदीन का इसलाम ★★★ तसलीम – मानना ★★★ ज़ुबानी – ज़बान से (यहाँ बदमज़हबों ख़ुसूसन वहाबियों की तरफ़ इशारा है) ★★★ शाना – कंधी ★★★ मिस्वाक – दातून ★★★ दिल रेशों – ज़ख़्मी दिल वाले ★★★ ज़ाएद – ज़्यादा ★★★ साइल – मांगने वाला ★★★ दरबारे आली – ऊँचा दरबार ★★★ कन्ज़ – ख़ज़ाना ★★★ आमाल – जमा अमल (उम्मीद) की ★★★ अमानी – तमन्नायें ★★★ सूरते हाला – कुंडल या दाएरे की तरह ★★★ मुहीत – घेरे हुए ★★★ माहे तैबा – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं ★★★ उम्मते आसी – गुनहगार उम्मत ★★★ तआलल्लाह – तअज्जुब के लिए बोला जाता है जैसे वाह वाह या सुबह़ानल्लाह ★★★ इस्तिग़ना – बेफ़िक्री ★★★ गदाओं – मांगने वाले ★★★ आर – शर्म ★★★ फ़र्र – रोब ो दाब ★★★ शौकत – मरतबा, शान ★★★ साहिबे किरानी – साहिब किरान की तरफ़ मन्सूब ★★★ सर गर्म – कोशिश करने वाला ★★★ अक़्के अफ़शाँ – जो चीज़ छिड़की जाए ★★★ पेशानी – माथा ★★★ संदल – चंदन ★★★ घानी – तिलों या सरसों की वह मिक़्दार जो एक साथ कोल्हू में डालने के लिए जाए या तेल पिलाने की मशीन।

सुनते हैं कि महशर में सिर्फ़ उनकी रसाई है

रसाई – पहुँच ★★★ सफ़ – क़तार, लाइन ★★★ ज़ाइर – ज़्यारत करने वाला ★★★ बाज़ारे अमल – जहाँ अमल की पूछ गछ हो ★★★ सौदा न बना – क़ीमत न लगी ★★★ ऐबी – ऐबदार मतलब गुनाहगार ★★★ मुज़दा – ख़ुशख़बरी ★★★ तम्हीद बनाना – बात की भूमिका बनाना ★★★ अहबाब – दोस्त वग़ैरह ★★★ हिर्स – लालच ★★★ हवसे बद – बुरी ख़्वाहिश ★★★ दिल जले – आशिक़ ★★★ फ़ितनों के पर काले – फ़ितनों के पर काले सियाह होते हैं ★★★ ज़ाहिद – परहेज़गार ★★★ मतला – ग़ज़ल के पहले शेर को कहते हैं।

हिर्ज़े जाँ ज़िक्रे शफ़ाअत कीजिए

हिर्ज़े जाँ – जिससे जान की हिफ़ाज़त हो ★★★ नार – जहन्नम ★★★ नक़्शे पा – पांव का निशान ★★★ ग़ैरत – हया, शर्म ★★★ बामलाहत – नमकीन, कशिश वाला हुस्न ★★★ निसार – क़ुर्बान ★★★ शीरए जाँ – जान का क़िवाम ★★★ हलावत – मिठास ★★★ नातवानों – कमज़ोर लोग ★★★ पंजए देवे लईं – शैतान लईन का पंजा ★★★ लब – होंट ★★★ शादाब – हराभरा, ताज़ा ★★★ आबे कौसर – जन्नत की नहर कौसर का पानी ★★★ सबाहत –

तैरना ★★★ यादे क़ामत – उनके क़दे मुबारक की याद ★★★ बेनवाओं – ग़रीब लोग ★★★ सरवत – माल व दौलत ★★★ हय्यि बाक़ी – हमेशा बाक़ी व क़ाइम रहने वाला यानी अल्लाह तआ़ला ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ मिदहत – तारीफ़ ★★★ कमाने चढ़ गईं – मतलब डंका बज गया ★★★ .क़ुव्वत – ताक़त ★★★ नीम वा– अधखुली ★★★ पासे नज़ाकत – नज़ाकत या नफ़ासत का ध्यान रखना ★★★ बारे गुनाह – गुनाहों का बोझ ★★★ ख़म ज़रा फ़र्क़े इरादत कीजिए – अक़ीदत से सर को झुकाइये ★★★ बेपुरसिश – बिना पूछे ★★★ उज़्र बदतर अज़ गुनाह – गुनाह का उज़्र जो गुनाह से भी बदतर हो ★★★ बेसबब – बिला वजह ★★★ इनायत – मेहरबानी, लुत्फ़ ★★★ मन रआनी क़द र–अल–ह़क़ – जिसने मेरा दीदार किया उसने अल्लाह का दीदार किया (नोट – यहाँ इशारा है उस हदीस की तरफ़ जिसमें हुज़ूर ने फ़रमाया कि जिसने मेरा दीदार किया उसने दीदारे ह़क़ किया यानी हमारे आक़ा ख़ुदा से जुदा नहीं हैं और ख़ुदा भी नहीं हैं) ★★★ आलिमे इल्मे दो आलम हैं हुज़ूर – हमारे आक़ा स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दो जहाँ के इल्म के आलिम हैं अल्लाह तआ़ला ने तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इल्म हुज़ूर ही को अता फ़रमाया ★★★ बे नवा – बे सरो सामाँ ★★★ मदफ़न – दफ़न होने की जगह ★★★ दावए उलफ़त – महब्बत का दावा ★★★ अक़रेबा – रिश्तेदार लोग ★★★ हुब्बे वतन – वतन की महब्बत ★★★ रफ़अे निदामत कीजिए – शर्मिन्दगी दूर कीजिए ★★★ बिज़ाअत – पूंजी ★★★ दावए बिज़ाअत – सामान लुट जाने का दावा ★★★ दर्दे .फ़ुरक़त – बिछड़ने का दर्द ★★★ चारए ज़हरे मुसीबत कीजिए – मुसीबत का ज़हर ख़त्म होने का दवा कीजिए ★★★ जाने हज़ीं – ग़मगीन जान ★★★ वारें – क़ुर्बान करें।

दुश्मने अह़मद पे शिद्दत कीजिए

शिद्दत – सख़्ती ★★★ मुलहिद – बेदीन, बदमज़हब ★★★ नज्द – उस जगह का नाम जहाँ से वहाबियत का फ़ितना निकला ★★★ आयाते विलादत – वो आयतें जिसमें हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की आमद का ज़िक्र है ★★★ ग़ैज़ – .ग़ुस्सा ★★★ कसरत करना – किसी काम को ज़्यादा करना ★★★ वजीह – मरतबे वाला ★★★ बिल वजाहत – रुतबे की बुनियाद पर ★★★ हबीब – दोस्त ★★★ शफ़ाअत बिल महब्बत – महब्बत की बुनियाद पर ★★★ इज़्न – इजाज़त ★★★ जानिबे मह – चाँद की तरफ़ ★★★ इशारत – इशारा

★★★ वहुहा, हुजरात, अलमनशरह् – क़ुरआन की सूरतों के नाम जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बड़ी तारीफ़ आई है और आपकी अज़मतो और रिफ़अत का ज़िक्र है ★★★ इतमामे हुज्जत – हुज्जत पूरी करना ★★★ इस्तेआनत – मदद चाहना ★★★ गोशमाले अहले बिदअत – बिदअत करने वालों की कान खिचाई ★★★ मिल्लत – मज़हब, उम्मते मुस्लिमा ★★★ मुन्तहा – वह जगह जहाँ अन्त हो जाए यानी अब उसके आगे जाना नहीं ★★★ हुक्मे नुसरत – मदद करने का हुक्म ★★★ अच्छे मियाँ – आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा के तरीक़त के सिलसिले के एक बुज़ुर्ग का नाम।

शुक्रे ख़ुदा कि आज घड़ी उस सफ़र की है

फ़लाह – कामयाबी ★★★ ज़फ़र – कामयाबी ★★★ तप – बुख़ार ★★★ कुलफ़त – मुसीबत, तकलीफ़ ★★★ अज़ीमत – इरादा ★★★ ख़ाके पाक – पाक मिट्टी ★★★ ख़ाके पा शिफ़ा – मदीने शरीफ़ की एक ख़ास जगह की मिट्टी जो हर मरज़ के लिए शिफ़ा है ★★★ जनाबे मसीहा – लक़ब हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का ★★★ आबे हयाते रूह – रूह का अमृत ★★★ ज़रक़ा – मदीने शरीफ़ की एक नहर का नाम ★★★ इकसीरे आज़म – बड़ी कीमिया। कीमिया वह चीज़ जो तांबे को सोना और रांगे को चांदी बना दे ★★★ मिसे दिल – दिल का तांबा ★★★ हज़र – सफ़र का विलोम यानी वतन में होना ★★★ बिस्तो चहारुम – चौबीस तारीख़ ★★★ सफ़र – हिजरी सन् का दूसरा महीना यानी चेहलुम का महीना ★★★ माहे मदीना – मदीने के चाँद यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ★★★ तजल्ली – रोशनी ★★★ मन ज़ार तुरबती व-ज-बत लहु शफ़ा अती -- यह हदीस है जिसका तर्जमा है कि जिसने मेरी क़ब्र की ज़्यारत की उस के लिए मेरी शफ़ाअत ज़ुरूरी हो गई ★★★ नवैद – ख़ुशख़बरी ★★★ बुशर – ख़ुशख़बरियाँ ★★★ नुहज़त – कहीं जाने के इरादे से खड़ा होना ★★★ ज़िल – साया, परतौ ★★★ हजर – यहाँ हजरे असवद मुराद है ★★★ ख़लील – लक़ब हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ★★★ बिना – तामीर ★★★ मिना – वह जगह जहाँ हाजी लोग .क़ुर्बानी करते हैं ★★★ लौलाक वाले – हदीस में आया है कि अल्लाह का फ़रमान है कि लौला-क लमा ख़लक़्-तुद दुनिया यानी ऐ महबूब अगर तुम्हारा पैदा करना मन्ज़ूर न होता तो दुनिया पैदा न करता यहाँ इसी हदीस की तरफ़ इशारा है ★★★ साहिबी – मिल्कियत ★★★ वारी – .क़ुर्बान की ★★★ आला ख़तर – सबसे अहम ★★★ हिफ़्ज़े जाँ – जान

की हिफ़ाज़त ★★★ फ़ुरोज़े ग़ुरर – रौशन तर फ़राइज़ ★★★ फ़ुरूअ – वो मसाइल कि अदाइगी में जिनका दूसरा दर्जा हो यानी यह साबित हुआ कि सारे फ़राइज़ बाद की चीज़ हैं अस्ल तो हुज़ूर की ग़ुलामी है ★★★ असलुल उसुल – सब में अस्ल ★★★ बन्दगी – ग़ुलामी ★★★ सोर – ख़ुशी, शरर – आग की चिंगारी ★★★ नार – जहन्नम ★★★ बुशरा – ख़ुशख़बरी ★★★ ख़ैरुल बशर – सबसे बेहतरीन इन्सान यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ जाऊ–क है गवाह – क़ुरआन में आया कि ऐ महबूब जब आपके उम्मती गुनाह करें और फिर आपकी बारगाह में हाज़िर होकर माफ़ी चाहें और आप सिफ़ारिश करें तो अल्लाह को बहुत मेहरबान पायेंगे। यहाँ 'जाऊ–क' फ़रमा कर इसी तरफ़ इशारा है कि क़ुरआन का फ़रमान जाऊ–क गवाह है कि हुज़ूर अपनी बारगाह में आए किसी उम्मती को महरूम नहीं फ़रमायेंगे। ★★★ ख़तर – ख़तरा ★★★ हाकिम हकीम दादो दवा दें ये कुछ न दें -- वहाबियों का अक़ीदा है कि हाकिम दाद यानी बख़्शिश देता है हकीम दवा और इनसे फ़ायदा होता है यानी इन से फ़ायदा होता है और हुज़ूर के वसीले से कुछ नहीं मिलता बल्कि यह शिर्क है। ★★★ मरदूद यह मुराद किस आयत ख़बर की है -- यानी वहाबियों का यह अक़ीदा जो पहले मिसरे में गुज़रा यह किस आयत से साबित है या किस ख़बर यानी हदीस से साबित है ★★★ शक्ले बशर में – इन्सानी शक्ल में ★★★ ख़मीरए माओ मदर – मिट्टी और पानी का ख़मीर ★★★ नूरे इलाह – अल्लाह तआ़ला का नूर ★★★ ख़ूक – सूअर ★★★ ख़र – गधा ★★★ नजदियों – नज्द के वहाबी लोगों (जो मुरतद हैं) से ख़िताब है ★★★ सक़र – जहन्नम ★★★ हाशा – हरगिज़ नहीं ★★★ बेबसर – बे आँख वाला, नासमझ, नादान ★★★ तुख़्मे करम – करम का बीज ★★★ समर – फल ★★★ अबुव्वत – बाप होना ★★★ उम्मुल बशर – इन्सानों की माँ हज़रते हव्वा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ★★★ उरूस – दुल्हन ★★★ पिसर – बेटा ★★★ नख़्ल – दरख़्त ★★★ जिला – सफ़ाई, रोशनी ★★★ पिछले पहर की अज़ान – दोनों हरम (मक्का, मदीना) में तहज्जुद के वक़्त मुअज़्ज़िन मीनारों पर जाकर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर सलातो सलाम की आवाज़ बलन्द करते हैं गोया नमाज़े फ़ज्र से पहले हुज़ूर की याद होती है ★★★ ग़फ़र – चांद की 28 मन्ज़िलों में से पन्द्रहवीं मन्ज़िल का नाम ★★★ हजर – पत्थर ★★★ तहिय्यत शजर की – पेड़ों का सलाम ★★★ बशर – इन्सान ★★★ जोत – रोशनी ★★★ बहर –

दरिया समन्दर वग़ैरह ★★★ बर – दुनिया का ख़ुश्क हिस्सा ★★★ तमलीक – मिल्कियत में होना ★★★ संग – पत्थर ★★★ अर्ज़ – गुज़ारिश ★★★ असर – तासीर ★★★ मलजा – ठिकाना ★★★ शोरीदा सर – परेशान हाल वाला ★★★ कर्रो फ़र – शान ो शौकत ★★★ अहले नज़र – नज़र वाले ★★★ क़ज़ा – हुक्म, फ़ैसला ★★★ ख़लीफ़ा – नाएब ★★★ ज़ुल जलाल – अल्लाह तआला का नाम मअनी बुज़ुर्गी वाला ★★★ हलीफ़ – वह दोस्त जिनमें हमेशा की दोस्ती का हलफ़ हो गया ★★★ क़ज़ा ो क़दर – तक़दीर ★★★ ख़ाना बाग़ – मकान की चारदीवारी के अन्दर का बाग़ ★★★ आतिश – आग ★★★ सक़र – जहन्नम ★★★ नवैद – ख़ुशख़बरी ★★★ ज़फ़र – कामयाबी ★★★ साइल – मांगने वाला ★★★ ला–नहर – न झिड़कना, मना न करना आयत 'वअम्मस साइला फ़ला तनहर' की तरफ़ इशारा है यानी मांगने वाले को न झिड़को ★★★ बयानन लि कुल्लि शय्यि –– जिसमें हर चीज़ का बयान है आयत 'नज़्ज़ल ना अ़लै कल किताब तिबयानन लिकुल्लि शय्यि' की तरफ़ इशारा है यानी हमने तुम पर क़ुआन उतारा हर चीज़ का रौशन बयान ★★★ मा अबर – जो गुज़र गया ★★★ मा ग़बर – जो आगे आएगा ★★★ बक़द्रे तालिब – मांगने के मुताबिक़ ★★★ बेशतर – बहुत ज़्यादा ★★★ फ़हम – समझ ★★★ अहबाब – दोस्त लोग ★★★ नाकर्दा अर्ज़ – जो बात कही न गई हो ★★★ तर्ज़े दिगर – दूसरा अन्दाज़ ★★★ दन्दान – दांत ★★★ नातख़्वाँ – नात पढ़ने वाला, तारीफ़ करने वाला ★★★ पायाब – कम गहरा पानी ★★★ आब – पानी, चमक ★★★ आबे गुहर – मोती की चमक ★★★ नदी गले गले – मुहावरा है मतलब बहुत गहरा पानी ★★★ दश्ते हरम – हरम का जंगल ★★★ सय्याद – शिकार करने वाला ★★★ मिट्टी अज़ीज़ – अपने हाथों से दफ़न करना ★★★ बे बाल ओ पर – बे यार ओ मददगार, अकेला ★★★ पारीना – पुराना ★★★ अबर – बहुत ज़्यादा ऐहसान करने वाला, बहुत नेक ★★★ ख़ूए बद – बुरी आदत ★★★ ख़सलते बद – बुरी आदत ★★★ पेशतर – पहले की ★★★ मुश्ताक़ तबअ लज़्ज़ते सोज़े जिगर की है – हुज़ूर की तारीफ़ करके ज़ख़्मी जिगर को लज़्ज़त देने की तबीयत मुशताक़ है।

भीनी सुहानी सुबह में ठंडक जिगर की है

खुबती हुई – दिल को अच्छी लगने वाली ★★★ सहर – सुबह ★★★ गजर – घंटे या घड़ियाल की आवाज ★★★ किश्ते अमल परी है –– उम्मीद की खेती ख़ूबसूरत है ★★★ कालिक जबीं की – माथे

की सियाही *** हजर – यहाँ हजरे असवद मुराद है *** मीज़ाबे ज़र – काबे शरीफ़ की छत में लगा सोने का परनाला *** हतीम – काबे शरीफ़ की उत्तर तरफ़ काबे के क़रीब ही एक छोटी सी कमानदार दीवार है जो पहले काबे की तामीर में शामिल थी। इस दीवार को हतीम कहते हैं। *** रहे मदीना – राहे मदीना *** चश्म – आँख *** वारूँ – क़ुरबान करूँ *** जाने नौ – नई ज़िन्दगी *** राहे जाँफ़ज़ा – ज़िन्दगी बढ़ाने वाला रास्ता *** वज़ए सर – सर रखना, ताज़ीमन झुकना *** ज़ाइरों – ज़्यारत करने वाले लोग *** कुर्सी – पहली कुर्सी से तख़्ते इलाही का मक़ाम और दूसरी कुर्सी से इमारत की तह की ऊँचाई मुराद है *** उश्शाक़े रौज़ा – रौज़ए अनवर के आशिक़ लोग *** सूए हरम – काबे शरीफ़ की तरफ़ *** मुज़दा – ख़ुशख़बरी *** सला – पुकार, दावत *** महबूबे रब्बे अर्श – अल्लाह तआ़ला के महबूब *** सब्ज़ क़ुब्बा – गुम्बदे ख़ज़रा *** अतीक़ – हज़रते अबूबक्र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** छाए मलाइका हैं लगातार है दुरूद -- हदीस में आया मज़ार शरीफ़ पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह और सत्तर हज़ार शाम को आते हैं जिनकी ड्यूटी रोज़ बदलती है और वो दुरूदो सलाम पढ़ते रहते हैं। एक बार के बाद उन फ़रिश्तों को दोबारा आने का हुक्म नहीं *** बदले हैं पहरे बदली में बारिश दुरर की है -- और यह आना जाना मोतियों की बरसात करता है *** सअदैन – दो सय्यारे एक ज़ुहरा दूसरा मुश्तरी और यह दोनों मुबारक समझे जाते हैं यहाँ हज़रते उमर और हज़रते अबूबक्र को कहा गया है *** क़िरान – दो मुबारक सितारों का एक ही बुर्ज में इकट्ठा होना *** माह – चाँद *** तजल्ली क़मर की – चाँद की रोशनी मुराद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम *** ऐ वाय – आह *** बेकसीए तमन्ना – आरज़ू की बेबसी यानी आरज़ू पूरी न होना *** आस – उम्मीद *** आम-तर -- जो सब के लिए आम हो ख़ास न हो *** मासूम – वह जिससे गुनाह होने की उम्मीद नहीं मसलन अम्बिया और फ़रिश्ते *** आसी – गुनाहगार *** सला – दावत *** हयाते अबद – हमेशा की ज़िन्दगी *** ऐशघर – आराम का घर यानी जन्नत *** जानाँ पे तकिया– हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर भरोसा *** निहाली – बिस्तर *** निहाल – ख़ुश *** बेनवाओ – फ़क़ीरो *** चत्र – तख़्त पर लगी छतरी *** धज – सजधज का अन्दाज़ *** कर्रो फ़र – शान ओ शौकत *** कू – गली

*** ख़ाक बसर – परेशान हाल *** सर बख़ाक – ज़मीन पर सर रखने वाले *** बसर – गुज़र *** ताजदार – बादशाह *** शय – चीज़ *** गदायाने दर – हुज़ूर के दर के भिकारी *** जारूकशों – जारूबकशों को संक्षिप्त किया गया जारूकश यानी झाड़ू लगाने वाले *** मुलूक – जमा मलिक की यानी बादशाह लोग *** फ़क़त – सिर्फ़ *** शाने जमाले तैबए जानाँ – मदीने पाक के जमाल की शान *** महज़ – सिर्फ़ *** वुसअत – गुंजाइश *** जलाल – बुज़ुर्गी, ग़ज़ब *** सूद – नफ़ा *** ज़रर – नुक़सान *** अन्जुमन आरा – महफ़िल संवारने वाला *** मा ओ शुमा – हम तुम सब लोग *** ज़रना ख़रीद – मुफ़्त की चीज़ *** कनीज़ – बांदी *** रूमी ग़ुलाम दिन – रूमी गोरे होते हैं इसलिए दिन को रूमी ग़ुलाम कहा गया *** हबशी बान्दियाँ शबे – हबशी बान्दी काली होती हैं इसलिए रातों को हबशी बांदियाँ कहा गया है *** गिनती कनीज़्ज़ादों में शामो सहर की है -- दिन और रात भी हुज़ूर के .गुलाम ही हैं *** फ़िरदौस – जन्नत का सबसे आला दर्जा *** शबीह – तस्वीर *** बाम – छत *** ख़ुल्द – जन्नत *** अबरार – नेक लोग *** अम्बर – एक चीज़ जिसके जलाने से ख़ुशबू पैदा होती है *** अबीर – एक ख़ुशबूदार सुफ़ूफ़ जो मुश्क गुलाब और सन्दल वग़ैरह से तैयार करते हैं *** अदना – मामूली *** मुश्के तर – ताज़ा मुश्क *** शनाख़्त – पहचान *** रहगुज़र – रास्ता *** तर्ज़े अदब – ताज़ीम का तरीक़ा *** ला – नहीं *** न हाजत अगर की है -- यानी इस सरकार में अगर मगर कहकर टालने की भी आदत नहीं है *** ख़ू – आदत *** दरगुज़र – माफ़ कर देना *** तवक़्क़ो – उम्मीद *** बाबे अता – अता का दरवाज़ा *** निधरे दर बदर – बेघर के दर–ब–दर फिरने वाले *** रूयत – दीदार *** बर्ग ो बर – फूल और पत्ते *** ख़ानाज़ाद – मालिक के घर में पैदा होने वाला लौंडी का बच्चा *** कुहना – पुराना *** सनकी – हवा का धीरे धीरे चलना

वो सरवरे किश्वरे रिसालत जो अर्श पर जलवागर हुए थे

सरवर – सरदार *** किशवर – मुल्क, विलायत *** रिसालत – अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना *** निराले – अनोखे *** तरब – ख़ुशी *** शादियाँ – ख़ुशियाँ *** चमन – बाग़ *** मलक – फ़िरिश्ते *** फ़लक – आसमान *** लय – आवाज़, लहजा *** घुर बोलना – बुलबुल का चहकना *** अनादिल –

बहुत सी बुलबुलें ★★★ शादी – ख़ुशी ★★★ अनवार – जमा नूर की रोशनियाँ ★★★ नफ़्हात – ख़ुशबुएं ★★★ फबन – सजावट ★★★ हजर – यहाँ मुराद हजरे असवद है ★★★ स्याह पर्दा – मुराद ग़िलाफ़े काबा है जो काले रंग का होता है ★★★ तजल्लीए ज़ाते बह्त – ह़क़ तआ़ला की तजल्ली ★★★ ताऊस – मोर व परिन्द ★★★ वज्द – बेख़ुदी की हालत या मस्त होना ★★★ मीज़ाबे ज़र – सोने का परनाला जो काबा शरीफ़ की छत में लगा है जिससे बारिश का पानी गिरता है ★★★ हतीम – मीज़ाबे ज़र के नीचे ज़मीन पर एक छोटी सी दीवार अर्ध गोले की तरह ★★★ नसीम – सुबह की ठंडी हवा ★★★ ग़िज़ाल – हिरन ★★★ नाफ़े – कसतूरी की थैली जो हिरन के पेट से निकलती है ★★★ हुस्ने तज़ई – शानदार बनाव व सिंगार ★★★ आबे रवाँ – एक क़िस्म का बारीक कपड़ा, बहता हुआ पानी ★★★ हुबाब – पानी का बुलबुला, शीशे के गोले जो सजावट के लिए लगाए जाते हैं ★★★ ताबाँ – चमकदार ★★★ पुरदाग़ – धब्बों से भरा हुआ ★★★ मलगजा – मैला ★★★ तारे निगाह – नज़र ★★★ बदले – वो कपड़े जो रेशम और सोने चांदी के तारों से बुने गए हों ★★★ पुर ग़म – ग़म से भरा हुआ ★★★ क़ुदसी – फ़िरिश्ते ★★★ जिनाँ – जन्नत ★★★ बाड़ा – ख़ैरात ★★★ जबीं – पेशानी, माथा ★★★ जोबन – हुस्न ★★★ गुलज़ारे नूर – नूर का बाग़ ★★★ तहवील – बदलना ★★★ मिहर – सूरज ★★★ रुत – मौसम ★★★ तजल्लीए ह़क़ का सेहरा – अल्लाह के नूर का सेहरा ★★★ दो रोया – दोनों तरफ़ ★★★ क़ुदसी – फ़िरिश्ते ★★★ ख़ाके गुलशन – बाग़ की धूल ★★★ नामुरादी – महरूमी ★★★ पुश्त – पीठ ★★★ ज़ीं – ज़ीन, काठी ★★★ शल्लक – बन्दूकें या तोप जो सलामी के लिए छोड़ी जाती हैं ★★★ रख़्श – घोड़ा ★★★ ग़िज़ाल – हिरन ★★★ दम ख़ुर्दा – सांस फूला हुआ ★★★ शुआयें – किरणे ★★★ बुक्के – शोले उठना ★★★ साइक़े – बिजलियाँ ★★★ गर्दे रहे मुनव्वर – रोशनी से भरे रास्ते की गर्द ★★★ बुराक़ – वह तेज़ रफ़्तार चौपाया जिस पर सवारी करके हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेराज को गए ★★★ नक़्शे सुम – खुर के निशान ★★★ नमाज़े अक़सा – मेराज शरीफ़ में मस्जिदे अक़सा में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई तमाम नबियों ने आपके पीछे नमाज़ पढ़ी इसी को नमाज़े अक़सा कहते हैं ★★★ सिर्र – राज़, भेद ★★★ अयाँ – ज़ाहिर ★★★ अव्वल ो आख़िर – सबसे पहले सबसे बाद ★★★ दस्त बस्ता – हाथ पर हाथ बांधे ★★★ नुजूम – सितारे ★★★

अफ़लाक – तमाम आसमान ★★★ जाम ो मीना – प्याले ग्लास ★★★ उजालना – साफ़ करना ★★★ मेहरे अनवर – रौशन सूरज ★★★ जलाले रुख़सार – चेहरे का हुस्न ★★★ फ़लक – आसमान ★★★ तप – बुख़ार ★★★ तपकना – टीस पड़ना ★★★ अन्जुम – सितारे ★★★ जोशिशे नूर – नूर की ज़्यादती ★★★ आबे गौहर – मोती की चमक ★★★ सफ़ाए रह – रास्ते का चिकना होना ★★★ बहरे वहदत – यकताई का समन्दर ★★★ रेग – रेत ★★★ ज़िल्ले रहमत – रहमत का साया ★★★ रुख़ के जलवे – चेहरे की तजल्लियाँ ★★★ ज़रबफ़्त – कमख़्वाब एक क़िस्म का कपड़ा जो सोने के तारों से बुनते हैं ★★★ ऊदी – सुर्ख़ी लिए हुए काले रंग का, एक बैंगनी रंग ★★★ अतलस – एक क़िस्म का रेशमी कपड़ा ★★★ धूप छांव – एक क़िस्म का रेशमी कपड़ा जिसमें दो रंग मिले हुए होते हैं ★★★ सर्वे चमाँ – बाग़ों का सर्व ★★★ ख़िरामा – धीमे धीमे ★★★ सिदरा – वह मक़ाम जिससे आगे जिब्रीले अमीं नहीं जा सकते ★★★ ईन ो आँ से गुज़रना – ईन यह आँ वह यानी सम्तों व दिशाओं से निकल जाना ★★★ . कुदसियों – फ़िरश्तों ★★★ रुहुल अमीं – हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ★★★ रविश – रफ़्तार ★★★ ख़िरद – अक़्ल, होश ★★★ दहर – ज़माना ★★★ जिलू – साथ में चलना ★★★ मुर्ग़े अक़्ल – अक़्ल का मुर्ग़ ★★★ दम चढ़ना – सांस फूलना, हांपना ★★★ क़वी – मज़बूत ★★★ मुर्ग़ाने वहम – वहमो गुमान के परिन्दे ★★★ ख़ूने अन्देशा – डर कर ख़ून की कै करना ★★★ ताजे शरफ़ – बुज़ुर्गी का ताज ★★★ निसार – क़ुर्बान ★★★ बोसा – चूमना ★★★ मुजरा – सलामी ★★★ बज़्मे वाला – ऊँची महफ़िल वाले मुराद फ़िरिश्ते हैं ★★★ गिर्द क़ुर्बान होना – सदक़े होना ★★★ ज़ियायें – रोशनियाँ ★★★ हुज़ूरे ख़ुर्शीद – सूरज के सामने ★★★ समाँ – मन्ज़र ★★★ पैके – क़ासिद ★★★ कुशादा – खुले हुए ★★★ कलीम – हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम का लक़ब ★★★ क़रीं – क़रीब ★★★ सरवर – सरदार ★★★ मुमज्जद – बुज़ुर्ग ★★★ निसार – क़ुर्बान ★★★ निदा – आवाज़ ★★★ तबारकल्लाह – तेरी ज़ात पाक, यह तअज्जुब के वक़्त बोला जाता है ★★★ ज़ेबा – लाएक़ ★★★ बेनियाज़ी – किसी का मुहताज न होना ★★★ जोश – ज़ोर ★★★ लनतरानी – अल्लाह तआ़ला का फ़रमान हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम से कि ऐ मूसा तुम मुझे नहीं देख सकोगे ★★★ तक़ाज़े – तलब, ख़्वाहिश ★★★ विसाल – मुलाक़ात, मिलना ★★★ सर झुका ले – यानी मान ले, तसलीम कर ले ★★★ गुमान – ख़्याल ★★★

लाले पड़ना – मुहावरा है मतलब दुश्वार होना ★★★ जिहत – तरफ़, दिशा ★★★ सुराग़ – पता ★★★ ऐन – कहाँ ★★★ मता – कब ★★★ कैफ़ – किस तरह ★★★ इला – कहाँ, तक ★★★ मरहले – वह जगह जहाँ सफ़र के लिए मुसाफ़िर क़याम करें ★★★ पैहम – लगातार ★★★ जलाल – बुज़ुर्गी ★★★ हैबत – ख़ौफ़ ★★★ जमाल – हुस्न ★★★ रविश – रफ़्तार ★★★ फ़ेअल – काम ★★★ तनज़्ज़ुलों – उतरना, घटना, तरक़्क़ी का मुक़ाबिल ★★★ तरक़्क़ी अफ़ज़ा – तरक़्क़ी बढ़ाने वाला ★★★ दना – क़रीब हुआ ★★★ तदल्ला – ख़ूब उतर आया, यह 'सुम–म दना फ़–त–दल्ला' की तरफ़ इशारा है जो क़ुर्आन की एक आयत है जिसका तर्जमा है कि फिर वह जलवा नज़दीक हुआ फिर ख़ूब उतर आया ★★★ बजरा – एक क़िस्म की गोल और ख़ूबसूरत कश्ती ★★★ तमव्वुज – लहरें उठना ★★★ बहर – समन्दर ★★★ हू – अल्लाह तआला की ज़ात मुराद है ★★★ तरारा – छलांग ★★★ क़स्रे दना – दना का महल ★★★ जा – जगह ★★★ दुई – दो होना ★★★ ग़ुंचा – कली ★★★ गुल – फूल ★★★ तुकमा – बटन ★★★ मुहीत – दाइरे का गोल ख़त, वृत की परिधी ★★★ मरकज़ – वृत का केन्द्र ★★★ फ़ासिल – जुदा करने वाला ★★★ ख़ुतूत – रेखायें ★★★ वासिल – मिले हुए ★★★ कमान – वृत की जीवा ★★★ दायरे – वृत का बहुवचन ★★★ हिजाब – पर्दा ★★★ वस्ल – मिलना ★★★ फ़ुरक़त – जुदा होना ★★★ ज़ुअफ़ – कमज़ोरी ★★★ तश्नगी – प्यास ★★★ ज़ाहिर – खुला हुआ ★★★ बातिन – छुपा हुआ ★★★ इम्कान – मुमकिन होना ★★★ नुक़्ते – बिन्दू ★★★ मुहीत – वृत की परिधी ★★★ नज़्र – वह चीज़ें जो छोटों की तरफ़ से बड़ों को पेश की जाती हैं ★★★ इनामे ख़ुसरवी – शाही इनाम ★★★ गुलूए पुर नूर – नूर से भरी हुई गर्दन ★★★ ज़ुबान को इन्तिज़ारे गुफ़्तन – गुफ़्तगू का इन्तिज़ार ★★★ हसरते शनीदन – कुछ सुनने का शौक़ ★★★ बुर्ज बतहा – सितारे का मक़ाम ★★★ माहपारा – चाँद का टुकड़ा ★★★ बहश्त – जन्नत ★★★ ख़ुल्द – जन्नत ★★★ क़मर – चाँद ★★★ सुरूरे मक़दम – किसी के आने की ख़ुशी ★★★ ताबिशें – चमक ★★★ महे अरब – अरब के चाँद ★★★ जिनाँ – जन्नत ★★★ गुलशन – बाग़ ★★★ झाड़ फ़र्शी – पौधों का ज़मीन तक लटकना ★★★ कंवल बनना – मुहावरा है मतलब खिल जाना ★★★ तरब – ख़ुशी ★★★ नाज़िश – अदा ★★★ कशाकशी आरा – खींचा तानी ★★★ चाँदे हक़ – अल्लाह तआला का चाँद ★★★ तड़के – सुबह सवेरे ★★★ नबीए रहमत –

रह़मत वाले नबी ★★★ शफ़ीए उम्मत – उम्मत की शफ़ाअत फ़रमाने वाले ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते ★★★ इनायत – मेहरबानी ★★★ ख़ल्अतों – वह पोशाकें जो बादशाहों की तरफ़ से लोगों को इ़ज़्ज़त के तौर पर मिलती हैं ★★★ सनाए सरकार – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तारीफ़ करना ★★★ रवी – ग़ज़ल के क़ाफ़िए में सबसे पिछला बार बार आने वाला हर्फ़ ★★★ क़ाफ़िए – रदीफ़ से पहले का हर्फ़

क़सीदए नूर

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का

तैबा – मदीना शरीफ़ ★★★ बाड़ा – ख़ैरात ★★★ सदक़ा – ख़ैरात

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

मदीने में हर दिन सुबह को नूरी सरकार से नूरानी ख़ैरात तक़सीम होती है। नूरानी तारा भी नूर की ख़ैरात लेने अपनी नूरानियत बढ़ाने सरकार की बारगाह में हाज़िर होता है।

मस्त – मतवाला ★★★ कलिमा नूर – नूरानी बात ★★★ ★★★ मजरा – आदाब बजा लाना, सलाम करना ★★★ बारह बुर्ज – बारह गुम्बद ★★★ कस्रे ख़ुल्द – जन्नत के महल ★★★ सिदरा – सातवें आसमान पर बेरी का दरख़्त जिसकी लम्बाई व चौड़ाई पूरब से पश्चिम तक है और जो हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम का मक़ाम है ★★★ अर्श – तख़्ते ख़ुदावन्दी ★★★ फ़िरदौस – जन्नत का आली मक़ाम ★★★ मुसम्मन – आठ कोने ★★★ बुर्ज – गुम्बद ★★★ मशकूए – महल सुलतानी का बालाख़ाना ★★★ आला – बलन्द ★★★ बिदअत – दीन में ख़राबी वाली नई बात ★★★ ज़ुलमत – तारीकी ★★★ रंग बदला – हालात तबदील होना ★★★ माह – चाँद ★★★ सुन्नत – तरीक़ए रसूल ★★★ मेहर – सूरज ★★★ तलअत – निकलना ★★★ बदला – इन्तेक़ाम ★★★ बख़्त – क़िस्मत ★★★ गदा – मांगने वाला ★★★ रुख़ – चेहरा ★★★ क़िब्ला – सम्त, दिशा ★★★ पुश्त – पीठ ★★★ शिमला – पगड़ी का सिरा जो पीठ पर लटकता है ★★★ तूर – उस पहाड़ का नाम जिस पर हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला के नूर की तजल्ली को देखा ★★★ सहीफ़ा – किताब नामा यानी चार आसमानी किताबों के अलावा दूसरे नबीयों पर जो किताबनामे उतरे उन्हें सहीफ़ा कहते हैं ★★★ बीनी – नाक ★★★ रख़्शाँ – चमकने वाला ★★★ बक़्क़ह – शोला ★★★ लिवाउल ह़म्द – हुज़ूर अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का वह झंडा जिसके नीचे रोज़े

क़ियामत तमाम उम्मत होगी ★★★ फरैहरा – झंडे का कपड़ा ★★★ मुस्हफ़े – क़ुर्आन ★★★ आरिज़ – रुख़्सार ★★★ ख़त – दाढ़ी ★★★ शफ़ीआ – बख़्शिश करने वाला ★★★ सियाहकार – गुनाहगार ★★★ क़बाला – बयनामा ★★★ आबे ज़र – सोने का पानी ★★★ आरिज़ – रुख़्सार, गाल ★★★ एजाज़ – मोजिज़ा ★★★ लम्आ – चमकार, रोशनी ★★★ हैबत – रोअब ★★★ कफ़्शे पा – पांव की जूती ★★★ मिश्कात – फ़ानूस, चराग़दान ★★★ ज़ुजाजा – कांच, शीशा ★★★ सीमा – चांदनी ★★★ उज़्व – बदन का हिस्सा ★★★ असरा – शबे मेराज ★★★ बर – पहलू, जिस्म ★★★ बज़्म – महफ़िल ★★★ वह्दत – यकताई, एक होना, उस जैसा दूसरा न होना ★★★ दोबाला – दुगना ★★★ तूर – उस पहाड़ का नाम जिस पर हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला के नूर की तजल्ली को देखा ★★★ इक्का – चराग़ ★★★ वस्फ़ – ख़ूबी, तारीफ़ ★★★ रुख़ – चेहरा ★★★ लहरा – नग़मा लय व सुर में ★★★ कुन – हुक्में ख़ुदावन्दी पैदा हो जा सब कुछ पैदा हो गया ★★★ तुरफ़ा – उम्दा, अनोखा ★★★ आयह – आयत ★★★ ग़ैर क़ाइल – मुख़ालिफ़, तसलीम न करने वाला ★★★ देखा न भाला – जांच पड़ताल न की ★★★ मन रआ – हदीस में है हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जिसने मुझे देखा उसने ह़क़ को देखा इसी तरफ़ इशारा है ★★★ मुज़्दा – बशारत, ख़ुशख़बरी ★★★ तीरह – स्याह, काली रात ★★★ धड़का – ख़ौफ़ डर ★★★ भरन – मूसलाधार तेज़ बारिश ★★★ किश्ते कुफ़्र – कुफ़्र की खेती ★★★ अहला – तेज़ पानी बाढ़ की तरह ★★★ नारियों – दोज़ख़ियों ★★★ दौर – ज़माना ★★★ नस्ख़ – रद करना, ख़त्म करना ★★★ अदयाँ – बहुत से मज़हब ★★★ ताजवर – ताज वाले बादशाह यानी हुज़ूर अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ कच्चा – नापुख़्ता, कमज़ोर ★★★ गदा – मांगने वाला ★★★ तोड़ा – थैली रुपयों से भरी ★★★ तोड़ा – क़हत, क़िल्लत, टोटा, कमी ★★★ कासा – कटोरा ★★★ माहे नौ – नया चाँद ★★★ तैबा – मदीना मुनव्वरा ★★★ नाज़ेबा – बदनुमा, बेमेल ★★★ मेहर – सूरज ★★★ याँ – यहाँ ★★★ मुचलका – इक़रारनामा, अहदनामा ★★★ दाग़े सजदा – माथे पर सजदे का निशान ★★★ तमग़ा – मेडल ★★★ क़मर – चाँद ★★★ शमा साँ – शमा की तरह ★★★ बानूर – नूर वाला ★★★ लौ लगाना – दिल का तवज्जो के साथ ख़्याल करना ★★★ अन्जुमन– महफ़िल ★★★ नज्म – सितारे ★★★ बज़्म – महफ़िल ★★★ हलक़ा– घेरा ★★★ हाला – जो बरसात में चाँद के गिर्द होता है ★★★ ऐन –

बिल्कुल ★★★ दोशाला – चादरों का जोड़ा मुराद दो साहबज़ादयाँ हज़रते रुक़य्या और हज़रते कुलसूम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा जो एक के बाद एक हज़रते उसमाने ग़नी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के निकाह में आईं ★★★ ज़ुन्नूरैन – हज़रते उसमाने ग़नी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लक़ब ★★★ ताबिशें – नूर का उजाला ★★★ तड़का – सुबह सादिक़, पौ फटना ★★★ मेहर – सूरज ★★★ ख़ासा – काफ़ी ★★★ धुंधलका – सूरज छुपने के बाद की आसमान में छाई सियाही ★★★ मुक़ाबिल – सामने ★★★ पहरों – घन्टों ★★★ मुँह निकल आया – चेहरा उतर गया, कमज़ोर हो गया ★★★ क़ब्रे अनवर – नूरानी क़ब्र ★★★ क़स्रे मुअल्ला – बलन्द महल ★★★ अतलस – चमकदार ★★★ क़ुब्बा – गुम्बद ★★★ नज़अ – रूह निकलने का वक़्त ★★★ शैदा – आशिक़ ★★★ उरूस – दुल्हन ★★★ ताब – चमक ★★★ मेहर – सूरज ★★★ कुश्ता – क़त्ल किया हुआ मारा हुआ ★★★ वज़अ – बनावट ★★★ वाज़ेअ – बनाने वाला ★★★ मजाज़न – लफ़्ज़ का अपने मअना को छोड़कर दूसरे मअना में इस्तेमाल होना ★★★ अम्बिया – बहुत से नबी ★★★ अजज़ा – हिस्से ★★★ जुमला – पूरा का पूरा ★★★ इलाक़ा – तअल्लुक़, निसबत ★★★ मेहर सूरज ★★★ मह – चाँद ★★★ इतलाक़ – वारिद करना, बोला जाना ★★★ इस्तिआरा – मांग लेना हक़ीक़ी और मजाज़ी मअना ★★★ सुरमगी – सुर्मा लगी हुई ★★★ हरीम – जिसको अल्लाह तआ़ला ने इज़्ज़त दी हो ★★★ मुशकीं – मुश्क यानी कस्तूरी वाला ★★★ ग़ज़ाल – हिरन ★★★ फ़ज़ाए लामकाँ – लामकाँ की बहार --- लामकाँ – वह जगह जहाँ पर छः यानी सारी दिशाओं तक को न बोला जा सके ★★★ रमना – घूमना फिरना सैर करना ★★★ ताब – चमक, नूर ★★★ हुस्ने गरम – हुस्न की गर्मी ★★★ नौ बहार – नौबहार यानी बसन्त का मौसम शुरू होना ★★★ महरे क़ुद्स – अल्लाह तआ़ला की जलवागाह ख़ास ★★★ तवस्सुत – वसीला ★★★ हदे औसत – बीच का वास्ता ★★★ सुग़रा – छोटा ★★★ कुबरा – बड़ा ★★★ सब्ज़ा गर्दूं – सब्ज़ रंग सा लिए हुए आसमान ★★★ बहर – वास्ते ★★★ पा-बोस – क़दम चूमना, ख़ुशामद के लिए पांव छूना ★★★ बुराक़ – घोड़े की तरह एक जन्नती जानवर जिस पर बैठ कर हुज़ूर मेराज को गए ★★★ कोड़ा – चाबुक ★★★ दीद – देखने ★★★ नक़्शे सुम – टाप के निशान ★★★ अक्से सुम – खुर के निशान ★★★ चार चाँद – मरतबा या इज़्ज़त देना, रौनक़ ज़्यादा करना ★★★ सीम – चांदी ★★★ ज़र – सोना ★★★ गर्दूं – आसमान ★★★ महद – पालना ★★★ मुशाबा – मिस्ल, मानिन्द, जैसा ★★★

सिब्तैन – दो नवासे यानी हज़रते इमाम हसन और हज़रते इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा ★★★ जामो – लिबास ★★★ नीमा – पारसाई, ईमानदारी ★★★ अयाँ – ज़ाहिर, खुला हुआ ★★★ तवाम – दो बच्चे जो एक साथ पैदा हों ★★★ दो वरक़ा – काग़ज़ के दो पेज ★★★ गेसू – बाल ★★★ दहन – मुँह ★★★ अबरू – भवें ★★★ अह़मदे नूरी – हज़रते अबुल हुसैन अह़मद नूरी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के फ़ैज़ की तरफ़ इशारा है ★★★ फ़ैज़ – फ़ायदा, सख़ावत ★★★ क़सीदा – नज़्म की एक क़िस्म जिसमें किसी की तारीफ़ या हिजो हो।

तिरा ज़र्रा महे कामिल है या ग़ौस

ज़र्रा – रेत का सबसे छोटा टुकड़ा, रोशनदान की धूप में चमकने वाला हक़ीर ज़र्रा ★★★ मह – चाँद ★★★ कामिल – पूरा, पूर्ण ★★★ ग़ौस – फ़रयाद को पहुँचने वाला, मुराद पूरी करने वाला ★★★ यम – दरया तेज़ बहने वाला ★★★ साइल – मांगने वाला ★★★ सालिक – मुराद वह वली है जो अपने होश व हवास में हो, जो मजज़ूब न हो ★★★ वासिल – मिला हुआ ★★★ क़दे बे साया ज़िल्ले किबरिया – अल्लाह तआ़ला का परतौ ★★★ बे साया – जिसका साया न हो यानी हुज़ूर सरवरे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ ज़िल – साया, परतौ ★★★ शर्क़ – सूरज निकलने की जगह ★★★ ग़र्ब – सूरज का डूबना ★★★ क़लमरू – हुकूमत, सल्तनत ★★★ हरम – काबे शरीफ़ व मदीने शरीफ़ के आस पास के एक ख़ास मक़ाम को ह़रम कहते हैं ★★★ ता – तक ★★★ हिल – हरम से बाहर का इलाक़ा ★★★ दिले इश्क़ – मुराद दिल इश्क़ से भरा हुआ ★★★ रुख़ हुस्न – ख़ूबसूरत चेहरा ★★★ दिल आरा – दिल को अच्छी लगने वाली ★★★ तब ो ताब – चमक दमक ★★★ गुल – फूल ★★★ गिल – मिट्टी ★★★ आब – पानी ★★★ गिल – मिट्टी ★★★ सहरा – रेगिस्तानी इलाक़ा ★★★ नज्द – जगह का नाम ★★★ महमल – ऊँट का कजावा जिस पर पर्दा होता है ★★★ चम्पई रंगत – चंपा के फल जैसी हुसैनी रंगत, सुनहरी रंगत ★★★ सुबहे दिल – दिल की ख़ुशी ★★★ गुलिस्ताँ ज़ार – हरा भरा फूलों का बाग़ ★★★ पंखड़ी – फूल पत्ती ★★★ कली सौ ख़ुल्द का हासिल – सौ जन्नत का नतीजा तेरी एक कली ★★★ उगाल – उगली हुई, मुँह से फेंकी हुई ★★★ क़मर – चाँद ★★★ मह – चाँद ★★★ कामिल – पूर्ण ★★★ अर्शे दोएम – दूसरा अर्श ★★★ अफ़लाक – आसमान ★★★ कुर्सीए मन्ज़िल – आरामगाह

★★★ मुरसल – वो रसूल जिन पर किताब नाज़िल हुई ★★★ जाह वाले – मरतबे वाले ★★★ फ़ुयूज़ आलिम उम्मी – हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़ैज़ ★★★ अयाँ – ज़ाहिर हो जाना ★★★ माज़ी – भूत काल ★★★ मुस्तक़बिल – भविष्य ★★★ क़र्नो – मन्ज़िल ★★★ आरिफ़ – जानने वाला, पहुँचाने वाला, विलायत की एक मन्ज़िल ★★★ मलक – फ़रिश्ते ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ ज़ाकिर – ज़िक्र करने वाला ★★★ शाग़िल – याद में मशग़ूल ★★★ अर्शे सानी – दूसरा अर्श ★★★ साहिल – कनारा ★★★ मलाइक – फ़रिश्ते ★★★ ज़ौ – रोशनी, चमक ★★★ माह – चाँद ★★★ आक़िल – अक़्ल वाला।

जो तेरा तिफ़्ल है कामिल है या ग़ौस

तिफ़्ल – नया पैदा हुआ बच्चा ★★★ कामिल – पूर्ण ★★★ तुफ़ैली – किसी दूसरे की वजह से जिसका लिहाज़ किया जाए ★★★ वासिल – मिला हुआ, मिलने वाला ★★★ तसव्वुफ़ – अल्लाह तआ़ला की पहचान का इल्म ★★★ तसर्रुफ़ – इख़्तेयार ★★★ आमिल – अमल करने वाले ★★★ तेरी सैर इलल्लाह है – अल्लाह तआ़ला की तलाश में निकलना ★★★ फ़िल्लाह –– फ़नाफ़िल्लाह होना ★★★ मूसिल – मिला हुआ ★★★ तू नूरे अव्वल व आख़िर है मौला – यानी आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नूर हैं और हुज़ूर अव्वल व आख़िर हैं ★★★ मलक – फ़रिश्ते ★★★ साफ़िल – नीचे वाला, पेंदा ★★★ आजिल – जल्दी करने वाला ★★★ आजिल – क़ियामत ★★★ ★★★ किताबे हर दिल आसारे तसव्वुफ़ –– दिल की हर किताब मारिफ़त की निशानी है ★★★ फ़ुतूहुल ग़ैब – ग़ौसे पाक की एक किताब का नाम ★★★ फ़ुतूहात – फ़तह की जमा ★★★ ख़ुसूस – ख़ास करना ★★★ आफ़िल – नीचे जाने वाला ★★★ मन्सूब – निसब किया हुआ ★★★ मरफ़ूअ – ऊँचा, बलन्द ★★★ जा – जगह ★★★ इज़ाफ़त – निसबत रखना ★★★ रफ़अ – बलन्द करना ★★★ कामी – तेरे काम करने वाले ★★★ मशक़्क़त – मेहनत ★★★ बरी – छूटा हुआ ★★★ फ़ाइल – काम करने वाला ★★★ अह़द – अकेला, अल्लाह तआ़ला का नाम ★★★ अह़मद – हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम ★★★ कुन – हो जा ★★★ कुन मकुन – होना न होना ★★★ रिफ़अत – बलन्दी ★★★ बिफ़ज़्लिही – अल्लाह के फ़ज़्ल से ★★★ अफ़ज़ल – बेहतर ★★★ फ़ाज़िल – बेहतर ★★★ मुन्तक़ा – टिका हुआ ★★★ मह – चाँद ★★★ ख़ुर – सूरज ★★★ ख़ते बातिल – फीकी रोशनी मुराद है ★★★ माएल होना – दूसरी तरफ़ चले

जाना *** क़मर – चाँद *** फ़लक – आसमान *** तिला सोना *** मोहर – स्टैम्प *** टकसाल – रुपये पैसे ढालने का कारख़ाना *** ख़ारिज – निकाला हुआ *** मरकज़ – केन्द्र *** हामिल – उठाने वाला *** बरज़ख़ – मरने के बाद क़ियामत से पहले अपने आमाल के मुताबिक़ जहाँ रहना है *** मिन्नत – एहसान नेकी *** मुत्तसिल – मिला हुआ *** वासिल – मिला हुआ, जुड़ा हुआ *** आख़िज़ – लेने वाला *** फ़ाएज़ – फ़ैज़ पहुँचाने वाला *** क़ाबिल – क़बूल करने वाला *** फ़ाइल – करने वाला *** नतीजा – परिणाम *** औसत – दरमियान का *** गर – अगर *** अला तूबा लकुम – ख़ुशख़बरी उनके लिए *** शबो रोज़ – सुबह शाम *** विर्दे दिल – दिल से याद करना *** अजम – अरब के अलावा तमाम मुल्क *** जा – जगह *** है शरहे इस्मे क़ादिर – लफ़्ज़े क़ादिर नाम की वज़ाहत *** मतन – जिसकी तफ़सील की जाए *** हामिल – उठाने वाला *** जबीं – पेशानी, माथा *** फ़रसाई – रगड़ना, घिसना *** कहगिल – भूसा मिली हुई मिट्टी प्लास्तर के लिए *** सारिऊ – जल्दी करो *** मुसताजिल – जल्दबाज़, तेज़ दौड़ने वाला *** फ़ितरियात – पैदाइशी *** तसर्रुफ़ – इख़्तियार वाले *** मज़हर – ज़ाहिर होने की जगह *** फ़ाइल – काम करने वाला *** हाशा – हरगिज़ नहीं *** साइल – मांगने वाला *** बाज़िल – सख़ी

बदल या फ़र्द जो कामिल है या ग़ौस

बदल – अबदाल जो वली की एक क़िस्म है जो ज़मीन के सातवें हिस्से का हाकिम होता है *** फ़र्द – विलायत के एक आला दर्जे पर होता है *** कामिल – पूर्ण, पूरा *** मुस्तकमिल – कमाल करने वाला *** ज़ाहिल – भूलने वाला, ग़ाफ़िल *** ज़िक्रुल्लाह – अल्लाह का ज़िक्र *** अनस्सय्याफ़ – ज़्यादा चलने वाली तलवार *** साइल – हमला करने वाला (साइल जब स्वाद से लिखा हो और सीन से लिखा हो तो उसके मअना मांगने वाला) *** सुख़न – लफ़्ज़ *** अस्फ़िया – सूफ़ी का बहुवचन *** मग़ज़ मअना – बीज की तरह *** औलिया – वली का बहुवचन *** जिस्मे इरफ़ाँ – मारिफ़त का जिस्म *** तिल – मुराद आँख का तिल है *** उलूहिय्यत – अल्लाह होना *** नुबुव्वत – नबी होना *** अफ़ज़ाल – फ़ज़ल का बहुवचन *** जुज़ नुबुव्वत – नुबुव्वत का ख़त्म होना *** हाएल – बीच में आने वाला ***

उलूहिय्यत – अल्लाह होना ★★★ आतिल – ख़ाली ★★★ सहाबिय्यत – सहाबी होना ★★★ ताबिइय्यत – सहाबा को देखने वाले बुज़ुर्गों को तबिइ कहते हैं और जिन बुज़ुर्गों को यह फ़ज़ीलत हासिल हो उसे तबिइय्यत कहते हैं ★★★ क़ादिरी मंज़िल – हुज़ूर ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सिलसिले की मंज़िल ★★★ ताबिई – सहाबा को देखने वाले बुज़ुर्गों को तबिइ कहते हैं ★★★ फ़ज़ूँ – बड़ा ★★★ मुजमलन – बग़ैर तफ़सील के, संक्षेप में ★★★ फ़ाज़िल – फ़ज़ीलत, ज़्यादा बलन्द ★★★ शहरिस्ताने इरफ़ान – इरफ़ान के शहर के मैदान में ★★★ रमना – पार्क, भाग दौड़ का मैदान ★★★ चिश्ती, सोहरवर्दी, नक़्शबन्दी – तरीक़त के सिलसिलों के नाम ★★★ माइल – खिंचा हुआ ★★★ तज्दीद – दूसरी बार ★★★ ख़ाती – जानबूझ कर ख़ता करने वाला ★★★ मुस्तबदिल – बदल करने वाला ★★★ क़मर – चाँद ★★★ ख़ुर – सूरज ★★★ अहले नूर – नूर वाले ★★★ फ़ाज़िल – फ़ज़ीलत, ज़्यादा बलन्द ★★★ गुफ़तम – मैंने किया या मैंने कहा ★★★ वाहिब – बख़्शने वाला ★★★ मुक़रिज़ – क़र्ज़ देने वाला ★★★ नाइल – पाने वाला, पहुँचने वाला ★★★ ताजे अहले दिल – उनका ताज जिनके दिल रौशन हैं ★★★ मशाइख़ – शैख़ का बहुवचन ★★★ तफ़ज़ील – अफ़ज़लियत, बरतरी ★★★ बहुक्मे औलिया – अल्लाह वालों के हुक्म से ★★★ बातिल – ग़लत ★★★ वहम – वसवसे, बुरे ख़्यालात ★★★ मसावत – बराबरी ★★★ जुराअत – हिम्मत ★★★ हाइल – ख़ौफ़नाक, डरावनी ★★★ ख़ुद्दाम – ख़ादिम या नौकर का बहुवचन ★★★ अक़ताब – विलायत की एक मन्ज़िल ★★★ इदबार – कमक़िस्मती ★★★ मुदबिर – पीठ दिखाने वाला ★★★ ज़ी इक़बाल – अच्छी क़िस्मत वाला ★★★ मुक़बिल – ख़ुदा का हुक्म क़बूल करने वाला ★★★ मतरुद ो मख़्ज़ूल – भगाया हुआ ज़लील ★★★ तारिक – छोड़ने वाला ★★★ ख़ाज़िल – हारने वाला ★★★ सितमकोरी – ज़ुल्म ढाना ★★★ क़ाइल – मानने वाला ★★★ फ़ज़्ले मुरतज़ा – हज़रते अली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का फ़ज़्ल व करम ★★★ ताब – बर्दाश्त की ताक़त ★★★ फ़लकवार – आसमान की तरह ★★★ ज़िल्ल – साया।

तलब का मुँह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस

तलब – सवाल, मांग ★★★ कामिल – पूर्ण, पूरा ★★★ दुहाई – फ़रयाद, पनाह ★★★ मुहीयुद्दीन – लक़ब सरकारे ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का मअना दीन को ज़िन्दा करने वाला ★★★ संगीं बिदअते – दीन में निकाली गई नई बहुत बुरी बातें ★★★ सिल – एक मर्ज़

का नाम जिसमें फेफड़े में ज़ख़्म पड़ जाते हैं, भारी पत्थर, बोझ ★★★ अज़ूमन क़ातिलन इन्दल क़िताली – जंग के वक़्त बड़ी बहादुरी से लड़ने और क़त्ल करने वाले ★★★ दमे बिस्मिल – जो इस हालत में हो कि काट दिया गया हो और बस दम निकलने वाला हो ★★★ बख़्त – नसीब ★★★ माइल – मुतवज्जिह, ख़्वाहिशमन्द ★★★ नाख़ुदा – मल्लाह ★★★ हाएल – बीच में आने वाला ★★★ जिला दे – ज़िन्दा कर दे ★★★ कुफ़्र ो इल्हाद – कुफ़्र व शिर्क ★★★ मुहीअ – दीन को ज़िन्दा करने वाला ★★★ क़ातिल – क़त्ल करने वाला ★★★ आजिज़ – मजबूर ★★★ ग़य्यूर – ग़ैरतमन्द ★★★ तसद्दुक़ – सदक़ा ★★★ मरहम ख़ाके क़दम – क़दम के नीचे की ख़ाक का मरहम ★★★ शिर्के ख़फ़ी – छुपा हुआ शिर्क ★★★ शक्ले मुश्किल – मुसीबत की शक्ल ★★★ ज़ुन्नार – जनेऊ, धागा जिसे हिन्दू पहनते हैं ★★★ तरसाओ – आग के पुजारी ★★★ गब्र – मजूसी या पारसी लोग जो आग की पूजा करते हैं ★★★ अक़ताब – क़ुतुब की जमा अबदाल – विलायत की एक क़िस्म ★★★ महज़ – सिर्फ़ ★★★ साइल – मांगने वाला ★★★ बिसयार – बहुत ज़्यादा ★★★ अदू – दुश्मन ★★★ बद्दीन – जिसके पास दीन न हो ★★★ हासिद – जलने वाले ★★★ हसद – जलन ★★★ दिक़ – एक बीमारी का नाम ★★★ सिल – फेफड़ों से खांसी में ख़ून आना ★★★ ग़िज़ाए दिल यही ख़ूँ इस्तख़्वाँ गोश्त – दिक़ की बीमारी की ग़िज़ा तो ख़ून और हड्डियाँ हैं ★★★ आतिशे बदन – बदन की आग ★★★ आकिल – खा जाने वाली ★★★ फ़ासिल – बीच में ★★★ मुअ़्ती – देने वाला ★★★ क़ासिम – बांटने वाला ★★★ मूसिल – पहुँचाने वाला ★★★ अतायें – देन ★★★ मुक़्तदिर (अल्लाह तआ़ला का नाम है) – क़ुदरत रखने वाला ★★★ ग़फ़्फ़ार (अल्लाह तआ़ला का नाम है) – बख़्शने वाला ★★★ अबस – बेकार ★★★ ग़िल – कीना, कुदूरत रखना ★★★ भरन – मूसलाधार तेज़ बारिश ★★★ झाला – ज़ोरदार बारिश कहीं बरसे कहीं नहीं बरसे ★★★ ग़ासिल – नहलाने वाला ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ ग़र्ज़ – हाजत ★★★ काफ़िल – ज़ामिन ★★★ ख़ातिमा बिल ख़ैर – ईमान पर ख़ातिमा।

करोरों दुरूद

बदरुद्दुजा – अंधेरी रात में चौदवी का चांद ★★★ शम्सुद्दुहा – चाश्त के वक़्त का सूरज ★★★ तैबा – मदीना पाक ★★★ शाफ़िए रोज़े जज़ा – क़ियामत के दिन शफ़ाअत कराने वाले ★★★ दाफ़िए जुम्ला बला – सब बलाओं को दूर करने वाले ★★★ जान ो दिले अस्फ़िया – सूफ़ियों की जान ो दिल ★★★ आब ो गिले अम्बिया – नबियों के

पानी व मिट्टी यानी अस्ल ★★★ कौशके – ऊँचे महल ★★★ अर्श ो दना – अल्लाह पाक का क़ुर्ब ★★★ निहाँ – छुपा होना ★★★ तूर – एक पहाड़ का नाम जहाँ हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला की तजल्ली का दीदार हुआ ★★★ साईर – तन्दूर ★★★ नय्यर – रोशनी देने वाला सूरज ★★★ फ़ाराँ – मक्कए मुअज़्ज़मा के पास एक पहाड़ ★★★ कफ़े पा – पैर का तलवा ★★★ इन्तेख़ाब – चुन लिए गए ★★★ वस्फ़ – ख़ूबी ★★★ मुस्तफ़ा – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम है जिसका मतलब चुना हुआ बर्गुज़ीदा ★★★ ग़ायत – आख़िर, अन्त ★★★ इल्लत – सबब, वजह ★★★ बहर – समन्दर ★★★ जहाँ – दुनिया ★★★ तुमसे बना तुम बिना – दुनया तुमसे बनी है और तुम ही बुनयाद हो ★★★ हयात – ज़िन्दगी ★★★ सबात – क़ायम रहना ★★★ अस्ल – ज़ात ★★★ ज़िल्ल – परतौ, साया ★★★ मग़्ज़ – गूदा, दिमाग़ ★★★ पोस्त – छिलका ★★★ दारूने सरा – अन्दर का मग़्ज़ ★★★ लौस – लगाव रखने वाले ★★★ ग़ैस – फ़ायदे मन्द बारिश ★★★ ग़ौस – मदद करने वाला ★★★ हफ़ीज़ – हिफ़ाज़त करने वाला ★★★ मुग़ीस – फ़रयाद सुनने वाला ★★★ ख़बीस – बहुत कमीन ★★★ शबे मेराज राज – मेराज की रात की बादशाहत ★★★ सफ़े महशर का ताज – हश्र के दिन का ताज ★★★ नुहता फ़लाहल फ़लाह रुहता फ़राहल मराह –– आप मुकम्मल ख़ैर व आफ़ियत व रहमते मुजस्सम हैं। आपकी तशरीफ़ आवरी राहत व ख़ुशी है ★★★ उद लियऊदल हना –– आपकी तशरीफ़ आवरी के लिए हम एक एक घड़ी शुमार कर रहे हैं ★★★ जरीह – ज़ख़्मी ★★★ संगलाख़ – वह ज़मीन जहाँ खोदने पर पत्थर बहुत निकलें ★★★ पा शाख़ शाख़– टुकड़े टुकड़े पारा पारा भुने हुए पैर ★★★ मुश्किल कुशा – मुश्किल दूर करने वाले ★★★ बाबे जूद – अता व सख़ावत का दरवाज़ा ★★★ सब की बक़ा – सबका मौजूद रहना ★★★ मआज़ – पनाह की जगह ★★★ बस्ता – पाबन्द ★★★ मलाज़ – पनाह की जगह ★★★ अफ़ुव्व ो ग़फ़ूर – गुनाहों को बहुत ज़्यादा बख़्शवाने वाले ★★★ मेहर – सूरज ★★★ चाँदना करना – रोशनी फैलाना ★★★ शहीद – गवाह ★★★ बसीर – देखने वाला ★★★ चश्म – आँख ★★★ हया – शर्म ★★★ सहर – सुबह सादिक़ ★★★ जोत – रोशनी ★★★ क़मर – चांद ★★★ ज़िया – रोशनी ज़ुहूर – ज़ाहिर होना ★★★ लिम – दलील, सबब ★★★ इन – साबित होना, यक़ीनन होना ★★★ बेहुनर – बिना हुनर वाले यानी बेकार ★★★ अज़ीज़ – प्यारे ★★★ आस – उम्मीद ★★★ आसरा – क़रीबतरीन, उम्मीद ★★★ तारिमे आला – ऊँचा

मकान ★★★ कफ़े पा – पांव का तलवा ★★★ आम – मामूली लोग ★★★ ख़ास – ऊँचे दर्जे के लोग ★★★ ख़लास – छुटकारा दिलाने वाले ★★★ शिफ़ाए मरज़ – मरज़ को ठीक करने वाले ★★★ ख़ल्के ख़ुदा – अल्लाह तआला की मख़लूक़ ★★★ ख़ुदग़र्ज़ – मतलब परस्त, मतलबी ★★★ राहे सिरात – पुल सिरात का रास्त ★★★ बिसात – ताक़त ★★★ अलमदद – मदद करो ★★★ रहनुमा – राह दिखाने वाला ★★★ हिफ़ाज़ – हिफ़ाज़त ★★★ अफ़्व – माफ़ी ★★★ सबा – हवा ★★★ गेसू–ो क़द लाम अलिफ़ – आपके मुबारक बाल और क़द मुबारक लाम और अलिफ़ की तरह हैं ★★★ मुनसरिफ़ – एक हाल से दूसरे हाल में फेर देना ★★★ तहे – नीचे ★★★ तेग़ – तलवार ★★★ बरंगे ख़ल्क़ – आम इन्सान की तरह पैदा होकर ★★★ जेबे जहाँ – दुनया का गरेबान ★★★ शक़ – फाड़ देना ★★★ नौबते दर – दरवाज़े पर नक़्क़ारा ★★★ फ़लक – आसमान ★★★ ख़ादिमे दर हैं मलक – फ़रिश्ते आपके ग़ुलाम हैं ★★★ जहाँ – दुनया ★★★ निज़ाम – इन्तेज़ाम ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ ख़ल्क़ – मख़लूक़ ★★★ ख़ुल्क़ – आदत ★★★ जमील – ख़ूबसूरत ★★★ जलील – बड़ा ★★★ गदा – मांगने वाला ★★★ माहे तमाम – चौदवीं के चांद ★★★ जुमला – सब ★★★ रुसुल – जमा रसूल की ★★★ नौशाए मुल्क – तमाम मुल्क के दूल्हा ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ जव्वाद – सख़ावत करने वाला ★★★ बहुत ज़्यादा मेहरबान ★★★ हाकिम – हुकूमत करने वाला ★★★ क़ासिम – बांटने वाला ★★★ नाफ़िओ दाफ़ेअ – नफ़ा पहुँचाने वाले और बलाओं को दूर करने वाले ★★★ शाफ़ेअ – शफ़ाअत करने वाले ★★★ राफ़ेअ – बलन्द करने वाले ★★★ अफ़ज़ूँ – बड़ा, बलन्द व बरतर ★★★ शाफ़ी – शिफ़ा देने वाले ★★★ नाफ़ी – बलाओं को दूर करने वाले ★★★ काफ़ी – किफ़ायत करने वाले ★★★ वाफ़ी – पूरा करने वाले, वफ़ा करने वाले ★★★ ★★★ ख़ुल्द – जन्नत ★★★ मज़हरे हक़ – हक़ ने तुमको ज़ाहिर किया ★★★ मुज़हिरे हक़ – तुमने हक़ को ज़ाहिर किया ★★★ ज़ारे दहे नरसाँ – कमज़ोर को ताक़त देने वाले ★★★ तकिया गहे बेकसाँ – बेसहारा लोगों का सहारा ★★★ बादशाहे मावरा – आलम के बादशाह ★★★ नअम – हाँ ★★★ चमन – बाग़ ★★★ आदाए दीं – दीन के दुश्मन ★★★ हासिदीन – जलने वाले लोग ★★★ महंगे हैं कौड़ी के तीन – मुहावरा है मतलब है कि बहुत सस्ते कि एक कोड़ी के तीन ★★★ बाट – गंवार ★★★ घाट – ठिकाना ★★★ बाट न घर के कहीं – हम जैसे गंवारों का कोई टिकाना नहीं ★★★ घाट न दर के कहीं – हमारा

कोई ठिकाना नहीं *** अदू – दुश्मन *** हासिद – जलने वाले *** रू बराह – दुरुस्त करना, ठीक करना *** अहले विला – ख़ुलूस वाले दोस्त *** सरवरा – सरदार *** चश्मे रज़ा – निगाहे करम, राज़ी व ख़ुश होने की उम्मीद *** ज़िया – रोशनी

सलामे रज़ा

मुस्तफ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा – बर्गुज़ीदा, जिसे किसी काम के लिए चुन लिया गया हो *** जाने रह़मत – सर से पा तक रह़मत *** शमा – चराग़ *** बज़्म – महफ़िल *** हिदायत – रहनुमाई *** बज़्मे हिदायत – हिदायत देने वालों की महफ़िल यानी तमाम नबी *** शमअे बज़्मे हिदायत – हिदायत की महफ़िल को रोशन करने वाले चराग़ यानी ह़ुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम *** लाखों सलाम – मुराद बेइन्तिहा सलाम *** *** *** मेहर – सूरज *** चर्ख़ – आसमान *** मेहरे चर्ख़े नुबुव्वत – नुबुव्वत के आसमान के सूरज *** गुल – फूल *** गुले बाग़े रिसालत – रिसालत के बाग़ के फूल *** *** *** शहरेयार – बादशाह *** इरम – जन्नत *** शहरेयारे इरम – जन्नत के बादशाह *** ताजदारे ह़रम – ह़रम के बादशाह *** नौ बहारे शफ़ाअत – शफ़ाअत की नई बहार *** *** *** शबे असरा – मेराज की रात *** दाएम – हमेशा *** नौशा – दूल्हा *** बज़्म – महफ़िल *** नौशए बज़्मे जन्नत – जन्नत की महफ़िल के दूल्हा *** *** *** अर्श – अल्लाह तआ़ला की जलवागाह, आठवाँ आसमान *** ज़ेब ओ ज़ीनत – हुस्नो सजावट *** अर्शी – अर्श वाला *** फ़र्शी – ज़मीन *** तीब – महक *** नुज़हत – पाकीज़गी *** *** *** नूरे ऐन – सर से पांव तक नूर ही नूर *** लताफ़त – साफ़ ओ शफ़्फ़ाफ़ *** अलतफ़ – सबसे पाकीज़ा *** ज़ेब – ज़ीनत, ख़ूबसूरती *** ज़ैन – ख़ूबसूरती *** नज़ाफ़त – पाकीज़गी *** *** *** सर्व – एक दरख़्त का नाम जो बहुत लम्बा होता है और किसी की लम्बाई की तारीफ़ करने के लिए इसकी मिसाल दी जाती है *** क़िदम – क़दीम, जो हमेशा से हो हमेशा रहे यानी अल्लाह तआ़ला *** मग़ज़ – दिमाग़, अस्ल *** राज़ – भेद *** हिकम – हिकमतें *** यक्का – बेमिसाल *** ताज़ – आगे निकल जाना *** *** *** सिर – भेद, राज़ *** वह़दत – अल्लाह तआ़ला की यक्ताई *** सिर्रे वह़दत – अल्लाह तआ़ला की यक्ताई का राज़ *** यकता – बेमिसाल *** मरकज़ – केन्द्र ***

दौर – ज़माना *** कसरत – बहुत ज़्यादा *** *** *** साहिबे रजअते शम्स – डूबे हूए सूरज को दोबारा से निकालने वाले। हुज़ूर का यह मोजज़ा हदीस से साबित है *** शक़्कुल क़मर – इशारे से चाँद के दो टुकड़े करने वाले। यह मोजज़ा भी हदीस से साबित है *** नाएब – ख़लीफ़ा *** दस्त – हाथ *** क़ुदरत – ख़ुदाई इख़्तेयार *** *** *** ज़ेरे लिवा – झंडे के नीचे *** आदम ओ मन सिवा – आदम और आदम के अलावा सब लोग *** सज़ाए सयादत – सरदारी के लायक़ *** *** *** ज़ेरे नगीं – ताबे, अधिकार में *** क़ाहिर – ज़बरदस्त *** रियासत – हुकूमत *** *** *** अस्ल – केन्द्र *** बूद – वुजूद, हस्ती *** बहबूद – तरक़्क़ी व भलाई *** तुख़्म – बीज *** वुजूद – हयात व ज़िन्दगी *** क़ासिम – तक़सीम करने वाले *** कन्ज़ – ख़ज़ाना *** *** *** फ़तहे बाबे नुबुव्वत – नुबुव्वत का दरवाज़ा खोलने वाले *** ख़त्मे दौरे रिसालत – रिसालत का ज़माना ख़त्म करने वाले यानी आख़री नबी *** *** *** शर्क़ – चमक दमक *** अनवारे .क़ुदरत – अल्लाह तआला के अनवार व तजल्लियात *** फ़तके इज़हारे क़ुरबत – अल्लाह तआला की नज़दीकी की कलियाँ खिलना *** *** *** बेसहीम ो क़सीम ो अदील हो मसील – यानी मदनी ताजदार का कोई शरीक नहीं, और आपका कोई हिस्सेदार नहीं और आपके मरतबे के कोई बराबर नहीं *** जौहरे फ़र्दे – जो तक़सीम न हो *** *** *** सिर्र – राज़, भेद *** ग़ैब – वह छुपी चीज़ जो अक़्ल और हवास से न जानी जा सके *** बिदायत – इब्तिदा, शुरूआत, यहाँ अज़ल मुराद है *** सिर्रे ग़ैबे बिदायत – अल्लाह तआला जो ग़ैब है, के आलम के शूरू करने का राज़ *** इत्र – ख़ुश्बू *** जेब – सीना व दिल *** निहायत – इन्तेहा, बहुत ज़्यादा *** *** *** माह – चाँद *** लाहूत – मक़ामे फ़नाफ़िल्लाह मुराद आलमे बातिन *** ख़लवत – तन्हाई *** नासूत – दुनिया *** जलवत – ज़ाहिर होना *** *** *** कन्ज़े बेकस बेनवा – हर मजबूर व ग़रीब का ख़ज़ाना *** हिर्ज़ – पनाह की जगह *** रफ़्ता ताक़त – जिसकी ताक़त खो गई हो *** *** *** परतौ – अक्स *** इस्मे ज़ात – अल्लाह तआला का नाम *** अहद – अल्लाह तआला का नाम मअना अकेला *** नुस्ख़ए जामियत – वह किताब जिसमें सब कुछ आ जाए *** *** *** मतलए हर सआदत – हर भलाई की शुरूआत *** मक़तए हर सयादत – हर सरदारी का अन्त *** ***

*** ख़ल्क – मख़लूक़ *** दादरस – मदद करने वाले *** फ़रयादरस – फ़रयाद सुनने वाले *** कहफ़े रोज़े मुसीबत – क़ियामत के दिन पनाह की जगह *** *** *** बेकस – मजबूर *** . क़ुव्वत – ताक़त *** *** *** दना – अल्लाह तआला के बहुत क़रीब का मक़ाम *** हू – अल्लाह तआला का नाम *** गुम कुन अना – अपनी ज़ात को गुम कर देना *** मतन – किताब की अस्ल इबारत *** हुविइयत – उलूहिइयत *** *** *** इन्तेहाए दुई – एक होना *** इब्तिदाए यकी – तौहीद की इब्तिदा यानी तौहीद के एलान की शुरूआत *** जमा – इकट्ठा होना *** तफ़रीक़ – तक़सीम *** कसरत – ज़्यादा *** *** *** कसरते बादे क़िल्लत – पहले कम फिर ज़्यादा। यहाँ इस तरफ़ इशारा है कि जब आपने ऐलाने नुबुव्वत किया तो पहले कम मुसलमान थे फिर बहुत तेज़ी से मुसलमान होते चले गए *** इज़्ज़ते बादे ज़िल्लत – इशारा इस तरफ़ है कि पहले लोगों ने आपको बहुत परेशान किया बाद में बहुत ज़्यादा इज़्ज़त दी *** *** *** रब्बे अअला – अल्लाह तआला *** अअला – बलन्द *** मिन्नत – ऐहसान *** *** *** सरवत – माल व दौलत *** *** *** फ़रहते जाने मोमिन – मोमिन की जान व रूह की ख़ुशी *** ग़ैज़ – .ग़ुस्सा *** क़ल्ब – दिल *** ज़लालत – गुमराही। ग़ैज़े क़ल्बे ज़लालत – यानी गुमराह लोगों पर ग़ुस्सा करने वाले *** *** *** सबबे हर सबब – हर शय का सबब यानी हर चीज़ के पैदा होने की वजह *** मुन्तहाए तलब – तलाश की मन्ज़िल *** इल्लते जुमला इल्लत – तमाम वजहों की वजह *** *** *** मसदर – अस्ल व हर चीज़ का चश्मा या झरना *** मज़हरियत – ज़ुहूर, ज़ाहिर होना *** अज़हर – रोशन *** *** *** गुल – फूल *** मम्बत – उगाया हुआ *** *** *** क़द्दे बे साया – हुज़ूर के क़द यानी मरतबे की ऊँचाई *** सायए मरहमत – करम व इनायत का साया *** ज़िल्ले ममदूदे राफ़्त – करम व मेहरबानी का साया *** *** *** ताइराने .क़ुद्स – फ़रिश्ते *** .क़ुमरियाँ – फ़ाख़्ता की तरह एक परिन्दा जो बहुत अच्छी आवाज़ में बोलता है *** सही – सीधा *** सर्व – लम्बा दरख़्त जिसकी मिसाल दी जाती है *** क़ामत – क़द *** *** *** वस्फ़ – ख़ूबी, तारीफ़ *** आइनए हक़ नुमा – हक़ को दिखाने वाला *** ख़ुदा साज़ तलअत – अल्लाह तआला का बनाया चेहरा *** *** *** सरे सरवरा – सरदारों के सर *** ख़म – झुके

★★★ रिफ़अत – बलन्दी ★★★ ★★★ ★★★ गेसूए मुश्क सा – मुश्क की तरह बाल मुबारक ★★★ लक्कए अब्रे रह़मत – रह़मत के बादल का टुकड़ा ★★★ ★★★ ★★★ लैलतुल क़द्र – शबे क़द्र ★★★ मतलइल फ़ज्रे हक़ – वह वक़्त जब फ़ज्र का वक़्त शुरू होता है ★★★ इस्तक़ामत – सीधा होना ★★★ ★★★ ★★★ लख़्त लख़्ते दिल – दिल का टुकड़े टुकड़े होना ★★★ शाना करना – कंधी करना ★★★ ★★★ ★★★ काने लअले – जवाहारात की खान ★★★ ★★★ ★★★ चश्मए मेहर – हुज़ूर का चेहरए मुबारक मुराद है ★★★ मौजे नूरे जलाल – नूर के जलाल की लहर ★★★ रगे हाशमियत – हुज़ूर के दोनों अबरू के दरमियान एक रग थी जो जलाल के वक़्त चमक उठती थी ★★★ ★★★ ★★★ शफ़ाअत – क़ियामत के दिन हुज़ूर की गुनाहगारों के लिए सिफ़ारिश ★★★ जबीं – पेशानी ★★★ सआदत ख़ुशक़िस्मती ★★★ ★★★ ★★★ मेहराबे काबा झुकी – जब हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैदाइश हुई उस वक़्त काबए मुअज़्ज़मा सजदे में गिर गया ★★★ लताफ़त – नज़ाकत व हुस्न और बारीकी ★★★ ★★★ ★★★ सायाफ़िगन – साया किए हुए ★★★ मिज़ह – पलक ★★★ ज़िल्ल – साया ★★★ क़स्रे रह़मत – रह़मत का महल ★★★ ★★★ ★★★ अश्कबारिए मिज़गाँ – आंसू बरसाती हुई पलकें ★★★ सिल्क – लड़ी ★★★ दुर – मोती ★★★ सिल्के दुर्रे शफ़ाअत – गुनाहगारों की शफ़ाअत कराने के लिए आंसू रूपी मोतियों की लड़ी ★★★ ★★★ ★★★ क़द रआ – उसने ज़ुरूर देखा यानी हुज़ूर ने अल्लाह तआ़ला का दीदार ज़रूर किया ★★★ मक़सदे मा तग़ा – हद से आगे न बढ़ना ★★★ नरगिसे बाग़े .क़ुदरत – ख़ुदाई चमन के फूल ★★★ ★★★ ★★★ निगाहे इनायत – इनायत की नज़र ★★★ ★★★ ★★★ ऊँची बीनी – बलन्द नाक मुबारक ★★★ ★★★ ★★★ क़मर – चाँद ★★★ इज़ार – रुख़्सार ★★★ तलअत – हुस्न व रोशनी ★★★ ★★★ ★★★ ख़द – रुख़्सार ★★★ सुहूलत – हमवार, मुलायम होना ★★★ रशाक़त – उम्दा ★★★ ★★★ ★★★ तारीक दिल – अंधे दिल, काले दिल ★★★ चमक वाली – नूरानी ★★★ ★★★ ★★★ ताबाँ – चमकदार ★★★ दरख़्शाँ रोशन ★★★ मिल्हे आगीं – नमकीन ★★★ सबाहत – गोरापन ★★★ ★★★ ★★★ शबनम – ओस ★★★ बाग़े हक़ – हक़ का बाग़ ★★★ रुख़ – चेहरा ★★★ अर्क़ – हुज़ूर का ख़ुशबूदार पसीना मुबारक ★★★ बराक़त – चमक दमक ★★★ ★★★ ★★★ ख़त की गिर्दे दहन – चेहरे के चारों तरफ़ दाढ़ी मुबारक ★★★ दिल आरा – दिल को लुभाने वाली ★★★ फबन – हुस्न व जमाल ★★★ नहरे रह़मत

– रह़मत का दरिया ★★★ रीश – दाढ़ी ★★★ मोतदिल – दरमियानी, मौज़ूँ, ख़ूबसूरत ★★★ मरहमे रेशे दिल – दिल के ज़ख़्मों का मरहम ★★★ हाला – दायरा ★★★ माह – चाँद ★★★ नुदरत – अजब समाँ ★★★ ★★★ ★★★ गुले .कुदुस – फ़िरदौस के बाग़ का फूल ★★★ फ़िरदौस – जन्नत का सबसे आला मक़ाम ★★★ लब – होंट ★★★ नज़ाकत – नाज़ुक होना ★★★ ★★★ ★★★ दहन – मुँह ★★★ वहीए ख़ुदा – अल्लाह तआ़ला की वही जो नबियों पर आती है ★★★ चश्मए इल्मो हिकमत – इल्म व हिकमत का झरना ★★★ शादाब – सैराब ★★★ जिनाँ – जन्नतें ★★★ तरावत – तरी ★★★ ★★★ ★★★ शीरीं – मीठे ★★★ ज़ुलाले हलावत – ठंडा, साफ़ और मीठा पानी ★★★ ★★★ ★★★ कुन – हो जा ★★★ कुंजी – चाबी ★★★ नाफ़िज़ – जारी ★★★ ★★★ ★★★ फ़साहत – ख़ुशबयानी, अच्छा बोलना ★★★ दिलकश – दिल मोह लेने वाली ★★★ बलाग़त – मौक़े के मुताबिक़ बातचीत ★★★ ★★★ ★★★ लज़्ज़त – मिठास ★★★ ख़ुतबा – ख़िताब ★★★ हैबत – रोब व दबदबा ★★★ ★★★ ★★★ जोबन – शबाब ★★★ बहारे क़बूल – शर्फ़े क़बूल ★★★ नसीम – सुबह की ख़ुशबूदार हवा ★★★ इजाबत – दुआ का क़बूल होना ★★★ ★★★ ★★★ नुज़हत – पाकीज़गी व चकम ★★★ ★★★ ★★★ तसकीं – सुकून पाना ★★★ तबस्सुम – मुस्कुराना ★★★ ★★★ ★★★ शीर – दूध ★★★ शकर – मीठा ★★★ रवाँ – जारी ★★★ नज़ारत – तरो ताज़गी ★★★ ★★★ ★★★ दोश – स्याह ज़ुल्फ़ ★★★ दोश – कांधा ★★★ दोश बर दोश – कांधे पर सियाह ज़ुल्फ़ ★★★ शाने शरफ़ – जिससे मरतबा बुज़ुर्गी का पता चले ★★★ शाने – कांधे ★★★ शौकत – अज़्मत ★★★ ★★★ ★★★ हज्रे असवद – काबे शरीफ़ में एक पत्थर लगा है जिसे हाजी चूमते हैं ★★★ मोहरे नुबुव्वत – हुज़ूर नबीए अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दोनों शानों के दरमियान अल्लाह तआ़ला ने एक मोहर लगा रखी थी जो कि उभरे हुए गोश्त की थी और मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा था, उसे मोहरे नुबुव्वत कहते हैं ★★★ ★★★ ★★★ रूए आइनए इल्मे पुश्ते हुज़ूर –– हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिस तरह आगे देखते थे उसी तरह पीछे भी देखते थे। ★★★ पुश्त – पीठ ★★★ क़स्र – महल ★★★ मिल्लत – दीन व उम्मत ★★★ पुश्तिए क़स्रे मिल्लत – दीन के महल की हिमायत ★★★ ★★★ ★★★ सम्त – दिशा, तरफ़ ★★★ ग़नी – मालदार ★★★ मौज – लहर ★★★ बहर – समन्दर ★★★ समाहत – अता ★★★ मौजे बहरे समाहत – अता के समन्दर की लहर ★★★ ★★★ ★★★ बारे

दो आलम – दोनों आलम का बोझ ★★★ .कुव्वत – ताक़त ★★★ ★★★ ★★★ काबए दीन ओ इमाँ – दीन और ईमान के काबा मरकज़ यानी हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ल्म ★★★ दोनों सुतून – यानी हुज़ूर की दोनों कलाइयाँ मुबारक ★★★ साईदैने रिसालत – पैग़म्बरी ★★★ ★★★ ★★★ ख़त – नक़्श ★★★ मौजे नूरे करम – करम के नूर की लहर ★★★ कफ़ – हथेली ★★★ बहरे हिम्मत – हिम्मत का समन्दर यानी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ ★★★ ★★★ चश्मा – झरना ★★★ ईद – ख़ुशी ★★★ मुश्किल कुशाई – मुश्किल दूर करना ★★★ हिलाल – शुरू के दिनों का चाँद ★★★ बशारत – ख़ुशख़बरी ★★★ ★★★ ★★★ रफ़अे ज़िक्रे जलालत– जलालत के ज़िक्र की बलन्दी ★★★ अरफ़ा – सबसे बलन्द ★★★ शरहे सद्र – सीने का खुलना ★★★ सदारत – कहीं का हेड होना यानी सबसे ऊँचे मक़ाम पर पहुँचना ★★★ शरहे सद्र सदारत – सीने को खोलने वाली सनद के सद्र ★★★ ★★★ ★★★ दिल समझ से वरा – हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दिल के बारे मे समझना समझ से बाहर है ★★★ ग़ुन्चा – फूल ★★★ राज़े वहदत – अल्लाह तआ़ला की वहदानियत का राज़ ★★★ ★★★ ★★★ कुल जहाँ मिल्क – सारा जहान आपकी मिल्कियत ★★★ शिकम – पेट ★★★ क़नाअत – थोड़ी चीज़ पर राज़ी होना ★★★ ★★★ ★★★ अज़्म – पक्का इरादा ★★★ अज़्मे शफ़ाअत पर ख़िंच कर बंधी – आपने जो शफ़ाअत कराने का पक्का इरादा कर लिया था यहाँ उसकी तरफ़ इशारा है ★★★ ★★★ ★★★ अम्बिया – नबी की जमा ★★★ तय करें ज़ानू – मुहावरा है जिसका मतलब बहुत ज़्यादा अदब करना है ★★★ हुज़ूर – यहाँ हुज़ूर के मअना बारगाह के हैं ★★★ वजाहत – मक़ाम व मरतबा ★★★ साक़ – पिंडली ★★★ अस्ल – जड़ ★★★ नख़्ल – खजूर का दरख़्त ★★★ इसाबत – मन्ज़िल तक पहुँचाने वाला रास्ता ★★★ ★★★ ★★★ ख़ाके गुज़र – गुज़रगाह, रास्ता --- क़ुर्आने पाक में हुज़ूर के शहर की क़सम अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाई यहाँ इसी तरफ़ इशारा है ★★★ कफ़े पा – पैर के तलवे ★★★ हुरमत – अज़मत व इज़्ज़त ★★★ ★★★ ★★★ सुहानी घड़ी – यहाँ उस वक़्त की तरफ़ इशारा है जिस वक़्त हुज़ूर सरवरे आलम पैदा हुए ★★★ तैबा का चाँद – मदीने का चाँद ★★★ दिल अफ़रोज़ – दिल ज़िन्दा करने वाली ★★★ साअत – घड़ी ★★★ ★★★ ★★★ राज़े अज़ल – वह वक़्त जिसे अल्लाह तआ़ला ही जानता है ★★★ पहले सजदे – यहाँ उस पहले सजदे की तरफ़ इशारा है कि

जिस वक़्त हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पैदा होते ही सजदा किया और उस वक़्त भी अपनी उम्मत को याद किया *** यादगारिए उम्मत – उम्मत की याद *** *** *** ज़रअ – ख़ेती, पिस्तान (जब ज़े से ज़रा लिख़ा जाए उसका मतलब खेती और ज़ुआद से लिखा जाए तो उसका मतलब पिस्तान या छाती से है) *** शादाब – हरा भरा *** शीर – दूध *** तर्क – छोड़ देना *** निसफ़त – इन्साफ़ करना *** *** *** महदे वाला – बहुत बलन्द गोद यानी हज़रते आमना रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की मुबारक गोद की तरफ़ इशारा है *** बुर्ज – आसमान *** माह – चाँद *** रिसालत पैग़म्बरी *** *** *** फबन – हुस्न ओ जमाल *** भाती – दिल को मोहने वाली *** *** *** उठते बूटों – निकलते पौधे *** नशवो नुमा – बढ़ना *** .ग़ुन्चे – कलियाँ *** निकहत – महक *** *** *** फ़ज़्ले पैदाइशी – यानी वह ख़ूबियाँ जो पैदाइशी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम में थीं *** कराहत – नापसन्द होना *** *** *** एतलाए जिबिल्लत – बलन्द आदत या फ़ितरत *** एतदाल – मौज़ू, बीच वाली यानी न कम न ज़्यादा *** तबिअत – तबीयत *** *** *** बेबनावट – जिसमें बनावटी पन न हो *** बेतसन्नो – बेतकल्लुफ़, जिसमें बनावट न हो *** मलाहत – नमकीनी *** *** *** भीनी – बड़ी उम्दा ख़ुशबू *** नफ़ासत – पाकीज़गी *** *** *** इबारत – बयान व गुफ़्तगू *** शीरीं – मीठा *** इशारत – इशारा *** *** *** रविश – रफ़्तार, चलना, बर्ताव करना *** रोज़े गर्म ो शबे तीरा ो तार में – गर्म व स्याह रातों में *** कोह – पहाड़ *** सहरा – जंगल *** ख़लवत – तन्हाई, गोशानशीनी *** *** *** अम्बिया – नबी की जमा *** मलक – फ़रिश्ते *** जहाँगीर – आलमगीर, इन्टरनेशनल *** बेअसत – रसूल होना *** *** *** अंधे शीशे – यहाँ मुराद अंधे दिल हैं *** झलाझल – निहायत तेज़ रोशनी *** दमकने – चमकने *** जलवा रेज़ी – नूर का बिखेरना *** दावत – इस्लाम का पैग़ाम *** *** *** लुत्फ़ – लज़्ज़त *** बेदारिए शब – रातों को जागना *** आलमे ख़्वाब – ख़्वाब की कैफ़ियत *** राहत – आराम *** *** *** ख़न्दा – मुस्कुराहट, इशरत – ख़ुशी *** ख़न्दए सुबहे इशरत – ख़ुशी की सुबह की मुस्कुराहट *** गिरया – रोना *** अब्रे रहमते – रहमत का बादल *** गिरयए अब्रे रहमत – रहमत के बादल का रोना यानी बरसना *** *** *** ख़ू –

आदत ★★★ लीनत – .गुस्सा न आना ★★★ नर्मीए ख़ूए लीनत – जिन लोगों को .गुस्सा नहीं आता उनमें एक ख़ास क़िस्म की नर्मी होती है उसी की तरफ़ इशारा है ★★★ दाएम – हमेशा ★★★ गर्मी – यहाँ रौनक़ मुराद है ★★★ शाने सितवत – रोब ओ दबदबा की शान ★★★ ★★★ ★★★ ख़ुदादाद – ख़ुदा की बख़्शी हुई ★★★ शौकत – क़द्र ओ मन्ज़िलत ★★★ ★★★ ★★★ गिर्द महे – चाँद के चारों तरफ़ ★★★ दश्ते अन्जुम – सितारों का झुरमुट ★★★ रख़्शाँ – रौशन ★★★ हिलाल – चाँद ★★★ बदर – यह एक जगह का नाम है यहाँ मुसलमानों की काफ़िरों से एक बहुत बड़ी और अहम जंग हुई थी। ★★★ दफ़्अे – दफ़ा करना दूर करना ★★★ ज़ुलमत – तारीकी ★★★ गिर्द मह दश्ते अन्जुम में रख़्शाँ हिलाल – हज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इर्द गिर्द जंगे बदर के वक़्त सहाबा का इकट्ठा होना मुराद है ★★★ ★★★ ★★★ शोरे तकबीर – नारए तकबीर ★★★ जुम्बिश – हरकत व रवान्गी ★★★ जैश – लश्कर ★★★ नुसरत – मदद ★★★ ★★★ ★★★ बन – सहरा, जंगल ★★★ गुर्रश – गुर्राना ★★★ कोस – नक़्क़ारा ★★★ ★★★ ★★★ चक़ाचक़ – तलवार या तीर चलने की आवाज़ ★★★ सदा – आवाज़ ★★★ सौलत – हैबत ★★★ ★★★ ★★★ हम्ज़ा – हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चचा हैं ★★★ जाँबाज़ियाँ – जाँ निसार करना ★★★ शेर ग़ुर्राना – शेर की तरह दहाड़ना ★★★ सितवत – रोब ओ दबदबा ★★★ ★★★ ★★★ मू – बाल ★★★ ख़ू व ख़सलत – आदत व अदा ★★★ ★★★ ★★★ निसबत – तअल्लुक़, वास्ता ★★★ नामी – मुबारक ★★★ ★★★ ★★★ मौला – मालिक, यहाँ अल्लाह तआ़ला के लिए आया ★★★ असहाब – साथी ★★★ इतरत – औलाद ★★★ ★★★ ★★★ पाराहाए – टुकड़े, औराक़, पृष्ठ ★★★ सुहफ़ – सहीफ़े की जमा, मुक़द्दस किताब ★★★ क़ुद्स – मुक़द्दस व पाक ★★★ अहले नुबुव्वत – नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घर वाले ★★★ ★★★ ★★★ आबे ततहीर – पाक करने वाला पानी ★★★ रियाज़ – बाग़ ★★★ नजाबत – उम्दा ★★★ ★★★ ★★★ ख़ैरुर्रुसुल – हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ ख़मीर – अस्ल ★★★ बेलौस – ऐब से पाक ★★★ तीनत – तबीयत व आदत ★★★ ★★★ ★★★ बतूल – लक़ब हज़रते फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ★★★ जिगर पारए मुस्तफ़ा – मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के जिगर का टुकड़ा ★★★ हुजला – पालकी ★★★ आराए – संवारने वाली ★★★ इफ़्फ़त – इज़्ज़त ★★★ ★★★ ★★★ मह – चाँद ★★★ मेहर – सूरज ★★★ रिदा – चादर ★★★

नुजाहत – पाकीज़गी ★★★ ★★★ ★★★ सय्यिदा – सरदार ★★★ ज़ाहिरा – तरोताज़ा फूल ★★★ तय्यिबा – पाकीज़ा ★★★ ताहिरा – पाकीज़ा ★★★ ★★★ ★★★ सय्यदुल अस्ख़िया – सख़ीयों के सरदार ★★★ राकिब – सवार ★★★ दोश – कांधा ★★★ ★★★ ★★★ औज – बलन्दी ★★★ मेहर – सूरज ★★★ हुदा – हिदायत ★★★ बहर – समन्दर ★★★ निदा – बड़ा दरिया ★★★ रौह – राहत ★★★ रूह – जान ★★★ ★★★ ★★★ शहद – मीठा ★★★ ख़्वार – पीने वाला ★★★ लुआब – मुँह की तरी ★★★ चाशनी – ज़ाएक़ा ★★★ गीर – पकड़ने वाला ★★★ इस्मत – पाकीज़गी ★★★ ★★★ ★★★ बला – आज़माइश ★★★ शाह – बादशाह, सरदार ★★★ गुलगूँ – सुर्ख़ ★★★ क़बा – जुब्बा ★★★ दश्त – जंगल ★★★ ग़ुरबत – मुसाफ़िरी ★★★ ★★★ ★★★ दुर – मोती ★★★ दुर्ज – बलन्द मीनार ★★★ नजफ़ – इराक़ के शहर का नाम है ★★★ मेहर – सूरज ★★★ बुर्ज – बलन्दी ★★★ शरफ़ – बुज़ुर्गी व अज़्मत ★★★ रंगे रूमी शहादत – आपका चेहरा शहादत के ख़ून से रंगी है ★★★ ★★★ ★★★ ★★★ अहले इस्लाम – मुसलमान ★★★ मादराने शफ़ीक़ – मेहरबान माँयें (यानी हुज़ूर अक़्दस स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियाँ) ★★★ बानवाने तहारत – पाक बीवियाँ ★★★ ★★★ ★★★ जलवा गय्यान – तशरीफ़ फ़रमा ★★★ बैतुश्शरफ़ – बुज़ुर्गी वाला घर ★★★ पर्द गय्याने – पर्दे वालियाँ ★★★ इफ़्फ़त – इज़्ज़त ★★★ ★★★ ★★★ सिय्येमा – ख़ास तौर पर ★★★ पहली माँ – मुराद हज़रते ख़दीजा – रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ★★★ हक़ गुज़ारे – हक़ अदा करने वाली ★★★ रिफ़ाक़त – संगत, साथ ★★★ ★★★ ★★★ तस्लीम – सलामती व रहमत मुराद सलाम है ★★★ सरा – महल ★★★ सलामत – पुर सुकून ★★★ ★★★ ★★★ मन्ज़िलुन मिन क़सब ला नसब ला सख़ब -- हज़रते ख़दीजा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का जन्नत में एक मकान है जो मोती का बना हुआ है उसमें न शोरो शर है और न कोई तकलीफ़ व परेशानी ★★★ कौशक – हुजरा ★★★ ज़ीनत ख़ूबसूरती ★★★ ★★★ ★★★ बिन्ते सिद्दीक़ – हज़रते सिद्दीक़े अकबर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बेटी यानी हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ★★★ हरीम – बीवी ★★★ बराअत – पाकबाज़ होना ★★★ सूरए नूर – क़ुरआने पाक की एक सूरत का नाम जिसमें हज़रते आइशा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की पाकीज़गी की गवाही है ★★★ ★★★ ★★★ रूहुल .क़ुदुस – हज़रते जिब्रीले अमीन ★★★ सुरादक़ – ख़ेमा व हुजरा ★★★ इस्मत – इज़्ज़त ★★★ ★★★ ★★★ शमअे ताबान – रोशन शमा

*** काशाना – घर *** इज्तिहाद – मसाइल का निकालना *** मुफ़्तीए चार मिल्लत – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के चारों ख़लीफ़ा मुराद हैं *** *** *** जाँनिसाराने बदर व उहुद – बदर और उहुद की लड़ाई के वो लोग जो जान देने को तैयार रहे *** हक़ गुज़ाराने बैअत – बैअत का हक़ अदा करने वाले वो लोग जिन्होंने बदर की लड़ाई के लिए बैअत की थी *** *** *** वह दसों जिनको जन्नत का मुज़दा मिला – वो दस सहाबी मुराद हैं जिनको अशरा मुबश्शरा कहते हैं और ये वो लोग हैं जिन्हें हुज़ूर ने दुनिया में जन्नत की बशरत दी *** *** *** साबिक़ – जो गुज़र गया *** सैर – चलना, हासिल करना *** औहद – अकेला *** कामिलिइयत – कमाल हासिल करना *** *** *** मायए इस्तफ़ा – चुनी हुई पूंजी दौलत *** *** *** अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बादर्रुसुल – सब रसूलों के बाद तमाम मख़लूक़ में सबसे अफ़ज़ल यानी हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** सानी इस्नैने हिजरत – हिजरत की रात के साथी यानी हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु *** *** *** अस्दक़ुस्सादेक़ीं – सब सच्चों में सच्चे *** सय्यिदुल मुत्तक़ी – तक़वे वालों के सरदार *** चश्म – आँख *** गोश – कान *** विज़ारत – वज़ीर *** चश्मे गोशे विज़ारत – हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम ने हज़रते अबूबक्र व हज़रते उमर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा की ख़िदमत और जाँनिसारी की वजह से अपने कान आंखें और वज़ीर क़रार दिया *** *** *** आदा – दुश्मन की जमा *** शैदा – क़ुरबान *** सक़र – जहन्न्म *** ख़ुदा–दोस्त – ख़ुदा के दोस्त *** *** *** *** फ़ारिक़े ह़क़ ओ बातिल – ह़क़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाले *** इमामुल हुदा – हिदायत के इमाम *** तेग़ – तलवार *** मसलूल – नंगी तलवार *** शिद्दत – सख़्ती *** *** *** तर्जमाने नबी – हुज़ूर के सफ़ीर *** हमज़ुबाने नबी – नबी की ज़बान के साथ बोलने वाले *** *** *** ज़ाहिद – दुनिया को तर्क करने वाला *** मस्जिदे अह़मदी मस्जिदे नबवी *** जैश – लश्कर *** उसरत – तंगी *** दौलते जैशे उसरते – यहाँ पर हज़रते उसमाने ग़नी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लश्कर की तंगी के वक़्त दौलत देने के वाक़िए की तरफ़ इशारा है *** *** *** दुर्रे मन्सूर – बिखरे हुए मोती *** सिल्क – लड़ी *** बही – बेहतरीन *** ज़ौज – शौहर *** दो नूर – यहाँ हुज़ूर की दो साहबज़ादियाँ मुराद हैं जो हज़रते उसमान रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के

निकाह में एक के बाद एक गईं ★★★ इफ़्फ़त – पाकीज़गी ★★★ ★★★ ★★★ क़मीसे हुदा – हिदायत की क़मीस ★★★ हुल्ला – पोशाक ★★★ पोश – पहनने वाला ★★★ ★★★ ★★★ मुरतज़ा – पसन्दीदा यहाँ मौला अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुराद हैं ★★★ शेरे हक़ – शेरे ख़ुदा यानी मौला अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ अश्जउल अश्जईं – दिलेरों के सरबराह ★★★ साक़ी – पिलाने वाले ★★★ शीर – दूध ★★★ ★★★ ★★★ अस्ले सफ़ा – तहारत की जड़ ★★★ वजहे वस्ले ख़ुदा – अल्लाह तआ़ला से मिलाने का सबब व ज़रिया ★★★ बाब – दरवाज़ा ★★★ ★★★ ★★★ अव्वलीं – पहला ★★★ दाफ़ेअ – जंग मे वार रोकने वाले ★★★ अहले रिफ़्ज़ – राफ़ज़ी, सहाबा के दुश्मन ★★★ ख़ुरूज – ख़ारजी अहले बैत के दुश्मन ★★★ चारमी – चौथे ★★★ रुक्ने मिल्लत – उम्मत के सुतून ★★★ ★★★ ★★★ शमशीर ज़न – तलवार मारने वाला ★★★ ख़ैबर शिकन – ख़ैबर का दरवाज़ा तोड़ने वाले ★★★ परतवे – मज़हर, ज़ाहिर करने वाला ★★★ दस्ते क़ुदरत – अल्लाह का हाथ ★★★ ★★★ ★★★ माही – मिटाने वला ★★★ रिफ़्ज़ – सहाबा की दुश्मनी ★★★ तफ़ज़ील – मौला अली को तमाम दूसरे सहाबी पर फ़ज़ीलत देना ★★★ नस़ब – मौला अली के दुश्मन ★★★ ख़ुरूज – ख़ारजी ★★★ हामी – मदद करने वाला ★★★ ★★★ ★★★ मोमिनीं पेशे फ़तह व पसे फ़तह सब – सारे मुसलमान फ़तह मक्का से पहले और फ़तह मक्का के बाद वाले मुराद हैं ★★★ अहले ख़ैर – अहले तक़्वा ★★★ ★★★ ★★★ ★★★ इक नज़र – एक मरतबा देखना ★★★ बसारत – देखना ★★★ ★★★ ★★★ लानत – अल्लाह की रह़मत से दूरी ★★★ अहले महब्बत – महब्बत करने वाले ★★★ ★★★ ★★★ साक़यान – पिलाने वाले ★★★ शराबे तहूर – पाक शराब जो जन्नत में पीने को जन्नतियों को मिलेगी ★★★ ज़ैन – ज़ीनत ★★★ अहले इबादत – इबादत वाले (यहाँ उम्मत के तमाम नेक लोग मसलन ताबई, तबेअ ताबईन, औलिया वग़ैरह नेक लोग मुराद हैं) ★★★ ★★★ ★★★ अहले मकानत – मरतबे वाले अहले कमाल लोग ★★★ ★★★ ★★★ बाला शराफ़त – ऊँची शराफ़त ★★★ सयादत – सरदारी ★★★ ★★★ ★★★ चार बाग़े इमात –– इससे चारों इमाम हज़रते इमामे आज़म, इमाम शफ़ई, इमाम हम्बल, इमाम मालिक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम मुराद हैं ★★★ ★★★ ★★★ कामिलान – कामिल लोग ★★★ तरीक़त – रूहानियत ★★★ हामिलाने शरीअत – शरीअत पर अमल करने वाले लोग ★★★ ★★★ ★★★ इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा – तहारत वाले मुत्तक़ियों के पेशवा हज़रते ग़ौसे आज़म

रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ जलवए शाने क़ुदरत – अल्लाह तआ़ला की शाने क़ुदरत के मज़हर ★★★ ★★★ ★★★ क़ुतुब ो अब्दाल ो इर्शाद ो रुशदुर्रिशाद –– विलायत के दर्जात ★★★ मुहइए दीन ओ मिल्लत – दीन ओ मिल्लत के ज़िन्दा करने वाले ★★★ ★★★ ★★★ ख़ैले तरीक़त – तरीक़त के सरबराह ★★★ फ़र्द – अकेला ★★★ अहले हक़ीक़त – सच्चे यक़ीन वाले लोग ★★★ ★★★ ★★★ जिसकी मिम्बर हुई गर्दने औलिया – यहाँ ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के उस इरशाद की तरफ़ इशारा है कि आपने फ़रमाया कि तमाम वलियों की गर्दनों पर मेरा क़दम है ★★★ ★★★ ★★★ शाहे बरकात – शाह बरकतुल्लाह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मारहरा शरीफ़ ★★★ बरकात पेशीनियाँ – बुज़ुर्गों की बरकतें ★★★ नौ बहारे तरीक़त – तरीक़त की नई बहार ★★★ सय्यिद आले मुह़म्मद – शाह आले मुह़म्मद रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुराद हैं जो मरहरा शरीफ़ के सिलसिलए क़ादिरिया के एक बुज़ुर्ग भी हैं ★★★ इमामुर्रशीद – सीधी राह दिखने वाले इमाम ★★★ गुल – फूल ★★★ रौज़े – बाग़ ★★★ रियाज़त – इबादत व मुजाहिदा ★★★ ★★★ ★★★ हज़रते हम्ज़ा शेरे ख़ुदा व रसूल –– शाह हम्ज़ा मारहरवी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ ज़ीनते क़ादरियत – क़ादिरी सिलसिले की ज़ीनत ★★★ सबसे अच्छे – हुज़ूर अच्छे मियाँ आले अह़मद रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ ★★★ ★★★ नूरे जाँ इत्रे मजमूअए आले रसूल – शाह आले रसूल रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो आलाहज़रत मुजद्दिदे दीन ओ मिल्लत के पीर हैं ★★★ ★★★ ★★★ ज़ेब सज्जादा सज्जादे नूरी निहाद –– हुज़ूर शाह अबुल हुसैन अह़मदे नूरी मरहरवी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ तीनत – आदत ★★★ ★★★ ★★★ बेअज़ाबो इताबो हिसाबो किताब – यहाँ उन गुनाहागार उम्मतियों की तरफ़ इशारा है जिनके बारे में हदीस में आया कि हज़ारों गुनाहगार बिना हिसाब के जन्नत में जायेंगे ★★★ ताअबद – हमेशा तक ★★★ ★★★ ★★★ तुफ़ैल – वसीले ★★★ बन्दए नंगे ख़लक़त – यहाँ आलाहज़रत अपने आपको शर्मिन्दा मख़लूक़ में से फ़रमा रहे हैं ★★★ ★★★ ★★★ ★★★ अहल – बीवी ★★★ वुल्द – औलाद ★★★ अशीरत – क़बीला ★★★ ★★★ ★★★ काश – तमन्ना करने के लिए बोला जाता है ★★★ आमद – तशरीफ़ आवरी ★★★ शौकत – शान ★★★ क़ुद्सी – फ़रिश्ते ★★★ मतलब यह है कि आलाहज़रत दुआ फ़रमा रहे हैं कि जब रोज़े क़ियामत हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन तशरीफ़ लायें तो फ़रिश्ते मुझसे सलाम पढ़ने के

लिए कहें और साथ ही तमाम उम्मत और हम गुनाहगार भी हों और पढ़ें :

मुस्तफ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा ख़ैरुल वरा हो

मुस्तफ़ा – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम है जिसका मतलब चुना हुआ बर्गुज़ीदा ★★★ ख़ैरुल वरा – मख़लूक़ मे सबसे बेहतर ★★★ सरवर – सरदार ★★★ दोसरा – कौनैन, दोनों जहान ★★★ तसद्दुक़ – सदक़ा ★★★ ना–शुस्ता रू – स्याह चेहरे वाले यानी गुनाहगार ★★★ बहरे अता – अता का समन्दर ★★★ शायाने रद – रद करने के लायक़ ★★★ शाने सख़ा – सख़ावत की शान ★★★ काने हया – हया शर्म की खान ★★★ नंगे जफ़ा – ऐसा गुनहगार कि जिसे देख कर जुर्म भी शर्मा जाए ★★★ जाने वफ़ा – वफ़ा की जान ★★★ चर्ख़ बदले दहर बदले –– आसमान बदले ज़माना बदले ★★★ बदलने से वरा – जो बदल न सके ★★★ सहव – थ्भूल ★★★ हाशा – हरगिज़ नहीं ★★★ कैफ़ यन्सा क्यूँ क़ज़ा हो –– रोज़े क़ियामत हमें कैसे भूल जायेंगे ★★★ गिराँ – दुश्वार ★★★ ख़ाना आबाद आग का हो –– आग का घर आबाद हो हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के दुश्मन से ★★★ वल्लाह – क़सम ख़ुदा की ★★★ जाँ गुज़ा – जान को सताने वाला ★★★ ग़मज़ुदा – ग़म दूर करने वाले ★★★ तुम मुदाम उसको सरा हो –– तुम बराबर उसकी तारीफ़ करो ★★★ बर तू ऊ पा शुद तू बर मा –– वह तुम पर छिड़के और तुम हम पर ★★★ ता अबद यह सिलसिला हो – हमेशा यह सिलसिला चलता रहे ★★★ मुश्किल कुशा – मुश्किल दूर करने वाला।

मिल्के ख़ासे किबरिया हो

मिल्के ख़ास किब्रिया हो – अल्लाह तआ़ला की ख़ास मिल्क (मिल्कियत) यानी आप ख़ुदा की मिल्के ख़ास हैं और ख़ुदाई के मालिक हैं ★★★ मालिके हर मा सिवा हो –– अल्लाह तआ़ला के सिवा हर चीज़ के मालिक हो ★★★ अक़्ले आलम से वरा हो – पूरे आलम की अक़्ल हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मरतबे को नहीं समझ सकती, आपको नहीं समझ सकती आपको सिर्फ़ आपका मालिक अल्लाह ही जानता है ★★★ कन्ज़े मकतूमे अज़ल में – कन्ज़ मअना ख़ज़ाना मकतूम मअना छुपे हुए यानी

आप छुपे हुए ख़ज़ाने की तरह हैं ★★★ दर्रे मकनूने ख़ुदा हो -- दुर के मअनी मोती और मकनून मअनी छुपा हुआ लिहाज़ा आप छुपा हुआ क़ीमती मोती हैं ★★★ अस्ले मक़्सूदे हुदा - हिदायत का अस्ल मक़सद ★★★ नमाज़े जाँफ़िज़ा - हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम रूह को ज़िन्दा रखने वाली नमाज़ हैं ★★★ सब बशारत की अज़ाँ थे -- मतलब यह है कि हर नबी आपके बारे में बशारत देता हुआ आया ★★★ मुद्दआ - मक़सद, आरज़ू ★★★ मुअख़्ख़र - सबसे आख़िर वाला ★★★ मुब्तदा - सबसे अव्वल वाला ★★★ क़ुर्बे हक़ - अल्लाह तआ़ला से नज़दीकी ★★★ मुन्तहा - आख़िर, अन्त --- सारे नबी अल्लाह के क़ुर्ब की मन्ज़िले थे और आप इस सफ़र या मन्ज़िल का अन्त हैं ★★★ क़ब्ले ज़िक्रे इज़मार किया जब - इसका मतलब किसी अच्छे आलिम से समझें ★★★ रुतबा - मरतबा ★★★ साबिक़ - पहले गुज़रा हुआ वक़्त ★★★ तूरे मूसा - मूसा अ़लैहिस्सलाम का तूर के पहाड़ पर जाना ★★★ चर्ख़े ईसा -- हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान पर उठा लिया जाना ★★★ मासिवा - अलावा ★★★ दना - क़रीब तर ★★★ जिहत - दिशा ★★★ शश जिहत से वरा हो - छः दिशाओं से भी हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम परे हैं ★★★ लामकाँ - वह मकान जहाँ दिशाएं भी नहीं रहतीं ★★★ जाने सफ़ा - साफ़ सुथरी जान ★★★ हुज़ूरे किबरिया - अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ★★★ रसाई - पहुँच ★★★ बारगाह तक तुम रसा हो - अल्लाह की बारगाह तक हूज़ूर की पहुँच है ★★★ कज कुलाहो - टेढ़ी टोपी वाले यानी मग़रूर या बेदीन लोग।

ज़मीनो ज़मा तुम्हारे लिए मकीनों मकाँ तुम्हारे लिए

ज़मीनो ज़माँ - ज़मीन और ज़माना ★★★ मकीनों मकाँ - मकान और मकान के रहने वाले ★★★ चुनीं ओ चुनाँ - यह वह इस उस हम तुम सब कुछ ★★★ दो जहाँ - दोनों जहान ★★★ दहन -मुँह ★★★ ख़िदम - .गुलाम ★★★ रसूले हिशम - तमाम रसूल ख़िदमतगार ★★★ तमामे उमम - सब उम्मतें ★★★ .गुलामे करम - करम वाले आक़ा के .गुलाम ★★★ वुजूद - मौजूद होना ★★★ अदम - जो मौजूद न हो ★★★ हुदूस - नई पैदाइश क़िदम का विलोम यानी अल्लाह पाक के सिवा सब कुछ ★★★ क़िदम - जो हमेशा से है यानी अल्लाह तआ़ला ★★★ जहाँ - दुनिया ★★★ अयाँ - ज़ाहिर ★★★ कलीम - लक़ब हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम का ★★★

नजी – लक़ब हज़रते नूह अ़लैहिस्सलाम का ★★★ मसीह – लक़ब हज़रते ईसा अ़लैहिस्सलाम का ★★★ सफ़ी – लक़ब हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम का ★★★ ख़लील – लक़ब हज़रते इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का ★★★ अतीक़ – हज़रते अबूबक्र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ वसी – हज़रते उमर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ ग़नी – हज़रते उसमान रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ इसालते कुल – हर चीज़ की अस्ल यानी हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ★★★ इमामते कुल – तमाम जहान की इमामत ★★★ सियादते कुल – तमाम आलम की सरदारी ★★★ इमाराते कुल – तमाम आलम के अमीर यानी सबसे बड़ी हस्ती ★★★ हुकूमते कुल – तमाम आलम की हुकूमत ★★★ विलायते कुल – तमाम आलम की विलायत ★★★ फ़लक – आसमान ★★★ सिमाक ो समक – समन्दर के तमाम जानवर मुराद है ★★★ सिक्का निशाँ – छाप का निशान ★★★ कन्ज़े निहाँ – छुपा हुआ ख़ज़ाना ★★★ नूरे फ़िशाँ – नूर छिड़कने वाला ★★★ कुन से अयाँ – कुन के मअना हो जा अयाँ मअना ज़ाहिर यानी वह सब चीज़ें जो अल्लाह तआ़ला के कुन फ़रमाने से पैदा हुईं ★★★ बज़्मे फ़काँ – वह सब चीज़ें जो अल्लाह तआ़ला के कुन फ़रमाने से पैदा हुईं ★★★ बाग़े जिनाँ – जन्नत के बाग़ ★★★ ज़ुहूरे निहाँ – छुपी हुई चीज़ का ज़ाहिर होना ★★★ मिहाँ – बड़े लोग सरदार ★★★ शम्स – सूरज ★★★ क़मर – चाँद ★★★ सहर – सुबह ★★★ बर्ग – पत्ते ★★★ शजर – पेड़ ★★★ समर – फल ★★★ तेग़ – तलवार ★★★ सिपर – ढाल ★★★ हुक्मे रवाँ – जारी हुक्म ★★★ जूद – वह जो बिन मांगे अता हो ★★★ अकर मियाँ – इज़्ज़तें, करम, वजाहतें ★★★ सहाबे करम – नवाज़िश ो बख़्शिश का बादल ★★★ आबे निअम – नेमतों का पानी ★★★ सत्रे बदाँ – नंग को छुपाना यानी गुनाहगारों के ऐबों को छुपाना ★★★ नूरे फ़िशाँ – नूर छिड़कने वाला ★★★ मेहर ो शाँ – गुनाहगारों की हमदर्दी करना ★★★ ब–आँ हमा शँ – मरतबों और दर्जों के बावुजूद ★★★ बसाया कशाँ – गर्मी से बचने के लिए साया करना ★★★ मवाकिबे शाँ – शानो शौकत वाली फ़ौज ★★★ जिलाए करब – रंजो ग़म को दूर करना ★★★ बरब्बे जहाँ – दुनिया के रब की क़सम ★★★ ज़ुनूब – गुनाह ★★★ हिबा – गर्द ओ ग़ुबार जो सुराख़ से आती रोशनी में दिखते हैं ★★★ .कुलूब – दिल की जमा ★★★ ख़ुतूबे रवा – ख़ुद कलामी ★★★ कुरूबे सफ़ा – साफ़ दिल ★★★

पए – वास्ते *** बशर – इन्सान *** मलाइका – फ़रिश्ते *** जबीं – माथा, पेशानी *** क़ल्ब – दिल *** सजदा कुनाँ – झुके हुए *** रूहे अमीं – लक़ब हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम का *** अर्शे बरीं – अर्शे आज़म *** लौहे मुबीं – वह लौह या तख़्ती जहाँ सब की तक़दीरें लिखी हुई हैं *** रम्ज़ें खुलीं – राज़ खुले *** अज़ल – हमेशगी यानी वह वक़्त जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही जानता है और कोई नहीं *** निहाँ – खुल जाना *** जिनाँ – जन्नतें *** चमन – बाग़ *** समन – फूल *** फबन – सजावट ख़ूबसूरती *** सराए मिहन – दुनिया जो सराए है मेहनत व मशक़्क़त की जगह, दारुलअमल *** मिनन – ऐहसान *** कमाले मिहाँ – *** जलाले शहाँ – तमाम बादशाहों का जलाल *** जमाले हिसाँ – ख़ूबसूरतों की ख़ूबसूरती *** अयाँ – ज़ाहिर *** रोज़े फ़काँ – जो हो गया *** साँ – मानिन्द, जैसा, तरह *** कुजा – कहाँ, किस गिनती में *** सिपहर – आसमान *** जिहत – दिशा *** विसाल मिला – यानी अल्लाह तआ़ला से मिलना हुआ *** रिफ़अते शाँ – शान की बलन्दी *** ब–फ़ौर सदा – फ़ौरन आवाज़, जल्दी आवाज़ *** सिदरह – सातवें आसमान पर वह मक़ाम जहाँ पर हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम के मक़ाम की इन्तिहा है *** सुफ़ूफ़े समाँ – आसमान की सफ़ें *** मरहमतें – मेहरबानियाँ *** कच्ची मतें – छोटी अक़्ल *** गतें – बुरी हालत कर लेना *** .कुसूर – ख़ता *** .कुसूरे जिनाँ – जन्नत के महल *** फ़ना ब–दरत – मौत तेरे दरवाज़े पर *** बक़ा ब–बरत – ज़िन्दगी आपके तुफ़ैल *** ज़ि–हर दो जिहत – दो दिशाओं से *** बगिर्दे सरत – आपके सर के चारों तरफ़ *** मरकज़ियत तुम्हारी सिफ़त – सबसे ऊँचाई पर केन्द्र होना आप स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सिफ़त है *** दोनों कमाँ – दोनों कमानों को मिलाकर गोल दाइरा बनता है *** ख़ुर – यानी ख़ुर्शीद यानी सूरज *** गए हुए दिन को अस्र किया – यानी दिन ख़त्म हो गया था सूरज छुप गया था हुज़ूर ने फिर अस्र का वक़्त कर दिया यानी सूरज को पलटा दिया *** ताबो तवाँ – चमक दमक क़ुदरत, बर्दाश्त *** सबा – हवा *** लिवा – लिवाउल ह़म्द – वह झंडा जो रोज़े क़यामत हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अता होगा, लिवा तालू को भी कहते हैं *** सना – तारीफ़।

नज़र इक चमन से दो चार है न चमन चमन भी निसार है

चमन – बाग़ ★★★ दोचार – नज़र का मिल जाना ★★★ निसार – .क़ुर्बान ★★★ गुल – फूल ★★★ बहार बुलबुले ज़ार है – बुलबुल भी फ़रयाद कर रही है ★★★ दिले बशर – इन्सान का दिल ★★★ फ़िगार – ज़ख़्म मतलब यहाँ इश्क़ में ज़ख़्मी ★★★ मलक – फ़रिश्ते ★★★ हज़दा हज़ार – अट्ठारह हज़ार ★★★ हज़ार – बुलबुल ★★★ सजदा कुना – अदब से झुका हुआ ★★★ ज़मज़मख़्वाँ – गीत गाने वाला मतलब यहाँ आपकी शान में गाने वाला ★★★ तपाँ – तड़पता हुआ ★★★ निहार – दिन ★★★ जोशिश – तेजी ★★★ झपक पलक की तू ख़ार है -- पलक का झपकना कांटा है ★★★ समन – फूल ★★★ सोसन – एक फूल का नाम ★★★ यासमन – नाम एक फूल का ★★★ सुम्बुल – बनफ़शा एक ख़ुशबूदार घास है ★★★ नसतरन – एक ख़ुशबूदार फूल का नाम ★★★ गुल – फूल ★★★ सर्व – नाम एक दरख़्त का जो बहुत लम्बा होता है और इससे महबूब के क़द की मिसाल दी जाती है ★★★ लाला – ख़शख़ाश का सुर्ख़ फूल ★★★ जलवा हज़ार – हज़ारों जलवे ★★★ सबा – हवा ★★★ सनक – हवा का चलना ★★★ लबे जू झलक – दरिया के किनारों पर रौनक़ ★★★ दहर – ज़माना ★★★ बहर – समन्दर ★★★ फ़ना – बरबाद, ख़त्म ★★★ बक़ा – ज़िन्दगी ★★★ बुन – दरख़्त की जड़ ★★★ बार – फल, नतीजा, रिज़ल्ट ★★★ बेनवा – फ़क़ीर बिना सामान के ★★★ नवा – आवाज़ ★★★ तेज़ रविश – तेज़ चाल ★★★ दियार – वतन, घर, शहर या मुल्क ★★★ महव -- गुम होना ★★★ निसार – क़ुर्बान ★★★ तपाँ – तप रहे, जल रहे ★★★ ख़ूबों – अच्छों हसीनों के ★★★ नहीं चाके जेबे गुलो सहर कि क़मर भी सीना फ़िगार है -- सुबह के फूल ही नहीं खिले बल्कि चाँद ने भी सीना चीर दिया है ★★★ ज़रे निकू – ख़ालिस सोना ★★★ ज़र्द रू – सुर्ख़ चेहरा ★★★ गुले ख़ुल्द – जन्नत का फूल ★★★ ख़िज़ाँ – पतझड़ ★★★ सिफ़त – ख़ूबी, अलामत ★★★ नआल – ख़िराज, टैक्स, नज़राना ★★★ नवाल – मेहरबानी, इनायत, अता ★★★ तजल्लियाँ – नूरानियत, जलवे ★★★ तअल्लियाँ – बरतरी, शेख़ी, ग़ुरूर ★★★ बार दुहार – दोहरी नूर की बारिश ★★★ रुसुल – रसूल की जमा ★★★ मलक – फ़रिश्ते ★★★ शफ़ीअ – सिफ़ारिश करने वाला ★★★ रोज़े शुमार – रोज़े क़ियामत ★★★ हिजाब – पर्दा, शर्म व हया ★★★ चर्ख़ – आसमान घूमने वाला ★★★ मसीह – ज़िन्दा करने वाला, हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का लक़ब है ★★★ कलीम – कलाम करने वाला, हज़रते मूसा

अ़लैहिस्सलाम का लक़ब है ★★★ तूर – उस पहाड़ का नाम है जिस पर हज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह के नूर की तजल्ली का दीदार हुआ ★★★ निहाँ – छुपा हुआ ★★★ अरब का नाक़ा सवार – मुराद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ★★★ तजल्लीए दिल नशीं – दिल में बैठने वाली रोशनी ★★★ महे मुबीं – रोशन चमकदार चांद ★★★ तार – काली, अंधेरी ★★★ ज़ुल्मतें स्याही, अंधेरा ★★★ सितम – ज़ुल्म, तकलीफ़ ★★★ मह – चांद ★★★ महर – सूरज ★★★ शबे दाज – अंधेरी रात ★★★ अफ़ुव्व – माफ़ करने वाला ★★★ ज़िया – रोशनी ★★★ इस्तफ़ा – चुना हुआ ★★★ सक़र – जहन्नम ★★★ ख़ार – कांटा ★★★ ज़बीह – जिसे ज़िबह किया जाए ★★★ लैलाए नज्द – नज्द की लैला (मौलवी इस्माईल देहलवी की तरफ़ इशारा है) ★★★ ज़बीहे तेग़े ख़्यार – नेकों की तलवार से मरा हुआ।

ये है दीं की तक़वियत उसके घर ये है मुस्तक़ीमे सिराते शर
जो शक़ी के दिल में गाव ख़र   तो ज़बाँ पे चूढ़ा चमार है

मौलवी इस्माईल देहलवी की किताब तक़वियतुल ईमान में अल्लाह के नज़दीक हर शय को चूढ़े चमार से बदतर बताया और इस तरह हुज़ूर की भी तौहीन की और सिराते मुस्तक़ीम में इस तरह तौहीन की कि नमाज़ में हुज़ूर के ख़्याल का आ जाना बुरा बताया जब कि गाय या ख़र (गधा) का ख़्याल आ जाना बेहतर बताया। इसी बात को यहाँ आलाहज़रत फ़रमाते हैं कि इनकी तक़वीयतुल ईमान ने ईमान को यही तक़वीयत दी है और इनके यहाँ शर फैलाना ही सिराते मुस्तक़ीम है। इन सख़्त दिलों के दिल में गाय और गधे और मुँह पर चूढ़ा चमार भरा है।

जूद – जो बिना मांगे मिले ★★★ सर बसर – हमेशा ★★★ तपे सक़र – दोज़ख़ की आग ★★★ तेरे दिल में किससे बुख़ार है –– तेरे दिल में किस हस्ती के लिए हसद व जलन है ★★★ रज़ा के नेज़ा की मार – आलाहज़रत के क़लम की मार ★★★ अदू – दुश्मन ★★★ चारा जोई – इस्तिग़ासा करना

ईमान है क़ाले मुस्तफ़ाई

ईमान है क़ाले मुस्तफ़ाई – हुज़ूर का फ़रमान ईमान ★★★ क़ुर्आन है हाले मुस्तफ़ाई – क़ुर्आन मजीद आपकी सीरते तय्यिबा है ★★★ नक़्श तिम्साले मुस्तफ़ाई – हुज़ूर का रुख़े अनवर अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला का नमूना है ★★★ बाला – बड़ा ★★★ रुसुल – बहुत से रसूल ★★★ इजलाल – बुज़ुर्गी, मन्ज़िलत ★★★

जलाल – बुज़ूर्गी ★★★ इदबार – नुहूसत, बदइक़बाल ★★★ इक़बाल – दबदबा ★★★ मुरसल – वो रसूल जिन पर किताब नाज़िल हुई ★★★ मुश्ताक़े हक़ – अल्लाह तआ़ला के चाहने वाले ★★★ मुश्ताक़ – ख़्वाहिशमन्द ★★★ ख़्वाहान – चाहने वाला ★★★ विसाल – मुलाक़ात, मेलजोल ★★★ किबरिया – अल्लाह तआ़ला ★★★ जोयान – ढूंढने वाला ★★★ जमाल – ख़ूबसूरती ★★★ महबूब – जिससे महब्बत की जाए ★★★ मुहिब – महब्बत करने वाला ★★★ कौनैन – दोनों जहान ★★★ दस्ते दिल – दिल रूपी हाथ ★★★ जूद – वह नेमत जो बिन मांगे अता हो ★★★ नवाल – अता, बख़्शिश ★★★ शमे जमाले मुस्तफ़ाई – हुज़ूर के जमाल की शमा ★★★ शबे तार – अंधेरी रात ★★★ क़ज़्ज़ाक़ – डाकू ईमान के ★★★ सर्द – ठंडा ★★★ लौ लगा दे – याद जमा दे ★★★ ग़मज़दा – मुसीबतज़दा ★★★ तारीकी गोर – अंधेरी क़ब्र ★★★ पुर नूर – नूर से भरा ★★★ बज़्मे आलम – तमाम आलम की महफ़िल ★★★ तीरा दिल – स्याह दिल ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते

ज़र्रे झड़ कर तिरी पैज़ारों के

पैज़ार – जूतियाँ मुबारक ★★★ सय्यार – गर्दिश करने वाला सितारा ★★★ ख़िल्अते ज़र – सोने की पोशाक ★★★ पुश्तार – पीठ पर लदा बोझ ★★★ तौर – आदत ★★★ बेतौर बुरी आदत ★★★ मुजरिमो चश्मे तबस्सुम रखो – गुनाहगारों तबस्सुम की उम्मीद रखो ★★★ बहरे तसलीमे अली मैदाँ में– मौला अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की सलामी में मैदाने जंग में ★★★ बन्दा – .गुलाम।

सर सू–ए रौज़ा झुका फिर तुझको क्या

सूए रौज़ा – रौज़े की तरफ़ ★★★ दिल था साजिद – दिल ताज़ीमन झुका हुआ था और बहुत झुका हुआ ताज़ीमन झुकना मना नहीं हाँ ग़ैरे ख़ुदा की तरफ़ इबादत की नियत से सर का झुकना बिला शक ओ शुबा शिर्क व कुफ़्र है ★★★ उनको तमलीके मालीकुल मुल्क से – अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर को मालिक बना देने से उन्हें हमने भी मालिक कह दिया। ★★★ मालिके आलम – तमाम आलम के मालिक ★★★ तज दिया – .क़ुर्बान कर दिया ★★★ या इबादी – हदीस में हुज़ूर ने या इबादी यानी हम उम्मतियों को अपना .गुलाम फ़रमाया ★★★ बन्दा – .गुलाम ★★★ देव के बन्दों – यानी देवबन्दियों ★★★ ला यऊ़दून – वो वापस नहीं होंगे ★★★ दाइमा – हमेशा ★★★ दश्ते गिर्दे पेश तैबा का अदब –– मदीने शरीफ़ के आस पास के जंगल का

अदब *** देव – शैतान *** अब्दे मुस्तफ़ा – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के .गुलाम *** ख़ुल्द – जन्नत।

वही रब है जिसने तुझको हमअतन करम बनाया

हमअतन करम बनाया – सर से पा तक करम बनाया *** आसताँ – दर *** ह़म्द – तारीफ़ *** हाकिमे बराया – नेक व मासूम लोगों के सरदार *** क़ासिमे अताया – नेअमतों के बांटने वाले *** दाफ़ेए बलाया – बलाओं के दफ़ा करने वाले *** शाफ़ेए ख़ताया – ख़ताओं व गुनाहों की माफ़ी की सिफ़रिश करने वाले *** नफ़ख़्ते – मैंने फूंक मारी *** फ़ीह – उसमें *** दम – फूंक *** नफ़ख़्तु फ़ीह का दम -- हज़रते मरयम के फूंक मारी *** निशाने आज़म – अल्लाह की सबसे बड़ी निशानी यानी हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम *** आमना का जाया -- हज़रते आमिना रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का बेटा *** सिदरा वाले – यानी हज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम *** चमने जहाँ के थाले *** तेरे पाए का न पाया – तुझ जैसा न पाया *** तुझे यक ने यक बनाया – अल्लाह तआ़ला ने तुझ जैसा पैदा ही नहीं किया *** फ़इज़ा फ़रग़ता फ़नसब – जब तू फ़ारिग़ हो तो अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो *** मनसब – मरतबा, ओहदा *** जो गदा बना चुके अब उठो वक़्ते बख़्शिश आया – या रसूलल्लाह जब आप अपना .गुलाम बना ही चुके हैं तो उठिये अब बख़्शवाने का वक़्त आ गया *** व इलल लाह फ़रग़ब – अपने रब की तरफ़ रग़बत करो *** शाफ़िए ख़ताया – गुनाहों की सिफ़ारिश कराने वाले *** दरे रौज़ा के मुक़ाबिल – सरकारे दो आलम के रौज़े के दरवाज़े के सामने *** ख़न्दा ज़ेरे लब है – होंटों ही होंटों में मुस्कुराना *** गिरया सारी शब – सारी रात रोना *** तरब – ख़ुशी में *** सरे चर्ख़ – आसमान पर *** ज़ेरे पा – पांव के नीचे *** पेशे दर खड़ा है – .गुलामी के साथ सर झुकाए आक़ा के दर पर खड़ा होना *** तपक – दर्द की गर्मी *** आतिश – आग *** कभी वह टपक के बारिश – बारिश की तरह आंसू बहाना *** हुजूम – भीड़ भाड़ *** नालिश – रोना, दुहाई, फ़रयाद *** जोशिश – ज़ोर शोर वलवला *** गुल – फूल *** चमने जिनाँ – जन्नत का बाग़ *** गुले क़ुद्स – मुक़द्दस फूल *** मरगे नौ का ख़्वाँ – फ़ौरन मौत का ख़्वाहिशमन्द *** वह जिया कि मर्गे क़ुर्बां – वह ज़िन्दगी कि जिसपे मौत क़ुर्बान *** वो मवा कि ज़ीस्त लाया -- यह मौत ऐसी ज़िन्दगी लाई है *** कहे रूह हाँ जिलाया – रूह कहती है कि ज़िन्दा कर

दिया ★★★ गुम – ग़ायब ★★★ अयाँ – ज़ाहिर ★★★ कभी सर्द गह तपाँ है -- कभी बिल्कुल ठंडा कभी बहुत गर्म ★★★ कभी ज़ेरे लब फ़ुग़ाँ है कभी होंटो पर दर्द भरे नाले हैं ★★★ कभी चुप कि दम न थाया -- कभी एक दम ख़ामोशी है ★★★ रुख़े कामे जाँ दिखाया – अपने मक़सद का चेहरा दिखाना ★★★ यह तसव्वुराते बातिल – बेकार ख़्याल ★★★ क़ुदरत – इख़्तेयार ★★★ कामिल – पूर्ण ★★★ इन्हें रास्त कर ख़ुदाया -- ऐ अल्लाह उन्हें सही कर दे ★★★ शफ़ीअ – सिफ़ारिश करने वाला।

लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले

लहद – क़ब्र ★★★ लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले --हुज़ूर के चेहरए अनवर की ज़्यारत से जो दिल पर ज़ख़्म लग कर एक निशान बन गया है उसका दाग़ क़ब्र में ले के चले ★★★ जिनाँ – जन्नत ★★★ मुहिब्बाने चार यार – हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के चारों ख़लीफ़ा हज़रते अबूबक्र, हज़रते उमर, हज़रते उसमान और मौला अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुम से महब्बत करने वाले ★★★ चार बाग़ – इन्हीं चारों ख़लीफ़ाओं की महब्बत के बाग़

गए ज़्यारते दर की सद आह वापस आए
नज़र के अश्क पुछे दिल का दाग़ ले के चले

हुज़ूर के दर की ज़्यारत को गए और आहें भरते हुए वापस आए। नज़र के आंसू तो पुछ गए मगर दिल का दाग़ बड़े काम का है। ★★★ मदीना जाने जिनाँ है – मदीना जन्नत की जान है ★★★ सूए ज़ाग़ – कव्वे की तरफ़ ★★★ तेरे सहाबे सुख़न से नम कि नम से भी कम -- हुज़ूर की सुख़न यानी बातचीत के अन्दाज़ से क़तरा नहीं बल्कि नम और नम से भी कम ★★★ बलीग़ बहरे बलाग़त -- यानी जिन्होंने वह नम लिया वह बड़े बलीग़ बल्कि बलाग़त के समन्दर तक पहुँचे ★★★ हुज़ूरे तैबा – मदीने पाक की हाज़री ★★★ हीले – बहाना ★★★ मक्र – मक्कारी ★★★ फ़राग़ – फ़राग़त, फ़ुरसत ★★★ वस्फ़े जमाल ओ कलाम – ख़ूबसूरती और कलाम की तारीफ़ ★★★ मुहाल – नामुमकिन ★★★ मसाग़ – किसी चीज़ की रवानगी की जगह ★★★ गिला – शिकायत।

गिला नहीं है मुरीदे रशीद शैताँ से
कि उसके वुस्अते इल्मी का लाग़ ले के चले
हर एक अपने बड़े की बड़ाई करता है
हर एक मग़बचा मग का अयाग़ ले के चले

★★★ मुरीद रशीद शैताँ – रशीद अहमद गंगोही का मुरीद

ख़लील अहमद अम्बेठी। ये दोनों मुरतद और मिस्ले शैतान थे और ख़लील अहमद ने अपनी किताब बराहीने क़ातेआ में हुज़ूर के इल्म को शैतान के इल्म से कम बताया और साथ ही यह भी कहा कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के इल्मे ग़ैब को मानना शिर्क और शैतान के इल्म के मानने को शिर्क नहीं माना। जब एक के लिए मानना शिर्क है तो दूसरे के लिए मानना शिर्क क्यूँ नहीं होगा।

इस शेर में इसी तरफ़ इशारा है कि वह वुस्अते इल्म का लाग़ ले के चले। हर शख़्स अपने बड़ों की अच्छाई करता है लिहाज़ा ख़लील अहमद ने भी अपने बड़े यानी शैतान की बड़ाई की अब इसलिए उससे क्या गिला किया जाए। लिहाज़ा शैतान के इल्म को मान लेने से उसके अपने कहे के मुताबिक़ वह ख़ुद ही अपने मुँह मुश्रिक हो गया।

मगर ख़ुदा पे जो धब्बा दरोग़ का थोपा
ये किस लईन की .गुलामी का दाग़ ले के चले
वुक़ूए किज़्ब के मअना दुरुस्त और .क़ुद्दूस
हिए की फूटे अजब सब्ज़ बाग़ ले के चले
जहाँ में कोई भी काफ़िर सा काफ़िर ऐसा होगा
कि अपने रब पे सफ़ाहत का दाग़ ले के चले

दरोग़ – झूट *** लईन – शैतान का लक़ब *** वुक़ूए किज़्ब – अल्लाह पाक के झूट बोलने को मुमकिन जानना *** हिए की फूटे –– आँख का अन्धा होना *** सब्ज़ बाग़ – मुहावरा है मअना लम्बी लम्बी झूटी उम्मीदें। सफ़ाहत – बेवक़ूफ़ी, कमीनापन।

वहाबियों का यह अक़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला झूट बोल सकता है तो यह तो शैतान लईन की ग़ुलामी हुई। दुनिया में कोई काफ़िर भी ऐसा होगा जो यह कहे कि अल्लाह तआ़ला झूट बोल सकता है।

ज़ाग़ – कव्वा *** कलाग़ – जंगली कव्वा *** ख़बीस – बहुत ही कमीना *** यकसाँ – बराबर ***

अम्बिया को भी अजल आनी है

अजल – मौत *** फ़क़त – बस, सिर्फ़ *** हयात – ज़िन्दगी *** मिस्ले साबिक़ – फिर पहले ही की तरह *** अजसाम – जिस्म की जमा *** सानी – मिस्ल, तरह *** रूह है पाक है नूरानी है –– नबी अगर जिस मिट्टी पर अपना मुबारक पैर रख दे वह जगह पाक है नूरानी है *** अज़्वाज – बीवी *** तर्का – मरने के बाद मरने वाले का जो माल बाटा जाता है *** फ़ानी – ख़त्म होने वाला *** हय्यिए अबदी –– हमेशा की ज़िन्दगी *** सिद्क़ वादा – सच्चा वादा।

रुबाइयात

(1)

अम्बिया – नबी की जमा ★★★ कमा क़ीला लहुम – जैसा कि उनके लिए कहा गया ★★★ वल ख़ातमु ह़क़्क़ुकुम – आपका हक़ है आख़री नबी होना ★★★ ख़ातिम – जिस पर ख़त्म हो ★★★ दफ़तर तन्ज़ील – इल्हामी किताबों की फ़ेहरिस्त का रजिस्टर ★★★ तमाम – ख़त्म ★★★ महर – सूरज ★★★ अकमलतु लकुम – मैंने आपके लिए दीने इसलाम को मुकम्मल कर दिया।

(2)

शबे तैबा – मदीने शरीफ़ की रात ★★★ शारिब – पिलाने वाली, मुंछ ★★★ रुख़े रौशन – चमकता हुआ चेहरा ★★★ गेसू – ज़ुल्फ़, बाल ★★★ शबे क़द्र – रमज़ान के आख़री दस दिनों की एक मुबारक रात ★★★ बराअत – शाबान के महीने की पंनद्रहवीं तारीख़ ★★★ मिज़गाँ – पलक ★★★ अबरू – भवें ★★★ वल फ़ज्र – सुबहे सादिक़, सूरह फ़ज्र की तरफ़ इशारा है ★★★ लयाल अश्र – दस रातें

(3)

★★★ सर ता बक़दम – सर से पैर तक

(4)

बोसा गाहे असहाब – सहाबियों के बोसा लेने की जगह ★★★ महरे सामी – बलन्द महब्बत ★★★ शानए – कंघी करना ★★★ चप – बायाँ ★★★ अम्बर – ख़ुशबूदार चीज़ ★★★ फ़ामी – रंग भरा हुआ ★★★ तुरफ़ा – अजीब बात, चारों तरफ़ ★★★ संगे असवद – काबा शरीफ़ में नसब वह पत्थर जिसे हाजी चूमते हैं ★★★ रुक्ने शामी – काबा शरीफ़ के एक कोने का नाम।

(5)

तुरबते शह – हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के क़ब्र पाक की मिट्टी या क़ब्र ★★★ फ़ाज़िल – फ़ज़ीलत रखने वाली ★★★ मरक़द – क़ब्र, ख़्वाबगाह।

(6)

साअत – घड़ी ★★★ लिल्लाह – अल्लाह के वास्ते ★★★ रुख़े रौशन – चमकदार चेहरा।

(7)

शुबह – शक ★★★ शबीह – तसवीर ★★★ बेमिस्ल – जिस जैसा दूसरा न हो ★★★ तेमसाल – मिसाल, शक्ल सूरत ★★★ मुतअल्लिक़ – तअल्लुक़ रखने वाला ★★★ मुदाम – हमेशा।

(8)

शाह – हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ★★★ तवाज़ो – आजिज़ी, इन्केसारी ★★★ तक़ाज़ा – मांग, तलब, ख़्वाहिश ★★★ गवारा – पसन्द मन्ज़ूर।

(9)

महज़ूज़ – लुत्फ़ उठाने वाला ★★★ अलमुन्तहा लिल्लाह – अल्लाह का एहसान ★★★ महफ़ूज़ – हिफ़ाज़त में ★★★ नात गोई – नात कहना ★★★ मलहूज़ – ख़्याल रखा गया।

(10)

पेशा – रोज़ी हासिल करने का कोई काम ★★★ जम्बा – हिमायत, तरफ़दारी ★★★ सना – तारीफ़ ★★★ लौज़ेबा – बादाम का हल्वा ★★★ सेर – खजूर की गुठली।

(11)

महसूर – घिरा हुआ ★★★ दानी – जानना ★★★ आली – बलन्द व बरतर, ख़ुशबयान ★★★ बेमिसाली – मिसाल न होना ★★★ वस्फ़ – ख़ूबी – सिफ़त ★★★ बेकमाली – कोई ख़ूबी व कमाल न रखता हो।

(12)

रश्क – हसद, जलन ★★★ अनादिल – बुलबुल ★★★ फ़सीह – ख़ुश बयान, शीरीं कमाल ★★★ बेमुमासिल – बेनज़ीर ★★★ हक़्क़ा – बख़ुदा सही बात यह है ★★★ सनअत – हुनर ★★★ नुक़सान – कमी, ख़सारा।

(13)

तोशा – सफ़र का सामान ★★★ अफ़ग़ाँ – फ़रयाद ★★★ दिले ज़ार – रोने वाला दिल ★★★ हदी – अरबी शतरवानों का नग़मा ★★★ हदी ख़्वाँ – हदी पढ़ने वाला ★★★ रहबर – रास्ता दिखाने वाला ★★★ रह – राह, रास्ता ★★★ नक़्शे क़दम – किसी के रास्ते पर चलना ★★★ हज़रते हस्साँ – हज़रते हस्सान रदियल्लाहु तआला अन्हु एक सहाबीए रसूल हैं जो हुज़ूर की शान में नात कहा करते और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मिम्बर सजा कर उनकी नात सुनते थे।

(14)

हर जा – हर तरफ़ *** फ़लक – आसमान *** मज़्कूर – ज़िक्र होना *** क़ुसूर – महल *** पास – लिहाज़ *** दूर के ढोल – मुहावरा है मतलब यह है कि दूर की बातें बड़ी अच्छी मालूम होती हैं।

(15)

तने महबूबे इलाही – अल्लाह के महबूब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का जिस्म *** जामा – लिबास, कपड़े *** अयाँ – ज़ाहिर *** वल्लाह – अल्लाह की क़सम

(16)

जलवागह – जलवे की जगह, तख़्त *** रू – चेहरा *** क़ौसैन – दो कमाने *** मानिन्द – तरह *** अबरू – भवें *** मिज़गाँ – पलकें *** फ़ज़ाए ला मकाँ – लामकाँ की वुसअत *** आहू – हिरन

(17)

मादूम – गुम, बिल्कुल न होना *** सक़लैन – इन्सानों व जिन्नों के बादशाह यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम *** जलवागह – जलवे की जगह, तख़्त *** हसनैन – हज़रते इमाम हसन व हुसैन रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा *** तमसील – मुशाबहत, मिस्ल होना।

(18)

उक़बा – आख़िरत *** पयम्बर – हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम।

(19)

ख़ालिक़ – पैदा करने वाला *** तजद्दुद – नया होना, कोशिश करना *** बरी – पाक, बेक़ुसूर *** मख़्लूक़ – अल्लाह के सिवा सब मख़्लूक़ है *** महदूद – एक हद के अन्दर *** फ़ज़ीलत – बुज़ुर्गी बड़ाई *** बिलजुमला – ,हासिले कलाम यानी कहने का मतलब *** रोज़ अफ़ज़ूँ – हर दिन ज़्यादा।

(20)

गरदूँ – आसमान *** बिना – बुनियाद *** अबरू – भवें *** तेग़ – तलवार *** क़ज़ा – फ़ैसला, मौत का वक़्त, हुक्मे इलाही *** क़ौसैन – दो कमाने।

(21)

रुख़ – चेहरा *** सरवर – सरदार *** जलवा – नज़ारा, नुमाइश *** कूचा – गली ***

गुज़ारिश

इस किताब से नाते रसूल पढ़ने व सुनने वालों से एक गुज़ारिश यह है कि जब भी इस किताब से नाते सुनें तो हो सके तो हर शेर पर दुरूदे पाक पढ़ें चाहे वह छोटा ही दुरूद क्यूँ न हो। यह न हो सके तो थोड़ी थोड़ी देर के बाद दुरूद पढ़ें और जब कोई शेर बहुत ही ज़्यादा पसन्द आये तो 11 मरतबा दुरूद पढ़ें और इसका सवाब दिल ही दिल में तमाम मुसलमानों को बख़्श दें और मुझ नाचीज़ को भी ज़रूर याद रखें।

بسم الله الرحمن الرحيم

صَلَّ اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اٰلِهٖ صَلَّ اللّٰهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ صَلَاةً وَّ سَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه ٥

मुहम्मद अह़मद साहब की अब तक की छपी हुई हिन्दी का किताबों का तआरुफ़

अल्लाह तआ़ला की रह़मत और उसके ह़बीबे पाक मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सदक़े और हुज़ूर ग़ौसे आज़म और मशाइख़े किराम के फ़ज़्ल व करम से अब तक 26 किताबें जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब की हिन्दी में छप चुकी हैं जिनमें से कुछ किताबों का मुख़्तसर तआरुफ़ यहाँ आपको कराया जा रहा है। इन सभी किताबों की अपनी अलग अहमियत है और इन किताबों के ज़रिए हिन्दीं दाँ तबक़ा अपने ईमान व अमल की इस्लाह कर सकता है। अल्लाह तआ़ला जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब और इस काम में जुड़े उनके साथ सभी हज़रात को ईमान पर क़ाइम रहने और नेक अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनसे ज़्यादा से ज़्यादा काम लेता रहे और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रामए आमीन। पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि जहाँ भी कोई ग़लती पायें उसकी इत्तिला सफ़ा नम्बर के साथ उनके मकतबे "आलाहज़रत दारुल कुतुब 28, इस्लामिया मार्केट, बरेली शरीफ़" को करें। इन्शा अल्लाह तआ़ला अगले एडीशन में उसे ठीक किया जाएगा।

बहारे शरीअ़त

आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़लीफ़ा जलीलुश्शान फ़क़ीहे आज़मे हिन्द सदरुश शरीअ़ा हज़रत मौलाना शाह अल्लामा मुह़म्मद अमजद अली अ़लैहिर्रह़मह की यह किताब बहुत ही मशहूर व मारूफ़ है। इस किताब का हिन्दी तर्जमा जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब ने किया है और उसे कुछ इस अन्दाज़ में आसान करने की भी कोशिश की गई है कि आम आदमी की समझ में आ जाए। इस किताब के बीस हिस्से हैं मगर अभी तक पाँच हिस्से एक साथ एक ही जिल्द में छपे हैं और अब इरादा यह है कि इस मर्तबा पाँचों हिस्सों के साथ छटे हिस्से को भी शामिल कर दिया जाए सोलहवाँ हिस्सा **'इस्लामी अख़्लाक़ ओ आदाब'** के नाम से छपा है। इस किताब के पहले हिस्से मं अल्लाह, रसूल और नबियों के बारे में अ़क़ीदे, फ़रिश्तों और जिन्न का बयान है। इसके अलावा पहले ही हिस्से में आलमे बरज़ख़ क़ब्र, हश्र, जन्नत और दोज़ख़ का बयान है और चन्द फ़िरक़ों के बारे में भी बताया गया

है। इसके दूसरे हिस्से में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, वग़ैरा का बयान है और साथ ही औरतों के मसाइल हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान भी है। दूसरे ही हिस्से में नजासत और नजासत को पाक करने का बयान भी है। इस किताब के तीसरे हिस्से में अज़ान व नमाज़ का बहुत ही तफ़सील के साथ बयान है। चौथे हिस्से में नफ़्ल नमाज़ों का बयान, क़ज़ा नमाज़ों का बयान, जुमे के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम और मरीज़ की नमाज़ का बयान है। चौथे ही हिस्से में मौत आने और मय्यत के नहलाने व कफ़न-दफ़न का बयान भी है। पाँचवें हिस्से में ज़कात व रोज़े का बहुत तफ़सील के साथ बयान है। लिहाज़ा यह किताब पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती है। इस किताब के छटे हिस्से में हज का बयान है, इसमें हज, उमरा व ज़ियारत के मुतअ़ल्लिक़ ख़ूब तफ़सील से बयान किया गया है।

इस्लामी अख़्लाक़ -ओ- आदाब

आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़लीफ़ा सदरुश शरीआ़ अ़ल्लामा मुह़म्मद अमजद अली अ़लैहिर्रह़मह की किताब **बहारे शरीअत** का यह सोलहवाँ हिस्सा है। इस किताब में रोज़मर्रा के मसाइल का बयान है। इसमें खाने पीने, लिबास जूता व अंगूठी पहनने, बैठने छूने देखने व चलने के आदाब, सलाम व मुसाफह़ा, छींक जमाही का बयान है। साथ ही क़ुर्आन मजीद पढ़ने, आदाबे मस्जिद, आदाबे क़िब्ला का बयान है। मरीज़ की इयादत, लह्व व लइब का बयान है। झूट बुग़्ज़ हसद ज़ुल्म ग़ुस्सा तकब्बुर रिया का बयान है। औलाद व पड़ोसियों के हुक़ूक़ का बयान है। अल्लाह के लिए दोस्ती व दुश्मनी का बयान है। ज़ीनत का बयान है। नाम रखने का बयान है। कस्ब व इल्मो तालीम का बयान है। अम्र बिल मारूफ़ नही अनिल मुन्कर का बयान है। क़ब्रों की ज़्यारत, ईसाले सवाब और मीलाद शरीफ़ का बयान है। इसके अलावा सैकडों मसाइल का बयान है। गरज़ यह किताब पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती है।

सच्ची हिकायात

मौलाना अबुन्नूर बशीर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की यह किताब उर्दू ज़बान में बहुत मशहूर है। इसमें बुज़ुर्गों की सैकड़ों हिकायात हैं और साथ ही साथ हर हिकायत से हासिल होने वाले सबक़ भी लिख दिए गए हैं और इन सबक़ों से जहाँ हज़ारों नसीहतें

मिलती हैं वहाँ हमारे बुज़ुर्गों के तसर्रुफ़ात, इख़्तियारात, इल्मे ग़ैब, बुज़ुर्गों का मदद फ़रमाना वग़ैरह का भी सुबूत मिलता है। हर हिकायत के साथ हवाला भी दिया गया है कि यह हिकायत कहाँ से ली गई है। लगभग सारी ही हिकायात मशहूर व मारूफ़ किताबों से ली गई हैं। पाँचों हिस्सों में दस बाब हैं पहले बाब में बारी तआ़ला से मुतअ़ल्लिक़ हिकायात और दूसरे बाब में हमारे आक़ा सय्यदुल अम्बिया स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और तीसरे बाब में कुछ नबियों से मुतअ़ल्लिक़ हिकायात हैं। चौथे बाब में ख़ुलफ़ाए राशिदीन, पाँचवें बाब में सहाबए किराम छटे बाब में अहले बैते इज़ाम रिद्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन का ज़िक्र और उनसे मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी हिकायात हैं। सातवें बाब में अइम्मए किराम और आठवें बाब में औलियाए किराम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन से मुतअ़ल्लिक़ हिकायात हैं। नवाँ बाब सलातीने इस्लाम से मुतअ़ल्लिक़ है और आख़िरी दसवें बाब में मुख़्तलिफ़ हिकायात हैं। इस किताब के पाँचवें हिस्से में कुछ हिकायात और भी शामिल की गईं हैं जिनके हवाले भी दे दिए गए हैं। यह बढ़ी हुई हिकायात भी पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती हैं। कुछ मुश्किल हिकायात जो उर्दू में थीं उन्हें हटा दिया गया है। ऐसा हिन्दी वालों की दुशवारी की वजह से किया गया है फिर भी अगर कोई उसे पढ़ना चाहे तो उर्दू वाली से पढ़े।

हमारे ग़ौसे आज़म

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की सीरते पाक पर जनाब मौलाना मुहम्मद शरीफ़ साहब नूरी और जनाब मुहम्मद अहमद साहब बरेलवी की मुरत्तबा इस किताब में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बचपन से लेकर विसाल तक के हालात हैं। यह किताब 304 सफ़हात पर है और इसमें 100 से ज़्यादा करामात भी हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की सीरते पाक पर अभी तक हिन्दी ज़बान में इतनी बड़ी किताब नहीं आई। हमारी नई नस्ल जो ग़ौसे पाक को सिर्फ़ 'बड़े पीर साहब' की तरह ही जानती है उसके लिए यह किताब बहुत ही मुफ़ीद है और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में हिन्दी ज़बान में इस किताब में वह पढ़ने को मिलेगा जो हिन्दी वालों ने अभी तक नहीं पढ़ा। इस किताब को ज़रूर पढ़ें।

सवानेहे आलाहज़रत

आलाहज़रत मुजद्दिदे दीन–ओ–मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के जीवन–परिचय पर यह पहली किताब है जो 150 सफ़हात पर है, अभी तक इतनी बड़ी किताब आलाहज़रत पर हिन्दी में नहीं छपी। इसे जनाब मुहम्मद अहमद साहब बरेलवी ने कई किताबों की मदद से मुरत्तब किया है और कुछ जदीद मौज़ूआत को भी इसमें पेश किया गया है बहरहाल यह किताब पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती है। उम्मीद है कि कुछ दिनों बाद इस किताब में आलाहज़रत के बारे में और जानकारी बढ़ाई जाएगी।

शरहे सलामे रज़ा

आलाहज़रत मुजद्दिदे दीन–ओ–मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सलाम की शरह उर्दू ज़बान में 500 से ज़्यादा सफ़हात पर शाए हो चुकी है, जो कि मुफ़्ती मुहम्मद अहमद ख़ाँ क़ादिरी (पाकिस्तान) ने की जो कि पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती है। इसी सलाम के लगभग चालीस अशआ़र की शरह जनाब मुहम्मद अहमद साहब बरेलवी ने हिन्दी ज़बान में की जो कि बहुत मुख़्तसर 32 सफ़हात पर छप चुकी है। सलामे रज़ा के पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि इस किताब को उर्दू ही में पढ़ें और जिनसे न हो सके वह हिन्दी में पढ़ें और बचपन से पढ़ते आ रहे अपने आक़ा पर लिखे इस सलाम के अशआर को समझने की कोशिश एक बार ज़रूर करें। आप इश्क़े रसूल से झूम उठेंगे। वैसे तो सलाम और दुरूद के बारे में अल्लाह का हुक्म है और सलाम पढ़ना हम सुन्नियों की पहचान है मगर अगर कोई बदमज़हब भी इस शरह को पढ़ेगा तो उम्मीद की जाती है कि वह भी सलाम से महब्बत करने लगेगा और हो सकता है कि उसे ईमान की तौफ़ीक़ नसीब हो। और जिसकी क़िस्मत में ईमान ही न हो वह इससे अलग है।

ताज़ीमी सजदा हराम है

मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु का यह लाजवाब रिसाला **'अज़्ज़ुबतुज़्ज़किय्यह लितहरीमे सुजूदित्तहिय्यह'** का हिन्दी में तर्जमा जनाब मुहम्मद अहमद साहब बरेलवी ने किया जिसको जदीद तरतीब के साथ जनाब मौलाना मुहम्मद

सिद्दीक़ हज़ारवी पाकिस्तानी ने की और जिसकी हिन्दी की तस्हीह मौलाना शकील साहब नूरी मिस्बाही मुदर्रिस जामिआ़ नूरिया रज़विया बरेली शरीफ़ ने की है। इस रिसाले मं यह साबित किया गया है कि अल्लाह के सिवा किसी को इबादत की नियत से सजदा करना कुफ़्र है और ताज़ीम की नियत से सजदा करना हराम है, कुफ़्र नहीं। यह रिसाला उन लोगों के मुँह पर तमाचा है जो सुन्नियों पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाते हैं और उन लोगों के लिए भी साफ़-साफ़ जवाब है जो अपनी हठधर्मी की वजह से अपने मुरीदों से सजदा करवाते हैं या मुरीद जहालत से अपने पीरों को या मज़ारों को सजदा करते हैं।

तक़दीर ओ तदबीर

तक़दीर ओ तदबीर के नाम से शाए इस किताब में मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दो रिसाले हैं। पहला **'रिसाला अत्तहबीर बिबाबित्तदबीर'** में एक बेहद बकवास सवाल का जवाब है कि मआज़ अल्लाह तदबीर कोई चीज़ नहीं है और सब कुछ तक़दीर से है यानी इन्सान को बिल्कुल मजबूर कहा गया जबकि ऐसा नहीं है क्यूँकि इन्सान न तो बिल्कुल मजबूर है न उसे पूरी तरह इख़्तियार दिया गया है। --- दूसरा रिसाला **'सलजुस्सद्र लिईमानिल क़द्र'** में इस सवाल का जवाब दिया गया है कि जब इन्सान तक़दीर में होने की वजह से सब काम करता है तो उसे अज़ाब या सवाब क्यूँ दिया जाएगा। --- ये दोनों ही रिसाले पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और हुज़ूर आलाहज़रत ने क्या ही ख़ूब जवाब अता फ़रमाया है।

चालीस अहादीसे शफ़ाअ़त

किसी ने मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से सवाल किया कि हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त किस हदीस से साबित है तो हुज़ूर आलाहज़रत ने चालीस बड़ी ही प्यारी दिल को छू लेने वाली हदीसें हम गुनहगारों के लिए मुरत्तब फ़रमाई जो हम गुनहगारों के ईमान को ताज़ा करतीं हैं, सरदारे दो जहाँ स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मह़ब्बत दिल में बढ़ाती हैं और शफ़ाअ़त का यक़ीन दिलाती हैं। इस किताब की तसहीह जनाब मौलाना सग़ीर अख़्तर साहब मुदर्रिस जामिआ़ नूरिया रज़विया बरेली शरीफ़ ने की।

रिसाला ताज़ियादारी

ताज़ियादारी के बारे में मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से किए गए सवालों के जवाबों को इकट्ठा करके यह रिसाला तैयार किया गया है जो कि ताज़ियों और ताज़ियादारों के ख़िलाफ़ है और जाहिलों के लिए सबक़ और बदमज़हबों को यह बताता है कि हम सुन्नी राइज ताज़ियों को सही नहीं मानते। आजकल जो ताज़ियादारी राइज है उसमें अकसर बातें शिर्क हरगिज़ नहीं जैसा कि वहाबी हमारे ऊपर इल्ज़ाम लगाते हैं हाँ बहुत सी बातें बिदअत ज़रूर हैं इसका सुबूत भी इस रिसाले में है। इस रिसाले में उन बातों को सख़्ती से मना किया गया है जो ख़ुराफ़ात आजकल ताज़ियादार करते हैं मसलन खाना लुटाना, तख़्त व झूटी करबला बनाना वग़ैरह।

इरशादाते आलाहज़रत

मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के चन्द इरशादात को जनाब अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुबीन नौमानी साहब ने एक जगह जमा किया है। इस किताब में ज़्यादातर अवाम में फैली बदआमालियों जैसे ताज़ियादारी, ग़ैर शरई क़व्वाली, औरतों की मज़ारात पर हाज़िरी और वाज़ को पेशा बनाना वग़ैरह से मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर आलाहज़रत के इरशादात को जमा किया गया है जो पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती है।

बन्दों के हुक़ूक़

मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के हवाले से माँ बाप, उस्ताज़, औलाद और हुक़ूक़े मुस्लिम के अलावा एक रिसाला **'अअ़जबुल इमदाद फ़ी मुकफ़्फ़िराति हुक़ूक़िल इबाद'** हुक़ूक़ुल इबाद के बारे में है। इस रिसाले में उन लोगों को नसीहत है जो लोगों के पैसे या माल मार लेते हैं या दूसरों के माल पर नियत ख़राब करते और हड़प लेते हैं। काश आज के बदअ़मल मुसलमान इस पर अ़मल करें और जानें कि किसी का माल या पैसा मारना कितना सख़्त है कि अल्लाह तआ़ला ने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं माफ़ न करूँगा बन्दे ही से माफ़ कराना होगा।

दावते मय्यत

तीजा और चालीसवाँ को जिसे आजकल दावत बना दिया गया है उसके रद्द में मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा

ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का यह रिसाला **'जलियुस्सौत लिनहयिल दावते अमामल मौत'** उन लोगों के लिए नसीहत है जिन्होंने बिरादरी में नाक कटने के डर से तीजे और चालीसवें वग़ैरह को दावत बना दिया है। इस रिसाले में यह भी समझाया गया है कि तीजे चालीसवें के खाने को कौन कौन खा सकता है और ऐसे कामों के लिए क़र्ज़ लेना कैसा है।

तम्हीदे ईमान

मुजद्दिदे आज़म आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह रिसाला **'तम्हीदे ईमान बाआयाते क़ुर्आन'** बड़ा ही लाजवाब रिसाला है। जिसमें ईमान की अहमियत के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि बदमज़हब से दोस्ती रखने के क्या-क्या नुक़सानात हैं और बदमज़हब से दुश्मनी रखने के क्या-क्या फ़ायदे हैं और दोस्ती और दुश्मनी के सुबूत में क़ुर्आन की आयात हैं जिनका इन्कार किया ही नहीं जा सकता। जनाब मुह़म्मद अह़मद साहब बरेलवी ने इसकी हिन्दी करते वक़्त इस बात का ख़याल किया कि यह किताब आसान हो जाए और साथ ही वो इबारात जिनका ज़िक्र करते हुए हुज़ूर आलाहज़रत ने बताया कि वहाबियों ने ऐसा ऐसा बका उन इबारात की फ़ोटो कापी भी इसमें लगा दी ताकि हिन्दी वालों को आसानी रहे। इस किताब की तस्हीह मौलाना शकील साहब नूरी मिस्बाही मुदर्रिस जामिआ़ नूरिया रज़विया बरेली शरीफ़ ने की है।

दावते फ़िक्र

यह किताब बदमज़हबों ख़ुसूसन वहाबियों के रद्द में है। इसमें सबसे पहले यह बताया गया है कि ईमान अगर सलामत रहा तो सब ठीक वर्ना बेईमान के लिए जहन्न्म ही है। उसके बाद क़ियामत के क़रीब होने वाले मुसलमानों के फ़िरक़ों के बारे में हुज़ूर की पेशीनगोईयों का ज़िक्र है फिर इस दौर के सबसे बदतर फ़िरक़ए वहाबिया का इतिहास और उसके रद्द का इतिहास है और यह बताया गया है कि सुन्नी वहाबी झगड़ा सिर्फ़ नियाज़ नज़्र का नहीं बल्कि अस्ल झगड़ा इस बात का है कि वहाबियों ने अल्लाह व रसूल की शान में गुस्ताखियाँ की हैं और साथ ही सुबूत के लिए उनकी कुफ़्री इबारात की फ़ोटो कापी और उस किताब के कवर की भी फ़ोटो कापी दी गई। बदमज़हबों के अह़काम और उनके पीछे नमाज़ का

हुक्म और उनसे निकाह का क्या हुक्म है इसका बयान भी है। साथ ही साथ मुसलमानों की उन बदआमालियों का ज़िक्र भी है जो वहाबियों को मौक़ा दे रहीं हैं अहले सुन्नत वल जमाअ़त को ग़लत साबित करने का। यह किताब उर्दू में **दावते ग़ौर ओ फ़िक्र** के नाम से शाए हुई। इस किताब की तसहीह जनाब मौलाना सग़ीर अख़्तर साहब मुदर्रिस जामिआ़ नूरिया रज़विया बरेली शरीफ़ ने की है।

परेशान मुसलमान

सवाल जवाब की शक्ल में वहाबियों के रद्द में बेहतरीन किताब है। इसमें एक शख़्स जिसका नाम अब्दुल्लाह है इस बात से परेशान है कि सुन्नी सही हैं या वहाबी और वह अपने सवालों को लेकर एक मुफ़्ती साहब के पास जाता है और उनसे दिल खोल कर अपने सवाल करता है यहां तक कि वहाबियों की तरफ़ से किए जाने वाले एतराज़ भी करता है मुफ़्ती साहब क़ुर्आन व हदीस की रोशनी में जवाब देते हैं और इस तरह से तक़रीबन सभी इख़्तेलाफ़ी मसाइल कवर करने की कोशिश की गई है मसलन इल्मे ग़ैब, हाज़िर व नाज़िर, बशरियत, वसीला, ग़ैरुल्लाह से मदद, ताज़ीमे नबी, इख़्तेयाराते मुस्तफ़ा, शफ़ाअत, बिदअत, मज़ारात पर हाज़िरी, ईसाले सवाब, निदाए या रसूलल्लाह, ताज़ियादार, ताज़ीमी सजदा, अंगूठे चूमना अज़ाने क़ब्र, मीलाद वग़ैरह और आख़िर में मुफ़्ती साहब यह बताते हैं कि वहाबियों देवबन्दियों से हमारी असली लड़ाई यह है कि उन्होंने अपनी किताबों में अल्लाह व रसूल की तौहीन करी है लिहाज़ा इसलाम से ख़ारिज हैं। इस पर अब्दुल्लाह यह कहता है कि दिखाइये तो मुफ़्ती साहब उसे किताबें दिखाते हैं। उन किताबों की कुफ़्री इबारातों की फ़ोटो कापी इस किताब के आख़िर में लगा दी गई हैं। बरेली शरीफ़ के दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती मुहम्मद अफ़ज़ाल रज़वी साहब ने इस किताब की तसहीह की है।

कुफ़्री कलिमात पर शरीअत का हुक्म

फ़तावा शामी जिल्द 1 सुफ़ा 107 पर है कि हराम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिया कलिमात के मुतअल्लिक़ इल्म सीखना फ़र्ज़ है। बहुत से लोग कुफ़्र कर के या बक कर अपना ईमान गंवा कर अपने आपको हमेशा के लिए जहन्नमी बना लेते हैं। अल्लाह अपने हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम के सदक़े में महफ़ूज़ रखे। यह किताब ऐसे सैकड़ों कुफ़्र की तरफ़ आपका ध्यान खींच रही है। आम आदमी से जिनके हो जाने का डर बराबर बना रहता है। लिहाज़ा इस किताब को समझ कर पढ़ें और बातें दूसरे मुसलमानों तक पहुंचायें। इस किताब की चैकिंग बरेली शरीफ़ के दारुल इफ़ता के मुफ़्ती मुहम्मद अफ़ज़ाल रज़वी साहब ने की।

लेकिन ख़बरदार ख़ुद मुफ़्ती बनने की कोशिश हरगिज़ न करें बल्कि किसी अच्छे सुन्नी सहीहुल अक़ीदा आलिम की सोहबत में बैठ कर इस तरह के और दूसरे मसाइल समझें।

गुज़ारिश

इस किताब से नाते रसूल पढ़ने व सुनने वालों से एक गुज़ारिश यह है कि जब भी इस किताब से नाते सुनें तो हो सके तो हर शेर पर दुरूदे पाक पढ़ें चाहे वह छोटा ही दुरूद क्यूँ न हो। यह न हो सके तो थोड़ी थोड़ी देर के बाद दुरूद पढ़ें और जब कोई शेर बहुत ही ज़्यादा पसन्द आये तो 11 मरतबा दुरूद पढ़ें और इसका सवाब दिल ही दिल में तमाम मुसलमानों को बख़्श दें और मुझ नाचीज़ को भी ज़रूर याद रखें।

بسم الله الرحمن الرحيم

صَلَّ اللّٰهُ عَلٰى نَبِیِّ الْاُمِّیِّ وَ اٰلِهٖ صَلَّ اللّٰهُ عَلَیْهِ

وَسَلَّمَ صَلَاةً وَّ سَلَامًا عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه ٥

फ़ज़ीलते दुरूदे रज़विया

रसूले रहमत स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम भेजने का हुक्म क़ुर्आन व हदीस में साफ़ मौजूद है। दुरूद व सलाम के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और सेग़े हैं। बुज़ुर्गाने दीन ने भी कई सेग़ों का इज़ाफ़ा किया है। आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने पेशे नज़र सेग़ा तहरीर किया है। हदीसों से जो फ़ज़ाइल व फ़वाइद दुरूद पढ़ने के साबित हैं। उनमें से 40 आपने शुमार किये हैं। यह दुरूद कोई भी मुसलमान पढ़ सकता है। उनकी तरफ़ से आम इजाज़त है। मुसलमानों को चाहिए कि वह इस दुरूद को पढ़ें और अपनी दुनिया व आख़िरत संवारें।

بسم اللہ الرحمن الرحیم

صَلَّ اللّٰہُ عَلٰی نَبِیِّ الْاُمِّیِّ وَ اٰلِہٖ صَلَّ اللّٰہُ عَلَیْہِ

وَسَلَّمَ صَلَاۃً وَّ سَلَامًا عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ ٥

स़ल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल उम्मिय्यि व आलिहि स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्ल-म स़लातउँ व सलामन अ़लै-क या रसूलल्लाह

जुमे की नमाज़ के बाद मजमे के साथ मदीना तय्यिबा की तरफ़ मुँह करके दस्त बस्ता खड़े होकर सौ बार पढ़ें। जहाँ जुमा न होता हो, जुमे के दिन फ़ज्र, ज़ुहर या अस्र के बाद जो कहीं अकेला हो तन्हा ही पढ़े। इसके फ़ाइदे जो मोतबर हदीसों से साबित हैं। जो शख़्स रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से महब्बत रखेगा, जो उनकी अज़्मत तमाम जहान से ज़्यादा दिल में रखेगा, जो उनकी शान घटाने वालों, उनका ज़िक्रे पाक मिटाने वालों से दूर

रहेगा, दिल से बेज़ार होगा, ऐसा जो कोई मुसलमान इसे पढ़ेगा, उसके लिए बेशुमार फ़ाइदे हैं, जिन में से बाज़ लिखे जाते हैं :

(1) इसके पढ़ने वाले पर अल्लाह तआ़ला अपनी तीन हज़ार रहमतें उतारेगा।

(2) उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजेगा।

(3) पाँच हज़ार नेकियाँ उसके नामए आमाल में लिखेगा।

(4) उसके पाँच हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमाएगा।

(5) उसके पाँच हज़ार दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा।

(6) उसके माथे पर लिख देगा कि यह मुनाफ़िक़ नहीं।

(7) उसके माथे पर तह़रीर फ़रमा देगा कि यह दोज़ख़ से आज़ाद है।

(8) उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।

(9) पाँच हज़ार बार फ़रिश्ते उसका और उसके बाप का नाम ले कर हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ करेंगे कि या रसूलल्लाह फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ हुज़ूर पर दुरूद व सलाम अर्ज़ करता है। हुज़ूर अक़दस हर बार के दुरूद व सलाम पर फ़रमाएंगे। फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ पर मेरी तरफ़ से सलाम और अल्लाह तआ़ला की रह़मतें और उसकी बरकतें।

(10) जितनी देर उसमें मशग़ूल रहेगा, अल्लाह तआ़ला के मासूम फ़रिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहेंगे।

(11) अल्लाह तआ़ला उसकी तीन सौ हाजतें पूरी फ़रमाएगा। दो सौ दस हाजतें आख़िरत की और नव्वे हाजतें दुनिया की।

(12) उसके माल में तरक़्क़ी देगा।

(13) उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत रखेगा।

(14) दुश्मनों पर ग़लबा देगा।

(15) दिलों में उसकी महब्बत देगा।

(16) किसी दिन ख़्वाब में ज़्यारते अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से मुशर्रफ़ होगा।

(17) ईमान पर ख़ात्मा होगा।

(18) उसका दिल मुनव्वर होगा।

(19) क़ब्र व हश्र के हौलों से पनाह में रहेगा।
(20) क़ियामत के दिन अर्शे इलाही के साए में होगा। जिस दिन उसके सिवा कोई साया न होगा।
(21) रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त उसके लिए वाजिब होगी।
(22) रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम क़ियामत के दिन उसके गवाह होंगे।
(23) मीज़ान (तराज़ू) में उसकी नेकियों का पल्ला भारी होगा।
(24) क़ियामत के दिन प्यास से महफ़ूज़ रहेगा।
(25) हौज़े कौसर पर हाज़िरी नसीब होगी।
(26) सिरात पर आसानी से गुज़रेगा।
(27) क़ब्र व हश्र में उसके लिए नूर होगा।
(28) रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से नज़दीक होगा।
(29) क़ियामत में रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम उससे मुसाफ़ह़ा फ़रमायेंगे।
(30) अल्लाह तआ़ला उससे ऐसा राज़ी होगा कि कभी नाराज़ न होगा।

अल्लाहुम्मरज़ुक़्नाहु बिजाहि ह़बीबि–क व आलिहि स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अ़लैहिम व बार–क वसल्लम अ–ब–दा (आमीन)

मजमे का हुक्म भी हदीस में है, उसके फ़ाइदे यह हैं :
(31) ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते उनके गिर्द जमा होकर सोने के क़लमों से चाँदी के वरक़ों पर उनका दुरूद लिखेंगे।
(32) उनसे कहेंगे हाँ! ज़िक्र करो, अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़मत करे, ज़्यादा करो अल्लाह तआ़ला तुम्हें ज़्यादा दे।
(33) जब यह मजमा दुरूद शुरू करेगा, आसमान के दरवाज़े उनके लिए खोल दिए जायेंगे।
(34) उनकी दुआ क़बूल होगी।
(35) जन्नत की हूरें उन्हें शौक़ से देखेंगी।
(36) अल्लाह तआ़ला उनकी तरफ़ मुतवज्जेह रहेगा, यहाँ तक कि अलग–अलग हो जाएंगे या बातें करने लगें।

(37) रहमते इलाही उन्हें ढांप लेगी।
(38) सकीना उन पर उतरेगा।
(39) अल्लाह तआ़ला आलमे बाला (आसमानों) में उनका ज़िक्र फ़रमाएगा।
(40) सारा मजमा बख़्श दिया जाएगा, उनकी बरकत उनके हमनशीन (साथ में बैठने वाले) को भी पहुँचेगी, वह बदबख़्त न रहेगा।

फ़क़ीर अहमद रज़ा क़ादिरी ने अपने सुन्नी भाईयों को इस मुबारक सेग़े की इजाज़त दी, जबकि मुहम्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बुराई करने वालों से दूर रहें और इसे पढ़ कर इस गुनाहगार के लिए अफ़्व व आफ़ियते दीन व दुनिया व आख़िरत व हुसूले मुरादाते हसना की दुआ फ़रमा लिया करें। यक़ीन रखे कि यह फ़क़ीर हक़ीर उन सब के लिए दुआ करता है, जो ऐसा करता है, जो ऐसा करें अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे और क़बूल फ़रमाए। आमीन!(मकातिबे रज़ा)

ज़रूरी तम्बीह

इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि फ़राइज़ छोड़ कर दुरूद ही पढ़ता रहे। अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा ईमान की अहमियत है यानी जब तक ईमान न हो सब बेकार है कितना ही नमाज़ रोज़ा करे सब बेकार है। इसलिए आदमी को सबसे पहले ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करना चाहिए यानी तमाम बातिल फ़िरक़ों से अलग रह कर अहले सुन्नत वल जमाअत पर ऐसा क़ाइम रहे कि आसमान व ज़मीन टल जाए मगर ईमान न जाए। अब नमाज़ रोज़ा और दूसरे फ़राइज़ की अहमियत है फिर दूसरे अज़कार की जब फ़राइज़ पूरे होंगे तब अस्ल फ़ायदा दुरूद का मिलेगा। हां दुरूद की कसरत से अल्लाह की रह़मत से दूसरे अमल की तौफ़ीक़ मिलेगी लिहाज़ा दुरूद पढ़ता रहे।